॥ श्रीः ॥

योगचिन्तामणि.

श्रीमद्विषकूशिरोमणिश्रीहर्षकीर्तिनिर्मित ।

माथुरवंशावतंसश्रीयुतकन्हैय्यालालपाठकतनयदत्तरामकृत—

माथुरीमंजूषाभाषाटीकासहित ।

२१२

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

मुंबई

निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम्-मुद्रणयन्त्रालयमें

मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९७४, शके १८३९.

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटालैन, निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर, यहीं प्रकाशित किया ।

पुनर्मुद्रणादि सर्वाधिकार प्रकाशकने स्वाधीन रक्खा है.

प्रस्तावना।

आजतक भगवदवतार धन्वन्तरिजीने जिस वैद्यकशास्त्रको भूमण्डल
प्रसिद्ध कियाहै, उस विषयमें हजारहों ग्रन्थ प्रचलित हुए हैं कि, जिन
न्यारा न्यारा विचार करके रोगोंका निदान और निराकरण कहा
इन ग्रंथोंका भलीभाँति ज्ञान होना साधारण श्रेणीके मनुष्योंको दुर्ल
था इस कारण श्रेष्ठ वैद्योंने इन ग्रन्थोंके तात्पर्य लेकर अनेक ग्रंथ रच
कियेहैं तदन्तर्गत प्रकृत "योगचिन्तामणि" अग्रगण्य वैद्यवर श्रीहर्षक
र्तिजीने निर्म्मित किया, इसमें प्रत्येक रोगोंका निदान, पूर्वरूप अ
प्रकार कथन कर उनके ऊपर कषाय, रसायन, मात्रा, पाक, चू
तैल, गुटिका, अवलेह इत्यादि सर्व रोगोंकी औषधी विचारपूर्वक व
की हैं और समस्त औषधी बनानेकी विधिभी सुगमतासे कही है. ऐसे ला
दायक ग्रंथका ज्ञान प्राकृत मनुष्योंको भी हो इसलिये माथुरवंशाव
श्रीयुत कन्हैयालालपाठकसूनु दत्तराम चौबेजीने "माथुरीमंजूषा
भाषाटीका" बनाकर प्रथम 'श्यामकाशी यंत्रालय' मथुराजीमें छपवा
था परंतु पुस्तक रुचिर आकृतिमें न होनेसे भिषग्वरोंको उपयोगी न हु
अत एव चिकित्साभिलाषियोंके सौलभ्यार्थ हमने टीकाकारसे सब ग्रंथा
कार लेकर रजिस्टरी कराय सुन्दर टैपके अक्षरोंमें चिकने कागज
शुद्धतापूर्वक मुद्रित कियाहै। टीकाबहुत सुगम और उत्तम स्पष्ट है. जि
द्वारा सर्वसामान्य जनोंकोभी बोध होसक्ता है।

अबकी बार फिरभी शुद्ध कराय उत्तमतासे मुद्रित कर प्रकाशित क
ताहूं, आशाहै कि अनुग्राहक ग्राहक इसे स्वीकार कर स्वयं लाभ उठा
और हमारेभी परिश्रमको सफल करैंगे।

आपका कृपाभिलाषी—
खेमराज श्रीकृष्णदास,

विषय.	पृष्ठांक.
मंगलाचरण	१
प्राचीन पाठकी प्रशंसा	२
सात अध्यायोंकी गणना	,,
नाडीपरीक्षा	,,
वैद्यके लक्षण	३
रोगीके लक्षण	,,
मूत्रपरीक्षा	५
नेत्रपरीक्षा	८
मुखपरीक्षा	९
जिह्वापरीक्षा	,,
मलपरीक्षा	१०
शब्दपरीक्षा	११
स्पर्शपरीक्षा	,,
आयुर्विचार	,,
आयुर्लक्षण	,,
कालज्ञान	१२
देशज्ञान	१३
औषधोंके मानकी परीक्षा	,,
कलिंगपरिभाषा	१६
अथ शारीरक	१७
मनुष्यके पिंजरका चित्र	१९

पाकाधिकारः प्रथमाध्यायः ।

विषय.	पृष्ठांक.
तत्रादौ शिक्षा	२०
बृहत्पूगीपाक	२२
कामेश्वरमोदक	२४
छोटासुपारीपाक	,,
विजयापाक	२५
स्त्रीयोग्य सौभाग्यशुंठी	२६
सौभाग्यशुंठी	२७
आम्रपाक	,,
बृहन्मुसलीपाक	२९
छोटामुसलीपाक	३१
नारियलपाक	३२
गोखरूपाक	,,
दूसरा गोखरूपाक	३३
कौंचपाक	३४
पीपलपाक	३५
दूसरा पीपलपाक	,,
पेठापाक	३६
दूसरा पेठापाक	,,
तीसरा पेठापाक	३७
चौथा पेठापाक	३८
असगन्धपाक	,,
अफीमपाक	४०
अगस्त्यहरीतकी	४१
मधुपक्कहरीतकी	४२
आमलापाक	४३
अडूसापाक	४४
दूसरा अडूसापाक	४५
तीसरा अडूसापाक	,,
भारंगीपाक	,,
कटेरीपाक	४६
भिलावापाक	,,
सूरण (जमीकंद) पाक	४७
आर्द्रकपाक	४८
लहसनपाक	४९
स्त्रीयोग्य कसैलापाक	५०
अंडीपाक	,,
कामेश्वर (दू० विजयापाक)	५१
एलादिचूर्ण	५२
वृष्ययोग	५३
कामदेव गुटिका	,,
कामदेवरस	५४

चूर्णाधिकारो द्वितीयोध्यायः ।

विषय.	पृष्ठांक.
कुंकुमादिचूर्ण	५५
लवंगादिचूर्ण	५६
बृहल्लवंगादिचूर्ण	५७
पिप्पल्यादिचूर्ण	५८
शुंठ्यादिचूर्ण	,,
त्रिकुटादिचूर्ण	,,
एलादिचूर्ण	,,
दू० एलादिचूर्ण	५९
चातुर्जातकचूर्ण	,,
त्रिजातादिचूर्ण	६०
त्रिफलादिचूर्ण	,,
तालीसादिचूर्ण	,,
तथा दूसरा	६१
गगनाशयचूर्ण	,,
सितोपलादिचूर्ण	६२

विषय.	पृष्ठांक.
खंडादिचूर्ण	६२
खादिचूर्ण	६३
ायफलादिचूर्ण	,,
डयोगचूर्ण...	,,
मश्रादिचूर्ण	,,
ीकलादिचूर्ण...	६४
चनिंबचूर्ण	,,
ुदर्शनचूर्ण	६५
ाडशांगचूर्ण	६६
मरिष्टादिचूर्ण...	,,
भृंग्यादिचूर्ण	६७
लवणभास्करचूर्ण	,,
तथा दूसरा	६८
वज्रक्षारचूर्ण...	,,
विड्लवणादिचूर्ण	६९
सामुद्रादिचूर्ण...	,,
हिंग्वष्टकचूर्ण	,,
हिंगुपंचक	७०
हिंगुत्रयोविंशतिचूर्ण ...	,,
तुम्बरादिचूर्ण...	,,
अजमोदादिचूर्ण	७१
विजयचूर्ण	,,
नारायणचूर्ण	७२
त्रिलवणादिचूर्ण	,,
क्षारामृत	७३
अम्लवेत चूर्ण... ...	७४
लघुगंगाधरचूर्ण	,,
वृद्धगंगाधरचूर्ण	७५
कपित्थाष्टकचूर्ण	,,
यवान्यादिचूर्ण	,,
दाडिमाष्टकचूर्ण	७६
वचादिचूर्ण	,,
एलादिचूर्ण	७७
लाजादिचूर्ण	,,
जातीपत्रादिचूर्ण	७८
दंतमसी (मिस्सी)	,,
भृंगराजचूर्ण	७९
आमलकादि चूर्ण	,,
बुद्धिवृद्धौ सारस्वत चूर्ण.... ...	,,

विषय.	पृष्ठांक.

गुटिकाधिकारस्तृतीयोऽध्यायः ।

अमृतप्रभागुटिका	८१
पाठान्तर	८२
राजगुटिका	,,
पाठान्तर	,,
उन्मीलनीगुटिका	,,
गुडचतुष्टयगुटिका	८३
सूरणादिगुटिका	,,
पाठान्तर	८३
कांकायनगुटिका	८४
अभयादिमोदक	,,
अजमोदादिगुटिका	८५
एलादिगुटिका	,,
नवरसादिगुटिका	,,
बुद्धिनवरस	८६
चन्द्रकलागुटिका	,,
व्योषादिगुटिका	,,
मरीच्यादिगुटिका	८७
खैरसारादिगुटिका	,,
बीजपूरादिगुटिका	८८
बंबूलगुटिका	,,
आमलादिगुटिका	,,
शंखवटी	८९
पाठान्तर	,,
अमरसुन्दरीगुटिका	,,
विजयादिगुटिका	९०
शिवागुटिका	९१
शिलाजीतशोधन	९२
शिवगुटिका	,,
विरेचनीगुटिका	९४
ज्वरयोगः	,,
इच्छाभेदीरस...	९५
छुरिकारिरस	,,
घोडाचोलीरस...	९६
विसूचिकाहरप्रयोग	,,
विसूचिका अंजन	,,
प्रचेतागुटिका...	९७
सर्षपादिगुटिका	,,
चिंतामणिरस...	,,

विषय.	पृष्ठांक.
तीसरा	९८
त्रिपुरभैरवरस...	,,
वडवानलरस	९९
कफकुंजररस	,,
आनन्दभैरवरस	१००
पंचाननरस	,,
दूसरा	,,
तीसरा	,,
ज्वरांकुशरस	१०१
तथा दूसरा	,,
घोडाचोली	१०२
प्रभावतीगुटिका	,,
अजमोदादिगुटिका	१०३
अरलूगुटिका	,,
ग्रहणीकपाटरस	१०४
एलादिगुटिका...	,,
तालीसादिगुटिका	१०५
लघुकामेश्वरगुटिका	,,
स्तंभनविधि	,,
दूसरीविधि	१०६
नेत्राम्बुजवटि	,,
चन्द्रप्रभागुटिका	,,
नेत्रस्रावगुटिका	१०७
रात्र्यंधतामें	,,
अतिनिद्रामें गुटिका	,,
नयनामृतांजन...	१०८
कुत्ताकाटेपर गोली	,,
तथा	१०९
त्रिफलादिगुटिका	,,
संजीवनीगुटिका	११०
सप्तामृतगुटिका	१११
क्वाथाधिकारश्चतुर्थोऽध्यायः ।	
क्वाथभेद और विधि	,,
रास्नादिकाथ	११२
लघुरास्नादिकाथ	११३
सन्निपातलक्षण	,,
हरीतक्यादिकाथ	,,
सन्निपातरोगे कर्तव्यकर्म.... ...	११४
दम्भस्थान	,,
भारंगादिकाथ...	११५
मंजिष्ठादिकाथ...	,,

विषय.	पृष्ठांक.
पाठान्तर	११६
मंजिष्ठादिचतुःषष्टिवाते	,,
कुष्ठे खदिरादि	११७
भूनिंबादि	,,
अष्टादशांगकाथ	११८
विषमज्वरे दार्व्यादि	,,
दशमूलकाथ	,,
पाठान्तर	११९
वातशोथे पुनर्नवादि	,,
कफरोगे कट्फलादि	,,
गुडूच्यादिबत्तीसों काथ	१२०
वातरोगेलशुनादिकाथ	,,
श्रेष्ठ्यादिकाथ	१२१
पथ्यादिकाथ	,,
ज्वरके दशउपद्रव	,,
ज्वरे क्षुद्रादिकाथ	,,
वृद्धक्षुद्रादि	१२२
पाचन	,,
धान्यपंचककाथ	,,
आरग्वधादिकाथ	१२३
पंचभद्रकाथ	,,
सट्यादिकाथ	,,
बृहत्सट्यादिकाथ	,,
पटोलादि	१२४
मुस्तादि	,,
वृद्धमुस्तादि	,,
गुडूच्यादि	,,
वृद्धगुडूच्यादि...	१२५
चन्दनादि	,,
वृद्धचन्दनादि	,,
त्रायमाणादि	,,
वृद्धत्रायमाणादि	१२६
द्राक्षादि	,,
वासादि	,,
नागरादि	१२७
वत्सकादि	,,
कुटजाष्टक	,,
मोचरसादि	१२८
दार्व्यादि	,,
हारिद्रज्वरे काथ	,,

विषय.	पृष्ठांक.
रजन्यादि	१२९
फलत्रिकादि	१३०
एलादि	”
पाठांतरम्	”
प्रमेहे त्रिफलादिक्काथ	१३१
छर्दिरोगे क्काथ...	”
बालरोगे क्काथ...	१३२
कासरोगे क्काथ	”
हिक्कायां क्षुद्रादिक्काथ	”
शृंग्यादिचतुःषष्टिसर्ववाते क्काथ ...	”
ज्वरे अष्टावशेषपानीयम्	१३३
पंचकोल क्काथ	१३४
दशांगक्काथ	”
अम्लपित्तविकारे क्काथ	”
पाठांतरम्	”
मद्यविकारे क्काथ	१३५

घृताधिकारः पंचमोध्यायः ।

सर्वोन्मादे कल्याणघृतम्... ...	१३६
उन्मादे महाकल्याणघृतम् ...	१३७
पाठान्तरम्	१३८
बुद्धिवृद्धौ महापैशाचि०	१३९
सन्तानार्थं फलघृतम्	१४०
पाठान्तरम्	१४१
उदररोगे बिन्दुघृतम्	”
दुष्टव्रणादौ जात्यादिघृतम् ...	१४२
महातिक्तकघृतम्	”
मस्तकरोगे षड्बिंदुघृतम्	१४३
वायुविकारे दशमूलादिघृतम् ...	”
अश्वगंधादि	१४४
वातरक्ते गुडूचीघृतम्	”
वातशूले शुंठ्यादि	”
लूताविचर्चिकायां कासीसा० ...	”
पंचतिक्तकघृतम्	१४५
पुष्टौ कामदेवघृतम्	”
रुधिरविकारे मंजिष्ठादि	१४६
संग्रहणीविकारे कल्याणगुडः ...	१४७

तैलाधिकारः षष्ठोध्यायः ।

सर्ववातेषु नारायणतैलम्	१४८
जीर्णज्वरे लाक्षादितैलम्	१४९
पाठान्तरम्	”

विषय.	पृष्ठांक.
मरीचादितैलम्	१५०
वृद्धमरीचादितैलम्	”
विषगर्भतैलम्	१५१
पाठान्तरम्	१५२
मस्तकरोगे षड्बिंदुतैलम्... ...	१५३
वातरोगे शतावरीतैलम्... ...	१५४
बालाद्यंतैलम्	१५५
वातरोगे प्रसारिणीतैलम्... ...	१५६
चन्दनादितैलम्	१५७
वज्रतैलम्	१५८
कुष्ठे कालानलतैलम्	१५९
सिन्दुराद्यंतैलम्	”
गुंजादितैलम्	१६०
कुष्ठे भल्लातकतैलम्	”
कुष्ठोपरिसिंदूरादितैलम्	”
अर्कतैलम्	”
नीलकाद्यंतैलम्	१६१
क्षाराद्यं तैलम्...	”
स्तनविकारे काशीसाद्यम्... ...	१६२

मिश्राध्यायः सप्तमः ।

योगराजगूगल	१६३
पाठान्तर	१६४
किशोरगुग्गुल...	१६५
त्रिफलागुग्गुल	१६७
कचनारगुग्गुल	”
गोक्षुरादिगुग्गुल	”
सिंहनादगुग्गुल	१६८
चन्द्रप्रभागुग्गुल	१६९
शंखद्राव	१७०
गंधकशोधन	१७१
तथा दूसरीविधि	”
शिलाजीतशोधन	”
तथा दूसरीविधि	१७२
सुवर्णादिसप्तधातुओंका शोधन ...	”
मृगांकविधि	१७३
दूसरीविधि	”
तीसरीविधि	१७४
राजमृगांकरस...	१७५
तांबामारणविधि	१७६
मृतताम्रके गुण	”

विषय.	पृष्ठांक.
वंगमारण	१७७
सीसामारण	,,
सार (लोहा) मारण	,,
मंडूरकरण	१७८
अभ्रकमारण	१७९
अमृतीकरण	,,
मारणकी दूसरीविधि	,,
अभ्रकसत्वविधि	१८०
दूसरीविधि	,,
मृतधातुसंजीवनी	१८१
रससिंदूरबनानेकीविधि	,,
पाराशोधनविधि	,,
पारामारणकी विधि	,,
तथा दूसरीविधि	१८२
मदनमुद्रा	,,
पाठान्तर	१८३
वज्रमुद्रा	,,
मृतपारदके गुण	,,
पारदविकारकी शांति	१८४
पारामारणकी तीसरीवि० ...	,,
हरतालशोधन और मारण ...	१८५
तथामारणकी दूसरीविधि... ...	,,
रसकर्पूरविधि	१८६
दूसरीविधि	,,
शुद्धपारेका मुखकरण	,,
तथा दूसरीविधि	१८७
कच्छपयंत्रसे गंधकमारण... ...	,,
हिंगुलसे पारानिकालनेकी विधि ...	१८८
हरतालका शोधनमारण	,,
पाठान्तर	१८९
नागेश्वरबनानेकी विधि	,,
सोनामाखीका शोधनमारण ...	,,
रूपामाखीका शोधन	१९०
मनसिलशोधन	,,
नीलांजनशोधन	,,

रसप्रकरणम् ।

विषय.	पृष्ठांक.
लोकनाथरस	१९१
पाठान्तर	,,
कफकुंजररस	१९२
कालारिरस	१९३
पाठान्तर	,,
चैतन्येसूचीभरणरस	१९४
उदयभास्कररस	१९५
भूतांकुशरस	,,
तालकेश्वररस...	,,
अतिसारे रस	१९६
आनन्दभैरवरस	,,
कनकसुंदररस...	१९७
क्रव्यादरस	,,
चन्द्रोदयरस	१९८
मृत्युंजयरस	१९९
द्राक्षासव	२००
द्राक्षारिष्ट	२०१
लोहासव	,,
दशमूलासव	२०२
कूष्मांडासव	२०४
जंबीरद्राव	२०५

लेपप्रकरणम् ।

विषय.	पृष्ठांक.
व्रणके ऊपर लेप	२०६
शोफ (सूजन) पर लेप... ...	,,
शिरोर्त्ति (मस्तकपीडा) परलेप ..	२०७
कर्णपीडामेंलेप...	,,
उदरपीडामेंलेप	२०८
शूलपरलेप	,,
व्रणे लेप	,,
गंडमालामेंलेप	,,
अनुभूतलेप	२१०
मुखछायापर लेप	,,
नासिकासे रुधिर गिरनेपर लेप ...	२११
नेत्ररोगे लेप	,,
केशकल्पलेप	,,
केशवर्द्धनलेप	२१२
रोमशातनेलेप...	२१३
अग्निदाहेलेप	,,
हाथपैरके दाहपरलेप	,,
अंत्रवृद्धिकुरंडवृद्धिपरलेप	२१४
नलकवृद्धिपरलेप	,,
अर्शोपरिलेप	,,

विषय.	पृष्ठांक.
कुष्ठेलेप	... २१४
श्वेतकुष्ठेलेप ...	... २१५
पादस्फुटितोपरिलेप ...	... ,,
मस्सेपरलेप	... २१६
चोटकेऊपरलेप ...	... ,,
गांठकेऊपरलेप ...	... ,,
फोडापरलेप	... ,,
वातरक्तपरलेप... ...	... ,,
पादोपरिलेप... ...	... २१७
गुह्यभगादिसंकोचन ...	.... ,,
लिंगदृढीकरण ...	... ,,

मल्लम ।

व्रणोपरि	... २१८
नासूरादिकेऊपरलेप ...	... ,,
उदरोपरि	... २१९
विषऊपर	... ,,
विषसर्परोगोंमें... ...	... २२०
रुधिरस्राव (फस्द) ...	... ,,
जोंकलगाना	... २२१
नासविधि	... ,,
नासलेनेकी औषधि ...	... २२२
नासिकामेंजलपान ...	... २२३
विरेचन (जुल्लाब) ...	... ,,
वमन (रद्द)... ...	... २२५
स्वेद	... २२६
पाठान्तर	... २२७
बंधनम्	... २२८
बफारा	... ,,
उद्वूलन (उबटना) ...	... २२९
अथ नस्य	... ,,
मस्तकके टोपबंधन ...	... २३०
नेत्रपिंडी	... ,,
कुरला	... ,,
अपराजिताधूनी ...	... २३१
दूसरी धूप.... ...	... ,,
तक्र (छाँछ) सेवन ...	... २३२
कठरोह	... २३३
अठपहरीगिलोय ...	... ,,

विषय.	पृष्ठांक.
अठपहरी अजमोद ...	... २३४
मधुराज्वरके लक्षण ...	... ,,
मधुरकको स्वरस ...	... २३५
मधुराका मंत्र... ...	... ,,
साधारण योग ...	... ,,
वर्धमान पीपल ...	... २३६
द्राक्षाहरीतकी ...	... ,,
हरीतकीयोग	... ,,
कुटकीका प्रयोग ...	... २३७
अजमोद योग ...	... ,,
शुंठीयोग	... ,,
त्रिफलायोग	... २३८
दशामृतहरीतकी	... ,,
असगंधयोग	... ,,
चोबचीनी	... २३९
जमाईहलदी	... ,,
जमायाजीरा	... ,,
घृतपान	... २४०
निंबपानविधि	.... ,,
खंडपान	.... ,,
सामान्यकायचिकित्सा ...	... ,,
दंभ (दांग)	... ,,
विषचिकित्सा ...	... २४२
स्त्रीणां चिकित्सा ...	... ,,
पुत्रोत्पात्तिके योग ...	... २४३
गर्भनिवारण	... २४४
मृतगर्भपातन	... ,,
कर्मविपाक	... २४५
रोगोंके नाम	... २४६
कर्मफल	... ,,
कुंभदानविधि	... २४७
धेनुदानविधि	... ,,
कर्मफल	... २४८
ज्योतिषद्वारा वंध्याका फल	... २५०
स्वर्णधेनुदानविधि ...	... ,,
सर्वरोगशांति	... २५१
रोगसंख्या	... ,,
प्रशस्तिश्लोकाः ...	... ,,

॥ श्रीः ॥

श्रीधन्वन्तरये नमः

अथ योगचिन्तामणिः ।

भाषाटीकासहितः ।

प्रथमोऽध्यायः १.

यत्र वित्रासमायान्ति तेजांसि च तमांसि च ।
महीयस्तदहं वन्दे चिदानन्दमयं महः ॥ १ ॥

श्रीकृष्णं प्रणिपत्य सद्गुणनिधिं धन्वन्तरिं शारदां श्रीमन्माथुरवंशजं स्वजनकं श्रीकृष्णलालं गुरुम् ।
अल्पज्ञानवतां करोमि सुखदां सद्योगचिन्तामणेर्भूषां व्रजभाषयार्थबहुलां श्रीदत्तरामाभिधः ॥ १ ॥

अर्थ—यत्र कहिये जहां तेज और तम (अंधकार) नाशको प्राप्त होंय ऐसे महान् तेजःपुंज चिदानंदको हम वंदना करते हैं ।

जगत्त्रितयलोकानां पापरोगापनुत्तये ।
यद्वाक्यभेषजं भाति श्रीजिनः स श्रियेऽस्तु वः ॥ २ ॥

अर्थ—जिसका वचन त्रिलोकीके पापरूप रोगोंको औषधिस्वरूप है ऐसे श्रीजिन (तीर्थंकर) लक्ष्मीके देनवारे हो ।

सिद्धौषधानि पथ्यानि रागद्वेषरुजां जयेत् ।
जयंति यद्वचांस्यत्र तीर्थकृत्सोऽस्तु वः श्रियै ॥ ३ ॥

अर्थ—जिनका वचन सिद्ध औषध और पथ्यरूप होकर रागद्वेषरूप रोगोंको नाश करै ऐसे श्रीतीर्थंकर तुमको लक्ष्मीके देनवारे हों ।

श्रीसर्वज्ञं प्रणम्यादौ मानकीर्तिं गुरुं ततः ।
योगचिन्तमणिं वक्ष्ये बालानां बोधहेतवे ॥ ४ ॥

अर्थ—श्रीसर्वज्ञ मानकीर्ति गुरुको प्रथम प्रणाम करि बालकोंके बोधार्थ योगचिन्तामणि ग्रंथको कहते हैं ।

प्राप्ताः प्रसिद्धिं सर्वत्र सुखबोधाश्च ते यतः ।
अतः पुरातनैरेव पाठैः संगृह्यते मया ॥ ५ ॥

अर्थ—सर्वत्र प्राप्त और प्रसिद्ध और सुखपूर्वक जानेजायँ इसी कारण हम प्राचीन पाठका संग्रह करते हैं ।

नूतनपाठे विहिते नादरमिह पण्डिता यतः कुर्य्युः ।
तस्मादार्षवचोभिर्निबध्यते न त्वसामर्थ्यात् ॥ ६ ॥

अर्थ—नवीन पाठको विद्वानलोग सत्कार नहीं करेंगे इसीकारण मैं प्राचीन सुश्रुत वाग्भटादि आचार्योंके वाक्योंका संग्रह करता हूं कुछ नवीन ग्रंन्थ रचनेकी असामर्थ्यसे नहीं करता ।

पाकचूर्णगुटीक्वाथघृततैलाः समिश्रकाः ।
अध्यायाः सप्त वक्ष्यन्ते ग्रन्थेऽस्मिन्सारसंग्रहे ॥ ७ ॥

अर्थ—या ग्रंथमें पाकाध्याय, चूर्णाध्याय, गुटिकाध्याय, क्वाथाध्याय, घृताध्याय, तैलाध्याय और मिश्रकाध्याय ऐसे सात अध्याय कहैंगे ।

यद्यपि योगचिन्तामणिके कर्ताने नाडी आदि परीक्षा पीछे लिखी हैं परंतु हमारी समझमें प्रथम लिखना ठीक है क्योंकि प्रथम रोग निश्चय करना सब आधुनिक और प्राचीन आचार्य्योंके मतसे ठीक है इसी कारण हम प्रथम अष्टविधि लिखते हैं तहां प्रथम—

नाडीपरीक्षा ।

नाड्या मूत्रस्य जिह्वाया लक्षणं यो न विंदते ।
मारयत्याशु वै जन्तून्स वैद्यो न यशो लभेत् ॥ १ ॥

अर्थ—नाडी, मूत्र और जिह्वाकी जो परीक्षा नहीं जाने वो वैद्य मनुष्योंको तत्काल नाश करै है, उसको यशकी प्राप्ति नहीं होय है ।

वैद्यके लक्षण ।

स्थिरचित्तः प्रसन्नात्मा मनसा च विशारदः ।
स्पृशेदंगुलिभिर्नाडीं जानीयाद्दक्षिणे करे ॥ २ ॥

अर्थ—एकाग्रचित्त कर प्रसन्नात्मा मनसे चतुर ऐसा वैद्य तीन अंगुलियोंसे दहिने हाथकी नाड़ी देखे ।

रोगीके लक्षण ।

त्यक्तमूत्रपुरीषस्य सुखासीनस्य रोगिणः ।
अंतर्जानुकस्यापि सम्यङ्नाडीं परीक्षयेत् ॥ ३ ॥

अर्थ—जो रोगी मल मूत्रका त्याग करचुका होय सुखपूर्वक बैठा होय और दोनों जानुवोंके बीच जिसने अपना हाथ रक्खा होय उसकी नाडीकी भले प्रकार परीक्षा करे ।

स्त्रीणां भिषग्वामहस्ते पुरुषाणां तु दक्षिणे । शास्त्रेण संप्रदायेन तथा स्वानुभवेन च॥परीक्षेद्रत्नवच्चासावभ्यासादेव जायते॥४॥

अर्थ—स्त्रियोंके बाएँ हाथकी और पुरुषोंके दहने हाथकी नाडी वैद्य शास्त्रकी संप्रदायसे और अपने अनुभवसे परीक्षा करै जैसे जोहरी अपनी बुद्धिसे रत्नोंकी परीक्षा करता है ।

वारत्रयं परीक्षेत धृत्वा धृत्वा विमुच्य च ।
विमृश्य बहुधा बुद्ध्या रोगव्यक्तिं विनिर्दिशेत् ॥ ५ ॥

अर्थ—तीनबार नाडीपर हाथको रख २ कर छोड २ दे जब अच्छी तरह रोग समझमें आयजावे तब उसको कहे ।

वातं पित्तं कफं द्वंद्वं त्रिदोषं सन्निपातकम् ।
साध्याऽसाध्यविवेकं च सर्वान्नाडी प्रकाशयेत् ॥ ६ ॥

अर्थ—वात, पित्त, कफ, द्वंद्वज, त्रिदोष, सन्निपात, साध्य, असाध्य, सबको नाडी प्रकाश करती है ।

करस्यांगुष्ठमूले या धमनी जीवसाक्षिणी ।
तच्चेष्टया सुखंदुःखं ज्ञेयं:कायस्य पण्डितैः ॥ ७ ॥

अर्थ—हाथके अँगूठेके नीचे धमनी नाडी जीवकी साक्षी देनेवाली है उसी धमनी नाडीकी चेष्टासे पंडित देहके दुःख और सुखको जाने।

धत्तेनाडीमरुत्कोपाज्जलौकासर्पयोर्गतिम् ।
कुलिंगकाकमण्डूकगतिंपित्तस्यकोपतः ॥
हंसपारावतगतिंधत्तेश्लेष्मप्रकोपतः ॥ ८ ॥

अर्थ—वातके कोपसे नाडी जोंक और सर्पकी गति धारण करती है पित्तके कोपसे कुलिंग, कौआ और मेंडककी गतिसे चलती है, कफके कोपसे नाड़ी हंस, कबूतरकी गतिसे चलती है।

लावतित्तिरवर्तीनां गमनं सन्निपाततः । कदाचिन्मंदगमना कदाचिद्वेगवाहिनी ॥ द्विदोषकोपतोज्ञेयाहन्तिचस्थानविच्युता ॥ ९ ॥ स्थित्वाचलतियासास्मृताप्राणनाशिनी । अतिक्षीणाच शीताच जीवितंहन्त्यसंशयम् ॥ १० ॥

अर्थ-सन्निपातके कोपसे नाड़ी-लवा, तीतर और बटेरकीसी चाल चलतीहै कभी मन्द चले कभी तेज चले ऐसी नाडी द्विदोषके कोपकी जाननी, और जो नाडी अपने स्थानको छोडदेय उसे प्राणनाशनी जाननी, और जो नाडी ठहर २ के चले उसेभी प्राणघातिनी जाननी चाहिये, और जो नाडी अत्यन्त क्षीण शीतल होय उसेभी निश्चय नाश करनेवाली जाननी।

ज्वरकोपेन धमनी सोष्णावेगवतीभवेत् । कामात्क्रोधाद्वेगवहा क्षीणाचिन्ताभयप्लुता॥ ११॥मन्दाग्नेःक्षीणधातोश्चनाडीमन्दतराभवेत् । असृक्पूर्णाभवेत्सोष्णागुर्वीसामागरीयसी ॥ १२ ॥ लघ्वीवहतिदीप्ताग्नेस्तथावेगवतीमता । सुखिनःसास्थिराज्ञेया तथाबलवतीमता ॥ चपलाक्षुधितस्यापितृप्तस्यवहतिस्थिरा १३

अर्थ—ज्वरके कोपसे नाडी गरम और वेगवती होतीहै काम और क्रोधके वेगसेभी नाडी जल्दी चलतीहै चिन्तामान् और भयभीत मनुष्यकी नाडी क्षीण होती है तथा मन्दाग्नि और क्षीणधातुवाले मनुष्यकी नाडी मन्दतर

चलतीहै रुधिरके कोपकी नाड़ी गरम और भारी होतीहै आमकी नाडी भारी होतीहै दीप्त अग्निवालेकी नाड़ी हलकी और वेगवती होतीहै. सुखी मनुष्यकी नाडी स्थिर और बलवती होतीहै भूखे मनुष्यकी नाडी चपल होतीहै और तृप्तकी स्थिर होतीहै।

अगुष्ठमूलसंस्थादोषविशेषेणवहतियानाडी। बहुधासासर्वांगा वाचार्यैःसमाख्याता ॥१४॥ वाताद्वक्रगतानाडीचपलापित्त वाहिनी। स्थिराश्लेष्मवतीप्रोक्तासर्वलिंगेषुसर्वगा ॥ १५ ॥ रधारसवती प्रोक्तारक्तेमूर्च्छाभिघातिनी।भाविरोगावबोधायस्वस्थनाडीपरीक्षणम्॥१६॥ आदौचवहतेपित्तंमध्येश्लेष्माप्रकीर्तितः।अन्तेप्रभंजनःप्रोक्तस्त्रिधानाडीपरीक्षणम् ॥ १७ ॥ यथावीणागतातन्त्रीसर्वान्रागान्प्रकाशयेत् । तथाहस्तगता नाडीविभक्तामयसचयम्॥ १८ ॥

अर्थ—अंगूठाके निकट जो दोषविशेष करके नाडी चलै है वो सर्व अंगव्यापिनी है ऐसा पूर्वाचार्योंने कहाहै, वातके कोपसे नाडी टेढी गतिसे गमन करती है, पित्तके कोपसे चपल गतिसे चलती है, और कफके कोपसे स्थिर अर्थात् मंद गमन करती है और सब दोषोंके कोपसे नाडी सर्वचिह्नयुक्त चलती है, रसवती नाडी चिकनी होती है रुधिरकी नाडी मूर्च्छित चलती है होनहार रोगके जाननेके निमित्त स्वस्थमनुष्यकी नाडी परीक्षा करनी चाहिये, प्रथम पित्तकी नाडी मध्यमें कफकी और अंतमें वातकी नाडी चलतीहै, जैसे वीणाके तार संपूर्ण रागोंको अलग २ प्रकाश करते हैं इसी प्रकार हाथकी नाडी सकल रोगोंकी सूचना करतीहै॥ इति नाडीपरीक्षा॥

मूत्रपरीक्षा।

रात्रेश्चतुर्थयामस्यघटिकानांचतुष्टये। समुत्थायपरीक्षेतमूत्रंवैद्यस्तुरोगिणः॥१॥पूर्वधारांपरित्यज्यगृहीत्वाकाचभाजने। धारयेत्कांस्यपात्रेवाकृत्वामूत्रंपटावृतम्॥२॥ततः सूर्योदयेजातेप्रकाशेमत्रभाजनम्।धृत्वामत्रंसमालोक्यकुर्य्यात्तस्यपरीक्षणम्॥३॥

वातेतोयसमंमूत्रं रूक्षंबहुतरंभवेत् । रक्तवर्णंभवेत्पित्तेपीतंवा-
स्वल्पमेवच ॥ ४ ॥ कफेश्वेतंघनंस्निग्धंमूत्रंसंजायतेध्रुवम् ।
द्विदोषंद्वंद्वचिह्नंस्यात्सर्वलिंगंत्रिदोषजे ॥ ५ ॥

अर्थ—रात्रिके चतुर्थ प्रहरकी जब चारघडी बाकी रहें उस समय रोगी-को उठाकर वैद्य मूत्रकी परीक्षा करे, रोगीके मूत्रकी प्रथम धारको त्यागकर बाकीको कांचकी शीशी वा कांसेके पात्रमें लेकर वस्त्रसे ढकदेय जब सूर्यो-दय हो तब उस पात्रसे वस्त्रको हटाकर उजेलेमें रखकर अच्छी तरह मूत्रकी परीक्षा करै वातके कोपसे मूत्र स्वच्छ जलके समान होता है और रूखा तथा बहुत होय, पित्तके कोपसे लाल वा पीला और थोडा होता है, कफके कोपसे रोगीका मूत्र सफेद गाढा चिकना ऐसा होता है, और द्विदोषके कोपसे दो दो दोषोंके लक्षण और त्रिदोषके कोपसे सर्व लक्षण युक्त होता है ।

प्रातःकालेगृहीतंयन्मूत्रंघर्मेनिधापयेत् । तैलबिन्दुंक्षिपेत्तत्र
निश्चलंवैद्यसत्तमः । यदाप्रकाशमाप्नोतितैलंक्षेमतदादिशेत्॥६॥
बिन्दुरूपंस्थितंतैलमसाध्यमपिरोगिणः ॥ निमज्जतियदामूत्रे
भ्रमन्वानैवशाम्यति ॥ तदारिष्टंविजानीयाद्रोगिणांनात्रसं-
शयः॥७॥प्रभातेरोगिणांमूत्रंगृहीत्वाशुद्धभाजने ॥ तृणेनादाय
तैलस्यबिन्दुंक्षिप्त्वाविचारयेत्॥८॥यदाविकाशमाप्नोतितदासा-
ध्यंवदेत्सुधीः ॥ बिन्दुरूपेणमध्यस्थमसाध्यंतुतलस्थितम्॥९॥

अर्थ—प्रातःकालमें जो रोगीका मूत्र लिया उसे धूपमें रखकर उसमें वैद्य तेलकी बूंद डालै यदि तेलकी बूंद प्रकाशित रहे तो रोगीका कल्याण जाने और वह बूंद तेलकी बिन्दुरूपही रहै तो असाध्य जानना अथवा वह तेल-की बूंद मूत्रमें बैठजाय अथवा चक्र खाया करै तो उस मनुष्यकी देहमें अरिष्ट (रोग) जानना, प्रातःकाल स्वच्छ पात्रमें रोगीका मूत्र लेकर उसमें तृणसे तैलकी बूंद डालकर विचार करे यदि वह बूंद प्रकाशित रहे तो उस रोगीको साध्य कहना, और वह तेलकी बंद मत्रमें नीचे बैठजाय

बिन्दुर्भ्रमतिसर्वत्रमध्येवाछिद्रसंयुतः। खड्गदंडधनुस्तुल्यस्तदा रोगीविनश्यति॥१०॥तडागहंसपद्मेभच्छत्रचामरतोरणैः।तुल्यैस्तदाचिरायुः स्याद्बुद्बुदंदेवकोपतः॥११॥ पूर्वपश्चिमवायव्यनैर्ऋतोत्तरतःशुभः। आग्नेयदक्षिणेशानेविस्तृतोनशुभप्रदः॥१२॥

अर्थ–तेलकी बूँद मूत्रमें चक्कर खाय अथवा उसके बीचमें छिद्र होजाय तथा खड्ग (तलवार) दंड और धनुषके आकार होजाय तो रोगीकी मृत्यु होय तालाब, हंस, कमल, हाथी, छत्र, चमर, तोरण इनके आकार तेलकी बूंद हो जाय तो चिरायु (दीर्घायु) कहनी और उस मूत्रमें बबूला उठे तो रोगी को देवदोष जनना. और वो तेलकी बूँद पूर्व, पश्चिम, वायव्य, नैर्ऋत्य और उत्तर इन दिशाओंमें फैले तो शुभ है और अग्निकोण, दक्षिण, ईशानकोण इन दिशाओंमें फैलेतो अशुभ है. यह परीक्षा समान भूमिमें करनी चाहिये।

स्निग्धंसुरूक्षकंश्यामंमूत्रंवातविकारजम्। पीतबुद्बुदसंयुक्तं विकारःस्यात्तुपित्तजः॥१३॥मूत्रंश्लेष्मणिजायेतसमंपल्वलवारिणा। सिद्धार्थतैलसदृशंमूत्रं वै पित्तमारुतैः॥१४॥कृष्णंसबुद्बुदंमूत्रंसन्निपातविकारजम्। पानीयेनसमंमूत्रंपरिपाकहितंभवेत्॥१५॥ श्वेतधारामहाधारापीतधारास्तथाज्वराः। रक्तधारामहारोगी कृष्णा च मरणांतिका॥१६॥अजामूत्रमिवाजीर्णेज्वरेकुंकुमपिंजरे। समधातोःपुनःकूपजलतुल्यंप्रजायते॥१७॥

अर्थ–वातके विकारसे मूत्र चिकना, रूखा, काला होता है. पीला बबूलेके समान पित्तके विकारसे होता है. और कफके विकारसे मूत्र तलैयाके जलके समान होताहै. और वात, पित्तके विकारसे मूत्र सरसोंके तेलके सदृश होताहै. सन्निपातके विकारसे काला और बबूलेदार होताहै. परिपाकसमय मूत्र स्वच्छ जलके समान होताहै. सफेद धारा, महाधारा, पीली-

न्नमृत्युवाले रोगीके मूत्रकी धारा काली होतीहै. अजीर्णवाले रोगीके मूत्रमें बकरेके मूत्रके समान गंध आतीहै. ज्वरवालेका मूत्र केशरके समान पीला होताहै. समान धातुवालेका मूत्र कुआंके जल समान होताहै. ॥ ॥ इति मूत्रपरीक्षा ॥

नेत्रपरीक्षा ।

रौद्रेरूक्षेचधूम्राक्षेनयनेस्तब्धचंचले । तथाभ्यन्तरकृष्णाभेभवतो वातरोगिणः॥ १॥पित्तरोगेतुपीतेवानीलेवारक्तवर्णके । सतप्तेभवतोदीपंसहेते नावलोकितुम्॥२॥ ज्योतिर्हीनेचशुक्लाभेजलपूर्णे सगौरवे । मन्दावलोकनेनेत्रेभवेतःकफकोपतः॥३॥तन्द्रामोहाकुलेश्यामेनिभुग्नरूक्षरौद्रके । रक्तवर्णेचभवतोनेत्रेदोषत्रयोदये४॥

अर्थ—जिस रोगीके नेत्र भयानक रूखे धूसरे टेढे और चंचल होयँ और भीतरके काले होंय उसको वातका रोग जानना जिसके पीले, नीले और लाल नेत्र होंय तथा गरम और जो मनुष्य दीपकको न देखसके उसके पित्त का रोग जानना. ज्योतिरहित सफेद सजल और भारी होंय मन्द देखसके उसके कफविकार जानना, तन्द्रा मोहसे व्याकुल काले फटेसे रूखे, भयानक लालवर्ण ऐसे नेत्र सन्निपात रोगवालेके होतेहैं ।

दोषत्रयंभवेच्चिह्नंनेत्रयोस्तुत्रिदोषजम् । दोषद्वयप्रकोपेतुभवेद्दोषद्वयोदितम्॥५॥दोषत्रयभवेनेत्रे स्वाधीनेनचरोगिणः।उन्मूलितेचभवतःक्षणादेवनिमीलति॥६॥ सततोन्मीलितेनेत्रेयद्वानित्यनिमीलिते।विलुप्तकृष्णतारेचभ्रमद्भ्रोग्रतारके॥७॥बहुवर्णेचभवतोविकृतानेकचेष्टने । नेंत्रेमृत्युंकथयतोरोगिणोनात्रसंशयः॥ ॥ ८ ॥ सौम्यदृष्टीप्रसन्नाभेप्रकृतिस्थेमनोरमे । नेत्रेकथयतः शीघ्ररोगशांतिंतुरोगिणः ॥ ९ ॥

अर्थ—त्रिदोषरोगमें तीनों दोषोंके चिह्न नेत्रोंमें होतेहैं दो दोषोंके कुपित

स्वाधीन नहीं रहते कभी नेत्रोंको खोले और कभी मूंदे अथवा निरन्तर मूंदेही रक्खे अथवा निरन्तर खुलेही रक्खे जिसकी काली पुतली लुप्त होजाय अथवा पुतली भ्रमण करे धुआंसा दिखलाई दे तथा जिसके विकृत तारे होजायँ अनेक प्रकारके वर्ण विकृत अनेक चेष्टा करे ऐसे नेत्र रोगीकी आसन्न मृत्यु कहतेहैं, और जिसकी प्रसन्न दृष्टि होय तथा नेत्र अपनी प्रकृतिमें स्थिर होंय ऐसे नेत्र रोगीके रोगकी शीघ्र शान्ति कहतेहैं॥इति नेत्रपरीक्षा॥

मुखपरीक्षा ।

वातकोपेमुखंरूक्षंस्तब्धंवक्रगतप्रभम् ॥ पित्तकोपेभवेद्रक्तंपीतंवापरितप्तकम्॥१॥कफकोपेगुरुस्निग्धंभवेच्छूनमिवाननम् ॥ त्रिलक्षणंत्रिदोषेस्याद्विचिह्नंचद्विदोषके ॥ २ ॥

अर्थ—वातके कोपसे मुख सूखा स्तब्ध और टेढा होताहै पित्तके कोपसे रोगीका मुख लाल पीला और तप्त होता है कफके कोपसे मुख भारी चिकना सूजनयुक्त होताहै और त्रिदोषके कोपसे तीनों दोषके लक्षण होतेहै और द्विदोषके कोपसे दोनों दोषके लक्षण होतेहैं ।

जिह्वापरीक्षा ।

वातकोपेप्रसुप्ताचस्फुटितामधुराभवेत् । स्तब्धावर्णेनहरिता जिह्वालालांप्रसुंचति ॥१॥ पित्तकोपेतुरक्ताभंतिक्तादुग्धेचजायते।जिह्वादाहान्विताबिंबाकंटकैरिवसर्वतः॥२॥ कफोदयेभवेज्जिह्वास्थूलागुर्वीविलेपनी ॥ सुस्थूलाकंटकोपेताक्षाराबहुकफावहा ॥ ३ ॥ दोषद्वयेद्विदोषोक्तालवणारसनाभवेत् ॥ सर्वजिह्वात्रिदोषे स्याद्विकृतौचकुलक्षणे ॥ ४ ॥

अथ—वातके कोपसे जीभ शून्य फटीसी और मीठी होती है तथा स्तब्ध और हरितवर्ण तथा लार गिरे.पित्तके कोपसे जिह्वा लाल और दूध पीनेसे कडवी होय. दाहयुक्त कंदूरीफलकासा वण और कांटोंसे अच्छादित होती है. कफके कोपसे मोटी, भारी, कफसे लिप्तसी, मोटे कांटेयुक्त, खारी और बहुत कफ गेरने वाली ऐसी जीभ होती है. दो दोषके कोपसे

दो दोषोंके लक्षण होते हैं और नोनकासा स्वाद होता है और त्रिदोषके कोपसे तीनों दोषोंके लक्षणयुक्त और खोटे लक्षणयुक्त होती है ।

मलपरीक्षा ।

त्रुटितंफेनिलंरूक्षं धूम्रलं वातकोपतः । वातश्लेष्मविकारेचजायतेकपिशंमलम् ॥ १ ॥ बद्धंसुत्रुटितंपीतश्यामंपित्तंनिलाद्भवेत् । पीतश्यामंश्लेष्मपित्तादीषदार्द्रंचपिच्छलम् ॥२॥ श्यामंत्रुटितपीताभंबद्धश्वेतंत्रिदोषतः । दुर्गंधः शिथिलश्चैव विष्ठोत्सर्गोयदाभवेत् । तदाजीर्णमलंवैद्यैर्दोषज्ञैः परिभाष्यते ॥ ३ ॥

अर्थ--वातके कोपते मल टूटा हुआ, झागमिला, रूखा, धूम्रवर्ण । और बात कफकी विकृतिसे पीला और लाल मिला (नारंगी) होताहै. वात पित्तके योगसे मल बद्ध कभी टूटा पीला, काला ऐसा होता है। और कफ पित्तके कोपसे पीला, काला, और किंचित् आर्द्र तथा चीकट ऐसा होताहै त्रिदोष (सन्निपात) के कोपसे काला, पीला, टूटा, सफेद और बद्ध ऐसा मल उतरे अजीर्णवालेका मल दुर्गंधियुक्त शिथिल होता है ।

कपिलंग्रथियुक्तंचयदिवचोंवलोक्यते ॥ प्रक्षीणमलदोषेणदूषितः परिकथ्यते ॥ ४ ॥ सितंमहत्पूतिगन्धंमलंज्ञेयंजलोदरे।श्यामंक्षयेत्वामवातेपीतंसकटिवेदनम् ॥५॥ अतिकृष्णंचातिशुभ्रमतिपीतंतथारुणम् । मरणायमलंकिन्तुभृशोष्णंमृत्यवेध्रुवम्॥६॥

अर्थ-वातादि दोष क्षीण होनेसे मल कपिल और गाढा होताहै। सफेद और अत्यन्त सडी गन्धयुक्त मल जलोदर (जलंधर) वालेका होता है । क्षयीवालेका मल काला होताहै।और आमवात रोगीवालेकी कमरमें पीडा सहित पीला होताहै । अतिकाला, अत्यन्त सपेद, अत्यन्त पीला, और अतिलाल, तथा अत्यन्त गरम मल समीप मृत्युवाले रोगीका होताहै ।

अत्यग्नौपीडितंशुष्कंमन्दाग्नौतुद्रवीकृतम् ।
दुर्गंधंचन्द्रिकायुक्तमसाध्यंमललक्षणम् ॥ ७ ॥

पतला होताहै, दुर्गंधि और चन्द्रिकायुक्त मल असाध्य रोगीका होताहै ॥ इति मलपरीक्षा ॥

शब्दपरीक्षा।

गुरुः स्वरोभवेच्छ्लेष्मीस्फुटवक्ताचपित्तलः।
उभाभ्यांरहितोवातःस्वरतश्चैवलक्षयेत् ॥ १ ॥

अर्थ--कफवाले रोगीका स्वर भारी होय. पित्तवाला स्पष्ट बोले और बादीसे दोनों लक्षणरहित बोले. अर्थात् घरघर शब्द बोले।

स्पर्शपरीक्षा।

पित्तरोगीभवेदुष्णोवातरोगीचशीतलः॥ पिच्छिलःश्लेष्मरोगी स्यात्त्रिलिंगात्सन्निपातवान् ॥ आर्द्रकःसभवेच्छ्लेष्मास्पर्शतश्चैवलक्षयेत् ॥ १ ॥

अर्थ–पित्तके रोगीका उष्णस्पर्श वातरोगीका शीतल, कफ रोगीका चिकना, अथवा पानीसे भीगासा और सन्निपातसे सर्व लक्षण युक्त होताहै।

आयुर्विचार।

भिषगादौपरीक्षेतरुग्णस्यायुःप्रयत्नतः।
यतआयुषिविस्तीर्णेचिकित्सासफलाभवेत् ॥ १ ॥

अर्थ–वैद्यको उचित है कि प्रथम रोगीकी आयुका विचार करे क्योंकि पूर्णायु होनेसेही चिकित्सा सफल होतीहै।

आयुर्लक्षण।

सौम्याद्दृष्टिर्भवेद्यस्य श्रोत्रवक्रंतथैव च ॥ स्वादुगंधंविजानाति ससाध्योनात्रसंशयः ॥१॥ पाणीपादौचयस्योष्णौदाहःस्वल्पतरोभवेत् ॥ जिह्वातिकोमलायस्य स रोगीनविनश्यति ॥२॥ स्वेदहीनोज्वरोयस्यश्वासोनासिकयासरेत्॥ कण्ठश्चकफहीनः

अर्थ-जो रोगीकी दृष्टि, कान, मुख ये सौम्य होंय और प्रसन्न दीखें तथा स्वाद और गधको जाने उस रोगीको साध्य जानना इस विषयमें संशय नहीं, और जिस रोगीके हाथ पैर गर्म होय शरीरमें मंद दाह होय, और जीभ अत्यन्त कोमल होय ऐसे रोगीका नाश नहीं होय, जिसके पसीना-रहित ज्वर होय और श्वास नाककी राह निकले तथा कफहीन कंठ होय ऐसा रोगी नष्ट नहीं होय ।

कालज्ञान ।

अक्षैर्लक्षितलक्षणेनपयसापूर्णेन्दुनाभानुना पूर्वादक्षिणपश्चिमो-त्तरदिशांषट्त्रिद्विमासैककम्॥ छिद्रंपश्यतिचेत्तदादशदिनंधूम्रा-कृतिंपश्चिमेज्वालांपश्यतिसद्यएवमरणंकालोचितंज्ञानिनाम्॥ १॥

अर्थ–जो रोगी पानीमें, सूर्य्य अथवा चन्द्रमा इनके प्रतिबिंबमें, पूवमें,दक्षिणमें, पश्चिमें, उत्तरमें छिद्र देखे तो क्रमसे छः,तीन, दो, और एक इतने महीने जीवे और सूर्य्य, चन्द्रमाका धुएँकासा वर्ण दीखे तो दश दिन उस प्रतिबिंबमें दक्षिणकी ओर ज्वाला देखे तो तत्काल मृत्यु होय यह कालज्ञान ज्ञानियोंने कहाहै ।

अरुंधतींध्रुवंचैवविष्णोस्त्रीणिपदानि च ।
आयुर्हीनानपश्यन्तिचतुर्थं मातृमण्डलम् ॥ २ ॥

अर्थ–अरुंधती, ध्रुव, विष्णुके त्रिपद (श्रवण नक्षत्र) इनको हीन आयुवाला नहीं देखे और चतुर्थ मातृमडल(कृत्तिकाके तारे) को भी ।

अरुंधतीभवेज्जिह्वाध्रुवोनासाग्रमेवच ॥ विष्णुस्तुभ्रूद्वयोर्मध्येभ्रू-द्वयंमातृमण्डलम् ॥३॥ नासाग्रंभ्रुयुगंजिह्वांमुखंचैवनपश्यति ॥ कर्णघोषंनजानातिसगच्छेद्यममंदिरम् ॥ ४ ॥

अर्थ–अरुंधतीनाम जीभका है नासिकाके अग्रभागका नाम ध्रुव है,

डल है अर्थात् गतायु मनुष्य इनको नहीं देखते नाकका अग्रभाग दोनों भौंह जीभ मुख इनको जो न देखे तथा अपने कानोंका शब्द न सुने सो यमराजके घरको जाय।

अकस्माद्भिभवेत्स्थूलोह्यकस्माच्चकृशोभवेत्। अकस्मादन्यथा-भावेषण्मासैश्चविनश्यति ॥५॥ रसनायाःकृष्णभावोमुखंकुंकु-मसन्निभम् ॥ जिह्वास्पर्शनजानातिदुर्लभंतस्यजीवितम् ॥ ६ ॥

अर्थ—जो मनुष्य अकस्मात् मोटा होजाय और अकस्मात् अर्थात् विनाकारणही पतला होजाय तथा अकस्मात् उलटे भावको प्राप्त होजाय वो रोगी छःमहीनेमें मरे जिसकी जीभ काली होजाय मुख केशरके समान पीला होजाय और जीभ स्पर्शको जाने नहीं उस रोगीका जीना दुर्लभ है।

देशज्ञान।

देशोल्पवारिद्रुनगोजांगलःस्वल्परोगदः ॥
अनूपोविपरीतोस्मात्समःसाधारणःस्मृतः ॥ १ ॥

अर्थ—जिस देशमें अल्प जल, अल्प वृक्ष, अल्प पर्वत होंय, उसको जांगल देश कहते हैं जैसे मारवाडदेश है ऐसे देशोंमें कम रोग होतेहैं, और जिस देशमें बहुत जल बहुत वृक्ष बहुत पर्वत होंय, उसको अनूप देश कहतेहैं। जैसे पूर्वके देश इन देशोंमें रोग बहुत होतेहैं, और जिनमें दोनों देशोंके लक्षण मिलें उसको साधारण देश कहते हैं. जैसे मध्य देशादि।

औषधोंके मानकी परिभाषा।

नमानेनविनायुक्तिर्द्रव्याणांज्ञायते क्वचित्॥अतःप्रयोगकार्यार्थं-मानमत्रोच्यतेमया॥ १॥त्रसरेणुर्बुधैःप्रोक्तस्त्रिंशद्भिःपरमाणुभिः॥ त्रसरेणुस्तुपर्यायनाम्नावंशीनिगद्यते ॥ २ ॥ जालान्तरगतेभानौ यत्सूक्ष्मंदृश्यतेरजः ॥ तस्यत्रिंशत्तमोभागः परमाणुःस उच्यते ॥३॥ षड्वंशीभिर्मरीचिःस्यात्ताभिःषड्भिस्तुराजिका ॥ तिसृभी राजिकाभिश्च सर्षपः प्रोच्यते बुधैः ॥४॥ यवोऽष्टसर्षपैः प्रोक्तो

गुंजास्यात्तच्चतुष्टयम् । षड्भिस्तुरक्तिकाभिःस्यान्माषकौहेमधान्यकौ ॥ ५ ॥

अर्थ-विना मान (तोल)के द्रव्य (औषधी) की युक्ति नहीं जानीजाती इसीसे प्रयोगके कार्यके साधनार्थ मान (तोल) को कहताहूं तीस परमाणुका एक त्रसरेणु, इसको वंशीभी कहतेहैं. जालांतरगत सूर्य्यकी किरणमें जो छोटे २ रजके कण उडते हैं उनके हरएकके तीसवें हिस्सेको परमाणु कहते हैं छः वंशीकी एक मरीची, छः मरीचीकी एक राई, तीन राईका एक सरसों आठ सरसोंका एक यव, और चार यवोंकी एक गुंजा (रत्ती) कहते हैं छः रत्तीका एक मासा इसको हेम और धान्यकभी कहतेहैं ।

माषैश्चतुर्भिःशाणःस्याद्धरणःसनिगद्यते ॥ टंकःसएवकथितस्तद्द्वयंकोलउच्यते ॥ ६ ॥ क्षुद्रभोवटकश्चैवद्रंक्षणस्सनिगद्यते ॥ कोलद्वयंचकर्षःस्यात्सप्रोक्तःपाणिकाबुधैः ॥७॥ अक्षःपिचुःपाणितलंकिंचित्पाणिश्चतिन्दुकम् । बिडालपदकंचैवतथाषोडशिकामताः ॥ ८ ॥ करमध्यंहंसपदंसुवर्णंकवलग्रहम् ॥ उदुम्बरंचपर्य्यायैः कर्षएवनिगद्यते ॥ ९ ॥

अर्थ—चार मासेका एक शाण उसको धरण तथा टंक भी कहतेहैं, दो शाणका एक कोल उसको क्षुद्रभ वटक द्रंक्षण कहते हैं, दो कोलका एक कर्ष कहाता है, उसको पाणिका, अक्ष, पिचु, पाणितल, किंचित्पाणि, तिन्दुक, बिडालपदक, षोडशिका, करमध्य, हंसपद, सुवर्ण, कवलग्रह और उदुम्बर ये भी कर्षके नाम हैं ।

स्यात्कर्षाभ्यामर्धपलंशुक्तिरष्टमिकातथा । शुक्तिभ्यांचपलंज्ञेयं मुष्टिराम्रंचतुर्थिका ॥१०॥ प्रकुंचःषोडशीबिल्वंपलमेवात्रकीर्त्यते ॥ पलाभ्यांप्रसृतिर्ज्ञेयाप्रसृतश्चनिगद्यते ॥ ११ ॥ प्रसृतिभ्यामंजलिःस्यात्कुडवोर्धशरावकः ॥ अष्टमानंचसंज्ञेयंकुडवाभ्यांचमानिका॥१२॥शरावोष्टपलन्तद्वज्ज्ञेयमत्रविचक्षणैः॥

अर्थ—दो कर्षका एक अर्धपल होता है, जिसको शुक्ति तथा अष्टमिकाभी कहते हैं, दो अर्धपलका एक पल होता है, जिसको मुष्टि, आम्र, चतुर्थिका, प्रकुंच, षोडशी, और विल्व भी कहते हैं, दो पलकी एक प्रसृति होती है, जिसको प्रसृत भी कहते हैं, दो प्रसृतिकी एक अंजली, जिसको कुडव, अर्धशराव, अष्टमान कहते हैं, दो कुडवकी एक मानिका जिसको शराव अष्टपल भी कहते हैं ।

शरावाभ्यांभवेत्प्रस्थश्चतुःप्रस्थैस्तथाढकम् ॥ १३॥ भाजनंकंसपात्रंचचतुःषष्टिपलंचतत्॥ चतुर्भिराढकैर्द्रोणः कलशोनल्वणोन्मनौ ॥ १४ ॥ उन्मानश्चघटोराशिद्रोणपर्यायसञ्ज्ञकाः ॥ द्रोणाभ्यांशूर्पकुंभौचचतुःषष्टिशरावकः ॥ शूर्पाभ्यांचभवेद्रोणी वाहो गोणी च सास्मृता ॥ १५ ॥

अर्थ—दो शरावका एक प्रस्थ, चार प्रस्थका एक आढक जिसको भाजन और कंसपात्र भी कहते हैं, इस आढकके चौसठ पल होते हैं, चार आढकका एक द्रोण, जिसको कलश नल्वण उन्मन उन्मान घट राशि भी कहते हैं. दो द्रोणका एक शूर्प और कुम्भ होता है तथा उस शूर्पके चौसठ शराब होते हैं, दो शूर्पकी एक द्रोणी जिसको वाह गोणी भी कहते हैं ।

द्रोणीचतुष्टयंखारीकथितासूक्ष्मबुद्धिभिः ॥ चतुःसहस्रपलिका षण्णवत्यधिकाचसा ॥ १६ ॥ पालनांद्विसहस्रंचभारएकः प्रकीर्तितः ॥ तुलापलशतंज्ञेयासर्वत्रैवैषनिश्चयः ॥ १७॥ माष टंकाक्षबिल्वानिकुडवःप्रस्थमाढकम् ॥ राशिगोणीखारिकेति यथोत्तरचतुर्गुणाः ॥ १८ ॥

अर्थ—चार द्रोणीकी एक खारी, उस खारीके चार हजार छियनावें पल होते हैं दोहजार पलका एक भार होता है, तथा सौ पलकी एक तुला होती है, ऐसे सर्वत्र निश्चय जानना ।

स्थितिर्नास्त्येवमात्रायाः कालमग्निंवयोबलम् ॥ प्रकृतिंदोषदेशौचदृष्ट्वामात्रांप्रकल्पयेत् ॥ १९ ॥ यतोमन्दाग्नयोह्रस्वाहीनसत्त्वा नराः कलौ ॥ अतस्तुमात्रातद्योग्याप्रोच्यतेशास्त्रसमताः ॥२०॥ यवोद्वादशभिर्गौरसर्षपैःप्रोच्यतेबुधैः ॥ यवद्वयेनगुजास्यात्त्रिगुंजोवल्लमुच्यते ॥ २१ ॥

अर्थ-मात्राकी स्थिति नहीं है अर्थात् जो प्रयोगमें मात्रा लिखी हैं उतनीही देनी चाहिये, यह नियम नहीं है, वैद्य काल, अग्नि, अवस्था, बल, प्रकृति, दोष और देह इनको देखकर अपनी बुद्धिसे मात्राकी कल्पना करे क्योंकि इस कलियुगमें मन्दाग्नि, छोटे और हीनपराक्रम मनुष्य हैं इसीकारण उनके निमित्त शास्त्रसंमत मात्रा कहता हूँ बारह सफेद सरसोंका एक यव होता है दो यवकी एक गुंजा (रत्ती) होती है। तीन गुंजाका एक वल्ल होताहै।

माषोगुंजाभिरष्टाभिस्सप्तभिर्वाभवेत्क्वचित् ॥ स्याच्चतुर्माषकैः शाणःसनिष्कष्टंकएवच ॥ २२ ॥ गद्याणोमाषकैःषड्भिः कर्षः स्यादशमाषकः ॥ चतुःकर्षैःपलं प्रोक्तं दशशाणमितंबुधैः ॥ चतुःपलैश्चकुडवः प्रस्थाद्याः पूर्ववन्मताः ॥ २३ ॥

अर्थ-आठ गुंजका एक मासा होताहै कहीं सात गुंजकाभी मास होता है चार मासेका एक शाण होताहै उसको निष्क टंक भी कहते हैं तीन टंकका एक तोला होता है, छः मासेका एक गद्याणक होता है दश मासेका एक कर्ष होता है, चार कर्षका एक पल होता है. उस पलके दश शाण होतेहैं। चार पलका एक कुडव होता है और प्रस्थादिकोंका मान पूर्वोक्त मागध परिभाषाके मानसे जानलेना (पांच पल और साढेसात मासेकी एक छटांक) तीन प्रस्थ और साढेबाईस मासेका पौनपाव होता है।

अथ शारीरक ।

कलाःसप्ताशयाःसप्तधातवः सप्ततन्मलाः ॥ सप्तोपधातवस्सप्त त्वचःसप्तप्रकीर्तिताः ॥१ ॥ त्रयोदोषानवशतंस्नायूनांसंधयस्तथा॥दशाधिकंचद्विशतमस्थांचद्विशतंमतम्॥२॥सप्तोत्तरंमर्मशतं शिराःसप्तशतंतथा ॥ चतुर्विंशतिराख्याताधमन्योरसवाहिकाः ॥ ३ ॥ मांसपेश्यःसमाख्यातानृणांपंचशतंबुधैः ॥ स्त्रीणांचविंशत्यधिकाकण्डराश्चैवषोडश ॥४॥ नृदेहेदशरंध्राणिनारीदेहेत्रयोदश ॥ एतत्समासतःप्रोक्तंविस्तरेणाऽधुनोच्यते ॥ ५ ॥

अर्थ—सात कला, सात आशय, सात धातु, सातही धातुओंके मल, सात उपधातु, सात त्वचा, तीन दोष, नौसौ नाडी, दोसौ दश नाडियोंकी संधि, दोसौ हड्डी, एकसौ सात मर्मस्थान, सातसौ नस, चौबीस रसकी वहनेवाली धमनीनाडी, पांचसौ मांसपेशी हैं. स्त्रियोंके बीस अधिक हैं. सोलह कंडरा पुरुषके देहमें दश छिद्र हैं । स्त्रीके देहमें तेरह छिद्र हैं यह संक्षेपसे शारीरिक कहा है । अब विस्तारसे कहता हूं ।

मांसाऽसृग्मेदसांतिस्रोयकृत्प्लीह्नोश्चतुर्थिका॥पञ्चमीचतथांत्राणां षष्ठीचाग्निधरास्मृता॥६॥रेतोधरासप्तमीस्यादितिसप्तकलामताः।

अर्थ—मांस १ रुधिर २ मेद ३ प्लीह ४ आंतोंकी पांचवीं ५ अग्निधरा ६ कलाहै, और वीर्य्यके धारण करनेवाली सातवीं कलाहै ये सात कलाहैं।

श्लेष्माशयःस्यादुरसितस्मादामाशयस्त्वधः ॥ ७ ॥ ऊर्ध्वमग्न्याशयोनाभेर्वामभागेव्यवस्थितः ॥ तस्योपरितिलंज्ञेयतदधः पवनाशयः ॥ ८ ॥ मलाशयस्त्वधस्तस्माद्वस्तिमूत्राशयस्त्वधः ॥ जीवरक्ताशयमुरोज्ञेयाःसप्ताशयास्त्वमी ॥ ९ ॥ पुरुषेभ्योधिकाश्चान्येनारीणामाशयास्त्रयः ॥ धरागर्भाशयः प्रोक्तः स्तनौ स्तन्याशयौ मतौ ॥ १० ॥

अर्थ—उरमें कफाशयहै उसके नीचे आमाशय है उसके ऊपर नाभि वामभागमें अग्न्याशय है उसके ऊपर तिल है यह प्यासका स्थान है उसके नीचे पवनाशयहै पवनाशयके नीचे मलाशय है मलाशयके नी

मूत्राशय है उरमें जीवरक्ताशय है ये सात आशय हैं पुरुषोंसे स्त्रियोंके तीन आशय अधिक हैं एक गर्भाशय और दो स्तनाशय ।

रसाऽसृङ्मांसमेदोस्थिमज्जाशुक्राणिधातवः ॥
जायन्तेऽन्योन्यतःसर्वेपाचिताःपित्ततेजसा ॥ ११ ॥

अर्थ-रस, रुधिर, मांस, मेदा, अस्थि (हड्डी) मज्जा और शुक्र ये सात धातु पित्तके तेजसे पाचन होकर अन्योन्य प्रकट होतेहैं ।

जिह्वानेत्रकपोलानांजलंपित्तंचरंजकम् ॥ कर्णविड्रसनादन्तक-क्षमेद्रादिजंमलम् ॥ १२ ॥ नखनेत्रमलंवक्त्रस्निग्धत्वंपिडिका-स्तथा ॥ जायन्तेसप्तधातूनांमलान्येतान्यनुक्रमात् ॥ १३ ॥

अर्थ-जीभ, नेत्र और कपोल इनमें जो जल है वो रस धातुका मल है, रंजकपित्त रुधिरका मल है कानका मैल मांसका मलहै, जीभ, दांत, बगल और लिंग इसमें जो मल होताहै वो मेदका मल है, नख, केश, रोम ये हड्डीके मल हैं नेत्रमें जो कीचड आती है और मुखकी चिकनाई यह मज्जा धातुका मलहै. मुखकी मुहांसे शुक्रका मल है ।

स्तन्यंरजश्चनारीणांकालेभवतिगच्छति॥शुद्धमांसभवस्नेहोव-सा सापरिकीर्तिता ॥१४॥ स्वेदोदन्तास्तथाकेशास्तथैवौजश्च सप्तमम् ॥ ओजःसर्वशरीरस्थंस्निग्धंशीतंस्थिरंसितम्॥१५॥ सोमात्मकंशरीरस्थम्बलपुष्टिकरंमतम् ॥ इतिधातुमलाज्ञेया एतेसप्तोपधातवः ॥ १६ ॥

अर्थ-रसकी उपधातु स्त्रियोंके दूध होता है, रुधिरकी उपधातु रज, यह स्त्रियोंके समय पाकर होताहै, नष्ट भी होजाताहै, चरबी मांसकी उप-धातुहै, जिसको वसा कहतेहैं स्वेद मेदाकी उपधातु है, दांत अस्थिकी उपधातु है, केश मज्जाधातुकी उपधातु हैं और रज शुक्र धातुकी उपधातु है, ओज सर्व देहमें रहता है चिकना है शीतल है स्थिर है सफेद है यह ओज सोमात्मक शरीरमें स्थित होकर देहमें बल और पुष्टता करता है ये सात धातुओंसे सात उपधातु पैदा होती हैं ॥

ज्ञेया तिलकालकजन्मभूः ॥ १७ ॥ श्वेतातृतीयासंख्याता स्थानंचर्मदलस्य च ॥ ताम्राचतुर्थीविज्ञेयाकिलासश्चात्र भूमिका ॥ १८ ॥ पंचमीवेदनी ख्यातासर्वकुष्ठोद्भवस्ततः ॥ विख्यातालोहितासष्ठीग्रंथिगण्डापची स्थितिः ॥ १९ ॥ स्थूलात्वक्सप्तमीख्याताविद्रध्यादेःस्थितिस्तुसा॥ इतिसप्तत्वचःप्रोक्ताःस्थूलात्रीहिद्विमात्रया ॥ २० ॥

अर्थ—प्रथम त्वचा अवभासिनीहै, सो सिध्मकुष्ठकी भूमिहै दूसरी त्वचा लोहिताहै,सो तिलकालककी जन्मभूमिहै, तीसरी श्वेता जो चर्मदल कुष्ठकी जगह है, चतुर्थ ताम्रा सो किलासकुष्ठकी ठौर है, पांचवीं वेदनी है सो सम्पूर्ण कुष्ठोंकी जगह है, छठवींकाभी नाम लोहिता सो गांठ गंडमाला अपचीआदि रोगोंकी जगहहै, सातवीं त्वचाका नाम स्थूला है सो विद्रधि आदि रोगोंकी जन्मभूमिहै, ये सात त्वचा कहीहैं इन सातोंका मुटान दो व्रीहिकी बराबरहै ॥ इति शारीरक ॥

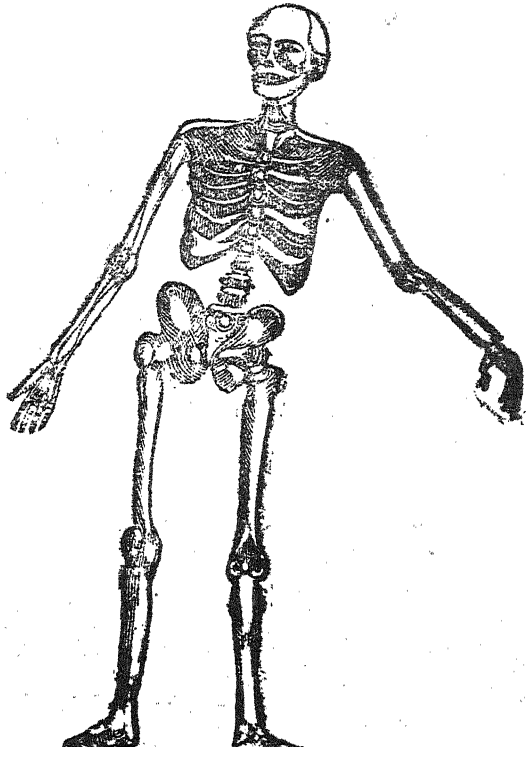

अथ पाकाधिकारः ।

चिकित्सायांद्वयंसारंपाकविद्यारसायनम् ॥
पाकावलेहभेदःस्यात्समृदुः सघनः परः ॥ १ ॥

अर्थ—चिकित्सामें दो वस्तु सार हैं, एक पाकविद्या, दूसरी रसायन-विद्या इनमें नम्र और कठिनके भेदसे पाक दो प्रकारका है, अर्थात् जिसकी चासनी कुछ पतली होय उसको अवलेह कहते हैं और जिसकी चासनी कड़ी करके जमाया जावे उसको पाक कहते हैं ।

तत्रादौ शिक्षा ।

काष्ठौषध्यःपृथक्पेष्याःसुगंधादिपृथग्विधाः ॥ सम्पेष्यवस्त्र-संपूतमुभयंस्थापयेद्भिषक् ॥२॥द्राक्षाश्रीफलबादामप्रभृतिःस्या-द्यदात्रतु ॥ तन्नपेष्यंभिषग्वर्यैःकिन्तुभूरिविखंडयेत् ॥३॥ खसतं-डुलचारस्यबीजानितुयथास्थितिः ॥ पाकद्राक्षादिचारस्यमज्जा तन्मात्रयाधिकम् ॥४॥ पाकानुसारतोग्राह्यं भक्षणेतत्सुखावहम् ॥

अर्थ—पाककर्ता वैद्यको उचितहै कि, काष्ठादि औषधियोंको न्यारी पीसे और सुगंधादि जैसे लौंग इलायची जावित्री आदिको न्यारी पीसे, पीछे इनको कपडछान करि न्यारी न्यारी रक्खे और दाख, गिरीका गोला, बदाम इत्यादिक वस्तुओंको पीसे नहीं किन्तु बहुत छोटे छोटे टुकड़े करडाले. खसखस, चिरोंजी इत्यादिको ज्योंकी त्यों रहनेदे न पीसे न कतरे ये चीज पाकके अंदाजसे डालनी चाहिये तो खानेमें पाक श्रेष्ठ बने ।

पाकेजातेक्षिपेत्तत्रकाष्ठौषधिभवंरजः ॥ ५ ॥ दर्व्याविघट्टयेत्स-म्यक्कचिदुष्णेसुगंधिच ॥ मुहुर्विघट्टयन्पश्चाद्राक्षादीन्प्रक्षिपे-न्मुहुः॥६॥काश्मीरंघृतसंपिष्टंकिंचिद्घृष्टंविमिश्रयेत् ॥ अहि-फेनंक्षिपेत्क्षीरेसंपिष्टंपाककर्मणि॥७॥ देयाशक्राशनामृष्टाचूर्णि-तामात्रयाथवा ॥ पुनःसंघट्टयेत्सर्वमेकीभावंयथाव्रजेत् ॥८॥ ज्वालाग्निंवर्जयेद्वैद्यःप्रक्षेपसमयेध्रुवम् ॥ अन्यथाहीनवीर्याणि-

अर्थ—जब पाककी चाशनी तयार होजाय उस समय पूर्वोक्त पीसी हुई काष्ठौषधि डालकर करछीसे चलाताजाय जब सब काष्ठादिक औषधि मिलजायँ और चाशनी कम गर्म रहे तब सब सुगंधादि वस्तुओंको डाले फिर चलावे तदनन्तर दाख गिरी आदि मेवा डाले पीछे केशरको घृतमें पीस उसमें मिलादेवे कदाचित् पाकमें अफीम डालनी होवे तो दूधमें पीसकर डाले. और भाँग डालनी होवे तो भूनकर और उसका चूर्ण कर-डालै पीछे इनको करछीसे चलावे जिससे सब मिलजावें और यह बात भी वैद्यको याद रहे कि, जिस समय औषधि डाले उस समय अग्निको न देय क्योंकि औषधि डालनेके समय अग्नि देनेसे औषधि हीनवीर्य्य होजाती है।

अनुक्तमपिपाकादौधात्वादिप्रक्षिपेत्सुधीः ॥ चंद्रनाभ्यादितद्वच्च यथाविभवमर्पयेत् ॥ १०॥ नाभ्यांजितेतुसंस्थाप्यासंपुटेतन्म-हौषधम् ॥ यदिस्याद्राजदृग्योग्यमितिवैद्यवराविदुः ॥ ११ ॥

अर्थ—पाकमें नहीं भी कहे धात्वादि चन्द्रोदय, वंग, अभ्रक आदि अपने अंदाजसे जरूर डाले भीमसेनी कपूर और कस्तूरी आदि शब्दसे अम्बर सोने, चांदीके वर्क आदिभी डालने चाहिये तदनन्तर उसको किसी पात्रमें निकाललेवे, कतली जमानी होवे तौ किसी थालीमें उतार-कर जमावे उनमें सोने या चांदीके कोईसे तबक लगाकर कतली काटकर रखलेवे तो पाक राजा लोगोंके खाने योग्य बने और अवलेह बनानी होय तो चासनी कुछ पतली रक्खे और लड्डू बनाने होवें तो कतलीके समान चासनी बनावे परन्तु उसको कडाहीमें ही कौंचासे चलाकर गाढी करलेवे।

सुगंधितैलाचितभाजनेवैस्थाप्योऽवलेहः किलराजयोग्यः॥व-र्षासु वैद्याःप्रवदन्तिपाकलेहादिकंनोबहुतत्प्रकुर्य्यात् ॥ १२ ॥ मितंकृतं द्वित्रिदिनान्तरालंस्थाप्यंसुघर्मेह्यवलेहकादि ॥ वर्षा-ऋतौयत्नविवर्जिततद्भवेत्तुजुष्टंकिलजंतुकीटैः ॥ १३ ॥

अर्थ—सुगंधवाले और चिकने पात्रमें अवलेहको रखना चाहिये वर्षा-ऋतुमें पाकका बनाना श्रेष्ठ है और ऋतुमें अवलेह, कदाचित् वर्षाऋतुमें [illegible] तो थोडी बनावे बहुत न बनावे और उसको बना-

कर दो तीन दिन धूपमें रखकर पीछे उसके मुखको यत्नपूर्वक बाँधे कि, जिसमें कोई जीव न जासके और धूल आदि न पडे इसप्रकार बांधकर अच्छे हवादार मकानमें रखदेवे क्योंकि वर्षाऋतुमें विनायत्नके रखनेसे जीव आदि पडजातेहैं।

पाकेग्राह्यासिताश्वेताविमलागुणकारिणी ॥ समलांशोधयेद्यत्नाद्यावन्मलविनिर्गमः ॥ १४ ॥ समलांचसितांप्लाव्यकटाहे विरचेत्सुधीः॥प्रक्षिपेत्सर्वतस्तत्रगोदुग्धंसजलंमुहुः ॥ १५ ॥ वस्त्रपीतकयोगेनतदूर्ध्वस्थंमलंहरेत् ॥ एवंपुनःपुनः कुर्याद्यावन्मलविनिर्गमः ॥ पश्चात्पाकत्वमानीयप्रक्षिपेदौषधानितु ॥१६॥ इतिप्रोक्तंमयाकिंचित्पाकशासनमुत्तमम् ॥ अन्यत्सर्वंभिषग्वर्य्यैर्लोकतोज्ञेयमेवतत् ॥ ॥ १७ ॥

अर्थ—पाक बनानेको सफेद और उत्तम खांड (चीनी) लेनी चाहिये यदि उसमें मैल होय तो उसका शोधन इसप्रकार करे मैलवाली खांडको कडाहीमें चढाकर अंदाजसे उसमें जलं डालकर औटावे जब कुछ औट चुके तब पानी मिला दूध उसमें चारों तर्फ डाले जब मैल चासनीके ऊपर आजाय तब एक पात्रपर दो लकडी रखकर उसमें छोटीसी डलिया रखकर उसमें बारीक कपड़ा बिछाकर पूर्वोक्त कडाहीमेंसे उस रसको निकालकर डलियामें डाले तो वो रस उस डलियामेंसे टपक टपक कर नीचेके पात्रमें गिरे उसको हलवाई बक्खर कहते हैं उस खांडका मैल उस डलियामें रहजाताहै पीछे उस बक्खरकी चासनी करे उसमें पिसीहुई औषधी डाले यह मैंने कुछ पाक बनानेकी विधि कहीहै और विशेष विधि लोकसे अर्थात् पाककर्ता हलवाई आदिसे जाननी चाहिये ॥ इति पाकाधिकार ॥

बृहत्पूगीपाक ।

पूगंदक्षिणदेशजंदशपलोन्मानंभृशंकर्त्तयेत्तत्क्षिप्तंजलयोगतोमृदुतरंसंकुटयचूर्णीकृतम् ॥ तच्चूर्णंपटशोधितंवसुगुणेगोशुद्धदु-

अर्थ–दक्षिणी सुपारी दशपल (१६० टांक) लेवे उनको कतरकर जलमें भिगोकर कूटडाले पीछे सुखाकर उस चूर्णको कपडछान करे तदनंतर सुपारीके चूर्णसे अठगुने दूधमें उस चूर्णको डालकर खोवा करे पीछे उस खोवाको उत्तम घृतमें भूनकर रक्खे पीछे मिश्री ८०८ टांक लेय ।

पक्कंतज्ज्वलनात्क्षितिंप्रतिनयेत्तस्मिन्पुनः प्रक्षिपेदद्यात्तत्तदुदाहरामिबहुलाहृष्ट्वावरात्सहितात्॥एलानागबलाबलासचपलाजातीफलालिंगिताजातीपत्रकमत्रपत्रकयुतंतच्चत्वचासंयुतम् ॥२॥
विश्वावीरणवारिवारिदवरांवांशीवरीवानरीद्राक्षासक्षुरगोक्षुराथमहतीखर्जूरिकाक्षीरिका ॥ धान्याकंसकसेरुकंसमधुकंशृंगाटकजीरकंपृथ्वीकाथयवानिकावरटिकामांसीमिसिमेथिका ॥३॥

अर्थ–मिश्रीकी चासनी करै जब पाकके योग्य चासनी होजाय तब इतनी औषधि और डाले सो मैं लिखताहूं–इलायची, नागबला (गुलसकरी) बला (बारि आरी) पीपल, जायफल, शिवलिंगी, जावित्री, पत्रज, दालचीनी, सोंठ, उशीर, सुगंधबाला, नागरमोथा, हरड, बहेडा, आंवला, वंशलोचन, शतावर, कौंचके बीज, तालमखाने, दाख, गोखरू, महती, (उत्तत्ती) खजूर इति पूर्वदेश प्रसिद्ध छुहारे, खिरनी, धनियां, कसेरू, महुवा, सिंघाडे, जीरा मगरेल, अजमायन, बरउ, जटामांसी सौंफ, मेथी ।

कन्देष्वत्रविदारिकाथमुशलीगंधर्वगंधातथाकर्चूरंकरिकेशरंसमरिचंचारस्यबीजानिच ॥ बीजंशाल्मलिसंभवंकरिकणाबीजंचराजीवजंश्वेतंचन्दनमत्ररक्तमपिचश्रीसंज्ञपुष्पैःसमम् ॥ ४ ॥

अर्थ–विदारीकंद, मूसली, असगंध, कचूर, नागकेशर, कालीमिरच, चिरोंजी, सेमरके बीज, गजपीपल, कमलगट्टा, सफेदचन्दन, लालचन्दन, धायके फूल ये सब बराबर लेवे ।

सर्वंचेतिपृथक्पृथक्पलमितंसंचूर्ण्यतत्रक्षिपेत्सूतंवंगभुजंगलोहगगनंसंपाचितान्वेच्छया ॥ कस्तूरीघनसारचूर्णमपिचप्रातंय-

थाप्रक्षिपेत्पश्चादस्यतुमोदकान्विरचयेद्बिल्वप्रमाणांस्तथा॥५॥ तान्भुक्त्वाचसदायथानलबलंभुंजीतनाम्लेरसंपूर्वस्मिन्नशितेगते परिणतेप्राग्भोजनाद्रक्षयेत्॥नित्यंश्रीरतिवल्लभाख्यकमिमंयः पूगपाकंभजेत्सस्याद्वीर्यविवृद्धवृद्धमदनोवाजीवशक्तोरतौ॥६॥ दीप्ताग्निर्बलवान्बलीविरहितोहृष्टःसुपुष्टः सदा वृद्धोयोपियुवेव सोपि रुचिरः पूर्णेन्दुवत्सुंदरः॥ ७॥

अर्थ—ये सब औषधि न्यारी न्यारी एक एक पल लेय सबको कूट पीस पूर्वोक्त चासनीमें गेरे, तदनतर चन्द्रोदय, बंग, नागेश्वर, मार, अभ्रक येभी अनुमान मुवाफिक वैद्य डाले और कस्तूरी, कपूर, अंबर आदिभी अनुमान मुवाफिक डालकर इसके लड्डू बेलकी बराबर बनावे ये लड्डू मनुष्यकी अग्निको बलाबल देखकर भोजनके पहले देवे और खटाई और बादी का परहेज रक्खे तो यह (रतिवल्लभपूगीफलपाक) नामसे विख्यात वीर्य्यको बढावे कामदेवको प्रबल करे स्त्रियोंसे भोग करनेमें घोड़ेकेसमान पराक्रम करे अग्निको प्रबल करे बली हृष्ट पुष्ट होय, यदि वृद्ध मनुष्य भी खाय तो उसमें तरुण पुरुषकासा पराक्रम होय चन्द्रमाके सदृश सुन्दर होय॥ इतिबृहत्पूगीपाक॥

कामेश्वर मोदक।

एतस्मिन्नतिवल्लभेयदिपुनःसम्यक्खुरासानिकाधत्तूरस्यचबीजमर्ककरभःपाथोधिशोषस्तथा॥ १॥ सन्मजूफलकंतथाखसफलंत्वक्चापिनिक्षिप्यतेचूर्णार्द्धंविजयातथासहिभवेत्कामेश्वरोमोदकः॥ २॥

अर्थ—इसी रतिवल्लभ पूगीपाकमें खुरासानी, अजमायन, धत्तूरके बीज अकरकरा, समुद्रशोष, माजुफल, खसका फल, तज ये डाले और सब चूर्णसे आधी भांग डाले तो यह कामेश्वर मोदक बने॥ इति कामेश्वरमोदक॥

छोटा सुपारीपाक।

हेमाम्भोधरचन्दनंत्रिकटुकंजातीप्रियालंकुडूमज्जात्रित्रिसुगंधजी-

कर्षद्वयंहैयंगोः कुडवोसितार्द्धतुलयाधात्रीवराद्यञ्जली ॥ १ ॥ पूगस्याष्टपलान्युलूखलवरेसंकुटयचूर्णीकृत क्षीरस्याढकसंयुतं कृतमिदंमन्दाग्निनातंपचेत् ॥ १ ॥

अर्थ—नागरमोथा, चंदन, सोंठ, मिरच, पीपल, जाविञी, चिरौंजी, बेरकी मिंगी, तज, इलायची, तालीसपत्र, कालाजीरा, सफेदजीरा, सिंघाडेकी गिरी, वंशलोचन, जायफल, लौंग, धनियां, कर्पूर दालचीनी ये सब वस्तु बराबर प्रत्येक आठ २ टंक लेनी सबको कूट पीस कपडछान कर रख छोडे पीछे दक्षिणकी चिकनी सुपारी १२८ टंक ले गौका नवीन घृत ६४ टांक सफेदमिश्री ८०८ टांक लेवे पीछे सुपारियोंको खरलमें डाल कूटकर कपडछान कर १२४ टांक दूधमें डाल कर खोवा करे पीछे उस खोवाको घृत मिलाकर भूने पीछे पूर्वोक्त सुपारीपाककी विधिसे इस पाकको बनाय लेवे ।

खादेत्प्रातरिदंज्वरामयहरंदाहंचपित्तंजयेन्नासाऽऽस्याऽक्षिगुदंप्रवाहरुधिरंयद्रोमकूपच्युतम् ॥२॥ यक्ष्माक्षीणबलंक्षताग्निविलयंछर्दिंप्रमेहार्शसांरेतोवृद्धिकरंरसायनपरंगर्भप्रदंयोषिताम्॥ मूत्राघातविनाशनंबलकरंवृद्धाङ्गपुष्टिप्रदं पूगीपाकमिदंप्रशस्तदिवसेकार्यंचग्राह्यंबुधैः ॥ ३ ॥

अर्थ—इस सुपारीपाकको प्रातःकाल सेवन करनेसे इतने रोग नष्ट होवें ज्वर, दाह, पित्तके रोग, नेत्ररोग, मुखरोग, नासिकारोग, गुदाके रोग, रुधिरका गुदाद्वारा गिरना, रोमकूपोंसे रुधिरका निकलना, क्षयसे क्षीणता, उरःक्षत, मंदाग्नि, वमन, प्रमेह बवासीर और वीर्य्यको बढावे रसायन है स्त्रियोंको गर्भकर्ता, मूत्रघातको नाश करे, बल करे, वृद्ध देहको पुष्ट करे, इस सुपारीपाकको वैद्य शुभदिनमें बनावे और शुभदिनमेंही खानेको देवे ।

विजयापाक ।

विजयायारसंशुद्धंतुलामात्रंप्रदापयेत् । क्षीरंगव्यंतुलार्द्धन्तुशनैर्मृद्वग्निनापचेत् ॥१॥ घनीभूतंततद्दत्त्वायखंडायाःपलविंशतिः । [illegible]ंकलकंतथा ॥ २ ॥ जातीफलंजाति-

पत्रीह्यश्वगंधापुनर्नवा । नागार्ज्जुनीस्वगुप्तानांसबलानांपलार्द्धकम् ॥ ३ ॥ सर्वसंचूर्ण्यसमिश्र्यपलार्द्धगुटिकाभवेत् ॥

अर्थ—भांगका रस १६-१६ टांकले और दूध तथा घृत ८०८ टांक लेने चाहिये इन सबको मिलाकर धीरे २ मन्दाग्निसे पाचन करै जब गाढा होजाय तब चूल्हेसे उतार लेय पीछे मिश्री बीसपलकी चासनी कर उसमें पूर्वोक्त भांगके रसका खोवा डाले और ये औषधी और डाले चातुर्जात, लौंग, सोंठ, मिरच, पीपल, अकरकरा, जायफल, जावित्री, असगंध, सोंठ, दुद्धी, कौंचके बीज, बाला, (वारिआरा) ये सब औषधि आठ २ टांक लेय कूट पीस कपडछान कर मिलाय लड्डू बनाय लेवे ॥

प्रातःप्रातःप्रभुक्ताहिधातुपुष्टिबलप्रदा ॥ ४ ॥ प्रमेहव्याधिशमनी सर्वातीसारनाशिनी ॥ श्वासंकासंतथाषांढ्यंस्त्रीणांदुष्प्रदरं तथा। नाशयत्येववृष्याशुवीर्य्यस्तंभविधायिनी ॥ ५ ॥

अर्थ—प्रातःकाल इस बिजयापाकको सेवन करे तो धातुपुष्टि होय बल करे प्रमेह जाय सब प्रकारके अतीसार, श्वास, खांसी, नपुंसकता स्त्रियोंके प्रदरादिरोगोंको नाशकरे और वीर्य्यका स्तंभन करताहै॥इति विजयापाक॥

स्त्रीयोग्य सौभाग्यशुंठी ।

प्रस्थत्रयशुद्धमहौषधस्यविपाचयेद्द्रव्यघृतेसमेच। चतुर्गुणःक्षीरसमंचखण्डंसुशुद्धताम्रायसजेकटाहे॥ १॥ प्रत्येकजातीफलत्रैफलेनजातीद्वयं धान्यशताह्वकेन ॥ एलोपकुल्याघनवालकानां द्राक्षाविदारीघनसारकंच ॥ २ ॥ खर्जूरिकाश्चैवपलार्द्धमात्रं पलाष्टकंशीर्षफलविदध्यात्॥ पादांशंदत्त्वाऽश्मजितायसंचद्विपादयुक्तंमिसिचारुबीजम् ॥३॥ त्रिवृत्पलाष्टौशुभमेकपिंडीगंधाढ्यमाधुर्यविमिश्रिताच ।

अर्थ—घाडकी सोंठ पांचसेरको पांचसेर गौके दूधमें भूने पीछे उस सोंठका बीससेर गौके दूधमें खोवा करे तदनंतर बीससेर मिश्रीकी चासनी करे उसमें उस खोवाको डाले और ये औषधि और डाले सो लिखताहूं जाय-

बाला, दाख, विदारीकंद, भीमसेनीकपूर, छुहारे ये सब औषधि आठ२ क लेनी चाहिये, नारियलकी गिरी १२८ टंक लेनी शिलाजीत ३२ टंक रौंजी ६४ टंक निसोथ १२८टंक इन सबको कूट पीस उसी पाककी ासनीमें मिलावे तथा उसमें सुगंधवाली वस्तु और मिलाकर अनुमान वाफिक गोली बनालेवे ।

सौभाग्यशुण्ठी ।

शम्भोरुमाप्रीतिकराचशुंठीब्रह्मायतोऽश्रूयतनारदेन॥शंभोःकृता वक्षसिकालिकायास्थिरंबलंकान्तिदृढंकरोति ॥१॥ सौभाग्य-मेधास्मृतिमिष्टवाक्यंसौभाग्यसौंदर्यमृदुंचगात्रम् ॥ काठिन्य-योनिस्तनबिम्बदेशमशीतिवातान्कफरोगविंशतिम् ॥ २ ॥ चत्वारिंशत्पित्तभवाश्चयेचअष्टौज्वरानेकविमिश्ररोगाः॥अष्टा-दशामूत्रगताश्चरोगानासाक्षिकर्णमुखशीर्षकेतु ॥ ३ ॥ एतन्मात्रानुसारेणार्द्धमात्रयाचतुर्थांशेनकार्यम् ।

अर्थ–शिव पार्वतीके प्रीतिकार्ता यह सुहागसोंठ नारदने ब्रह्माके मुखसे सुनी। श्रीमहादेवजीने बनाकर पार्वतीको सुनाई यह स्थिर बल कांति और दृढताको करतीहै सुन्दरता, बुद्धि, स्मरण तथा मिष्टवाक्यको करतीहै सुभग और नम्र देहको करै योनि और स्तन इनको कठोर करे अस्सी प्रकारकी वादीको और अठारह प्रकारके मूत्ररोगोंको बीस प्रकारके कफरोग, चालीस प्रकारके पित्तके रोग, अठारह प्रकारके ज्वर और अनेक मिश्रित रोग, श्वास रोग, खाँसी रोग, क्षीणता आदि और नाक, नेत्र, कान, मुख, शीसके रोग ये सब इसके खानेसे दूर होवें इसीमात्राके अनुसार इसमेंसे वैद्य आधी और चौथाई भी बनालेवे ॥

आम्रपाक ।

पक्कचूतरसोद्रोणःपादःस्याच्छुद्धगंधकः ॥ घृतमर्द्धंततोयोज्यं चतुर्थांशांशनागरम् ॥ १॥तदर्द्धंमरिचंदेयंतदर्द्धंपिप्पलीमता॥ तोयं खण्डसमंदेयंसर्वमेकत्रकारयेत् ॥२ ॥ पाचयेन्मृन्मयेभा-ण्डेकाष्ठदर्व्याप्रचालयेत ॥ चूर्णान्येषांततोदद्यान्मात्रापलच-

तुष्टयम् ॥ ३ ॥ ग्रंथिकंमुस्तकचव्यंधान्याकंजीरकद्वयम् ॥ शुंठीभकेशरंत्वक्च तालीसन्तुपृथक्पृथक् ॥४ ॥ सिद्धशीतेच मधुनः प्रस्थंतत्सर्वमेकतः॥सन्नीयकर्तृकांकृत्वाशुभेभाण्डेनिधापयेत् ॥ ५ ॥

अर्थ—उत्तम पके और मीठे आमका रस १ द्रोण (१६३८४टंक) लेवे और रसकी चौथाई खांड लेवे और खांडसे आधा गौका घृतलेवे, घृतसे चौथाई सोंठ लेवे और सोंठसे आधी मिर्च और मिर्चसे आधी पीपल लेनी चाहिये इसमें जल खांडके समान डाले, इन सबको एकत्र करके स्वच्छ मिट्टीके पात्रमें पाक करे, लकड़ीकी करछीसे चलाता जाय, पीछे इसमें इतनी औषधियोंका चूर्ण चार २ पल डाले सो लिखते हैं पीपलामूल, नागरमोथा, चव्य, धनियां, दोनों जीरे, सोंठ, नागकेशर, दालचीनी, तालीसपत्र इन सबको अलग २ पीसकर उस पाकमें डालनी चाहिये जब पाक बनचुके तब उसको उतारकर कुछ शीतलकर उसमें शहद एक प्रस्थ (१०२४ टंक) डाल सबको मिलाकर पाक जमा दे शीतल होनेपर कतली कतरकर उत्तम पात्रमें रखदे ।

भोजनादौततःखादेत्पलमात्रप्रमाणतः ॥ हन्त्यरोचकमत्युग्रं कासंश्वासंतथाक्षयम् ॥६ ॥ पीनसंचप्रतिश्यायंप्लीहानंयकृदामयम्॥अम्लपित्तास्रपित्तंचतालुनाशंस्वरामयम् ॥७॥सर्वदुर्नामरोगंचपांडुरोगंचकामलाम् ॥ हृद्रोगंचशिरःशूलमानाहमतिदारुणम् ॥ ८ ॥ कंडूर्तिंशीतपित्तंचप्रणाशयतिवेगतः ॥ संसेव्यंभेषजंह्येतद्वृद्धोपितरुणायते ॥ धीरःसर्वगुणोपेतश्शतायुष्यमनामयम् ॥ ९ ॥ मृतगर्भाचयानारीयाचगर्भोपघातिनी ॥ सापिसूतेसुतंतद्वन्नारायणपरायणम् ॥ १० ॥ वंध्यापिलभतेगर्भंवृद्धापितरुणीभवेत् ॥ तुरंगइवसंहृष्टोमत्तवारणविक्रमः ॥ ११ ॥ गच्छेत्कंदर्पदर्पाढ्योरागवेगाकुलःपुमान्॥ स्त्रियाःशतंसहस्रंवानयेत्ताश्चसुखंपुमान् ॥१२॥ सदाभेषजसंसे-

वा ॥ १३ ॥ वृष्यंचमेध्यमायुष्यंसर्वपापप्रणाशनम् ॥ ग्रहयक्षपिशाचघ्नमपस्मारघ्नमुत्तमम् ॥ १४ ॥ बल्यंरसायनंश्रेष्ठं श्रीखण्डाम्रकसंज्ञकम् ॥१५॥ इतिश्रीखण्डाम्रपाकः ॥

अर्थ—इस आम्रपाकको एक पलके प्रमाण प्रातःकाल भोजनके पूर्व खानेसे अतिप्रबल, अरुचि, खांसी, श्वास, क्षई, पीनस, सरेकमा, तापतल्ली, यकृत्के रोग, अम्लपित्त, रुधिरपित्त, तालूनाश, स्वरभंग, खोटे आमवालेरोग, पांडुरोग, कामला, हृद्रोग, शिरका दर्द, आनाह, खुजली, शीतपित्त इतने रोगोंका नाश करे, इसके खानेसे वृद्ध मनुष्य तरुणसा होजाय धीर सर्वगुणयुत सौवर्षकी आयुवाला निरोगी होय. जिसके मरा हुआ बालक होय और जिसका गर्भ गिरजाता होय, ऐसी स्त्रीभी नारायणपरायण पुत्रको प्रकट करे बंध्याकेभी गर्भप्राप्ति होय, वृद्धा स्त्री तरुणताको प्राप्त होवे, घोडा और मस्तहाथीकासा पराक्रम होय, कामदेवके वेगसे व्याप्त मनुष्य हजार स्त्रियोंसे गमन करे, इस पाकका नित्य सेवन करे तो पुरुष पवनके समान पराक्रमी होय, यह आम्रपाक भार्गवऋषिसे ब्रह्मदेवने कहा है, यह वृष्य है पवित्र, आयुष्यकर्ता, सर्वपापनाशक, ग्रह, भूत, पिशाच, मृगीरोग इन सबका नाशकरे बलकर्ता रसायन इसको श्रीखंडाम्र कहते हैं ॥ इति ॥ श्रीखंडाम्रपाक ॥

बृहन्मुसलीपाक ।

मुसलीकंदचूर्णन्तुक्षीरेऽष्टगुणितेपचेत् ॥ प्रस्थंचतत्रदातव्यंचूर्णमेषांपृथक्पलम्॥ १॥व्योषंत्रिजातहवुषाशताह्वाशतमूलिका॥ अजाजीदीप्यकश्चैवचित्रकोगजपिप्पली ॥२॥ यवानीग्रंथिकं धात्रीशुंठीगोक्षुरधान्यकम् ॥ अश्वगंधाभयामेघःसिंधुशोषोलवंगकम्॥३॥जातीफलंजातिपत्रीनागकेशरकेक्षुरः ॥ बलाचातिबलानागबलामर्कटबीजकम् ॥ ४ ॥ यष्टीशाल्मलिनिर्यासःशृङ्गाटांबुजबीजकम्॥त्वक्क्षीरिकाबालकश्चकंकोलःकल्हकंहिमम् ॥५॥ लुंचितानांतिलानांतुप्रस्थार्द्धंमिहयोजयेत्॥भस्मसूतपलार्द्धन्तुपलमभ्रकलोहयोः॥६॥ सर्वाद्विगुणखंडस्यपाकंकृत्वाप्रयोजयेत् ॥ भैषज्यानांगणंसर्ववटीःकुर्य्याद्विचक्षणः॥७॥

अर्थ—सफेदमुसलीका चूर्ण १ प्रस्थ आठगुणे दूधमें औटावे पीछे ये औषधी जुदी २ एक २ पल लेवे, सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिजात, (इलायची, दालचीनी, पत्रज) हाऊबेरा, सौंफ, शतावर, जीरा, अजमोद, चित्रक, गजपीपल, अजमायन, पीपलामूल, आंवले, कचूर, गोखरू, धनियां, असगन्ध, हरड, नागरमोथा, समुद्रशोष, लौंग, जायफल, जावित्री, नागकेशर, तालमखाने, बला, (खरैंटी) अतिबला, नागबला, (गंगेरन) कौंचके बीज, मुलहटी, सेमलका गोंद, सिंघाडे, कमलगट्टा, वंशलोचन, सुगंधवाला, कंकोल, अकरकरा, कपूर और धुलेहुए तिल, आधाप्रस्थ (५१२ टंक) चन्द्रोदय दोकर्ष और अभ्रकसार एकपल इन सब औषधियोंकी दुगनी खांड लेकर पूर्वोक्तविधिसे इस पाकको बनाना चाहिये, इसमें ये सब औषधी मिलाकर गुटिका बनावे ।

अर्द्धमुष्टिमितास्तास्तुशुभेहनिविचक्षणः ॥ इष्टदेवंसमभ्यर्च्य खादेदेकामहर्निशम् ॥ ८ ॥ ततः किंचित्पयःपेयंखादेद्वटकमुत्तमम् ॥ मंदाग्निगुल्ममेहार्शःश्वासकासव्रणक्षयान् ॥ ९ ॥ कामलांपाण्डुरोगंचशुक्रक्षैण्यंचदृक्क्षयम् ॥ वातरोगंपित्तरोगंकफरोगतथैवच ॥ १० ॥ षांढयंचप्रदरंस्त्रीणांशुक्रदोषमुरःक्षतम् ॥ रजोदोषंमूत्रकृच्छ्रंमूत्राघातंतथाश्मरीम् ॥ ११ ॥ मेहदोषंतथानाहकार्श्यदौर्बल्यमुल्बणम् ॥ वातरक्तंचहन्त्येषमुसलीकन्दलेहकः ॥ १२ ॥ अग्निकृत्कान्तिकृत्तेजोवृद्धिकृत्कामवृद्धिकृत् ॥ अश्विभ्यांनिर्मितोयोगोवलीपलितनाशनः ॥ १३ ॥ क्षीणशुक्रान्नरान्दृष्ट्वानारीश्चक्षीणवीर्यकाः ॥ तालमूल्यवलेहोयं निर्मितोधरणीतले ॥ १४ ॥ नास्त्यनेनसमोयोगोविशेषाच्छुक्रवृद्धये ॥ १५ ॥ इतिबहन्मुसलीकंदावलेहः ॥

अर्थ—इसमेंसे अर्द्धमुष्टीके अनुमान शुभदिनमें अपने इष्टदेवका पूजन कर एक गुटिका खाय, तो इतने रोग नष्ट होवें मन्दाग्नि, गोला, प्रमेह, बवासीर, श्वास, खाँसी, व्रण, क्षयी, कामला, पाण्डुरोग, वीर्य्यकी क्षीणता, मन्द दृष्टि, वात, पित्त, कफ इनके रोग, नपुंसकता, स्त्रियोंके प्रदर आदि वीर्य्यके दोष

क्षत, रजोदोष, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, पथरी, मेहदोष, अफारा, शता, निर्बलता, वात, रक्त, यह मुशली अवलेह अग्नि प्रबल करे न्ति करे तेजको बढावे कामदेवको बढावे, यह योग अश्विनीकुमारने ीपलित नाशनार्थ कहाहै, क्षीणवीर्यवाले पुरुषको देख और क्षीणवीर्य-ाली स्त्रियोंको देखकर यह तालमूली (मुशली) अवलेहको पृथ्वीमें र्माणकरा इसके समान वीर्यके बढानेवाला योग पृथ्वीमें दूसरा नहीं ॥ इति बृहन्मुशलीपाक ॥

छोटा मुशलीपाक।

मुसल्याश्च पलान्यष्टौतुलाक्षीरेविपाचयेत ॥ सर्प्पर्द्विकुडवंदेयं सिताकर्षशतंतथा॥ १॥गुदंपलचतुष्कंचमज्जात्रीणिपलत्रयम् ॥ जातीफलंलवंगंचकुंकुमंचैवतुंवरम् ॥ २ ॥ मांसीमकर्टबीजा-निचातुर्जातकटुत्रयम् ॥ जार्तीपत्रकरंभाचप्रत्येकपिचुमात्र-कम् ॥ ३ ॥ द्विकर्षमोदकंकुर्यादेकैकभक्षयेन्नरः ॥

अर्थ—मुशली ८ पल (१२८ टंक) दूध दश सेर औटावे, पीछे इसमें उत्तमघृत २० पैसैभर डालकर भूने पीछे सफेदचीनी, ४०० टंक और बबूलका गोंद ४६ टंक और गरी बादम चिरौंजी, ये तीनों १६ तोले जाय-फल, लौंग, केसर, चव्य, तुंबरू, छड, कौंचके बीज दालचीनी, छोटीइला-यची, नागकेशर, पत्रज, सोंठ, मिरच, पीपल, जावित्री, केलिकन्द ये प्रत्येक औषधि चार २ टंक लेनी पूर्वोक्त प्रकारसे पाक बनाकर इसमें ८ टंकके अनुमान लड्डू बनावे नित्य एक लड्डू खाय तो इतने रोग जायँ ॥

धातुक्षीणंमदक्षीणं क्षीणवीर्यंतथानलम् ॥४॥ कासश्वासारुचिं पाण्डुदौर्बल्यंविषमज्वरम् ॥ षण्ढोरमयतेनारीशतवानात्रसं-शयः ॥ ५॥ शुष्कगात्रंभवेत्पुष्टंमनोज्ञंकान्तिवर्द्धनम् ॥ वात-व्याधिषुसर्वेषुहितोयंनैवसंशयः ॥६॥ प्रमेहशुष्कगात्रत्वंवली-पलितनाशनम् ॥ मुसल्यादिरयंपाकोवंध्याभवतिपुत्रिणी ॥७॥

अर्थ—धातुक्षीण, बलक्षीण, वीर्य्यक्षीण, मन्दाग्नि, खांसी, श्वास, अरुचि, पांडु, दुर्बलता, विषमज्वर, नपुंसकता जाय शुष्कदेह मोटा होय कान्तिको

बढावे, और सुन्दरता देय, सब वात व्याधियोंमें यह हित है, प्रमेह लटा हुआ देह गुलजट, सफेदबाल इन सबको नष्ट करे यह मुशलीपाक है, इसके खानेसे वंध्यास्त्री पुत्रवती होती है।

नारियलपाक।

कनकोमुसलीकन्दोयमकोहिखरस्तथा॥उटींगणंकौंचबीजंचूर्णयित्वापृथक्पृथक्॥१॥कार्पासमज्जादुग्धेनक्षीरेवैसप्तभावनाः॥ सूर्य्यातपेशुष्कचूर्णंनालिकेरन्तुपूरयेत्॥२॥ द्वात्रिंशद्गुणदुग्धेन विपाच्यमृदुवह्निना॥चूर्णयित्वाघृतेपाच्यभेषजैःसहचूर्णितः३॥ चतुर्जातलवंङ्गंचजातीपत्रंफलंतथा ॥ पलार्द्धंखंडकुडवंग्रहीत्वानुपिबेत्पयः॥४॥वातरोगप्रमेहांश्चबलहानिंक्षयंतथा॥ वृद्धो युवायतेकामीनालिकेरस्यपाकतः॥ ५॥

अर्थ—धतूरेके बीज, सफेदमुसली, खुरासानी, अजमायन, अहिखराके बीज, उटंगनके बीज, कौंचके बीज इन सबको बराबर लेवे और पृथक् २ कूट पीसकर चूर्ण करे कपासके बीजोंको पीस दूधकी सात भावना देय पीछे उसको धूपमें सुखाकर नारियलके गोलामें भरदेवे तदनन्तर गोलाको बत्तीस गुणे दूधमें मन्दाग्निसे पचावे जब दूधका खोवा होजाय, तब उसको घीमें भूनकर सब औषधी मिलावे और ये औषधी और डाले, इलायची, नागकेशर, पत्रज, लौंग, जावित्री, जायफल, ये सब औषधि आठ २ टंक लेय और ६४ टंक खांड लेय, सबको मिलाकर पाक बनावे, इस पाकके खानेके पीछे दूध पीवे तो वातके विकार, प्रमेह, बलहानि दोष ये सब नष्ट होंय, वृद्ध मनुष्य तरुण होय, यह नारियलपाक है।

गोखरूपाक।

प्रस्थंगोक्षुरसूक्ष्मचूर्णमृदितंदुग्धाढकेपाचितं जावित्रीचलवंगलोध्रमरिचैःकर्पूरकंशाल्मली॥ अब्दंशोषसुवर्णबीजरजनीधा-

तत्तुल्याचसितातदर्धविजयाप्रस्थंद्वयंगोघृतंप्रोक्तंवैद्यवरेणनिर्मि-
तमिदंमन्दाग्निनापाचयेत् ॥ प्रातःसेव्यमिदंसुमानवमितं
व्याधेश्चविध्वंसनमंशांशौर्विहितंप्रमेहशमनंसङ्गेंगनाद्रावकम् ॥
क्षीणेपुष्टिकरंक्षयेक्षयहरंवाजीकरंकामिनामेतद्गर्जितमानिनीमृ-
गारिपुर्वातार्तिजित्त्वौषधम् ॥ २ ॥

अर्थ--गोखरू २५६ टंकका चूर्णकर १०२४ टंक दूधमें औटावे, ावित्री, लौंग, लोध, मिरच, भीमसेनी कपूर, नागरमोथा, समुद्रशोष, धतूरेके ीज, हलदी, आंवले, पीपल, केशर, नागकेशर, इलायची, पत्रज, अफीम, ौंचके बीज, अजमायन इन सब औषधियोंको एक २ टंक लेकर इन ब औषधियोंके बराबर मिश्री लेवे, और सब औषधियोंसे आधी भांग ेय, गौके ५१२ टंक घृतमें सब औषध युक्त खोआको भूनकर खांडकी वासनी करे पूर्वोक्त रीतिसे पाक बनावे, इसको प्रातःकाल सेवन करे तो संपूर्ण रोग नष्ट होवें, ववासीर, प्रमेह, क्षीणता, स्त्रीके संग करनेसे स्त्री द्रवे, क्षयीका नाश करे, कामियोंको वाजीकरणता करता है, यह गोखरूपाक मानिनी स्त्रियोंके मानरूप मृगको जीतनेमें सिंहरूप है यह वातके जीतने-वाली औषधि है ।

दूसरा गोखरूपाक ।

गोकंटकंसदलमूलफलंगृहीत्वासंकुट्टितंपलशतंक्वथितंचतोये ॥
पादावशेषसलिलेचपलानिदत्त्वापंचाशतं परिपचेदथशर्करा-
याः ॥ १ ॥ तस्मिन्घनत्वमुपगच्छतिचूर्णितानिदद्यात्पलद्व-
यमितानिसुभेषजानि ॥ शुंठीकणामरिचनागदलत्वगेलासज्जा-
तिकोषककुभत्रपुषीफलानि ॥ २ ॥ वंशीपलाष्टकमिहप्रणिधा-
यनित्यंलेह्यं सुसिद्धममृतंपलसंमितंतत् ॥ हंत्याशुमूत्रपरिदा-
हविबंधशुक्रकृच्छ्राश्मरीरुधिरमेहमधुप्रमेहान् ॥ ३ ॥

अर्थ--पत्ता और जडसहित गोखरू लेकर सौ पल जलमें औटावे, जब चौथाई जल बाकी रहे तब पचास पल मिश्री डालकर पचावे, जब पक-कर गाढी होजाय तब इन औषधियोंका चूर्ण डाले, सोंठ, पीपल, मिरच,

नागकेशर, तज, इलायची, जायफल, अकरकरा, ककडीके बीज, वंशलोचन ये सब औषधि ३२ टंक लेय, सबोंको मिलाकर पाककी विधिसे पाक बनावे यह अमृतके समान है, इसका नित्य सेवन करे तो मूत्रका दाह, मूत्रका रुकजाना, वीर्य्यके विकार, मूत्रकृच्छ्र, रुधिरका निकलना, प्रमेह और मधुमेहादिकोंका नाश करता है।

कौंचपाक।

पचेद्विप्रस्थंकपिकच्छुबीजमुष्णोदकेयामचतुष्टयन्तु ।तान्घर्षयेद्वस्त्रदृढेसुगाढं यावद्भवेन्निर्मलनिस्तुषंच॥१॥छायाविशुष्कंच तदेवचूर्णंक्षीरंक्षिपेद्द्रोणसपादशेषम्॥दद्याद्घृतंप्रस्थयुगंचतस्मिन्विपाचयेन्मन्दहुताशनेन ॥ २ ॥ आकल्लकंनागरदेवपुष्पंगोक्षीरकंकुंकुमहंसपाकम् ॥ सारंकुबेरंघनतुर्य्यजातंचीणीकबाबाबलबीजयुक्तम् ॥३॥ वंशोद्भवावंगमृताभ्रकंचद्राक्षासितासर्वसमाप्रदेया ॥ पलार्द्धमानंतुसदैवभक्षेदम्लन्तदन्तःपरिवर्तनीयम्॥४॥ येक्षीणशुक्राःप्रबलप्रमेहास्तेषामिदंवीर्य्यविवर्द्धनंच॥ पुष्टिंबलंबुद्धिबलंचवृद्धंनिहन्तिसर्वानपिवातरोगान् ॥ ५ ॥

अर्थ—दो प्रस्थ (५१२ टंक) कौंचके बीज चार प्रहर गरम पानीमें औटावे पीछे उनको मोटे वस्त्रमें खूब रगडे जबतक निस्तुष और स्वच्छ न होंय, पीछे उनको छायामें सुखाकर चूर्ण करे, उस चूर्णको सवा द्रोण दूधमें औटावे और उसमें चार प्रस्थ घृत डाले और मन्द २ अग्निसे पचावे, पीछे अकरकरा, सोंठ, लौंग, गोखरू, केशर, हींगलू, सार, अजवायन, मोथा, तज, तमालपत्र, इलायची, नागकेशर, कबाबचीनी, बलबीज, वंशलोचन, वंग, मरा अभ्रक, दाख ये सब औषधि बराबर लेवे और इन सब औषधियोंके बराबर सफेद खांड लेवे. पीछे पाक बनाकर ८ टंकके अनुमान नित्य खाय और खट्टे और वादीसे परहेज करे तो वीर्य्यकी क्षीणता प्रबल प्रमेहवाले मनुष्यके वीर्य्यकी वृद्धि करे और सब वातके रोग नष्ट होवें।

पीपलपाक।

पिप्पलीप्रस्थमादायक्षीरंचैवचतुर्गुणम् ॥ अर्द्धाढकंघृतंगव्यंसि-

ाचैवतथाढकम् ॥ १ ॥ पचेन्मंदाग्निनासम्यग्यथाभागंभवे-
ततः ॥ शीतेभूतेक्षिपेत्तत्रचातुर्जातंपलंपलम् ॥ २ ॥ षोडशप-
लप्रमाणंखादिरंगुन्दमेवच ॥ पाचितंगव्यहव्येननिक्षिपेत्तस्य
मध्यतः ॥ ३ ॥ योजयेन्मात्रयायुक्त्याशेषधात्वग्निकृन्नृणाम् ।
बल्यंवृष्यंतथाहृद्यं धातुपुष्टिकरंनृणाम् ॥ ४ ॥ जीर्णज्वरक्षय-
श्वासप्लीहपादरुजापहम् ॥ पिप्पलीनामपाकोयंसर्वरोगहरः
परः ॥ ५ ॥

अर्थ–पीपल २५६ टंक लेकर चौगुने दूधमें औटावे और इसमें गौका
घ ५१२ टंक डाले जब खोवा होजाय तब १०२४ टंक मिश्रीकी
चासनी कर उसमें खोवाको डालकर पाक बनालेवे जब कुछ शीतल हो
जाय तब इलायची, पत्रज, नागकेशर, तज एक २ पल डाले और खैरका
गोंद १६ पल गौके घीमें भूनकर डाले इस प्रकार पाक बनाकर बल
अबल देखकर इसकी मात्रा खानेको देवे तो सब धातु और जठराग्निको
बढावे, बल करे, वृष्य है, हृदयको हित है, जीर्णज्वर, क्षय, श्वास,
पपतिल्ली, पांडुरोग इन सबको यह पीपलपाक नष्ट करताहै ॥

दूसरा पीपलपाक ।

अर्द्धद्रोणशुभेदुग्धेकणाप्रस्थार्द्धमेव च ॥ दर्वीसंघट्टसांद्रेतुख-
ण्डंप्रस्थद्वयान्विते ॥ १ ॥ वानरीमुशलीकन्दंचातुर्जातकरोच-
ना ॥ करभोदेवकुसुमंमस्तकीकरहाटकम् ॥ २ ॥ ग्रंथिकंना-
गरंधान्यंसटीखदिरसारकम् ॥ लोहंप्रत्येककर्षैकमेतानेतान्वि-
चूर्णयेत् ॥ ३ ॥ घनसारार्द्धकर्षेणशीतलेक्षौद्रकौडवम् ॥ क्षिपे-
त्कणावलेहोयंप्रमेहाबलताक्षयान् ॥ ४ ॥ कासंश्वासंज्वरंहि-
क्कांछर्दिंमूर्च्छांभ्रमंजयेत् ॥ ५ ॥

अर्थ–पीपल १२८ टंक लेकर गौके ८१९२ टंक दूधमें औटावे जब
गाढा होजाय तब मिश्री ५१२ टंक लेकर चासनी कर पूर्वोक्त पीपल
संयुक्त खोवाको डाले और इन औषधियोंको और डाले कौंचके बीज,
मूसली, नागकेशर, तज, छोटी इलायची, पत्रज, वंशलोचन, कशेरू,

लौंग, मस्तंगी, अकरकरा, पीपलामूल, सोंठ, धनियाँ, कचूर, खैरसार, सार इन सब औषधियोंको सोलह २ मासे डाले, भीमसेनी कपूर आठ मासे डालकर अवलेह बनालेवे जब शीतल हो तब उत्तम शहद ६४ टंक डाले तो यह पीपलावलेह बनकर तैयार होवे, यह प्रमेह, निर्बलता, क्षयी, खांसी, श्वास, हिचकी, वमन, मूर्च्छा, भ्रम इन सब रोगोंको दूर करे ॥

पेठापाक ।

खण्डान्कूष्माण्डकानामथपचनविधिच्छिन्नशुष्काज्यपक्वांस्त-स्मिन्खण्डेविपक्वेसमरिचमगधाशुंठ्यजाजीत्रिगंधी ॥ लेहोयं बालवृद्धानिलरुधिरकृशस्त्रीप्रसक्तिक्षतानांतृष्णाकासार्शपित्त-श्वसनगुदरुजाच्छर्दितानां च शस्तम् ॥ १ ॥

अर्थ—पका पेठा सेरभर लेकर उसको छील कतरकर चूनेके पानीमें धोवे पीछे स्वच्छ जलमें धोकर तदनन्तर उसको गोदकर गौके नवीन घृतमें परिपक्व करे जब पकजाय तब मिश्रीकी चासनी कर अवलेह बनावे और इसमें इन औषधियोंको और डाले, कालीमिरच, पीपल, सोंठ, जीरा, तज, पत्रज, इलायची यह कूष्मांडावलेह बालक, वृद्ध मनुष्योंके रोग दूर करे, वादी और रुधिरके विकार, कृशता, स्त्रियोंके सेवनसे जो क्षीण होगया हो, प्यास, खांसी, बवासीर, पित्तके रोग, श्वास, गुदाके रोग और छर्दिरोग इनको नाश करे ॥

दूसरा पेठापाक ।

छालिंनिकृष्यकूष्माण्डखण्डानिपरिकल्पयेत् ॥ कांजिकेन च धौतानिपुनरेवजलेनच ॥ १ ॥ पश्चात्क्षीरस्यप्रस्थेनकल्पयेत्पुनरेवच ॥ १ ॥ घृतेनपुनरेतानि पाचयेत्सुविधानतः ॥ २ ॥ यदा मधुनिभानिस्युस्तदाशर्करयायुतम् ॥ निधायतत्रचेमानि भेषजानि प्रकल्पयेत् ॥ ३ ॥ पिप्पलीशृङ्गवेराभ्यांद्वेपलेमरिचानि च॥ जीरकेद्वेतथाधात्रीत्वगेलापत्रकंतथा ॥ ४ ॥ शृंगा-

प्रियालुतालमूलींचलवङ्गंगुन्द्रमेवच ॥५॥ पलार्द्धेनविगृह्णीया-च्चूर्णंतत्रविनिक्षिपेत् ॥ दर्व्याविघट्टयेत्पश्चाल्लेहीभूतंयदाभवेत्॥ ॥ ६ ॥ घृतेनापिविलिह्याच्चज्ञात्वातत्रबलाबलम् ॥

अर्थ—पके पेठेके टुकडे कर उसका छिलका और बीज दूरकर काँजीके धूनेके पानीसे धोकर पीछे शुद्ध पानीसे धोवे तदनन्तर उन टुकडोंको गोंद कर पांचसेर दूधमें औटावे जब खोवा होजाय तब आठ पल नवीन घृतमें उस खोवाको भूने जब भूनकर शहदके वर्ण सदृश होजाय तब १०० पल मिश्रीकी चासनीकर उसमें उस खोवाको डाले और ये औषधी और डाले पीपर, अदरख, मिरच टंक ३२, सफेदजीरा, कालाजीरा, आँवले, तज, छोटी इलायची, पत्रज, सिंघाड़े, कसेरू, पीपलामूल, चित्रक टंक ८, प्रियंगुफूल टंक ८, मूसली टंक ८, लौंग टंक ८, खैरका गोंद टंक ८ लेवे और जिनकी तोल नहीं कही उनको १६ सोलह २ टंक लेवे सबको कूट पीसकर उसमें डालदेवे और कडछीसे चलादेवे जब अवलेह तैयार होजावे तब बलाबल देखकर इसकी मात्रा देवे और इसके ऊपर घी पीवे।

रक्तपित्तंज्वरंकासंकामलांतमकंश्रमम् ॥ ७ ॥ छर्द्दितृष्णाज्वर-श्वासपाण्डुरोगक्षयक्षयम् ॥ अपस्मारंशिरोर्त्तिंचयोनिशूलंच दारुणम् ॥ ८ ॥ योनिरक्तप्रवाहंचज्वरंमन्दाग्नितांहरेत् ॥ वृद्धो युवायतेकामीवंध्याभवतिपुत्रिणी ॥ ९॥ अवीर्य्योवीर्य्यमाप्नोति भवेत्स्त्रीणांप्रियोनरः॥एषकूष्माण्डकोलेहःसर्वरोगनिवारणः १०

अर्थ—रक्तपित्त, ज्वर, खांसी कामला, तमकश्वास, भ्रम, छर्द्दि, प्यास, श्वास, पांडुरोग, क्षयी, मृगी, शिरका दर्द, योनिशूल, योनिसे रुधिरका गिरना, ज्वरसे प्रगट मन्दाग्नि, वृद्ध पुरुष तरुण और कामी होय, वंध्या पुत्रवती होय, वीर्यहीन वीर्यवाला होय, इसको खानेवाला पुरुष स्त्रियोंको प्रिय होय यह कूष्मांडावलेह सर्वरोगनाशक है।

तीसरा पेठापाक।

कूष्माण्डकान्पलशतंसुच्छिन्नंनिष्कुलीकृतम्॥पचेत्ततोघृतेप्रस्थे पात्रेताम्रमयेदृढे॥यदामधुनिभःपाकस्तदाखण्डंचनिःक्षिपेत्१॥

अर्थ—पके पेठेका गूदा शुद्धकर १०० पल लेकर २५६ टंक घृतमें डालकर तांबेके पात्रमें भूने, जब शहदकासा वर्ण होजाय, तब उसमें मिश्रीकी चासनी मिलाकर पाक बनावे और पूर्वोक्त औषधि भी डाले।

चतुर्थ पेठापाक।

निष्कुलीकृतकूष्माण्डखण्डान्पलशतंपचेत्॥ निक्षिप्यद्वितुलानीरमर्द्धशिष्टंचगृह्यते ॥ १ ॥ तानिकूष्माण्डखण्डानिपीडयेद्दृढवाससा ॥ आतपेशोषयेत्किंचिच्छूलाग्रैर्बहुशोविधेत् ॥ २ ॥ क्षिप्त्वाताम्रकटाहेचदद्याद्दृषपलंघृतम्॥ तेनकिंचिद्भर्जयित्वापूर्वोक्तंतज्जलंक्षिपेत्॥३॥ खण्डंपलशतंदत्त्वासर्वमेकत्रपाचयेत् ॥

अर्थ—पके पेठेको छील उसके बीज निकालकर, शुद्धकर १०० पल लेवे उसको दो तुला जलमें चढाकर औटावे, जब आधा जल रहे तब उतार कर मोटे कपडेमें रखकर निचोड डाले, पीछे धूपमें सुखाकर तदनंतर कांटेसे उन टुकडोंको गोंद डाले पीछे तांबेकी कडाहीमें चढ़ाकर उसमें १२८ टंक घी डालकर भूने जब कुछ भुनजाय तब पूर्वोक्त जलको डाले और १०० पल मिश्री डाल सबको एकत्र कर पाक बना लेवे और इसमें पूर्वोक्त औषधियां भी डाले ॥

असगंधपाक।

पूर्वंकृत्वाश्वगंधायाश्चूर्णंदशपलानिच॥ तदर्द्धंनागरंचूर्णंतस्यार्द्धा पिप्पलीशुभा ॥ १ ॥ मारिचानांपलंचैकंसूक्ष्मंचूर्णन्तुकारयेत् ॥ त्वगेलांपत्रपुष्पंचएकैकन्तुपलंपलम् ॥ २ ॥ तुलार्द्धंमाहिषंदुग्धं दुग्धस्यार्द्धंचमाक्षिकम् ॥माक्षिकार्द्धंघृतंगव्यंखण्डादशपलानिच ॥३॥पयःखण्डाज्यमाक्षीकंचत्वार्येकत्रकारयेत्॥कटाहेमृन्मयेक्षिप्त्वापाचयेन्मृदुवह्निना४ कृशानुंज्वालयेत्तावद्यावदुत्कलितंभवेत्॥अश्वगंधादिकंचूर्णंकिंचिद्दुग्धेनघोलयेत्॥५॥पूर्वंकथितदुग्धे-

यज्जातंतण्डुलाकारंतावन्निःपात्रमाचरेत्॥पयोयुक्तंघृतंदृष्ट्वातावदुत्तारयेत्ततः ॥ ७ ॥

अर्थ–प्रथम १० पल असगंध लेकर उसका चूर्ण करे और असगंधसे आधी सोंठका चूर्ण करे. और सोंठसे आधी पीपलोंका चूर्ण ले और एक पल काली मिरचका चूर्ण लेवे.तज,छोटीइलायची, पत्रज,लोंग ये औषधि क २ पल लेवे. भैंसका दूध पांच सेर और दूधसे आधा शहद और शहदसे आधा गौका घृत १० पल मिश्री पीछे दूध, मिश्री, घृत, शहद चारोंको मिलाकर मिट्टीके बरतनमें डाले मंद मंद अग्निसे पाचन करे और जब तक उफान न आवे तबतक अग्नि देवे और जब उफान आजावे तब पूर्वोक्त असगंध सोंठ आदिके चूर्णको थोडे दूधमें घोलकर पूर्वोक्त दूधमें मिलादेवे. और उसको फिर पचावे जब दूध कलछीसे लगने लगे तब चातुर्जात(इलायची आदि) को डाले जब चावल समान भिन्न २ होजाय तबतक पक करे, जब घृत और दुध दोनों मिलजायँ तब उतारकर इन औषधियोंको और डाले ।

ग्रंथिकजारकंच्छिन्नांलवङ्गंतगरन्तथा ॥ जातीफलमुशीरंचवालुकंमलयोद्भवम् ॥ ८ ॥ श्रीफलांभोरुहंधान्यंधातुकींवंशरोचनाम् ॥ धात्रीखदिरसारंच घनसारंतथैवच ॥ ९ ॥ पुनर्नवाजगन्धेचहुताशनशतावरी ॥ मात्रागद्याणकाचैवद्रव्याणामेकविंशतिः ॥ १० ॥ सूक्ष्मचूर्णंपुराकृत्वायोगेह्यस्मिन्विनिक्षिपेत्॥ पश्चात्सुशीतलं कृत्वास्निग्धभाण्डेनिधापयेत् ॥ ११ ॥ पलार्द्धमपिभुंजीत यद्दच्छाहारभोजनम् ॥ कासंश्वासंतथाहन्याज्जीर्णंवातशोणितम् ॥ १२ ॥ प्लीहामयंचमन्दं च आमवातंच दुर्जयम् ॥ शोफंशूलंच वातार्द्धंपाण्डुरोगंचकामलाम् ॥ १३ ॥ ग्रहणीगुल्मरोगंचअन्यान्वातकफोद्भवान् ॥ विकाराविलयंयान्तियथासूर्य्योदये तमः ॥ १४ ॥ एकमासप्रयोगेणवृद्धःसंजायतेयुवा ॥ मन्दाग्नीनांहितं बल्यंबालानांचांगवर्द्धनम् ॥ १५ ॥

स्त्रीणांचकुरुतेपुष्टिंप्रसवे स्तन्यवर्द्धनम् ॥ यावत्स्तनभवेत्स्तो कंतावद्दुग्धयुतंभवेत् ॥ १६ ॥ क्षीणानांचाल्पवीर्याणांहितंका- माग्निदीपनम् ॥ सर्वव्याधिहरंश्रेष्ठंयोगंसर्वोत्तमंविदुः ॥१७॥

अर्थ-पीपलामूल, जीरा, गिलोय, लौंग, तगर, जायफल, खस, नेत्रवाला, दन, नारियलकी गिरी, नागरमोथा, धनियां, धायके फूल, वंशलोचन, ांवले, खैरसार, कपूर, सांठकी जड़, अजमोदा, चित्रक, शतावर इन क्कीस औषधियोंको छः छः मासे लेवे और चूर्णकर उसमें मिलाकर ीतल करे पीछे उसको चीनी आदि चिकने बरतनमें भरकर रखदेवे. इस- से आधे पलके अनुमान भक्षण करे और यथेच्छ भोजन करे. यह इतने ाग नष्ट करता है. खांसी, श्वास, अजीर्ण, वातरक्त, तापतिल्ली, आमवात, ूजन, शूल, बादी, बवासीर, पांडुरोग; कामला, संग्रहणी, गोला और जो ातकफसे प्रगट रोगहैं उनको नष्ट करे जैसे सूर्योदयसे अंधकार नष्ट होतेहैं क महीना खानेसे वृद्ध मनुष्य भी तरुणताको प्राप्त होता है. मंदाग्निवालेको रम हित है. बलकर्ता बालकोंके अंगको पुष्ट करता है स्त्रियोंके प्रसवमें ध और देहको पुष्ट करे. जबतक स्तन छोटे होवे तबतक दूधसे परिपूर्ण हें. क्षीण और अल्पवीर्यवाले पुरुषको हित है. कामदेव और अग्निको दीपन रता है, सकल व्याधियोंका हर्ता सर्वोत्तम योग है.

अफीमपाक ।

आकल्लकंकेशरदेवपुष्पंजातीफलंभृङ्गसहंसपाकम्॥एतानिकुर्वी- तसहानिविद्वान्मूलार्द्धभागंक्षिपनागफेनम्॥ १॥क्षीरेणफेनंपरि- पच्यबद्धामूलात्सितांषड्गुणमानयोग्याम्॥ विमर्द्यकुर्याद्वटिकां निशायांमुखेकृताकामयतेशतानि ॥ २ ॥ आसेवनंयःप्रकरो- ति नित्यंदृढोन्नतांगः सचमानवःस्यात् ॥ समस्तमातंगबली सकामी व्रजन्तिरोगाःक्षयजाश्चसर्वे ॥ ३ ॥

अर्थ—अकरकरा, केशर, लौंग, जायफल, भाँग, शिंगरफ सबसे आधी

हांडीमें शेरभर दूध भरे पीछे अफीमको किसी वस्त्रमें बांध उस हांडीमें अधर लटकादेवे, नीचे अग्नि बाले जब दूध गाढा होजावे तब उस पोटलीको

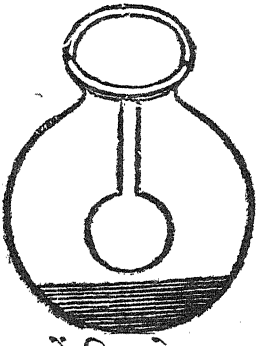

निकाल लेवे पीछे उसे उस पाकमें मिलावे. इस पाकमें सब औषधियोंसे द्वः गुनी मिश्री मिलाकर सबका मर्दन कर चार २ मासेकी गोलियां बनावे रात्रिके समय इस गोलीको मुखमें राखे तो सौ सौ स्त्रियोंसे संभोग करनेकी सामर्थ्य होय. दृढदेह हाथीकासा बल महाकामी और सम्पूर्ण क्षीणता आदि रोग नष्ट होवें ॥

अगस्त्यहरीतकी।

द्विपंचमूलेभकणात्मगुप्ताभार्ङ्गीसटीपुष्करमूलविश्वा ॥ पाठामृताग्रंथिकशंखपुष्पीरास्नाभ्यपामार्गबलायवासान् ॥ १ ॥ द्विपालकान्यस्ययवाढकंचहरीतकीनांचशतंगुरूणाम् ॥ द्रोणेजलस्याढकसंयुतेवाक्वाथेकृतेपूतचतुर्थभागे ॥ २ ॥ पचेत्तुलांशुद्धगुडस्य दत्त्वा पृथक्सतैलंकुडवंघृतंच ॥ चूर्णन्तुतावन्मगधोद्भवायादेयंचतस्मिन्मधुशीतसिद्धम् ॥ ३ ॥ रसायनंकल्पमथोविलेहयाद्वेचामयीनित्यमथाशुहन्यात् ॥ तद्राजयक्ष्माग्रहणीप्रदोषं शोफाग्निमांद्यंस्वरभेदकंच ॥ ४ ॥ पांडामयंश्वासशिरोविकारान् हृद्रोगहिक्काविषमज्वरांश्च ॥ मेधाबलोत्साहगतिप्रदोवैहरीतकीपाकपतिर्वरिष्ठः ॥ ५ ॥

अर्थ—दशमूल, गजपीपल, कौंचके बीज, भारंगी, कचूर, पुहकरमूल, सोंठ, पाढ, गिलोय, पीपलामूल, शंखपुष्पी, (शंखाहूली) रासन, चित्रक, ओंगा मंगेरन, जवासा इन सब औषधियोंको दो दो पल लेवे, बडीहरड

१०० पानी ३६० पल अर्थात् २७ सेर ९ पैसे १ टंक लेवे पीछे उन हरडोंको उस पानीमें औटावे जब जलका चतुर्थांश रहे तब उतार लेवे. पीछे १० सैर गुड २० पल पानीमें औटावे ४ पल तेल ४ पल घृत ४ पल पीपलका चूर्ण पीछे पूर्वोक्त गुडमें हरड डाले और तैलादिक मिलावे जब शीतल होजाय तब ४ पल शहद डाले. इलायची, नागकेशर, पत्रज और तज ये चारों औषधि एक २ पल डाले. यह रसायन है. इनमेंसे दोहरड कल्कसमेत नित्य प्रातःकाल खाय तो राजयक्ष्मा, संग्रहणी, सूजन, मन्दाग्नि, स्वरभेद, पांडुरोग, श्वास, मस्तकरोग, हृदयरोग, हिचकी, विषमज्वर इनको नाश करे. बुद्धि बल उत्साह इनको बढ़ावे, चलनेकी शक्तिको देय, इस श्रेष्ट हरडपाकको अगस्त्य ऋषिने निर्माण कियाहै ॥

मधुपक्कहरीतकी ।

सुपक्वपथ्यापलपंचकंचमूत्रेगवांप्रस्थमितेविपाच्यम्॥प्रस्थेपुनः कांजिकदुग्धतक्रे पक्त्वातातोनिःकुलिकाविधेया ॥१॥ व्योषं जवानीकुटजस्यबीजंमुस्ताजलंदाडिममम्लवेतसम् ॥ सधातुकीपुष्पमजाजियुग्मंकणाजटामोचरसंसबिल्वम् ॥२॥ सौवर्चलंसैंधवमश्मवल्कंजवाम्रमज्जातिविषाचपाठा ॥ लवंगजातीफलतुर्यजातान्येतानितुल्यानिविचूर्णितानि ॥ ३ ॥ कपित्थमाण्डूरमयोदशांशासमस्तचूर्णार्द्धमितासिताच ॥ एतैश्चपथ्यापरिपूरणीया सूत्रेणयुक्तापरिवेष्टनीया ॥४॥ स्थाल्यांततस्तक्रमधोनिधाय तृणानिमुक्त्वोपरितांविमुच्य ॥ मन्दाग्निनायाममथोविपाच्यविहायसीतामधुनिक्षिपेच्च ॥ ५ ॥ सासेव्यमानाग्रहणीप्रमेहश्वासापहा अग्निकरासवृष्या ॥ पांडामवातापहराचपुष्टिप्रदायकामध्वभया प्रदिष्टा ॥ ६ ॥

इति मधुपक्कहरीतकी ।

अर्थ-पकी बडी हरड ५पल लेवे, उनको गौके मूत्र प्रस्थभरमें औटावे

औट जावै तब उतारकर उनकी गुठली निकालडाले, पीछे सोंठ, मिरच, पीपल, अजवायन, इन्द्रयव, नागरमोथा, हाऊबेर, अनारदाना, अमलबेंत, धावडाके फूल, जीरासफेद, जीराकाला, पीपल, जटामांसी, मोचरस, बेल, गिरी, काला नोंन, सेंधानोंन, पाषाणभेद, आमकी गुठली, जामुनकी गुठली, अतीस, पाढ, लौंग, जायफल, इलायची, नागकेशर, तज, पत्रज इन सबको बराबर लेवे. कैथ, मंडूर, दशांश लेवे, सब चूर्णसेआधी मिश्री लेवे इन सबको कूट पीस चूर्णकर उन हरडोंमें भरे पीछें उन हरड़ोंको डोरेसे बांध देवे, पीछे मिट्टीके पात्रमें छाछ भरकर हरडोंको बांधकर उसमें लटका देवे पीछे मन्दाग्निसे उनको पचावे जब पकजावें तब उतारकर शीतलकर शहदमें डुबोदेवे. इनके खानेसे संग्रहणी, श्वास, खांसी, प्रमेह दूर होवें और जठराग्निको बढावे वृष्यहै पांडुरोग आमवात नष्ट होवे पुष्टिकर्त्ता यह मधुपक्कहरीतकी है, इसी प्रकार आंवलेका पाक बनाना।

आमलापाक।

शृंगीतामलकीफलत्रिकबलाच्छिन्नाविदारीसटीजीवतीदशमूलचन्दनघनैर्नीलोत्पलैलावृषैः॥ मृद्वीकाष्टकवर्गपौष्करयुतैःसार्द्धंपृथक्पालकैरंबुद्रोणशतानिपंचविपचेद्धात्रीफलानामतः॥ १॥ उद्धृत्यामलकानितैलघृतयोःषड्भिःपलैः संमिताभृष्टान्यर्द्धतुलानिधायविधिवन्मत्स्यण्डिकायांपचेत्॥ शीतेषण्मधुनापलानि कुडवावंश्यश्चतुर्जातकं मुष्टिर्मागधिकापलद्वयमितः प्राश्यः स्मृतश्च्यावनः॥ २॥ रक्तपित्तेक्षयेक्षीणेकासेकुष्ठेभ्रमेतृषि॥ आमलक्यादिकः पाको वलीपलितनाशनः॥ ३॥

अर्थ—काकडासिंगी, तालीसपत्र, त्रिफला, खरैटी, गिलोय, बिदारीकन्द, कचूर, जीवंती (डोडी) दशमूल, चन्दन, भीमसेनी कपूर, कमलगट्टा, इलायची, अडूसा, दाख, अष्टवर्ग, पुहकरमूल, ये सब औषधि दो दो पल लेकर, पानी एक द्रोण(४०९६ टंक)में आवलोंको औटावे

ूने पीछें ५ सेर मिश्रीकी चासनी कर उसमें आंवलोंको पाग लेवे जब ीतल होजावें तब छः पल शहद डाल और वंशलोचन, चातुर्जात, पीपल दो २ पल डाले यह च्यवनप्राशावलेह है इसके खानेसे रक्तपित्त, क्षयीसे ो क्षीण होगया हो, खांसी, कुष्ठ, भ्रम, प्यास इन सब रोगोंको यह ामलापाक नाश करे, तथा गुलजटका पडना और सफेद बाल होनेको ाश करे ।

अडूसापाक ।

वासाक्षुद्राग्निपथ्यामलकफलयुतंपंचमूलद्वयंच झिंझिण्याः क्वाथमेनंवसुगुणपयसापाचितंतूर्य्यभागः।ग्राह्यस्तस्मिन्गुडमितितोनिक्षिपेत्पाचयेच्चनिक्षेप्याव्योषयुक्ताबलमुशलियुताजातकंसाथरीच॥१॥ शृंगाटकंबिल्वगिरंहरिद्रांखैरीरगुंदंचशतावरींच ॥ जातीफलंमाजुफलंकबाबीआकल्लिकंमालविकाजगंधाम् ॥२॥ सजातिपत्रीफटिकाप्रियंगुगुन्दीफलंक्षौद्रयुतंघृतंच ॥ चूर्णंक्षिपेदिक्षुरसेसुपक्के लेहोभवेद्वासकसंज्ञकोयम् ॥३॥ कासश्वासहरः सदाबलकरः कामाग्निसन्दीपनो लेहोयं सरुजामभीष्टफलदः प्रोक्तः सवासाह्वयः ॥ ४ ॥

अर्थ—अडूसा, कटेरी, चित्रक, हरड, आँवला ये औषधि दो दो पल ेवे, दशमूल, झिंझणी (डिडूनी) का काढा इन सब औषधियोंको आठ ुने पानीमें औटावे जब चौथाई बाकी रहै तब उतारकर गुड मिलावे. और उसमें पूर्वोक्त औषधियोंको मिलाकर परिपक्व करे पीछे इन औषधियोंको और डाले सोंठ, मिरच, पीपल, खरहटी, मुसली, चातुर्जात, अजवायन, सिंघाडा, बेलगिरी, हलदी, खैरका गोंद, शतावर, जायफल, माजूफल कबाबचीनी, अकरकरा, मालवनी, बावची, असगंध, जावित्री, फिटकरी, प्रियंगु, चिरौंजी, गोंदीके फल, शहद, घृत इन सब औषधियोंको मिलावे तो यह वासा अवलेह बनकर तैयार हो, यह खांसी श्वासको हरे बल करे

दूसरा अडूसापाक।

ालामादायवासायाः पचेदष्टगुणेजले ॥ तेनपादावशेषेण
ाचयेदार्द्रकंभिषक् ॥ १ ॥ हरीतकीनांचूर्णस्यसिताशुद्धा
ाथाशतम् ॥ शीतीभूतेक्षिपेत्तत्रक्षौद्रस्याष्टौपलानि च ॥ २ ॥
ाशोत्वायाश्चत्वारिपिप्पल्याष्टपलंतथा ॥ चातुर्जातंपलंचैवले-
ोयंसंप्रणाशयेत् ॥रक्तपित्तंक्षयंचैवश्वासमग्नेश्चमन्दताम् ॥३॥

अर्थ—अडूसा एक तुला लेवे, उसको अठगुने पानीमें औटावे जब
ुर्थांश जल शेष रहे तब उसमें ११४ टंक हरड औटावे पीछे १००
ः मिश्री मिलाकर अवलेह बनावे जब शीतल होजाय तब ८ पल शहद
ले और ४ पल वंशलोचन, ८ पल पीपल, १ पल चातुर्जात डाले यह
लेह रक्तपित्त, क्षयी, श्वास और मन्दाग्निका नाश करे।

तीसरा अडूसापाक।

ासकस्यरसः प्रस्थंप्रस्थार्द्धेमधुशर्करे ॥ पिप्पल्याद्विपलंसा-
ज्यंसम्यग्लेहंविपाचयेत् ॥१॥ बलावलेहोयंश्रेष्ठोराजयक्ष्मनि-
षूदनः ॥ कासश्वासहरःप्रोक्तउरःक्षतहरस्तथा ॥ २ ॥

अर्थ—अडूसेका रस एक प्रस्थ लेवे और आधा प्रस्थ शहद और मिश्री
वे दो पल पीपल दो, पल घृत लेकर अवलेह बनावे यह वासावलेह
जयक्ष्माका नाश करे, खांसी, श्वास और उरःक्षतको दूर करे।

भारंगीपाक।

शतभागन्तुभार्ङ्ग्याश्चदशमूलंततःपरम् ॥ शतंहरीतकीनांचप-
चेत्तोयेचतुर्गुणे ॥ १ ॥ पादशेषेततस्तस्मिन्नव्यवस्त्रेणगालये-
त् ॥ आलोड्यचतुलांपूतगुडस्यचक्षिपेत्ततः ॥ २ ॥ पुनःपचे-
तमन्दाग्नौयावल्लेहत्वमाप्नुयात् ॥ शीतेचमधुनश्चात्रषट्पलानि
प्रदापयेत् ॥३ ॥त्रिकटुंत्रिसुगन्धंचपलैकानिपृथक्पृथक् ॥कर्ष-
द्वयं यवक्षारंसंचूर्णप्रक्षिपेत्ततः॥४॥ भक्षयेदभयामेकांलेह्यस्या-
र्द्धपलंलिहेत् ॥ श्वासंसुदारुणंहन्तिकासंपञ्चविधंतथा ॥ ५ ॥

अर्थ—भारंगी १०० टंक लेवे, १०० टंक दशमूल, १०० टंक हरड
न सबको चौगुने जलमें डालकर औटावे जब चतुर्थांश जल शेष रहे तब

तार कर वस्त्रसे छान कर उसमें ३६०० टंक गुड डालकर मन्दाग्निसे
ौटावे जब अवलेह होजाय तब शीतलकर ९६ टंक शहद डाले और
कुटा त्रिसुगंध, (तज, पत्रज, इलायची) ये सब औषधि जुदी जुदी
ट पीसकर डाले ८ टंक जवाखार इनमेंसे एक हरड़ नित्य प्रातःकाल
ावे और अवलेह टंक ८ पीवे तो घोर श्वास और पांच प्रकारकी
ांसीका नाश करे ।

कटेरीपाक ।

समूलपत्रान्वितकंटकार्यास्तुलांजलेद्रोणपरिप्लुतांच ॥ हरीत-
कीनांचशतंनिदध्याद्दत्त्वात्रपक्त्वाचरणावशेषम् ॥ १ ॥ गुडस्य
दत्त्वाशतमेतदग्नौसुपक्कमुत्तार्यततःसुशीते ॥ कटुत्रिकंचत्रिफ-
लाप्रमाणंपलांनिषट्पुष्परसानितत्र ॥ २ ॥ तुगाक्षीरीचगाय-
त्रीभार्ङ्गी कर्कटशृंगिका ॥ कट्फलंपुष्करंवासाक्षिपेदर्द्धपलो-
न्मितान् ॥३॥ क्षिपेच्चतुर्जातफलंयथाग्निप्रयुज्यमानोविधिना-
वलेहः ॥ वातात्मकं पित्तकफोद्भवंचद्विदोषजंकासमपित्रयंच
॥ ४ ॥ क्षतोद्भवंचक्षयजंचहन्यात्सपीनसंश्वासमुरःक्षतंच ॥
यक्ष्माणमेकादशमुग्ररूपंभृगूपदिष्टंहिरसायनंच ॥ ५ ॥

अर्थ—कटेरीको पञ्चांग पल १०० टंक ४०९६ पानी में हरड़
०० टंक डालकर औटावे जब चतुर्थांश जल शेष रहे तब उतारलेवे, उस
लको छान कर १०० पल गुड़ डालकर औटावे, पीछे उतार शीतल
र ३ पल त्रिकुटा ६ पल शहद डाले और वंशलोचन, खैर सार, काक-
ासिंगी, कायफल, पुहकरमूल, अडूसा ये औषधि आठ २ टंक डाले और
पल चातुर्जात डालकर अवलेह बनावे इसमेंसे मनुष्यकी अग्नि देखकर
ानेको देवै तो वात, पित्त, कफ, द्विदोष, त्रिदोष इनके विकारसे उत्प-
खांसीको, उरःक्षतकी खांसीको, क्षयी, पीनस, श्वास, उरःक्षत, ग्या-
ह प्रकारकी यक्ष्माको दूर करे यह भृगुऋषिने अवलेह कहाहै ।

भिलावापाक ।

भल्लातकानांपवनोद्धतानांवृन्ताच्युतानांचतथाढकंस्यात् ॥
तच्चेषिकाचूर्णचयेविघष्यप्रक्षाल्यतोयेविसृजेत्प्रवाते ॥ १ ॥

ष्कंपुनस्तद्विदलीकृतं च ततःपचेदप्सुचतुर्गुणेषु ॥ तत्पाद-
षंपरिपूतशीतंक्षीरेपचेत्तच्चपुनस्तथैव ॥ २ ॥ घृतांशयुक्तेन
नंयथास्यात्सितोपलैःषोडशभिःपलैश्च ॥ विमृश्यसंस्थाप्य
दिनानिसप्त ततःप्रयुज्याग्निबलेनमात्राम् ॥ ३ ॥ जयेद्विका-
ानखिलांश्चकुष्ठान्दृष्टिंचदीप्तिंचबलंकरोति ॥ शतायुषंचैवन-
विधत्तेराजाह्ययसर्वरसायनानाम् ॥ ४ ॥

अर्थ—पवनसे टूटकर गिरे मिलाये एक आढक(४०९६ टंक)ले मोटे
डेमें बांधकर पृथ्वीमें पछाडे, पीछे ईंटके कुकुआसे मसल पानीसे
कर शुद्ध करे और हवामें रख देवे, जब सूखजायँ तब दो दो टुकडे
र चौगुने जलमें औटावे, जब चतुर्थांश जल शेष रहे तब वस्त्रमें छानलेवे
छे चौगुना दूध डालकर फिर औटावे जब चतुर्थांश दूध शेष रहे तब
कालकर घृतमें पकावे, पीछे १६ पल मिश्रीकी चासनीमें पाक बनालेवे
ाको चीनी वा काचके पात्रमें सात दिन रखकर पीछे बलाबल देखकर
ानेको देवे, तो सम्पूर्ण कुष्ठके विकारोंका नाश करे दृष्टिको बढावे, बल
रे, सौ वर्षकी आयु होवे,यह सब रसायनोंका राजा है.अथवा खांडकी
ासनी करके इलायची, कपूर, लौंग, तज,पत्रज, नागकेशर, जावित्री,
ायफल इन सब औषधियोंका ३३ टंक चूर्ण डाले,पीछे अवलेह बनाकर
तके चिकने बरतनमें रखदे और धानमें आठदिन गाडकर खावे,
सपर तेल लगाना, खारा खट्टा खाना वर्जितहै ।

सूरणपाक ।

शास्त्रान्तरमें बाहुशालगुड इसको कहेहैं ।

श्लोक ।

त्रिवृत्तेजोवतीदन्तीस्वदंष्ट्राचित्रकंसटी ॥ गवाक्षीविश्वमुस्ता-
चविडंगाचहरीतकी ॥ १ ॥ पलोन्मितानिचैतानिपलान्य-
ष्टौचरुक्षराः ॥ तावत्पलंवृद्धदारुसूरणस्यतुषोडश ॥ २ ॥
जलद्रोणद्वयेक्काथ्यं चतुर्भागावशेषितम् ॥ पूर्वन्तुतंरसंभूयः
क्काथेभ्यस्त्रिगुणोगुडः॥३॥ लेहंपचेत्ततंतावद्यावद्वर्तीप्रलेपनम्॥

अवतार्यततःपश्चाच्चूर्णानीमानिदापयेत् ॥ ४ ॥ त्रिवृत्तेजोवतीकन्दचित्रकान्द्विपलांशकान् ॥ एलात्वङ्मरिचंचापिनागाह्वंचापिषट्पलम्॥५॥ द्वात्रिंशत्पलकंचैवचूर्णंदत्त्वानिधापयेत् ॥ ततोमात्रांप्रयुंजीतजीर्णेक्षीणेरसायने ॥ ६ ॥ पञ्चगुल्मान्प्रमेहांश्चपाण्डुरोगंहलीमकम् ॥ जयेदर्शांसिसर्वाणितथासर्वोदराणिच ॥७॥ रसायनवरश्चैवमेधाजननकारकः ॥ गुडश्रीबाहुसालोयंदुर्नामारिःप्रकीर्तितः ॥ ८ ॥

अर्थ—निसोत, मालकांगनी, दतून, गोखरू, चित्रक, कचूर, इन्द्रायण, ठ, नागरमोथा, वायबिडंग, हरड़, इन औषधियोंको सोलह२ टंक लेनी नी ८१९२ टंक लेवे, भिलावे ८ पल विधायरो ८ पल जमीकन्द १६ ल इन सबको पूर्वोक्त जलमें डालकर औटावे जब चौथाई शेष रहे तब तारकर क्काथसे तिगुना गुड़ डालकर औटावे और कलछीसे चलाता जाय गे कहे प्रकारसे अवलेह बनालेवे जब कलछीमें लिपटने लगे, तब उतार र ये चूर्ण और डाले निसोत, मालकांगनी, सूरण, (जमीकंद) चित्रक इनको त्तीस बत्तीस पल लेय। इलायची छोटी, तज, मिरच, नागकेशर ये औषधि ःछःपल लेय इन सबको उस अवलेहमें डालकर रक्खे पीछे इसकी मात्रा वे अजीर्णतामें क्षीणतामें यह रसायनहै पांच प्रकारके गुल्म, प्रमेहमात्र, पांडुग, हलीमक, सर्वप्रकारकी बवासीर तथा सर्वप्रकारके उदररोगपर यह उत्तम सायन है तीव्र बुद्धि करे, यह बाहुशाल गुड़ दुर्नाम (बवासीर) का शत्रु है।

आर्द्रकपाक ।

चूर्णितंचार्द्रकप्रस्थंगुडप्रस्थेनपाचयेत् ॥ सर्पिषः कुडवंदत्त्वा चूर्णन्तंवेदमापचेत् ॥ १ ॥ चातुर्जातफलंव्योषंत्रिफलातुर्य्यभागकाः ॥ लवंगमभयाभार्ङ्गीवृषंभूनिंबपौष्करम् ॥ २ ॥ देवदार्व्यश्वगंधाचजातीपत्रफलागुरु ॥गायत्रीसारमृद्वीचद्विगुणंचरसंक्षिपेत् ॥३॥कासंश्वासंक्षयंशोषंषण्ढैकादशरूपिणम् ॥ श्लेष्मप्रकोपमामंचमंदाग्निमुदरग्रहम् ॥ ४ ॥ हृद्रोगंरक्तदोषंच हन्तिवर्णाग्निवर्द्धिकत्॥बलपुष्टिप्रदोवष्य आर्द्रकोलेह्उच्यते५॥

अर्थ—अदरखको छील टुकड़े करे उनको घीमें डालकर लोहे या मिट्टीके में भूने, पीछे जितना अदरख लेय उतना गुड़ लेकर उसमें उस अद- हो डालकर औटावे कलछीसे चलाता जाय, जब अच्छे प्रकार परि- होजाय तब इतनी औषधि और मिलावे. सोंठ, जीरा, मिरच, नाग- र, जावित्री, इलायची, तज, पत्रज, पीपल, धनियां, काला जीरा, लामूल, वायविडंग ये औषधि शीतल होनेपर मिलाकर रख छोड़े आठ नित्य शीतकालमें खाय तो श्वास, खांसी, बहरापन, स्वरभंग, अरुचि, ाग, संग्रहणी, गोला, शूल, सूजन, इतने रोग नष्ट होवें।

लहसनपाक।

ादुग्रगन्धमादायरात्रौतक्रेविनिक्षिपेत् ॥ प्रातर्निस्सार्यतत्पि- ङ्गा ततोदुग्धेविपाचयेत् ॥ १ ॥ निस्तुषंलशुनंप्रस्थंक्षीरप्रस्थं वतुष्टये ॥ विपाच्यसांद्रीभूतेऽस्मिन्सर्पिषःकुडवंक्षिपेत् ॥ २ ॥ रास्नावरीवृषाच्छिन्नासटीविश्वासुरद्रुमम् ॥ वृद्धदारुकदीप्या- त्रिसुताह्वासपुनर्नवा ॥ ३ ॥ फलत्रयंपिप्पलीचकृमिघ्नः कर्ष- संमितः ॥ विचूर्ण्य शीतेमधुनाकुडवंतत्रयोजयेत् ॥ ४ ॥ शीतयाभक्षयेन्मात्रांमांद्यवातेहनुग्रहे ॥ आक्षेपकादिभग्नेषुक- क्षोरुस्तम्भहृद्ग्रहे ॥ ५ ॥ सर्वांगसन्धिभग्नेच वातजाशीतिरो- गिणे ॥ पथ्योलशुनपाकोयंवर्णायुःपुष्टिकारकः ॥ ६ ॥

अर्थ—लहसनकी दुर्गंधि दूर करनेके निमित्त रात्रिको छाछमें भिगोदे तःकाल छाछमें से निकालकर छिलका दूरकर पीसे फिर चौगुने दूधमें ौटावे जब खोवा होजाय तब घी ६४ टंक डाले रास्ना, शतावर, अडूसा लोय, कचूर, सोंठ, देवदारु, विधायरो, अजमायन, चित्रक, सांठकी- ड, त्रिफला, पीपल, वायविडंग ये औषधि चार टंक लेय सबका चूर्णकर र्वोक्त खोवामें मिलावे. सबकी बराबर मिश्री ले चाशनी कर अवलेह बनावे ब शीतल होजाय तब ६४ टंक शहद उसमें डाले तो यह लहसुन पाक नकर तयार होवे यह पाक मन्दवात, हनुग्रह, आक्षेपकादि, भग्नरोग, कमरे

ऊरु इनका जकड़ना, हृदयका जकडना, सर्वांगमें स्थित वात, संधियोंमें स्थित वात, अस्सीप्रकारके वातरोग नष्ट हों, यह लहसनपाक पथ्यरूप है, वर्ण, आयु, और पुष्टिका कर्त्ता है. अथवा घी तेल मिलाकर ले सो ग्रंथान्तरोंमें लिखा भी है. लहसनका तैल और घृत मिलाकर प्रातःकाल सूर्यादयके समय खानेसे विषमज्वर, वातके विकारको नष्ट करे बुढापेको दूर करै इसके खानेसे मनुष्य कामदेवसेभी अत्यन्त सुन्दर होवे ।

स्त्रीयोग्य कसैलापाक ।

कसेलंकुडवंचैवघृतंदेयंचतत्समम्॥गोक्षीरमाढकंदेयंपचेत्सम्यग्भिषग्वरः॥ १ ॥ उतार्द्धंचक्षिपेत्तत्रगुन्द्रकोलंपलद्वयम् ॥ खण्डप्रस्थद्वयंचैवपातिंकृत्वाक्षिपेत्पुनः ॥ २ ॥ व्योषंपाषाणभेदंचलोहंजातीशतावरी ॥ मंजिष्ठाधातकीमाजूबिल्वमोचरसन्तथा ॥ ३ ॥ एतेषांशुक्तिमात्रंचचतुःकर्षञ्चमोदकम् ॥ स्त्रीप्रदरंनिहन्त्याशुयोनिदोषंचशाम्यति ॥ ४ ॥

अर्थ—कसैला ६४ टंक, घृत६४टंकमें पचावे पीछे गौका दूध १०२४ टङ्क डालकर उत्तम वैद्य भली भाँतिसे खोवा करे. पीछे इसको उतारकर बबूलका गोंद ३२ टंक लेवे उसको घी डालकर तल लेवे ५१२ टंक खांड़की चाशनीकर उसमें पूर्वोक्त गोंद और खोवा डालकर इन औषधियोंको और मिलावे सोंठ, मिरच, पीपल,पाषाणभेद, लोध, जावित्री, शतावर, मजीठ, धाइके फूल, माजूफल, बेलगिरी, मोचरस ये सब औषधि दो दो कर्ष लेवे. सबको मिलाकर चारकर्षके अनुमान लड्डू बनावे इसके खानेसे स्त्रियोंका प्रदर और योनिके दोष दूर होवें ।

अण्डीपाक ।

निस्तुषंबीजमेरण्डंपयसाष्टगुणैःपचेत् ॥ तस्मिन्पयसिशोषेचतं बीजंपरिपेषयेत्॥ १॥पश्चाद्घृतेनसंयुक्तंसम्पचेन्मृदुवह्निना॥कटुत्रिकंलवंगञ्चएलात्वक्पत्रकेशरम्॥२॥अश्वगंधाशिफारास्नाषङ्गंधारेणुकावरी॥लोहंपुनर्नवाश्यामाउशीरंजातिपत्रकम्॥३॥जाती

ऽमभ्रकंचसूक्ष्मचूर्णन्तुकारयेत् ॥ शीतीभूतेवलेहोयंतस्मि-
ण्डंसमोदयम् ॥ ४ ॥

र्थ—अरंडीके छिलके दूरकर आठगुने दूधमें औटावे जब दूध सूख तब पीसकर घृत मिलाय पचावे. त्रिकुटा, लौंग, इलायची, पत्रज, केशर, असगंध, सोवाके बीज, पीपलामूल, रेणुका, शतावर, सार, की जड, दारुहलदी, उशीर, जावित्री, जायफल, अभ्रक ये औषधि बराबर लेय, सबका चूर्ण कर पीछे अवलेह करे जब शीतल ाय तब सब औषधियोंकी बराबर खांड डाले ॥

तारिपाकनामायंप्रातरुत्थायभक्षितः ॥ अशीतिवातरोगांश्च त्वारिंशच्चपैत्तिकान् ॥५ ॥ उदराणितथाचाष्टौशोफरोगान्नि- न्तेतच ॥ विंशतिंमेहजान्रोगान्षष्टिंनाडीव्रणानिच ॥ ६ ॥ न्त्यष्टादशकुष्ठानिक्षयरोगांश्चसप्तच ॥ पंचैवपाण्डुरोगाणिपं- श्वासान्प्रणाशयेत् ॥ ७ ॥ चतुरोग्रहणीरोगान्हृद्रोगंचगल- हम् ॥ अनेकवातरोगाणितानिसर्वाणिवारयेत् ॥८॥ शुक्रा- ाकेतिविख्यातः सर्वरोगनिवारणे ॥ ९ ॥

अर्थ—यह वातारिनामा पाक है इसको प्रातःकाल भक्षण करे तो अस्सी ारके वातरोग, चालीस प्रकारके पित्तरोग, आठ उदरविकार, सूजन, प्रकारके प्रमेह, साठ प्रकारके नाड़ीव्रण, अठारह प्रकारके कुष्ठ, प्रकारकी क्षयी, पांच प्रकारके पांडुरोग, पांच श्वास, चार प्रकारकी हणी, हृदयरोग, गलग्रह, अनेक वादीके रोग इन सबको यह नष्ट ता है यह शुक्रापाक नामसे विख्यात है इसीप्रकार औरभी पाक वैद्य नी बुद्धिसे बनावें ॥

कामेश्वरपाक ।

दूसरा विजयापाक ।

म्यङ्मारितमभ्रकंकटुफलंकुष्ठाश्वगंधाबलामेथीमोचरसंविदा- रिमुशलीगोक्षीरकंक्षीरकम् ॥रम्भाकंदशतावरीअजमुदामाषातु- लाधान्यकंज्येष्ठीनागबलाकचूरमदनोजातीफलंकेशरम् ॥१॥

भार्ङ्गीकर्कटशृंगशृंगत्रिकुटाजीरद्वयंचित्रकं चातुर्जातपुनर्नवागजकणाद्राक्षासिणावासिकः ॥ बीजंमर्कटशाल्मलीफलत्रिकचूर्णसमंकल्पयेत्तुर्यांशंविजयासिताद्विगुणितामध्वाज्यपिण्डीकृता ॥ २ ॥ कर्षार्द्धंगुटिकावलेहमथवाकृत्वासदासेवयेद्वेयंक्षीरसिताचवीर्य्यकरणंस्तम्भोप्यलंकामिनाम्॥रामावश्यकरंसुखातिसुखदंसङ्गेङ्गनाद्रावकंक्षीणेपुष्टिकरंक्षयेक्षयकरंहन्याच्चसर्वामयान् ॥ ३ ॥ कासश्वासमहातिसारशमनंश्लेष्माणमुग्रंजयेन्नित्यानन्दकरंविशेषकवितावाचांविलासप्रदम् ॥ धत्तसर्वगुणान्किमत्रबहुनापीयूषमेतत्परमभ्यासेननिहन्तिमृत्युपलितं कामेश्वरोवत्सरात् ॥ ४ ॥

अर्थ—सुन्दर फूकी अभ्रक, कायफल, कूठ, असगंध, खरैटी, मेथी, मोचरस, विदारीकंद, मूसली, गोखरू, क्षीरकंद, केलाकंद शतावर, अजमोद, उडद, कालेतिल, धनियां, मुलहटी, गगेरनकी छाल, कपूर, कस्तूरी, जायफल, केशर, भारंगी काकडासिंगी, भांगरा, त्रिकुटा, दोनों जीरे, चित्रक, चातुर्जात, सांठकी जड, गजपीपल, दाख, सनके बीज, अडूसा, सेमलके बीज, कौंचके बीज, त्रिफला ये औषधि बराबर लेकर इन सबकी चौथाई भांग ले और सब औषधियोंसे दूनी मिश्री डाले पीछे शहद और घी डाल कर दो दो टंकके अनुमान लड्डू बनालेवे अथवा अवलेह बनाकर नित्य सेवन करे और इसके ऊपर दूध पीवे तो वीर्य्यस्तंभन होवे स्त्रियोंको वश करे अत्यन्त सुख दे, स्त्री इवे क्षीण मनुष्यके पुष्टि करे, क्षयीको दूर करे, सब रोगोंको नष्ट करे, खांसी, श्वास, घोर अतीसार, घोर कफके रोग, इनका नाश करे, सदैव आनन्दकर्ता, कविता करनेकी शक्तिको बढावे, सर्व गुण धारणकर्ता होवे, बहुत कहनेमें क्या है. यह अमृतके तुल्य है. इसको एकवर्ष सेवन करनेसे मृत्यु और पलितरोगादिक सब नष्ट होवें ॥

एलादिचूर्ण ।

एलाकुंकुमचोचजातिदलयुक्छ्रीपुष्पजातीफलं मस्तक्याकरहाटनागरयुतंफेनाहिकृष्णान्वितम्॥एतेषांसमशालशीतलरजःस्यादर्द्धकस्तूरिकादद्यात्क्षौद्रयुतंदिनांतसमयेयामद्वयंस्तम्भकृत॥१॥

अर्थ—इलायची, केशर, तज, जावित्री, तमालपत्र, लौंग, जायफल, गी, अकरकरा, सोंठ, अफीम, पीपल इन सबको बराबर लेवे और इन ी बराबर मिश्री और औषधियोंसे आधी कस्तूरी लेवे सबको मिलाय के समय इस चूर्णको शहद मिलाकर लेवे तो दो प्रहरका स्तंभन होवे।

शिलाजतुक्षौद्रविडंगसर्प्पिर्लोहाभयापारदताप्यभाष्यम् ॥
आपूर्यतेदुर्बलदेहधातुस्त्रियंनिशायांचयथाशशांकम् ॥२॥

अर्थ—शिलाजीत, शहद, वायविडंग, घृत, सार, हरड, रससिंदूर, ामक्खी इन सबका चर्ण पंद्रह दिन सेवन करनेसे दुर्बल देहकी सब पुष्टि करे, चंद्रमाके समान प्रकाशमान् करे।

सत्त्वंगुडूच्यागगनंसलोहमेलासितामागधिकासमेतम् ॥
एतत्समस्तंमधुनावलीढंरामाशतंसेवयतीहषण्ढः ॥ ३ ॥

अर्थ—गिलोयका सत्त्व, अभ्रकसार, छोटी इलायची, मिश्री, पीपल इन का चूर्ण शहदके साथ मिलाकर खानेसे नपुंसकभी सौ स्त्रियोंसे संभोग करे।

गोक्षुरकःक्षुरकःशतमूलीवानरिनागबलातिबलाच ॥
चूर्णमिदंपयसानिशिपेयंयस्यगृहेप्रमदाशतमस्ति ॥ ४ ॥

अर्थ—गोखरू, तालमखाने, शतावरि, कौंचके बीज, गंगेरनकी छाल, ेटी इन सबका चूर्ण रात्रिको दूधके संग उस मनुष्यको पीना चाहिये सके घरमें १०० स्त्री होवें।

कामदेवकी गुटी।

पलंगोक्षुरबीजानिद्विपलंकपिकच्छुजम्॥ पलंनागदलामूलंपल-मेकंशतावरी ॥५॥विदारीकन्दचूर्णंतुपलद्वयमथाबला॥द्विपलं-त्रपुसीबीजंवाजिगंधापलत्रयम् ॥६॥ त्रिसुगंधकणाधात्रीलवंग-नागकेशरम् ॥ वंशीमांशीतालमूली गुडचीरक्तचन्दनम् ॥७॥ एतानिकर्षमात्राणिसूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ बालशाल्मलि-काद्रावैर्भावयेच्चैकविंशतिः ॥ ८ ॥ कुशकाशद्रवैरेवंशर्करास-मयोजितम् ॥ नष्टशुक्ररुजंहन्तिमूत्रकृच्छ्राणियानिच ॥ ९ ॥

शतंगच्छेत्तुनारीणांहयतुल्यसमोबले ॥ कामदेवमिदंनामधन्व-न्तरिविनिर्मितम् ॥ १० ॥

अर्थ—गोखरूके बीज १ पल, कौंचके बीज २ पल, गंगेरनकी छाल १ पल, शतावर १ पल, बिदारीकन्दका चूर्ण २ पल, खरैंटीकी जड़ २ पल, ककडीके बीज १॥ पल, असगंध १॥ पल, तज, पत्रज, छोटी इलायची, पीपल, आंवले, लौंग, नागकेशर, वंशलोचन, छड, कालीमूसली, गिलोय, लालचन्दन इन सब औषधियोंको एक २कर्ष लेकर चूर्ण करे, इसमें कोमल सेमलके पत्तोंके रसकी इक्कीस भावना देय, डाभ, कांसके रसकी भी इक्कीस भावना देकर बराबर खांड मिलाकर अनुमान मुवाफिक खाय तो नष्टशुक्रके रोगको और मूत्रकृच्छ्रको नाश करे, और सौ स्त्रियोंसे भोग करै घोडेके समान पराक्रम होवे. यह कामदेवगुटी श्रीधन्वन्तरि भगवान्ने बनायी है॥

कामदेव रस ।

स्वभ्रंशुल्वंकेशरंलोहचूर्णंजातीपत्रंसर्पफेनंलवंगम् ॥ एलासूक्ष्मं क्षीरकंकोलनागजातीजातंचीणकावावियुक्तम् ॥ ११॥ अब्धेः शोषंसप्तकर्षाक्षदेशक्षौद्रैर्मिश्रंमिश्रमाकल्पयुक्तम्। क्षीणेवीर्येरेतसां सागरोयंसायंभक्षेद्योगुटींवल्लयुक्ताम् ॥ १२ ॥ गच्छेन्नारीसाध्ययोगात्सहस्रंवृद्धोदेहैर्यातुतारुण्यभाजम् ॥ रामावश्यंसर्वकालेकृतौचप्रोक्तोवैद्यैःकामदेवोरसोऽयम् ॥ १३ ॥

अर्थ—अभ्रक, तांबा, केशर, लोहसार, जावित्री, तमालपत्र, अफीम, लौंग, छोटी इलायची, क्षीरकाकोली, नागकेशर, जायफल, कबाबचीनी चन्द्रोदय, समुद्रशोष ये सब औषधी सातकर्षके समान लेवे, इसमें शहद, मिश्री और अकरकरा मिलाकर लेवे तो क्षीणवीर्यवाला मनुष्य अपार वीर्यवाला होवे इसकी गोली छः२ रत्तीकी बनाकर सायंकालको भक्षण करे हजार स्त्रियोंसे भोग करनेकी शक्ति होवे वृद्ध देहवाला तरुणताको

ास्माच्छुक्रस्यवृद्धिःस्याच्छुक्रलंचतदुच्यते ॥ यथाश्वगंधामु-
ालीशर्कराचशतावरी ॥१४॥ दुग्धमाषाश्चभल्लाताः फलम-
ज्ञामलानि च ॥

अर्थ–जिस औषधिसे शुक्र (वीर्य्य) बढे उसको शुक्रल कहतेहैं जैसे
सगंध, मूशली, मिश्री, शतावरि, दूध, उडद, भिलाये, आम्रादिफल,
ज्जा और आमलादिक ॥

नागपुरीययतिगणश्रीहर्षकीर्तिसंकलिते ॥
वैद्यकसारोद्धारे प्रथमः पाकाधिकारोऽयम् ॥ १ ॥

इति प्रथमोऽध्यायः ।

द्वितीयोऽध्यायः २.

कुंकुमादिचूर्ण ।

कुंकुमंमन्दनीमुस्ताचातुर्जातफलत्रिकम् ॥ आकल्लमभ्रकंधान्य
दाडिमंमरिचंकणा ॥ १ ॥ यवानीतंतडीकंचहिंगुलंघनसारक-
म्॥तुम्बरन्तगरंतोयंलवंगंजातिपत्रिका॥२॥समांगापुष्करंश्या-
मापद्मबीजंतुगासटी॥तालीसंचित्रकंमांसीजातीफलमुशीरकम्
॥३॥ बलानागबलामांसीकुष्ठग्रंथिकमाषिकाः ॥ यावंत्येतानि
सर्वाणितावन्मोचरसंददेत् ॥४॥सर्वतुल्यासितायोज्याकर्षमा-
त्रंतुभक्षयेत् ॥ प्रभातेचनिशादौचभोजनांतेविशेषतः ॥ ५ ॥
संध्याकालेतथाभोज्यंवाजीकरणमुत्तमम्॥ अजीर्णंजरयत्याशु
नष्टाग्नेश्चाग्निदीपनम्॥६॥अशीतिवातजान्रोगांश्चतुर्विंशतिपै-
त्तिकान्॥विंशतिश्लेष्मजांश्चैवहृल्लासंछर्द्यरोचकम् ॥ ७ ॥ पं-
चैवग्रहणीदोषानतिसारंविशेषतः॥ क्षयमेकादशंश्वासंकासंपञ्च-
विधंतथा ॥८॥ उदरव्याधिनाशंचमूत्रकृच्छ्रंगलग्रहम् ॥पुत्रंज-
नयतेवंध्यासेव्यमानेतथौषधे ॥ ९ ॥ सन्निपातातुरंचैवविस्फो-
टकभगन्दरम् ॥ नेत्ररोगंशिरोरोगंकर्णमन्याहनुग्रहम् ॥ १०॥

हृद्रोगंकण्ठरोगञ्चजानुजंघागतंतथा ॥ सर्वरोगविनाशायचरकेण प्रभाषितम् ॥ ११ ॥

अर्थ—केशर, कस्तूरी, चातुर्जात, त्रिफला, अकरकरा, अभ्रक, धनियां, अनारदाना, मिरच, पीपल, अजवायन, तंतडीक, हिंगुल, कपूर, बरू, तगर, नेत्रवाला, लौंग, जावित्री, मजीठ, अथवा लजालू, पोहकरमूल, प्रियंगु, कमलगट्टा, वंशलोचन, कचूर, तालीसपत्र, चित्रक, छड, जायफल, खस, खरैटी, गंगेरनकी छाल, सोनामक्खी, कूट, पीपलामूल, उडद ये सब औषधि बराबर लेवे और सबकी बराबर मोचरस, और सबकी बराबर मिश्री मिलावे इस चूर्णको प्रातःकाल और सायंकाल और भोजनके अन्तमें वा रात्रिमें खाय तौ वाजीकरण कर्त्ता है. अजीर्णको तत्काल नष्ट करे, मन्दाग्निको प्रबल करे, अस्सीप्रकारके वातरोग, बालीसप्रकारके पित्तरोग, बीसप्रकारके कफरोग, सूखी रद्द, वमन, अरुचि, पांचप्रकारकी संग्रहणी, अतीसार, ग्यारह क्षयरोग, श्वास, पांचप्रकारकी खांसी, उदररोग, मूत्रकृच्छ्र, गलग्रह इन सबका नाश करे, इस चूर्णके खानेसे वंध्याके पुत्र होय, सन्निपात, विस्फोटक, भगंदर, नेत्ररोग, शिरके रोग, कर्णरोग, मन्यानाडीका जकडना, हनुग्रह, हृदयरोग, कंठरोग, जानुके रोग, जंघाके रोग, इन रोगोंसे आदि ले सर्वरोग नष्ट करनेके निमित्त चरकऋषिने कहा है ॥

लवंगादिचूर्ण ।

लवंगकंकोलमुशीरचन्दनंनतांसनीलोत्पलकृष्णजीरकम् ॥
एलासकृष्णागरनागकेशरं कणंसविश्वानलदंसहांबुना ॥ १ ॥
कर्पूरजातीफलवंशलोचनासितार्द्धमात्रासममसूक्ष्मचूर्णितम् ॥
सरोचनंतर्प्पणमग्निदीपनंबलप्रदंवृष्यतमंत्रिदोषनुत् ॥ २ ॥
अर्शोविबन्धंतमकंगलग्रहंसकासहिक्कारुचियक्ष्मपीनसम् ॥
ग्रहण्यतीसारमथासुजक्षयंप्रमेहगुल्मांश्चनिहंतिसत्वरम् ॥ ३ ॥

अर्थ—लौंग, कंकोल, खस, सफेदचन्दन, तगर, नीलकमल, कालाजीरा, छोटी इलायची, कालाअगर, नागकेशर, पीपल, सोंठ, छड, नेत्रवाला, कपूर,

ायफल, वंशलोचन ये सब औषधि बराबर २ लेवे सबकी बराबर श्री मिलावे यह चूर्ण रुचिकर्त्ता, इंद्रियोंकी पुष्टि करे अग्निको दीप्त करे, ह करे, वृष्य है, त्रिदोषको हरे, बवासीर, अफारा, तमकश्वास, गलग्रह, ांसी, हिचकी, अरुचि, यक्ष्मा, पीनस, संग्रहणी, अतीसार, रुधिरके कार, क्षयी, प्रमेह, गोला इन सबको शीघ्र नाश करता है ॥

बृहल्लवङ्गादिचूर्ण ।

लवङ्गमेलातजपत्रजोत्पलमुशीरमांसीतगरंसवालकम्॥ कंकोलकृष्णागरुनागकेशरंजातीफलंचन्दनजातिपत्रिका ॥ १ ॥ द्व्यजाजिकाव्यूषणपुष्करंसटीफलत्रिकंकुष्ठविडंगचित्रकम् ॥ तालीसपत्रंसुरदारुधान्यकंयवानिपिष्टाखरिराम्लवेतसम् ॥ ॥ २ ॥ तुगाजमोदाघनसारमभ्रकंशृङ्गीवृषाग्रंथिकमग्निमंथकम् ॥ प्रियङ्गुमुस्तातिविषाशतावरीसत्वंगुडूच्यास्त्रिवृतादुरालभा ॥ ३ ॥ समानिसर्वैश्चसमासिताभवेद्बृहल्लवङ्गादिरयंनिगद्यते ॥ सायप्रगेखादतिकर्षसंमितंभवान्ति देहे बलवीर्यपुष्टयः ॥ ४ ॥ निहतं दीपयत्यग्निंतनुवर्णकरंपरम् ॥ वातघ्नंनेत्रहृदय कण्ठजिह्वाविशोधनम् ॥ ५ ॥ प्रमेहकासारुचियक्ष्मपीनसक्षयास्रदाघग्रहणीत्रिदोषनुत् ॥ हिक्कातिसारप्रदरंगलग्रहंनिहन्ति पाण्डुस्वरभंगमश्मरीम् ॥ ६ ॥

अर्थ—लौंग, इलायची, तज, पत्रज, कमलगट्टाकी मिंगी, खस, छड़, ागर, नेत्रवाला, कंकोल, कालीअगर, नागकेशर, जायफल, सफेदचन्दन, जावित्री, दोनोंजीरे, सोंठ, मिरच, पीपल, पोहकरमूल, कपूर, हरड़, बहेडा, आंवला, कूठ, वायविडंग, चित्रक, तालीसपत्र, देवदारु, धनियां, अजवायन, मुलहटी, खैरसार, अम्लवेत, वंशलोचन, अजमोद, भीमसेनीकपूर, अभ्रक, काकडासिंगी, अडूसा, पीपलमूल, अरनी, फूलप्रियंगु, मोथा, अतीस, शतावरि गिलोयका सत्व, निसोथ, जवासा इन सब औषधियोंको बराबर लेकर सबकी बराबर मिश्री मिलावे यह बृहल्लवङ्गादि चूर्ण है. इसको सायंकाल और प्रातःकालके समय चार टंकके अनुमान नित्य

खाय तो देहमें बल और वीर्यकी पुष्टता होवे प्रमेह, खांसी, अरुचि, राजयक्ष्मा, पीनस, क्षयी, रुधिरजन्यदाह, संग्रहणी, त्रिदोष, हिचकी, अतीसार, प्रदर, गलग्रह, पांडुरोग स्वरभंग पथरी दूर होवें अग्निको दीपनकरे. देहका वर्ण उत्तम करे. वातके रोग, नेत्ररोग, हृदय और कंठके रोग नष्ट होवें. जिह्वाको शुद्ध करे ॥

पिप्पल्यादिचूर्ण ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः ॥
मरीचेनसमायुक्तंबुधैः षट्कटुकथ्यते ॥ १ ॥

अर्थ—पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, मिरच, इनको षट्कटु पंडित कहतेहैं ॥

शुंठ्यादिचूर्ण ।

सविश्वसौवर्चलपुष्कराह्वयं सहिङ्गुमुष्णोदकपीतमेतत् ॥
हृत्कोष्ठपृष्ठान्तचरंक्षणांतःशूलंजयत्याशुमरुत्कफोत्थम् ॥ १ ॥

अर्थ—सोंठ, कालानोंन, पोहकरमूल, हींग इनका चूर्ण गरम जलके साथ पीनेसे हृदय, कोठा, पीठ, पेटआदिका शूल तथा बादी और कफका शूल तत्क्षण नष्ट होता है ॥

त्रिकुटादिचूर्ण ।

त्रिकुटंग्रन्थिकंब्राह्मीरेणुकाकल्कपुष्करम् ॥ लवङ्गमश्वगंधाच किरातंहवुषासटी ॥ १ ॥ रास्नाश्वेतावचाभृङ्गंसर्वमेकत्रचूर्णयेत् ॥ सन्निपाते महावाते चूर्णमेवं सदा हितम् ॥ २ ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, पीपलामूल, ब्राह्मी, रेणुका, अकरकरा, पोहकरमूल, लौंग, असगंध, चिरायता, हाऊबेर, कचूर, रास्ना, सफेद वच, भांगरा सब बराबर लेकर चूर्ण करे यह चूर्ण सन्निपात और घोर वातव्याधि दूर करनेको अत्यन्त हित है ॥

एलादिचूर्ण ।

सूक्ष्मैलाकेसरंभृङ्गंपत्रन्तालीसकंतुगा॥मृद्वीकादाडिमंधान्यंजीरकेद्वेद्विकर्षिका॥ १॥पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यचित्रकनागरम्॥ मरीचिंदीपकंचैववृक्षाम्लंचाम्लवेतसम्॥ २॥ अजमोदाजगंधाच

कपिकच्छेतिकर्षिका ॥ अत्यन्तसुविशुद्धायाः शर्करायाश्चतुः-पलम् ॥३॥ चूर्णंसदाहितंपुंसांपरमंरुचिवर्द्धनम् ॥ प्लीहकासा-मयार्शांसिश्वासंशूलंचसज्वरम् ॥४॥ निहन्तिदीपयत्यग्निंबल-वर्णकरंपरम् ॥ वातघ्नंलोचनंहृद्यंकण्ठजिह्वाविशोधनम् ॥ ५ ॥

अर्थ—छोटी इलायची, केसर, भांगरा, तालीसपत्र, वंशलोचन, दाख, अनारदाना, धनियां, दोनोंजीरे ये आठ २ टंक लेवे. पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ, मिरच, अजमायन, तंतडीक, अमलवेत, अजमोद, असगंध, कौंचके बीज इन औषधियोंको चार चार टंक लेवे मिश्री ४ पल डाले यह चूर्ण रुचिकर है, तापतिल्ली खाँसी बवासीर श्वास शूल ज्वर नाशकरे, अग्निको बढावे वर्ण उत्तम करे वादी नेत्ररोग हृदय और कंठके रोग नष्ट करे ॥

तथा च ।

त्रुटिलवङ्गविडंगकटुत्रिकंघनशिवाशिवपत्रजकंसमम्॥त्रिगुणि-तात्रिवृताचसितासमाअदनआमपतिष्यतिकामतः ॥ १ ॥

अर्थ—छोटीइलायची लौंग बायविडंग सोंठ मिरच पीपल नागर-मोथा आंवले हरड तमालपत्र इन सब औषधियोंको बराबर लेय और सब औषधियोंसे त्रिगुण निसोथ डाले और सबके समान मिश्री मिलावे इस चूर्णके खानेसे आम झडकर गिरपडे ॥

चातुर्जातकचूर्ण ।

चातुर्जाततुगाद्विजीरकधनातालीससाराधसावृक्षाम्लंकपिकच्छु षट्ककटुवर्याम्लद्विदीप्याचषट् ॥ चूर्णस्तुल्यसितोबलाग्नि-रुचिकृत्तत्प्लीहमूलानिलश्वासार्शःकसनव्यथाज्वरवमीहृत्कं-ठजिह्वार्तिजित् ॥ १ ॥

अर्थ—चातुर्जात वंशलोचन दोनोंजीरे धनियां तालीसपत्र अनार-दाना इनको दश २ कर्ष लेवे तंतडीक कैथ षट्कटु (पीपल पीपलामूल चव्य चित्रक सोंठ मिरच) अमलवेत अजमोद अजमायन इनको छः छः कर्ष लेवे और सबकी बराबर मिश्री मिलावे यह चूर्ण बल अग्नि रुचि

इनको बढावे तापतिल्ली वादीके रोग श्वास बवासीर खांसी ज्वर वमन और हृदय कंठ जीभ ईन सबके रोगोंको नाश करताहै ॥

त्रिजातादिचूर्ण ।

त्रिजातिविश्वात्रिफलाविडंगंद्राक्षानिशायुग्ममरिष्टपत्रम् ॥ कृष्णा गुडूचीमसिमेषशृंगीपुरातनाः षष्टिकतन्दुलाश्च ॥ १ ॥ एतानि चूर्णानिसमानिकृत्वासिताप्रदेयातदनंतरंसमा ॥ दिनोदयेचूर्णमिदंहिखादन्कुर्यान्नरंशीतरसोपहारम् ॥ २ ॥ दद्रूणिरक्तंकुपितंच पित्तंकुष्ठाम्लपित्तंसविसर्जिपामा ॥ विस्फोटकान्मण्डलकान्प्रदोषाह्यनेकदोषाःप्रशमंप्रयान्ति ॥ ३ ॥

अर्थ—त्रिजातक (तज तमालपत्र इलायची) सोंठ त्रिफला वायविडंग दारु हलदी दारुहलदी नीमके पत्ते पीपल गिलोय सोयाके बीज मेढासिंगी पुराने साठी चावल ये सब बराबर लेकर इन सबके समान मिश्री मिलावे और प्रातःकाल खाय शीतल आहार करे तो दाद रुधिरविकार, पित्तके विकार, कोढ, अम्लपित्त, खाज, खसर, विस्फोटक, चकदा और अनेक दोष नष्ट होवें ॥

त्रिफलादिचूर्ण ।

त्रिफलांत्रापुषंबीजंसैन्धवंचशिलाजतु ॥
बद्धमूत्रेहितंचूर्णंनात्रकार्याविचारणा ॥ १ ॥

अर्थ—त्रिफला, ककडीके बीज, सेंधानोन, शिलाजीत, इनका चूर्ण बद्धमूत्रवाले रोगीको हित है ॥

तालीसादिचूर्ण ।

तालीसोषणचव्यनागलवणैस्तुल्यांशकैर्द्विस्थितं कृष्णाग्रंथिकतन्तडीकहुतभुक्त्वग्जीरकौतूर्यकौ ॥ विश्वैलाबदराम्लवेतसघनैर्धान्याजमोदान्वितास्तिस्रोदाडिमसारपादसहितः श्रेष्ठःसिताखाण्डवः ॥ १ ॥ कण्ठास्योदरहृद्विकारशमनःकामाग्निसन्दीपनोगुल्माध्मानविषूचिकागुदरुजःश्वासंकृमिञ्छर्दिमाम् ॥ कासारुच्यतिसारगूढमरुतांहृद्रोगिणांकीर्तितश्चूर्णोऽयंभिषजामतीवदयितःख्यातोमहाखाण्डवः ॥ २ ॥

अर्थ—तालीसपत्र, कालीमिरच, चव्य, नागकेशर, सेंधानोन ये औषधि प्रत्येक चार चार टंक लेवे पीपल, पीपलामल, तंतडीक,(दासरा) चित्रक, दोनों जीरे, तज, तमालपत्र इन औषधियोंको आठ २ टंक लेवे. सोंठ, इलायची, बेरकी मींगी, अम्लवेत, नागरमोथा, धनियां, अजमोद इन औषधियोंको बारह २ टंक लेवे. इन सबका चतुर्थांश अनारदाना लेवे, और सबके समान मिश्री मिलावे, अथवा सफेद चीनी मिलाकर नित्य खाय तो कंठ, मुख, उदर, हृदय इनके विकारोंको नष्ट करे, कामाग्निको बढावे, गोला, अफरा, हैजा, बवासीर, श्वास, कृमि, छर्दि, खांसी, अरुचि, अतिसार, गूढवातव्याधि, हृदयरोगोंको हित है, वैद्योंको अत्यन्त प्यारा ऐसा यह चूर्ण महाखाण्डव नामसे विख्यात है ॥

दूसरा तालीसादिचूर्ण ।

तुल्यंतालीसचव्योषणलवणगजद्विःकणाग्रंथ्यजाजीवृक्षाम्लाग्नित्वचंत्रिर्धनबदरघनैलाजमोदाम्लविश्वम् ॥ सार्द्धंश्वेतोहिसारेतिसृतिकृमिवमीखाण्डवारुच्यजीर्णेगुल्माध्मानानलास्योगरगलगुदमृद्धृद्दश्वासकासे ॥ १ ॥

अर्थ—तालीसपत्र, चव्य, कालीमिरच, नागकेशर, गजपीपल, पीपलामूल, पीपल, जीरा, तंतडीक, चित्रककी छाल,तज,नागरमोथा,मिंगी, धनियां, इलायची,अजमोद,अमलवेत,सोंठ,अनारदाना इन सब औषधियोंको बराबर लेकर इनसे आधी मिश्री मिलावे, मिश्रीको छोडकर सब औषधियोंका आधा सार मिलावे इसके खानेसे कृमिरोग,वमन, अरुचि, अजीर्ण, गोला, उदरविकार, मन्दाग्नि,मुखरोग,कंठरोग, गुदारोग,मट्टीखानेका रोग,श्वास,खांसी इन सब रोगोंको यह खांडव चूर्ण दूर करता है॥

गगनाशयचूर्ण ।

त्रिकटुःत्रिसुगन्धंचलवंगञातिकाफलम् ॥ तुगाक्षीरीसटीशृंगीवाजिगन्धाचदाडिमी ॥ १ ॥ एतानिसमभागानिसर्वंतुल्यमयोरजः ॥ आयसेनसमन्देयंगगनंचसुशोधितम् ॥ २ ॥ यावदेतानिचूर्णानितावदद्यात्सितोपलाम् ॥ कर्षप्रमाणंदातव्यंखादयेच्चयथाबलम् ॥ ३ ॥ अग्निसंजननंहृद्यंप्रमेहंहंतिदारु-

णम् ॥ अश्मरींमूत्रकृच्छ्रंचधातुस्थंविषमज्वरम् ॥ ४ ॥ नाशयेच्चत्रिदोषंचराजयक्ष्मज्वरापहम् ॥ पीनसश्वासकासघ्नंरुच्यं कासहरंपरम् ॥ ५ ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, तज, पत्रज, इलायची, लौंग, जायफल, तवाखीर, कचूर, काकडासिंगी, असगंध, अनारदाना ये सब बराबर लेवे और सबके समान सार लेवे. और सारकी बराबर शुद्ध अभ्रक लेवे. और सबकी बराबर मिश्री मिलावे. बलाबल देखकर इसकी मात्रा चार टंक देवे, तो अग्निको दीप्त करे, हृदयके रोग नाशकरे. प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, धातुओंमें स्थित विषमज्वर, त्रिदोष, राजयक्ष्मा, ज्वर, पीनस, श्वास, खांसी इनका नाश करे ।

सितोपलादिचूर्ण ।

सितोपलाषोडशस्यादष्टौस्याद्वंशलोचना ॥ पिप्पलीस्याच्चतुःकर्षाएलाचद्वयकर्षिका ॥ १ ॥ एककर्षाचत्वक्कार्याचूर्णयेत्सर्वमेकतः ॥ सितोपलादिकंचूर्णंमधुसर्पिर्युतंलिहेत् ॥२॥ कासश्वासक्षयहरंहस्तपादांगदाहजित्॥ मंदाग्निशुष्कजिह्वांचपार्श्वशूलमरोचकम् ॥ ज्वरमूर्द्धगतंरक्तंपित्तमाशुव्यपोहति ॥ ३ ॥

अर्थ—मिश्री १६ कर्ष, वंशलोचन ८ कर्ष, पीपल ४ कर्ष, छोटीइलायची २ कर्ष, तज १ कर्ष इन सबका चूर्णकर शहदमें मिलाकर खावे तो खांसी, श्वास, क्षयीको दूरकरे. हाथ पैरोंके दाहको दूर करे, मन्दाग्नि, जीभका सूखना, पसवाडेका शूल, अरुचि, ज्वर, ऊर्ध्वगत रुधिरके विकारको, पित्तके रोगोंको यह सितोपलादि चूर्ण दूर करे ॥

श्रीखण्डादिचूर्ण ।

श्रीखण्डंमरिचंलवंगफलजंद्राक्षातजंपत्रजंरक्तंचन्दनवालकंमधु निशाशुण्ठीकणाग्रन्थिकैः॥ धान्याजीरककेशरंजलफलंखर्जूरसम्यक्त्वचश्चूर्णंभेषजमिश्रितंसममितंमात्राबिडालंपदम् ॥१॥ श्वासंशोषयुतंक्षयज्वरहरंपित्तप्रमेहापहं रक्तस्तापजडंप्रकाशमरुचिंव्याधिंभगंद्रापहम् ॥ क्षीणेदेहपतत्रयायुतबलंसर्वातिसारापहंसर्वव्याधिविनाशनंनिगदितंश्रीखंडचूर्णाभिधम् ॥ २ ॥

अर्थ–चन्दन, मिरच, लौंग, जायफल, दाख, तज, पत्रज, लालचन्दन, नेत्रवाला, मुलहटी, हलदी, सोंठ, पीपल, पीपलामूल, धनियां, जीरा, केशर, पवहडी, छुहारा इन सबको समान भागलेवे, सबकी बराबर मिश्री मिलादेवे और चार टंकके अंदाज नित्य खाय तो शोषयुक्त श्वास, क्षयी, ज्वर, पित्त, प्रमेह, रुधिरविकार, तप, जडता, बहुतदिनकी, व्याधि, भगन्दर इनका नाश करे. क्षीण देहको पुष्ट करे, अतिसारका नाश करे, सर्वव्याधियोंका नाश करे उसको वैद्य श्रीखंडचर्ण कहते हैं ॥

शंखादिचर्ण ।

शंखचूर्णंसलवणंसहिंगुव्योषसंयुतम् ॥
उष्णोदकेनसम्पीतंहन्तिशूलंत्रिदोषजम् ॥ १ ॥

अर्थ–शंखका चूरा, सेंधानोन, हिंग, सोंठ, मिरच, पीपल इनका चर्ण बनाकर गरम जलके साथ लेनेसे त्रिदोषकाभी नाश होवे ॥

कायफलादिचूर्ण ।

कटूफलंपुष्करंभार्ङ्गीशृङ्गीचमधुनासह ॥
श्वासकासज्वरहरंकट्फलादिकफान्तकृत् ॥ १ ॥

अर्थ–कायफल, पोहकरमूल, भारंगी, काकडासिंगी, इनकाचूर्ण शहदके साथखानेसे, खांसी, श्वास, ज्वरइनको दूरकरे, यहकट्फलादिचूर्णकफनाशकहै.

षट्योगचूर्ण ।

तवराजकणाद्राक्षा खर्जूरंमधुरंत्रुटिः ॥
लवंगंपत्रकंचैवनागकेशरनामतः ॥ १ ॥

अर्थ-मिश्री, पीपल, दाख, छुहारे मुलहटी इलायची लौंग पत्रज और नागकेशर।

मिश्रादिचूर्ण ।

चित्रकेन्द्रयवापाठाकटुकाऽतिविषाभया॥ महाव्याधिप्रशमनो योगाःषट्चरणःस्मृतः ॥ १ ॥ मधुनाभक्षितंहन्तिचूर्णमेकंहिनिश्चितम् ॥ भ्रमंदाहंशीतपीड़ांक्षयरोगंनसंशयः ॥ २ ॥

अर्थ—चित्रक, इंद्रयव, पाढ, कुटकी, अतीस, हरड यह महाव्याधिशमनकर्ता षट्चरणयोग कहाताहै इस चूर्णको सहदके साथ खानेसे भ्रम, दाह, शीतकी पीडा और क्षयरोगका नाश करे ॥

कीलकादिचूर्ण ।

गृहधूमोयवक्षारंपाठव्योषरसांजनम् ॥ तेजोह्वात्रिफलालोध्रं चित्रकं चेतिचूर्णितम् ॥ १ ॥ सक्षौद्रंधारयेदेतद्गलरोगविनाशम् ॥ चूर्णन्तुभक्षयेद्धीमान्दन्तास्यस्यचरोगजित् ॥ २ ॥

अर्थ—घरका धूआं, जवाखार, पाढ, सोंठ, मिरच, पीपल, रसोत, तज, दालचीनी, त्रिफला, लोध, चित्रक इनका चूर्ण शहद संयुक्त खानेसे गलेके रोग नष्ट होवें और दांतोंके रोगोंका नाश होवे ॥

पञ्चनिम्बचूर्ण ।

मूलंपत्रंफलंपुष्पंत्वङ्निम्बस्यसमाहरेत् । सूक्ष्मचूर्णमिदंकुर्यात्पलैःपंचदशोन्मितैः ॥ १ ॥ लोहभस्महरीतक्यौचक्रमर्दकचित्रकौ ॥ भल्लातकंविडंगानिशर्करामलकंनिशा ॥ २ ॥ पिप्पली मरिचंशुण्ठीबाकुचीकृतमालकैः ॥ गोक्षुरंचपदोन्मानमेकैकंकारयेद्बुधः ॥ ३ ॥ सर्वमेकीकृतंचूर्णंभृङ्गराजेनभावयेत् ॥ अष्टभागावशिष्टेनखदिरावरवारिणा ॥ ४ ॥ भावयित्वा सशुष्कंचकर्षमात्रंततःपिबेत् ॥ खदिरसारतोयेनसर्पिषापयसाथवा ॥ ५ ॥ मासेनसर्वकुष्ठानिविनिर्यान्तिरसायनम् ॥ पञ्चनिम्बमिदंचूर्णं सर्वरोगप्रणाशनम् ॥ ६ ॥

अर्थ—निंबकी जड, पत्ता, फल, फूल, छाल, लेकर चूर्ण करे. पल १५ लोहेकी भस्म, हरड, पवांडके बीज, चित्रक, भिलाये, वायविडंग, मिश्री, आंवले, हलदी, पीपल, मिरच, सोंठ, बावची, अमलतासका गूदा, गोखरू ये सब औषधि जुदी २ एक २ पल लेवे. सब चूर्णको एकत्र कर भांगरेके रसकी इकीस भावना देवे. अष्टमांश खैरसारकी भावना देवे पीछे सुखाकर

एक कर्ष नित्य खैरसारके जल अथवा घृतके साथ वा दूधके साथ पीवे तो एकमहीनेमें सकल कुष्ठोंको दूर करे यह पञ्चनिम्ब चूर्ण सकल रोगनाशक है।

इति पञ्चनिम्बचूर्णम् ।

भल्लातकास्तिलैःसार्धमथवाशुण्ठितन्दुलैः ॥
खंडेनगुटीकाकार्याकुष्ठरोगनिवृत्तये ॥ १ ॥

अर्थ—भिलावोंको तिलोंके साथ अथवा सोंठ, चावलोंके साथ मिश्री मिलाकर आठ गुटिका कुष्ठरोगकी निवृत्तिके लिये बनावे ॥

सुदर्शनचूर्ण ।

त्रिफलारजनीयुग्मंकण्टकारीयुगंसटी ॥ चित्रकंग्रन्थिकंमूर्वा-गुडूचीधान्ययासके ॥ १ ॥ कटुकापर्पटीमुस्तात्रायमाणंचवा-लकम् ॥ निम्बंपुष्करमूलंचमधुयष्टीचवासकम् ॥ २ ॥ यवा-नींद्रयवाभार्ङ्गीशिग्रुबीजंसुराष्टकम् ॥ वचात्वक्पद्मकोशीरंच-न्दनातिविषाबला ॥ ३ ॥ शालपर्णीपृष्ठपर्णीविडङ्गंतगरंतथा ॥ चित्रकोदेवदारुश्चचव्यंपत्रं पटोलकम् ॥ ४ ॥ जीवकर्षभकौचै-वलवङ्गंवंशलोचनम् ॥ पुंडरीकंचकाकोलीपत्रकंजातिपत्रकम् ॥ ५ ॥ तालीसपत्रंचतथासमभागानिचूर्णयेत् ॥ सर्वचूर्णस्य चार्द्धांशंकिरातंप्रक्षिपेत्सुधीः ॥ ६ ॥ एतत्सुदर्शनंनामचूर्णंदो-षज्वरापहम् ॥ ज्वरांश्चनिखिलान्हन्तिनात्रकार्याविचारणा ॥ ७ ॥ सन्निपातोद्भवांश्चापिमानसानपिनाशयेत् ॥ शीतज्व-रैकाहिकादीन्मोहन्तंद्रांभ्रमंतृषाम् ॥ ८ ॥ श्वासंकासंचपाण्डुंच हृद्रोगंहन्तिकामलाम् ॥ त्रिकपृष्ठकटीजानुपार्श्वशूलनिवारणः ॥ ९ ॥ शीताम्बुनापिबेद्धीमान्सर्वज्वरनिवृत्तये ॥ यथासुदर्श-नंचक्रंदानवानांविनाशकम् ॥ १० ॥ तथाज्वराणां सर्वेषामि-दंचूर्णंप्रशस्यते ॥ नानादेशोद्भवांश्चैवनीरदोषान्व्यपोहति ॥ ११ ॥

अर्थ—त्रिफला, हलदी, दारुहलदी, छोटीबडी दोनों कटेरी, कचूर, सोंठ, मिरच, पीपल, पीपलामूल, मूर्वा, गिलोय, धनियां, अडूसा, कुटकी, पित्तपापडा,

मोथा, त्रायमाण, नेत्रवाला, नीमकी छाल, पोहकरमूल, मुलहटी, जवासा, अजवायन, इंद्रयव, भारंगी, सहँजनेके बीज, फिटकरी, वच, तज, पद्माख, खश, चन्दन, अतीस, खरैंटी, सालवन, पिठवन, वायविडंग, तगर, चित्रक, देवदारु, चव्य, पटोलपत्र, जीवक, ऋषभक, लौंग, वंशलोचन, कमलगट्टा, कंकोल, तमालपत्र, जावित्री, तालीसपत्र ये सब औषधी बराबर भाग ले, चूर्ण करे, और चूर्णसे आधा चिरायता मिलावे. यह सुदर्शन चूर्ण त्रिदोषज्वरका नाश करे, तथा सम्पूर्ण ज्वरोंको वात, पित्त, कफोंके ज्वर, द्वंद्वज, आगन्तुज, धातुमें स्थित विषमज्वर, सन्निपातजज्वर, मानस (जो मनसे सम्बन्ध रखता हो) शीतज्वर इकतरा, मोह, तन्द्रा, भ्रम, प्यास, श्वास, खांसी, पांडुरोग, हृद्रोग, कामला, त्रिकपीडा, पीठ, कमर, घोंटू, पसवाडा इनका दुखना सब नष्ट होवै. जैसे सुदर्शनचक्र दैत्योंका नाश करता है, तैसेही यह सुदर्शनचूर्ण सब ज्वरोंका नाशक है. और अनेक देशोंके जलविकारको नाश करताहै ॥

षोडशांगचूर्ण ।

किरातंतिक्तकंतिक्तागुडूचीचाभयाघनाः ॥ धन्वयासकत्रायं-तीक्षुद्राशृंगीमहौषधम् ॥ १ ॥ पर्प्पटंचप्रियंगुं च पटोलंमाग-धीसटी ॥ षोडशांगमिति प्रोक्तंज्वरशूलविनाशनम् ॥ २ ॥

अर्थ—चिरायता, निंबकी छाल, कुटकी, गिलोय, हरड़, मोथा, जवासा, त्रायमाण, कटेरी, काकडासिंगी, सोंठ, पित्तपापडा, फूलप्रियंगू, पटोलपत्र, पीपल, कचूर इनका चूर्ण षोडशांग नामसे विख्यात, ज्वर शूलका नाश करताहै।

अरिष्टादिचूर्ण ।

निम्बच्छदोदशपलंत्र्यूषणंचपलत्रयम्॥त्रिपलंत्रिफलाचैवत्रिपलं लवणत्रयम्॥ १॥द्वौक्षारौद्विपलंचैवयवानीपलपंचकम्॥सर्वमे-कीकृतंचूर्णं प्रत्यूषेभक्षयेन्नरः ॥२॥ एकाहिकंद्व्याहिकंचत्र्याहि-कंचतथाज्वरम् ॥ चातुर्थिकंमहाघोरंनाशयेत्संततज्वरम्॥३॥

अर्थ—नींबकी छाल १० पल, त्रिकुटा ३ पल, त्रिफला ३ पल, सैंधानोंन, विडनोंन, संचरनोंन तीनों एक २ पल, सज्जीखार, जवाखार २ पल, अजमायन ५ पल, सबको एकत्र कर चूर्ण कर खाय हो इकतरा, द्व्याहिक, तिजारी, और चौथिय्या और संततज्वर ये सब नष्ट होवें ॥

शृंग्यादिचूर्ण ।

शृंगीकटुत्रिफलकत्रयकण्टकारीभार्ङ्गीसपुष्करजटालवणानिपञ्च चूर्णंपिबेदशिशिरेणजलेनहिक्काश्वासोर्द्ध्ववातकसनारुचिपीनसेषु १

अर्थ—काकडासिंगी, सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, कटेरी, भारंगी, पुहकरमूल, सैंधानोंन, संचरनोंन, विडनोंन, समुद्रनोंन, कचियानोंन इनका चूर्ण गरमजलके साथ पीनेसे हिचकी, ऊर्ध्वश्वास, वात, कफके रोग, अरुचि और पीनस ये सब नष्ट होवें ॥

लवणभास्करचूर्ण ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलंधान्यकंकृष्णजीरकम् ॥ सैंधवंचविडंगंच पत्रं तालीसकेसरम् ॥ १ ॥ एषांद्विपलिकान्भागान्पञ्चसौवर्चलस्यच॥मरिचंशुंठ्यजाजीस्यादेकैकंचपलंपलम्॥२॥त्वगेलार्द्धभागेनसामुद्रंचपलाष्टकं॥चतुःपलंदाडिमञ्चद्विपलंचाम्लवेतसम् ॥३ ॥ एतच्चूर्णीकृतंसूक्ष्मंलवणंभास्कराभिधम् ॥ गवां तक्रंसुरासुष्ठुदधिकांजिकयोजितम् ॥ ४ ॥ वातश्लेष्मंवातगुल्मं वातशूलंचनाशयेत्॥मन्दाग्निंग्रहणीमर्शोहृद्रोगंप्लीहमेवच ॥५॥

अर्थ—पीपल, पीपलामूला, धनियां, कालाजीरा, सैंधानोंन, वायविडंग, तालीसपत्र, नागकेशर इन सब औषधियोंको दो २ पल लेवे, संचरनोंन ५ पल, मिरच, सोंठ, जीरा इनको एक २ पल लेवे, तज, इलायची, इनको ८ टंक लेवे, समुद्रनोंन ८ पल, अनारदाना ४ पल, अमलवेत २ पल ले, सबको मिलाकर खूब बारीक पीसे यह लवणभास्कर चूर्ण है, भास्करवैद्यका बनाया हुआहै, सुगंधयुक्त अमृतके तुल्य है, इसको

छांछ, कांजी, दारू, दही, इनके साथ खानेसे वात कफके विकार, वायगोला, मंदाग्नि, संग्रहणी, बवासीर, हृद्रोग, प्लीहके रोग सब नष्ट होवें।

दूसरा तालीसादिचूर्ण।

तालीसग्रंथिधान्यैर्भवरविडकणाकृष्णजीरच्छदाम्लंसामुद्रंविश्वजीरोषणमथरुचकंत्वक्त्रुटीदाडिमैस्तैः॥ विंशत्यष्टत्रिपंचैकचतुरवयवैर्भास्कारोन्मंथवाम्लैर्गुल्मेसार्शोर्तिकासग्रहणिजठरहृत्त्वग्गदश्लेष्मवाते ॥ १ ॥

अर्थ—तालीसपत्र, पीपलामूल, धनियां, विडनोंन, पीपल, कालाजीरा, अमलवेत, समुद्रनोंन, सोंठ, सफेदजीरा, पत्रज, कालानोंन, तज, छोटीइलायची, अनारदाना, इनको क्रमसे वीस, आठ, तीन, पांच एक और चार भाग लेवे, इसमें नींबूके रसकी भावना देय, यह भस्कारचूर्ण गोला बवासीर, खांसी, संग्रहणी, उदररोग, त्वक्रोग कफवातके रोग सबको नष्ट करे॥

वज्रक्षारचूर्ण।

सामुद्रंसैन्धवंकाचंयवक्षारंसुवर्चलम्॥ टंकणंस्वर्जिकाक्षारंतुल्यं चूर्णंप्रकल्पयेत् ॥ १ ॥ अर्कक्षीरैःसुहीक्षीरैर्भावयेदातपेत्र्यहम् ॥ अर्कपत्रेलिपेत्तन्तुरुद्धाचांधपुटेपचेत् ॥ २ ॥ सकलंचूर्णयित्वाथत्र्यूषणंत्रिफलारजः॥जीरकंरजनीवह्निनिम्बकस्यरसंसमम् ३ एकीकृत्यप्रयोगेणसूक्ष्मंचूर्णंतुकारयेत् ॥ वज्रक्षारमिदंचूर्णंस्वयं प्रोक्तंपिनाकिना ॥४ ॥ सर्वोदरेषुगुल्मेषुशोफेशूलेषुयोजयेत्॥ अग्निमांद्येअजीर्णेषुभक्ष्यंनिष्कद्वयंद्वयम् ॥ ५॥ अर्कपत्रंसलवणंपुटंदग्धेसुचूर्णितम्॥निहन्तिमधुनापीतंप्लीहानंशूलदारणम् ६

अर्थ—समुद्रनोंन, सैंधानोंन, कचियानोंन, जवाखार, संचरनोंन, सुहागा, सज्जी इन सबको बराबर लेवे और चूर्णकर आकके रसकी थूहडके दूधकी भावना तीन२ देय, पीछे उस चूर्णको आकके पत्तोंसे लपेटकर अंधमूषापुटमें रखकर फूंकदेवे जब सबकी भस्म होजाय तब इसमें इतनी औषधि और मिलावे सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, जीरा, हलदी, चित्रक इनका चूर्णकर औषधियोंके समान नींबूके रसकी भावना देवे, यह श्रीमहादेवजीने वज्र-

क्षार कहाहै, यह सब उदरके रोग, गोला, सूजन, शूल इनमें देना चाहिये, मन्दाग्नि और अजीर्णमें, दो टंकके अनुमान खावे ॥

अर्कपत्रंसलवणंपुटदग्धेसुचूर्णितम् ॥
निहन्तिमधुनालीढंप्लीहानञ्चसुदारुणम् ॥ १ ॥

अर्थ–आकके पत्तोंमें नोंन मिलाकर भस्म करे उस भस्मको शहदके साथ चाटनेसे महाभयानक प्लीहारोग नष्ट होवे ॥

विडलवणादिचूर्ण ।

विडरुचकयवानीजीरकेद्वेचपथ्यात्रिकटुकहुतभुग्भ्यांवेतसाम्लाजमोदाः ॥ समविहितरजोभिर्धान्यकंतिन्तडीकंजरयति नगकूटं का कथाभोजनस्य ॥ १ ॥

अर्थ–बिडनोंन, अजवायन, दोनों जीरे, हरड, सोंठ, मिरच, पीपल, चित्रक, अमलबेत, अजमोद, धनियां, तिंतडीक, इन सबको समान लेवे यह चूर्ण पत्थरको जीर्ण करदेवे, भोजनकी तो क्या बडी बात है ॥

सामुद्रिकचूर्ण ।

सामुद्रसौवर्चलसैंधवानांक्षारोयवानामजमोदभागम् ॥ हरीतकीपिप्पलिशृंगवेरंहिंगुर्विडंगानिसमंचदद्यात् ॥ १ ॥ एतानिचूर्णानिघृतप्लुतानि भुंजीतपिण्डान्प्रथमंचपंच ॥ अजीर्णवातंगुदगुल्मवातंवातप्रमेहंविषमंचवातम् ॥ २ ॥ विषूचिकां कामलपाण्डुरोगान्कासंचश्वासंहरतेप्रवृद्धम् ॥ ३ ॥

अर्थ–समुद्रनोंन, संचरनोंन, सेंधानोंन, जवाखार, हरड, अजमोदा, सोंठ, हींग, वायबिडंग इन सबको समान ले इनका चूर्ण कर घृत मिलाय भोजनके प्रथम पांच ग्रास लेवे तो अजीर्ण, वादी, गुदाके रोग, बायगोला, वातप्रमेह, विषमवात, हैजा, कामला, पांडुरोग, खांसी, श्वास इन सबका नाश करे ॥

हिंग्वष्टकचूर्ण ।

त्रिकटुकमजमोदासैन्धवंजीरकेद्वेसमचरणधृतानामष्टमोहिंगुभागः। प्रथमकवलभुक्तंसर्पिषाचूर्णमेतज्जनयतिजठराग्निंवातगुल्मंनिहंति।

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, अजमोदा, सेंधानोंन, सफेदजीरा, कालाजीरा इन सबको बराबर लेकर अष्टमांश हींग घीमें भून कर डाले पीछे इस चूर्णको भोजनके प्रथम पांच ग्रासोंमें खाय तो जठराग्निको प्रबल करे और वायगोलाको नष्ट करे ॥

हिंगुपंचक ।

विश्वौषधेनरुचकेन सदाडिमेनस्यादम्लवेतसयुतंकृतहिं गुभागम् तद्धिंगुपंचकमिदंजठरामयघ्नंभेडाभिधानमुनिनागदितंमुनीनाम्

अर्थ—सोंठ, संचरनोन, अनारदाना, अमलवेत ये बराबर लेवें, इनमें एक हिस्सा हींग मिलावे यह हिंगुपंचक उदरके रोगोंको दूर करे यह भेडनाम मुनिने कहाहै ॥

हिंगुत्रयोविंशतिचूर्ण ।

हिंग्वग्निचव्यलवणत्रयवेतमाम्लक्षारद्वयंत्रिकटुदाडिमतिंतडीकम् । सग्रंथिकाग्निकसटीहपुषाजगंधापाठाभयासुसितजीरकपुष्कराह्वा॥ १॥ सोग्रंसधान्यकमितिप्रविधायचूर्णंभूयः प्लुतंहिफलपूरफलद्रवेण॥ उष्णोदकेनपरिपीतमिदंनिहन्ति शूलानिगुल्मगुदजाग्रहणीरुजाश्च ॥ २ ॥

अर्थ—हींग, चीता, सैंधानोंन, चव्य, संचरनोन, विडनोन, अमलवेत, सज्जीखार, जवाखार, सोंठ, मिरच, पीपल, अनारदाना, तंतडीक, पीपलामूल, अरणी, कचूर, हाऊबेर, असगंध, पाढ, हरड, सफेदजीरा, पोहकरमूल, वच, धनियां ये सब बराबर लेय, सबका चूर्ण कर बिजोरे नीबूकी भावना देय, पीछे इसको गरम जलके साथ खाय. तो वायगोला, शूल, गुदाके रोग, संग्रहणी इन सबका नाश करे ॥

तुम्बरादिचूर्ण ।

तुम्बराणित्रिलवणंयवानीपुष्कराह्वयम् ॥ यवक्षाराभयाहिंगुविडंगानिसमानिच ॥ १ ॥ त्रिवृत्त्रिभागविजयासूक्ष्मचूर्णानिकारयेत् ॥ पिबेदुष्णेनतोयेनयवक्काथेनवापिबेत् ॥ २ ॥

अर्थ–तुंबरू, सैंधानोंन, संचरनोंन, विडनोंन, अजमायन, पोहकर मूल, जवाखार, हरड, हींग, वायविडंग ये सब समान भाग लेवे, इन सबक तीसरा भाग निसोथ लेवे, सबको पीसकर महीन करलेवे गरम जलके साथ पीवे, अथवा जवके काढेके साथ पीवे तो सब प्रकारके शूल, गोला अफरा, उदररोगोंको जीते ॥

अजमोदादिचूर्ण ।

अजमोदाविडङ्गश्चसैंधवंदेवदारुच ॥ चित्रकंपिप्पलीमूलंशतपुष्पाचपिप्पली ॥ १ ॥ मरिचंचेतिकर्षांशंप्रत्येकंकारयेद्बुधः ॥ कर्षास्तुपंचपथ्यायादशस्युर्वृद्धदारुका ॥ २ ॥ नागराचदशैवस्युःसर्वानेकत्रचूर्णयेत्॥ पिबेत्कोष्णजलेनैतच्चूर्णंशोफविनाशनम् ॥३॥ आमवातरुजंहन्तिसन्धिपीडांचगृध्रसीम् ॥ कटिपृष्टिगुदस्थांचजंघयोश्चरुजंजयेत् ॥४॥ तूनीप्रतूनीवातांश्चकफवातामयाञ्जयेत् ॥ समेनवागुडेनास्यवटिकाःकारयेद्बुधः ॥५॥

अर्थ–अजमोदा, वायविडंग, सैंधानोंन, देवदारु, चित्रक, पीपलामूल सोंफ, पीपल, मिरच इन सबको एक २ कर्ष लेवे, और हरड पांच क लेवे. विधायरा दश कर्ष लेवे. सोंठ दशकर्ष लेवे. सबको एकत्र क चूर्ण करे और गरम जलके साथ लेवे तो सूजनका नाश करे. आमवात संधियोंकी पीडा, गृध्रसी रोग, कमर, पीठ, गुदा, जंघा, इनकी पीडाक नाश करे. तूनी, प्रतूनी, विश्वाची और कफके रोगोंको दूर करे. अथव इसमें बराबर गुड मिलाय कर गोली बनालेवे ॥

उदरविकारमें विजयचूर्ण ।

श्रीदीपोग्राग्निहिंगुद्विविषिमिशिवृकीचव्यतिक्तापटूनिग्रन्थिक्षारेन्द्रजत्रित्रिकमितिविजयः सोष्णकैरण्डतैलम् ॥ हन्त्यर्शःकासगुल्मग्रहणिकृमिरुजापांडुरुग्भूतशूलं श्वासं प्लीहं प्रमेहं ज्वरमरुचिमुदावर्तघर्मामवातान् ॥ १ ॥

अर्थ–अजमोद, वच, चीता, हींग, अतीस, सोवा, पाढ, चव्य कुटकी, पांचोंनोंन, पीपलामूल, जवाखार, इन्द्रयव, सोंठ, मिरच, पीपल

त्रिसुगंध इन सबको बराबर २ लेवे, गरम जलसे अंडीका तेल मिलाकर देवे तो यह विजयचूर्ण बवासीर, खांसी, गोला, संग्रहणी, कृमिरोग, पांडुरोग, भयानकशूल, श्वास, तापतिल्ली, प्रमेह, ज्वर, अरुचि, उदावर्त्त, अफारा, आमवात इन सब रोगोंका नाश करे ॥

नारायणचूर्ण ।

द्वौक्षारौलवणानिपंचहपुषाधान्याजगन्धासटीव्योषाजाज्युपकुञ्चिकाकृमिजितःकंकुष्ठकुष्ठाग्नयः ॥ उग्रागंधककारवीमिसियुवंयोज्यफलानांत्रयंमूलं पुष्करजंयवान्परिभवेदेतानितुल्यान्यथ ॥ १ ॥ त्रिवृद्विशालेद्विगुणाथदन्तिनीत्रिसंगुणास्यादथ तिक्तकाभवेत् ॥ चतुर्गुणाचूर्णमुदाहृतंजनैरिदंहिनारायणमौषधंबुधैः ॥२॥ उष्णोदकेनयवकोलकुलत्थतोयैस्तक्रेणमद्यदधिमस्तुसुरासवैर्वा ॥ नारायणंप्रपिबतः सकलोदराणिनश्यन्ति विष्णुमिवदैत्यगणाद्विषंतः ॥ ३ ॥

अर्थ—सज्जीखार, जवाखार, पांचोंनोंन, हाऊबेर, धनियां, अजमोद, कचूर, सोंठ, मिरच, पीपल, कालाजीरा, सफेदजीरा, वायविडंग, कंकोल, कूठ, चित्रक, वच, पीपलामूल, सोवाके बीज, त्रिफला, पोहकरमूल, अजमायन इन सब औषधियोंको बराबर लेकर निसोथ, इन्द्रायनकी जड हरएक दूनी लेवे, दंती तिगुनी लेवे. कुटकी चौगुनी लेय, सबका चूर्ण कर गरमजलसे अथवा यवके काढेके साथ तथा कुलथीके काढेके साथ अथवा छांछके साथ वा मदिराके साथ वा दहीसे वा दहीके जलसे वा सुरामांसीके आसवसे इस नारायण चूर्णको पीवे तो सम्पूर्ण उदरके विकार ऐसे नष्ट होवें जैसे विष्णुभगवान्के सुदर्शन चक्रसे दैत्योंका नाश हुआ ॥

त्रिलवणादिचूर्ण ।

त्रिलवणहपुषाजमोदोग्रगन्धावचाहिंगुपाठोपकुंचिकासटीजीरकाधानिकस्तुंबरीसापिकाकावरातूंबरुसार्जिकायावशूकाजटापुष्करं दाधिमंतिन्तडीकम्॥ १॥विडंगानिभार्ङ्गीवरीवेतसाम्लौसमरिच-

गजकणाभयापंचकेलानिकोलानिकुभाविशालायवानीसुराह्व
चतत्सर्वमेकत्रचूर्णिकृतंबीजपूराद्रकरसेनासकृद्भावितंयः पिबे-
त्प्रातरुत्थायचाहारकालेथवामासमात्रंहिताशीनरः प्लुतम-
शिशिरेणवारिणाजीर्णमद्येन तक्रेणकोलांभसामस्तुनावापिबेत्
सर्पिषाकोष्णदुग्धेनतत्क्षारनष्टोरनिष्टोततोस्वेतवादाडिमंवार-
सेनात्मवानेभिरेवौषधैः ॥ २ ॥ सारितंव्याधिह्रद्धृदयगुदक-
टीयकृत्प्लीहगुल्माश्रितं तस्यशूलप्रणासस्तथागुल्मविष्टंभदुर्ना-
मह्रद्रोगकृच्छ्रोदराध्मानहल्लासयक्ष्मारुचिश्वासकासाप्रपचय-
त्यसकौभवेत्पाचकःप्राश्यमानानिपाषाणचूर्णान्यपि ॥ ३ ॥

अर्थ—तीनों नोंन, हाऊबेर, अजमोद, असगंध, वच, हींग, पाढ, कालाजीरा, कचूर, अजमायन, धनियां, हिंगुपत्री, सोवा, तुंबरू, सज्जी, जवासा, पोहकरमूल, अनारदाना, तंतडीक, वायविडंग, भारंगी, शतावर, अमलवेत, कालीमिरच, गजपीपल, हरड, पंचमूल, (पीपल, पीपलामूल, चव्य, चित्रक, सोंठ) बेरकी मिंगी, दांतण, इन्द्रायणकी जड, देवदारु ये सब औषधि कूट पीस कपरछानकर विजौरेके रसकी और अदरकके रसकी अनेक भावना देकर रख छोडे इसमेंसे प्रातःकाल नित्य खाय अथवा भोजनके समय खाय एक महीना पर्य्यंत और पथ्यसे रहे इसको गरम वा शीतल जलके साथ वा पुराने मद्यके साथ वा छाछ वा बेरके पानीसे वा दहीके जलसे घृत वा गरम दूधके साथ पीवे. अथवा चनाखार आदिके साथ सेवन करे वा अनारके रसके साथ सेवन करे तो इतने रोगोंका नाश करे हृदय, गुदा, कमर, यकृत, प्लीहा गोला इनके आश्रित व्याधियोंको नाशकरे, शूल, व्रणरोग, बवासीर, गोला, अफारा, हृदयरोग, उदररोग, सूखीरद्द ॥

अथ क्षारामृतम् ।

क्षारंकिंशुकमुष्ककार्जुनधवापामार्गरम्भातिलाजीवन्तीकनकाह्व
यासरजनीकृष्माण्डवल्लीतथा॥वासासूरणकत्रिवृद्दहनकैःप्रज्वा-

ल्यभस्मीकृतंतोयेनप्रतिशोध्यनिःसृतपयःपानंविधेयंसकृत् १॥ शूलानाहविबन्धगुल्मकफजान्रोगाञ्जयेत्कामलांवायुंविद्रधिशूलपाण्डुग्रहणीशोफार्शसम्पीनसम् ॥ मन्दाग्निंजठरस्यपीनसगुरुप्लीहातिमेदादिकान् पाषाणाउदरेभवन्तिबहुधाभस्मीभवन्तिक्षणात् ॥ २ ॥

अर्थ—ढाकका खार, मुष्क वृक्ष, (वनपलाश नामसे प्रसिद्ध हैं अर्जुनकोह इति भाषा) ओंघा, केला, तिल, जीवन्ती, (डोडी) धतूरा, हलदी, पेठा, अडूसा, जिमीकंद और निसोथ इन सबकी राखको पानीमें भिगोकर अग्निपर रखकर खारकी क्रियासे खार निकाल लेवे और खारोंको जलमें मिलाकर पीनेसे शूल, पेटका अफारा, बन्धकुष्ठ, गोला, कफके रोग, कमलवायु, विद्रधि, हृदयका शूल, पांडु, संग्रहणी, सूजन, बवासीर, पीनस, मन्दाग्नि, पेटके रोग, प्रमेह, पथरी इत्यादि रोगोंका नाश करताहै ।

अम्लवेतसचूर्ण ।

कत्यम्लवेतसफलानिविदारितानिसिंध्वादिपंचलवणेनसुपूरितानि ॥ हिंग्वादिजेनपटुभास्करजेनचाथतालीसपुष्पजनितेनविभाव्ययुक्त्वा ॥ १ ॥ सशोष्यतीव्रकिरणैरवितप्ततापैःसिद्धानितत्सकलमेवसुभक्षितञ्च ॥ गुल्मेरुचौयकृतिदुष्पवनाग्निमांद्यैः प्लीहामयेषुजठरेषुगुदोद्भवेषु ॥ २ ॥

अर्थ—कितनेक फल अमलवेतके लेकर बना २ कर उनके भीतर पांचों निमक भर दे. अथवा लवणभास्कर चूर्ण भरदेवे. वा हिंग्वष्टक भरदेवे, वा तालीसादि भरदे, फिर उन फलोंको धूपमें सुखावे जब सूखजांय तब उसमेंसे एक टंक खाय तौ गुल्म, अरुचि, प्लीहा, दुष्टवात, मन्दाग्नि, तापतिल्ली और उदर तथा गुदाके सम्पूर्ण रोगोंका नाश करताहै ॥

तथातिसारेलघुगंगाधरचूर्णम् ।

अजमोदामोचरसंसशृङ्गवेरंचधातुकीकुसुमम् ॥
गोमथिततक्रपीतंगुडमपिवेगवाहिनींरुंध्यात् ॥ १ ॥

अर्थ–अजमोद, मोचरस, सोंठ, धायके फूल, गायके मट्ठाके साथ पीवे तो गंगाके वेगवाला अतीसार भी नाश होय ॥

अतिसारे वृद्धगंगाधरचूर्ण ।

अरुलुकघनशुण्ठीधातुकीबिल्वलोध्रंकुटजपलसमेतंमोचनिर्यासयुक्तम् ॥ अतिविषजलपाठासाहकारंचबीजंमसृणमधुविमिश्रं तंदुलाम्बुप्रपीतम्॥ १॥कफोद्भवंमारुतपित्तसंभवंजयेदतीसारपुराणमामजम्॥प्रसिद्धगंगाधरनामचूर्णंतथाहिरोगेग्रहणीगदेच२॥

अर्थ–अरलूकी छाल, मोथा, सोंठ, धायके फूल, बेलगिरी, लोध, कुडाकी छाल, इंद्रयव, मोचरस, अतीस, सुगंधवाला, पाठा, आमकी गुठली इनको शहदमें मिलाकर साठी चावलोंके साथ खाय तो कफ, वात, पित्तसे जो बहुत दिनका अतीसार, आमसंग्रहणीआदि रोगोंको जीते यह चूर्ण गंगाधर नामसे प्रसिद्ध है ॥

कपित्थाष्टकचूर्ण ।

अष्टौभागाःकपित्थस्यषड्भागाशर्करामता॥दाडिमन्तिन्तडीकञ्चश्रीफलंधातुकीतथा ॥ १ ॥ अजमोदाचपिप्पल्याःप्रत्येकं स्युस्त्रिभागकम् ॥ मरीचंजीरकंधान्यंग्रंथिकंबालकंतथा ॥२॥ सौवर्चलंयवानीचचातुर्जातंसचित्रकम् ॥नागरंचैकभागाःस्युः प्रत्येकंसूक्ष्मचूर्णिताः ॥ ३॥ कपित्थाष्टकसंज्ञंस्याच्चूर्णमेतज्जलामयान् ॥ निहन्तिग्रहणीरोगानतीसारंव्यपोहति ॥ ४ ॥

अर्थ–आठ भाग कैथा, और छः भाग मिश्री, अनारदाना, तंतडीक, बेलगिरी, धायके फूल, अजमोद, पीपल, प्रत्येक तीन २ भाग लेवे. सुगंधवाला, कालानोंन, अजमायन, चातुर्जात, चीता, सोंठ इन सब औषधियोंको दो दो भाग लेवे, सूक्ष्म चूर्णकर मिश्री मिलावे, यह चूर्ण दुष्ट जलके रोग, संग्रणी, अतीसारको दूर करताहै ॥

यवान्यादिचूर्ण ।

यवानीपिप्पलीमूलंचातुर्जातकनागरैः॥मरिचेंद्रयवाजाजीधा-

न्यसौवर्चलैः समैः ॥ १ ॥ वृक्षाम्लधातुकीकृष्णाबिल्वदाडिमदीपकैः ॥ त्रिगुणैः षड्गुणैः सिद्धैः कपित्थोष्टगुणः स्मृतः ॥ २ ॥ चूर्णमतिसारग्रहीक्षयगुल्मगलामयान् ॥ कासश्वासाग्निमन्दार्शः पीनसारोचकाञ्जयेत् ॥ ३ ॥

अर्थ—अजवायन, पीपलामूल, चातुर्जात, सोंठ, मिरच, इन्द्रयव, जीरा, धनियां, कालानोंन ये सब समान लेवे अमलबेत, धायके फूल, पीपल, बेल, अनारदाना, अजमोद ये सब हरएक तिगुनी लेय, और मिश्री छः गुनी लेवे कैथके आठ भाग लेवे, यह चूर्ण अतीसार, ग्रहणी, क्षय, गुल्म, गलेके रोग, खांसी, श्वास, मन्दाग्नि, अर्श, पीनस, अरुचिआदिको दूर करताहै॥

दाडिमाष्टकचूर्ण ।

दाडिमस्यपलान्यष्टौशर्करायाःपलाष्टकम्॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंयवानींमरिचन्तथा ॥ १ ॥ धान्यकंजीरकंशुण्ठीप्रत्येकंपलसम्मितम्॥कर्षमात्रातुगाक्षीरीत्वक्पत्रैलाश्वकेशरम्॥२॥प्रत्येकंकोलमात्रंस्यात्तच्चूर्णंदाडिमाष्टकम्॥ अतीसारंक्षयंगुल्मंग्रहणींचगलग्रहम् ॥ मन्दाग्निंपीनसंकासंचूर्णमेतद्व्यपोहति ॥ १३॥

अर्थ—अनारदाना ८ पल, मिश्री ८ पल, पीपल, पिपलामूल, अजवायन, मिरच, धनियां, जीरा, सोंठ ये सब एक २ पल लेवे वंशलोचन ४ टंक, तज, तेजपात, दालचीनी, इलायची, नागकेशर इन औषधियोंको दो २ टंक लेवे यह चूर्ण दाडिमाष्टक अतीसार, क्षयी, गोला, संग्रहणी, गलरोग, मन्दाग्नि, पीनस, खांसी आदि रोगोंका नाश करे ॥

उदरकृमिरोगे वचादिचूर्ण ।

वचाजमोदाकृमिहृत्पलाशबीजंसटींरामठकंत्रिवृच्च ॥ जलेनतत्तेनतुपेष्यपेयंपतंतिशीघ्रंकृमयःसमूलाः ॥ १ ॥

अर्थ—वच, अजमोद, वायविडंग, ढाकके बीज, सोंठ, कचूर, हींग, निसोत इनका चूर्ण गरमजलके साथ पीवे तो सब कृमि गिरपडें ॥

पुनः श्लोक ।

कंपिल्लकंविडङ्गानिक्षारंसैन्धवमेवच ॥
पिष्ट्वातक्रेणपातव्यंनित्यंकृमिविनाशनम् ॥ १ ॥

अर्थ–कबीला, बांयविड़ंग, जवाखार, सैंधानोंन इनको पीसफर मट्ठा-के संग पीवे तो कृमि नाश होवें ॥

प्रमेहे एलादिचूर्ण ।

एलाश्मभेदकशिलाजतुपिप्पलीनांचूर्णानितण्डुलजलैर्लुलिता-निपीत्वा॥यद्वागुडेनसहितान्यवलिह्यमानमासन्नमृत्युरपिजीव-तिमूत्रकृच्छ्री ॥ १ ॥

अर्थ–छोटी इलायची, पाषाणभेद, शिलाजीत, पीपल इनका चूर्ण साठी चांवलोंके पानीके साथ पीवे अथवा गुड डालकर अवलेह सेवन करे तो निकट मृत्युवाला भी मूत्रकृच्छ्री जीवे ॥

कोलमज्जाकणावह्निपक्षभस्मसशर्करम् ॥
मधुनालेहयेच्छर्दिंहिक्काकोपस्यशांतये ॥ १ ॥

अर्थ–बेरकी मिंगी, पीपल, चीता, मोरपंखकी राख, मिश्री, शहदके साथ लेवे तो छर्दि, हिचकी ये सब दूर होवें ॥

पुनः श्लोक ।

लाजाकपित्थमधुमागधिकोषणानांक्षुद्राभयात्रिकटुधान्यकजी-रकाणाम् ॥ पथ्यामृतामरिचमाक्षिकपिप्पलीनांलेहास्त्रयः सक-लवम्यरुचिप्रशांत्यै ॥ १ ॥

अर्थ–धानकी खील, कैथा, मुलहटी, पीपल, मिरच और कटेरी, हरड़, त्रिकटु, धनियां, जीरा इनका अवलेह और तीसरा हरड़, गिलोय, मिरच, शहद, पीपल इनका अवलेह सब अरुचि छर्दिका नाश करता है ।

कोलामलकमज्जानौमाक्षिकाविट्सितामधु ॥
सकृष्णातांडुलोलेहः श्रेष्ठश्छर्दिंनिवारणः ॥ १ ॥

अर्थ-बेरकी मिंगी, आवलेकी मिंगी, मक्खीकी बीट, मिश्री, शहद, पीपल इनको साठी चांवलोंके पानीके साथ लेयतो सबप्रकारकी छर्दि जाय।

पुनः श्लोक ।

वटप्ररोहंमधुकुष्ठमुत्पलंसलाजचूर्णैर्गुटिकांप्रकल्पयेत् ॥
सशर्करासावदनेचधारितातृषांप्रवृद्धामपिहन्तिसत्वरम् ॥ १ ॥

अर्थ-वडकी जटा, शहद, कूठ, कमलगट्टा, धानकी खील इनकी गोली बनावे मिश्रीके साथ मुहमें राखे तो प्यास बंद होवे ॥

दन्तपीडामेंजातीपत्रादिचूर्ण ।

जातीपत्रपुनर्नवागजकणाकोरण्ठकुष्ठावचाशुण्ठीदिव्यशतावरी समघृतंचूर्णंमुखेधार्यते ॥ वातघ्नंकफनाशनंकृमिहरंदुर्गन्धिनिर्णाशनंवक्त्रस्यापिसमस्तदोषहननंदन्तश्चवज्रायते ॥ १ ॥

अर्थ-जावित्री, सांठकी जड, गजपीपल, कोरंटक वृक्षके फूल, कूठ, वच, सोंठ, लौंग, शतावर इन सबको बराबर लेवे और सबके समान घी लेकर मुखमें रखनेसे वायुविकार, कफ, कृमि, मुहँकी दुर्गंध जाय और दांत वज्रके समान होजावें ॥

पुनः श्लोक ।

कुष्ठदार्वीलोध्रमब्दंसमङ्गापाठातिक्तातेजनीपीतकाच॥एतच्चूर्णं घर्षणंतद्विजानांरक्तस्रावंहन्तिकण्डूरुजञ्च ॥१॥ फलान्यम्लानिशीताम्बुरूक्षान्नंदन्तधावनम् ॥ तथातिकठिनान्भक्ष्यान्दन्तरोगीविवर्जयेत् ॥ २ ॥

अर्थ-कूट, दारुहलदी, लोध, मोथा, मजीठ, पाढ, कुटकी, मूर्वा, (लता होतीहै) हलदी इन सब औषधियोंका चूर्ण कर दांतोंमें मले तो रुधिर गिरना, खुजली, दरद आदिको दूर करे और खट्टाफल तथा खटाई न खाय, ठंढा पानी न पीवे, रूखा अन्न, दंतधावन, अतिकठिन भोजन इन सबको दंतरोगी छोडदेवे ॥

दन्तमसी ।

कासीसंत्रिफलामाजूफलंजुङ्गीहरीतकी॥कर्पूरंखदिरंताप्यंलोहचूर्णं

चविद्रुमम् ॥ १ ॥ दाडिमंत्वक्चमंजिष्ठालोध्रंतुत्थंसुराष्ट्रजा ॥ मस्तंगीविदलम्पूगंसर्वंसूक्ष्मविचूर्णितम् ॥ दन्तशूलहरंचाम्लं दन्तकृष्णीकरंतथा ॥ २ ॥

अर्थ–कसीस, त्रिफला, माजूफल, जंगीहड, कपूर, खैरसार, सोनामक्खी, लोहचूर्ण, मूँगा, अनारका छिलका, मजीठ, लोध, नीलाथोथा, फिटकरी, मस्तंगी, विदल, सुपारी सबको बराबर लेकर पीसले यह दांतोंका दरद दूर करे और खटाईको तथा दांतोंको स्याह करे ॥

कायाकल्पे भृंगराजचूर्णम् ।

समूलंभृङ्गराजञ्चच्छायाशुष्कंतुकारयेत्॥तत्समंत्रिफलाचूर्णंसर्वतुल्यासिताभवेत्॥ १॥पलैकंभक्षयेच्चैतदल्पमृत्युज्वरापहम्॥२॥

अर्थ–भांगरापंचांगको छायामें सुखावे उसकी बराबर त्रिफला और सबके समान मिश्री डाले. इस चूर्णको पल एक लेवे तो अल्पमृत्यु और ज्वरका नाश करे ॥

श्लोक ।

सूक्ष्मीकृतंभृङ्गनृपस्यचूर्णैःकृष्णैस्तिलैरामलकैश्चसार्द्धम् ॥ सितायुतांभक्षयतांनराणांनव्याधयोनैवजरानमृत्युः ॥ १ ॥

अर्थ–भांगरेके पंचाङ्गको महीन पीसकर कालेतिल, आंवले बराबर लेवे, और फिर इनके बराबर मिश्री डाले इस चूर्णको जो कोई खाय उसको व्याधि, बुढ़ापा, पलित, अल्पमृत्यु न सतावे ॥

आमलकादिचूर्ण ।

आमलंचित्रकंपथ्यापिप्पलीसैन्धवंतथा ॥
भेदीरुचिकरः श्लेष्मजेतापाचनदीपनः ॥ १ ॥

अर्थ–आवला, चीता, हड, पीपल, सैंधानोंन इनका चूर्ण भेदी, रुचिकारक, श्लेष्मविकारको दूरकरे. और अग्निको दीपन करताहै ॥

बुद्धिवृद्धौसारस्वतचूर्णम् ।

कुष्ठाश्वगन्धेलवणाजमोदेद्वेजीरकेत्रीणिकटूनिपाठा॥मांगल्यपु-

ष्पाचसमानचूर्णंकृत्वाचचूर्णेनवचोद्भवेन ॥ १ ॥ तुल्येनयुक्तं बहुशोरसेनतद्भावितंब्रह्मविनिर्मितायाः ॥ सर्पिर्मधुभ्यांचततो-क्षमात्रंलिह्यादिनात्सप्तगुणांश्चसप्त ॥ २ ॥ सारस्वतमिदंचूर्णंब्र-ह्मणानिर्मितंस्वयम् ॥ जगद्धितायलोकानांदुर्मेधानामचेतसाम् ३

अर्थ--कूठ, असगंध, सेंधानोंन, अजमोद, दोनों जीरे, सोंठ और सबकी बराबर वच लेय. मिरच, पीपल, पाढ़, संखाहूली इनकी समान मात्रा लेवे. चूर्ण कर ब्राह्मीके रसकी भावना देय, यह ब्रह्माने अपनी बुद्धिसे रचाहै घृत अथवा शहद ४ टंक लेय ४९ दिन खाय तो यह चूर्ण मूर्खकी बुद्धिको बढावे ॥

पुनःश्लोक ।

गुडूच्यपामार्गविडंगशंखिनीब्राह्मीवचाशुंठिशतावरीच॥ घृतेन लीढाप्रकरोतिमानवांस्त्रिभिर्दिनैर्ग्रंथसहस्रधारिणः ॥ १ ॥ ब्रा-ह्मीमुण्डीपिप्पलीनागराजंकुष्ठंसर्पिःश्वेतवर्णावचावा ॥ मौ-ढ्यार्त्तानामक्षमात्रंददीतप्रज्ञामेधावर्द्धतेमासयुग्मान् ॥ २ ॥ ज्योतिष्मत्यास्तैलमेकंपिबेच्चगुंजावृद्ध्याकर्षमात्रन्तुयावत् ॥ सौरेपर्वण्यापमध्येप्रविष्टःप्रज्ञामूर्तिर्जायतेसौकवीन्द्रः ॥ ३ ॥

अर्थ—गिलोय, ओंगा, वायबिडग, शंखाहूली, ब्राह्मी, वच, सोंठ, शतावरी ये सब बराबर लेय, और चूर्ण कर घृतके संग सेवन करे, अवलेह कर सेवन करे तो तीन दिनमें हजार श्लोककी धारणा होय, मालकांगनीके तेलको सूर्यपर्वके जलमें पीवे तो पंडित होय ॥

त्रिकटुत्रिफलाधान्ययवानीशतमूलिका॥ वचाभार्ङ्गीतथाब्रा-ह्मीचूर्णंसमधुलेहयेत् ॥ १ वाक्प्रदत्वंचबालानांवीणावाद्यसम स्वरम् ॥ तैलंतीक्ष्णंरूक्षमम्लंवातलञ्चविवर्जयेत् ॥ २ ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, धनियां, अजवायन, शतावरी, वच, ब्रा ह्मी. भारंगी इन सबको बराबर लेवे, और शहदके साथ सेवन करे तो बाल-कभी बोलनेमें चतुर होय, वीणाकासा शब्द बोले. इन चीजोंसे परहेज करे

तैल, चरपरा, रूखा, खट्टा, वातल, ब्राह्मी, गोरखमुंडी, पीपर, नागेश्वर, कूठ, मक्खन और सपेद वच ये औषध मूखोंको १ तोले देनेसे कवीन्द्र करताहै ॥

पुनःश्लोक ।

ज्योतिष्मत्यास्तैलमत्राभिमंत्र्यवाग्वादिन्यामंत्रबीजंत्रिकन्तु ॥
जिह्वायांवैलिख्यतेयस्यजन्तोर्वैलेखन्याजायतेसौकवीशः ॥१॥
इति योगचिन्तामणिवैद्यकग्रन्थेद्वितीयोध्यायःसमाप्तः ॥ २ ॥

अर्थ–मालकांगनीके तेलको सरस्वतीके मंत्रसे अभिमंत्रित कर बालकको जीभपर सरस्वती बीजको लिखे तो कविराज होय ।

तृतीयोध्यायः ३.

अथ गुटिकाधिकारः ।

रुचिकर अमृतप्रभानाम गुटिका ।

मरिचंपिप्पलीमूलंलवङ्गंचहरीतकी ॥ यवानीतिन्तडीकञ्चदाडिमं लवणत्रयम् ॥ १ ॥ एतानिपलमात्राणिमागधीक्षारचित्रकम् ॥ द्व्यजाजीनागरंधान्यमेलाधात्रीफलंसमम् ॥ २ ॥ एतान्द्विपलिकान्भागान्भावयेद्बीजपूरकैः ॥ भावनात्रितयंदत्त्वागुटिकांकारयेद्बुधः ॥ ३ ॥ छायाशुष्कांप्रकुर्वीतह्यजीर्णस्य प्रशान्तये ॥ अग्निंचकुरुतेघोरंगुटिकाचामृतप्रभा ॥ ४ ॥

अर्थ–मिरच, पीपलामूल, लौंग, हरड, अजवायन, तंतडीक, अनारदाना, सेंधानोंन, कालानोंन, कचनोंन ये सब औषधि एक २ पल लेवे. पीपल, जवाखार, चीता, दोनोंजीरे, सोंठ, धनियां, इलायची, आंवला ये सब औषधि एक २ पल लेय फिर विजौरेके रसमें घोटकर तीन पुट देय गोली बनाकर छायामें सुखावे अजीर्णको दूर करे अग्नि दीपन करे यह गोली अमृतके तुल्यहै।

अन्यश्लोक ।

आकल्लकंसैंधववह्निशुण्ठीधात्र्यूषणंदिव्यसमासपथ्या ॥ रसेन

भाव्यंफलपूरकेण मंदानिलत्वेह्यमृतप्रमेयम् ॥ १ ॥ कासे गलामयेश्वासेप्रतिश्यायेचपीनसे ॥ अपस्मारेतथोन्मादेसन्निपाते सदा हिता ॥ २ ॥

अर्थ—अकरकरा, सैंधानोंन, चीता, सोंठ, आंवला, मिरच, लोंग, हरड, बिजौरेके रसकी भावना देकर गोली बनावे मन्दाग्निको यह अमृत समान है, खांसी, गलरोग, श्वास, पीनस आदि रोग दूर होवें अपस्मार, उन्माद, सन्निपातवालोंको हितकारी है ॥

राजगुटिका ।

शुंठ्याःपलंपलार्द्धंचगन्धकंसैन्धवंतथा ॥
निम्बूकरससंबद्धाहन्त्यजीर्णंविषूचिकाम् ॥ १ ॥

अर्थ—सोंठ एकपल, गंधक आधापल, सैंधानोंन, नीबूके रसमें गोली बनावे छोटे बेरके समान ले तो अजीर्ण विषूचिकाको दूर करे ।

पुनःश्लोक ।

नागरंचचतुर्भागंतदर्द्धंसैंधवंतथा ॥ गंधकंभागमेकंचकापथ्या गंधकंसमम् ॥ १ ॥ निम्बूरसस्यसप्ताहंपुटंदद्याद्विशारदः ॥ विषूचिकाजीर्णशूलंमन्दाग्निंवमनंहरेत् ॥ २ ॥ एषाराजवटी नामकोलमात्रन्तुभक्षयेत् ॥ ३ ॥

अर्थ—सोंठ ४ टंक, सैंधानोंन २ टंक, हरड १ टंक, गंधक १ टंक, इनकी नीबूके रसमें छोटे बेरके समान गोली बनावे और खाय तो विषूचिका, अजीर्ण, मन्दाग्नि, वमन इन सबका नाश करे ॥

उन्मीलनीगुटिका ।

उन्मीलनीबुद्धिबलेन्द्रियाणांनिर्मूलनीवातकफार्दितानाम् ॥
संशोधिनीमूत्रपुरीषयोश्चहरीतकीशुंठिगुडप्रयुक्ता ॥ १ ॥

अर्थ—हरड, सोंठसे गुडकी गोली बुद्धि बढावे, मनुष्यकी इन्द्रियोंको चैतन्य करे वात कफादिक रोगोंको निर्मूल करे, मलमूत्रको शुद्ध करती है ॥

गुडचतुष्टयवटिका ।

आमेषुसगुडांशुण्ठीमजीर्णेगुडपिप्पलीम् ॥
कृच्छ्रेजीरगुडंदद्यादर्शसिगुडदाडिमम् ॥ १ ॥

अर्थ—आमरोगमें सोंठ गुड, अजीर्णमें गुड पीपल, मूत्रकृच्छ्ररोगमें जीरा गुड, और बवासीर रोगमें अनारदाना गुडसंयुक्त देना चाहिये ॥

पुनःश्लोक ।

गुडविश्वौषधंपथ्यामागधीदाडिमैःकृता ॥
गुटिर्हन्तिभक्ष्यमाणागुल्मार्शोवह्निजान्गदान् ॥ १ ॥

अर्थ—गुड़, सोंठ, हरड, पीपल, अनारदाना इनकी गोलीको खाय तो गुल्मआदि रोगोंको नाश करे, और अग्निको दीपन करता है ॥

सूरणादिवटिका ।

चूर्णीकृताषोडशसूरणस्यभागास्तदर्द्धेनचचित्रकस्य ॥महौषधी द्वौमरिचस्यचैकोगुडेनदुर्नामजयायपिंडी ॥ १ ॥ मरिचमहौ-षधिचित्रकसूरणभागायथोत्तरंद्विगुणाः ॥ सर्वसमोगुडभागो वटिकादुर्नामनाशाय ॥ २ ॥ वृद्धदारुकभल्लातशुण्ठीचूर्णेन योजितः ॥ मोदकःसगुडोहन्यात्षड्विधार्शस्कृतांरुजम् ॥ ३ ॥

अर्थ—जिमीकन्दका चूर्ण १६ पल, चित्रक ८ पल, सोंठ २ पल, मिरच १ पल इनकी गोली गुडमें बनावे तो अर्शको दूर करे । मिरच चार टंक, सोंठ ८ टंक, चीता १६ टंक, जिमीकंद ३२ टंक, गुड़ सबके बराबर लेवे, और गोली बनाकर खाय तो अर्शरोगको दूर करे । विधारा, भिलावा शुद्ध और सोंठ इनका चूर्ण गुड मिलाय गोली बनाकर खाय तो छः प्रकारके अर्शरोगोंका नाश करे ॥

पुनःश्लोक ।

सनागरापुष्करवृद्धदारुकंगुडेनयोमोदकमृत्युहारकम् ॥
अशेषदुर्नामकरोगहारकंकरोतिवृद्धान्सहसैवदारकान् ॥ १ ॥

अर्थ—सोंठ, पुहकरमूल, विधारा इनकी भलेप्रकार गुडमें गोली बनाकर खाय तो सम्पूर्ण प्रकारके अर्शोंका नाश करे और बल बुद्धिको बढावे ॥

कांकायनीगुटिका ।

पथ्यापंचपलान्येकमजाजिमरिचस्यच ॥ पिप्पलीपिप्पलीमूलंचव्यचित्रकनागरैः ॥ १ ॥ पलाभिवृद्धैःक्रमशोयवक्षारंपलद्वयम् ॥ भल्लातकपलान्यष्टौसूरणोद्विगुणोमतः ॥ २ ॥ द्विगुणेनगुडेनैषावटिकाचाक्षसंमिता ॥ एकैकांभक्षयेत्प्रातस्तक्रमम्लंपिबेदनु ॥ ३ ॥ वह्निसंदीपयत्याशुग्रहणीपाण्डुरोगजित् ॥ कांकायनेनशिष्येभ्यःशस्त्रक्षाराग्निभिर्विना ॥ ४ ॥ कथिता गुटिकाचैषागुदजानांविनाशिका ॥ ५ ॥

अर्थ—हरड ५ पल, जीरा १ पल, मिरच १ पल, पीपल १ पल, पीपलामूल १ पल, चव्य ४ पल, चित्रक ५ पल, सोंठ ६ पल ये सब औषधि पलपल क्रमसे और जवाखार २ पल, भिलावा शुद्ध ८ पल, जिमीकंद सबसे दूना और गुड मिलायके छोटे बेरके समान गोली बनावे और प्रातःकाल छाछके साथ लेवे तो अग्नि दीप्त करे. संग्रहणी और पांडुरोगका नाश करे. यह कांकायनकविने अपने शिष्योंसे कहाहै और संपूर्ण गुदाके रोगोंका नाशक है ॥

अभयादिमोदकगुटिका ।

अभयापिप्पलीमूलंमरिचंनागरंतथा ॥ त्वक्पत्रंपिप्पलीमुस्तं विडंगामलकानिच ॥ १ ॥ कर्षप्रत्येकमेषान्तुदंत्याःकर्षत्रयंतथा ॥ षट्कर्षाश्चसितायास्तुद्विपलात्रिवृताभवेत् ॥ २ ॥ सर्वं संचूर्णितं कृत्वामधुनामोदकाःकृताः ॥ खादेत्प्रतिदिनंचैकंशीतंचानुपिबेज्जलम् ॥ ३ ॥ तावद्विरिच्यतेजन्तुर्यावदुष्णंनसेवयेत् ॥ पाण्डुरोगंविषंकाश्र्यंजंघायाश्चरुजस्तथा ॥ ४ ॥ शिरोर्तिंमूत्रकृच्छ्रंचदुर्नामकभगन्दरौ ॥ अश्मरीमेहकुष्ठंचदाहशोफोदराणिच ॥ ५ ॥

अर्थ—हरड, पीपलामूल, मिरच, सोंठ, तज, तेजपात, पीपल, मोथा, वायविडंग, आमला, इन सबको चार २ टंक लेवे और दन्ती १२ टंक (दंती

इनका चूर्ण कर शहदमें गोली बनावे और एक गोली नित्य ठंढे पानीके साथ खाय तो दस्त होय जबतक गरम जल न पीवे तबतक और पांडुरोग, विषरोग, कृशता और जंघाके सब रोग, मस्तकरोग, मूत्रकृच्छ्र, अर्श, भगंदर, पथरी, प्रमेह, कोढ, दाह, सूजन, उदररोगादिकोंको दूर करताहै ॥

अजमोदादिगुटिकाचूर्णवज्ज्ञेया ।

अजमोदामरिचकणाविडंगसुरदारुचित्रकशिताह्वा॥ सैंधवपिप्पलिमूलंभागानवकस्यपलिकास्यात् ॥ १ ॥ शुण्ठीदशपलिकास्यात्पलानितावंतिवृद्धदारोश्च ॥ दंत्याःपलानिपंचचसर्वाण्येकत्रकारयेच्चूर्णम्॥२॥समगुडवटिकाअदतश्चूर्णवाकोष्णवारिणापिबतः ॥ नश्यंत्यनिलजायेसर्वेरोगास्तथावाताः ॥३॥

अर्थ—अजमोद, मिरच, पीपल, वायविडंग, देवदारु, चित्रक, सोवा, सैंधानोंन, पीपलामूल ये सब नव लेकर; सोंठ १० पल, विदारी १० पल, दंती ५ पल, हरड ५पल इन सब औषधियोंके बराबर गुड मिलावे अथवा चर्णकोही गरम जलके साथ पीवे तो संपूर्ण वातरोगोंका नाश करताहै ॥

उदरविकासेएलादिवटिका ।

एलीयकंकणापथ्याशुंठीचित्रकटंकणम्॥राजिकासर्जिकासौरो विडंगाजाजिसैंधवम्॥गुडेनगुटिकाकार्यायकृत्प्लीहविनाशिनी १

अर्थ—इलायची, पीपल, हरड, सोंठ, चित्रक, सुहागा, राई, सज्जी, शोरा, वायविडंग, जीरा, सैंधानोंन इनको बराबर लेवे और गुडके साथ गोली बनावे तो यकृत, प्लीहादि रोगोंको दूर करे ॥

पाण्डुरोगेनवरसादिगुटिका ।

चित्रकंत्रिफलामुस्तंविडङ्गंत्र्यूषणानिच ॥ समभागानिकार्याणिसर्वतुल्यमयोरजः ॥ १ ॥ मधुसर्प्पिर्युतंलेह्यंगुडेनगुटिकाथवा ॥ गोमूत्रमथवातक्रमनुपानेप्रशस्यते ॥ २ ॥ पाण्डुरोगं जयेदुग्रंहृद्रोगंचभगन्दरम् ॥ शोफकुष्ठोदरार्शांसिमन्दाग्निमरुचिंक्रमीन् ॥ ३ ॥

अर्थ—चित्रक, त्रिफला, मोथा, वायविडंग, सोंठ, मरिच, पीपल सब बराबर और सबके बराबर लोहसार, शहद, घीसे खाय अथवा गुडमें गोली बनावे, और गोमूत्र वा छाछके संग लेवे तो पांडुरोग, हृदयरोग, भगंदर, सूजन, कोढ, उदररोग, अर्श, मंदाग्नि, अरुचि, क्रिमि आदिरोगोंका नाश करे ॥

वृद्धिनवरस ।

विडङ्गंत्रिफलाव्योषं चातुर्जातकचित्रकम् ॥ स्वर्णमाक्षीतवाक्षीरंजीमूतंवंशलोचनम् ॥ १ ॥ क्वाथसंपक्वलोहंचशर्करापि समन्विता ॥ गुटिकांमधुसंयुक्तांप्रातरेकान्तुभक्षयेत् ॥ २ ॥ प्रमेहशोफारुचिमामवातंसकामलंपाण्डुगदंसकुष्ठम् ॥ श्वासं चकासंचनिहन्तिगुल्मं दुर्नामकंनाशयतेचसद्यः ॥ ३ ॥

अर्थ—वायविडंग, त्रिफला, सोंठ, मिरच, पीपल, तज, तेजपात, इलायची, नागकेशर, चीता, सोनामक्खी, तवाखीर, मोथा, वंशलोचन, लोहार, मंडूर ये सब बराबर मिश्री सबके बराबर लेकर शहदमें गोली बनावे और प्रातःकाल खाय तौ प्रमेह, शूल, अरुचि, आमवात, पीलिया, पांडुरोग, कोढ, श्वास, खांसी, गोला, अर्श आदिको नाश करे ॥

प्रमेहेचन्द्रकलागुटिका ।

एलासुकर्पूरसुधासधात्रीजातीफलंगोक्षुरशाल्मलीच ॥ सूतेन्द्रवंगायसभस्मसर्वमेतत्समानंपरिमर्दयेच्च ॥ १ ॥ गुडूचिकाशाल्मलिकाकषायपिष्टंसमानामधुनाततश्च ॥ बद्धागुटीचन्द्रकलेति संज्ञा मेहेषुसर्वेषु नियोजनीया ॥ २ ॥

अर्थ—इलायची, कपूर, मिश्री, आंवला, जायफल, गोखरू, सेमलका गोंद, दारा, इंद्रयव, वंगसार इसकी समान मात्रा लेकर एक प्रहर मर्दन करे फिर गिलोय और सेमलके गोंदके काढेमें घोटे और शहदमें गोली बनावे. यह चन्द्रकला गुटिका सम्पूर्ण प्रमेहोंको दूर करती है ॥

व्योषादिगुटीपीनसादौ ।

व्योषाम्लवेतसंचव्यंतालीसंचित्रकंतथा ॥ जीरकंतिन्तडीकंचप्र-

त्येकंकर्षभागकम् ॥ १ ॥ त्रिसुगंधंत्रिभागंस्याद्गुडःस्यात्कर्षविंशतिः॥ व्योषादिवटिकानामपीनसश्वासकासजित् ॥२॥ रुचिस्वरकराख्याताप्रतिश्यायप्रणाशिनी ॥ ३ ॥

अर्थ–सोंठ, मिरच, पीपल, अमलवेत, चव्य, तालीस, चित्रक, जीरा, तंतडीक इन सबको एक २ कर्ष लेवे, त्रिसुगंध तीन भाग लेवे, गुड २० कर्ष लेवे, यह व्योषादिवटी है, इसके खानेसे पीनस, खांसी, श्वास, अरुचि, स्वरभंग आदि रोग नाश होवें ॥

मरीचादिगुटीअपरनामदाडिमादि ।

मरिचंकर्षमात्रंस्यात्पिप्पलीकर्षसंमिता ॥ अर्द्धकर्षयवक्षारंकर्षयुग्मंचदाडिमम् ॥ १ ॥ एतच्चूर्णीकृतंयुञ्ज्यादष्टकर्षगुडेनहि । शाणप्रमाणांगुटिकांकृत्वावक्त्रेचधारयेत्॥ अस्याःप्रभावात्सर्वेपिकासायांत्येवसंक्षयम् ॥ २ ॥

अर्थ–मिरच ४ टंक, पीपल ४ टंक, जवाखार २ टंक, अनारदाना ८ टंक, इनको पीसकर ३२ टंक गुड मिलावे और टंक टंकके प्रमाण गोलियां बांधे और मुखमें रक्खे. इन गोलियोंके प्रभावसे पांच प्रकारकी खांसीका नाश होता है ॥

खैरसारादिगुटिका ।

बिभीतकहरीतक्यौधात्रीकटुफलानिच ॥ शुंठीमरिचपिप्पल्य एलाककटशृंगिका॥ १॥ कर्पूरंपिप्पलीमूलंलवङ्गंशुंठिसंयुतम् ॥ एतानिसमभागानिसूक्ष्मचूर्णन्तुकारयेत् ॥२॥ खदिरंचसमंदेयमार्द्रकद्रवभावना ॥ भावयेत्किङ्करीक्वाथैर्वटिकाकोलमात्रका ॥३॥ कासंकण्ठेकफंहन्तिस्वरभङ्गंचदारुणम् ॥ गृध्रसींचनिहंत्याशुक्षयरोगहरंपरम् ॥ ४ ॥

अर्थ–बहेडा, हरड, आंवला, कायफल, सोंठ, मिरच, पीपल, इलायची, काकडासिंगी, कपूर, पीपलामूल, लोंग, कचूर ये औषधि बराबर लेनी और महीन चरन कर सबके बराबर खैरसार डाल फिर अदरकके रसकी

भावना देय, फिर छोटे बेरकी बराबर गोली बनावे यह गोली पांच प्रकारके कासरोगको, कफ, दारुण स्वरभंग, गृध्रसी, क्षयरोगको नाश करती है ॥

बीजपूरादिवटिका ।

त्रिकटुविकटदंष्ट्राहिंगुगुंजाररौद्रस्त्रिलवणनखमुग्रंजीरकेद्वेचपेटः ॥ प्रकटितकटुकाग्रप्रोल्लसत्केशरौघःकफमदगजहंताकेसरीबीजपूरः १

अर्थ-सोंठ, मिरच, पीपल, यही भई विकट डाढ, हींग मानो विकरालशब्द (गुंजार) सेंधानोंन,कालानोंन विडनोंन ये मानों उग्रनख, दोनों जीरे ये चपेट प्रकट जो अदरककी कटुताई ताकरके है प्रकाश जाको ऐसो केसरी मानो कफ, मदयुक्त जो हस्ती ताको मारनेवालो यह बिजौरा है ॥

कासरोगेबंबूलगुटिका ।

रसोभागोभवेदेकोगंधकोद्विगुणोमतः ॥ त्रिभागापिप्पलीग्राह्या चतुर्भागाहरीतकी॥ १॥बिभीतकंपञ्चभागमटरूषश्चषड्गुणः ॥ भार्ङ्गीसप्तगुणाग्राह्यासर्वचूर्णंप्रकल्पयेत् ॥२॥बंबूलाक्काथमादायभावनाएकविंशतिः ॥ कार्याबिभीतकमितागुटिकामधुनासह ॥ ३ ॥ कासपंचविधंहन्यादूर्द्धश्वासंकफंजयेत् ॥ ४ ॥

अर्थ-पारा एकभाग, गंधक दोभाग, पीपल तीनभाग, हरड चार भाग, बहेडा पाँचभाग, अडूसा छःभाग, भारंगी सातभाग इन सबका चूर्ण कर फिर बंबूलकी छालके काढेकी २१ भावना देय और बहेडेके समान गोली बनावे, यह गोली पांचप्रकारका कास, ऊर्ध्वश्वास और कफको दूर करतीहै ॥

आमलादिवटिका ।

आमलंकमलंकुष्ठलाजाश्चवटरोहकम्॥एतच्चूर्णस्यमधुनागुटिकांधारयेन्मुखे ॥ तृषांप्रवृद्धांहंत्येषामुखशोषंचदारुणम् ॥ १ ॥

चूर्ण कर शंहदमें गोली बनाकर मुखमें रक्खे तो बहुत प्यास और भयानक मुख सूखना दूर होवे ॥

शंखवटी ।

चिंचाक्षारपलंपटुव्रजपलंनिम्बूजलेकल्कितं तस्मिञ्छंखपलंप्रतप्तमसकृन्निर्वाप्यशीर्णावधि ॥ हिंगुव्योषपलंरसामृतपलंनिक्षिप्य निःक्कासकान् हर्ताशंखवटीक्षयग्रहणिरुग्घृद्यत्रिशूलादिषु ॥ १ ॥

अर्थ—इमलीका खार एकपल, पांचों नोंन एकपल, नींबूका रस इनमें शंख एकपलको गरम करके बुझावे जबतक उसके टुकडे न हों तबतक. फिर हींग, सोंठ, मिरच, पीपल, पल १ पारा शुद्ध, गंधक शुद्ध इनको डालकर गोली १ टंकके प्रमाण बनावे, यह गोली क्षयीरोग, संग्रहणी, क्षय, पसलीके शूलादिकोंको दूर करतीहै ॥

पाठान्तर ।

चिंचाक्षारंलवणमखिलंनिम्बुतोयेनपिष्टंतप्तंशंखंपुनरपिपुनर्निक्षिपेत्सप्तवारान् ॥ तस्मिञ्छंखोभवतिशिथिलोमर्दयेत्तेनसार्द्धं व्योषंहिंगुस्तदपिचपुनःपादमानेनदद्यात् ॥ १ ॥ चतुर्थांशं विषरसबलीयोजयित्वात्रकुर्य्यात्सम्यग्बद्धाभिषगथगुटींबादरास्थिप्रमाणाम् ॥ शूलेमंदाग्न्युपशमयनेपंक्तिशूलेकुशूलेएकैकांतामुदयसमयेयोजयेत्पुष्टिवृद्धौ ॥ २ ॥

अर्थ—इमलीका खार, पांचोंनोंन नींबूके रसमें घोटे, फिर शंखको तपाकर सातवार बुझावे जब शंख खिलजाय तब उसी नींबूके रसमें घोट लेवे. फिर सोंठ, मिरच, पीपल, हींग, शंखसे चौथाई डाले, गंधक, तेलिया, पारा चतुर्थांश इनकी कजली डाले, फिर बेरकी गुठलीके समान गोली बनावे यह गोली शूल, मंदाग्नि, पसलीका दरद, कूखके शूलको दूर करे, एक गोली सूर्योदयके समय लेवे तो पुष्टि वृद्धि करे ॥ १ ॥ २ ॥

चतुरशीति ८४ वाते अमरसुन्दरीगुटिका ।

त्रिकटुत्रिफलाचैवरेणुकाग्रंथिकानलम् ॥ मृतलोहंचतुर्जातंपारदगंधकंविषम् ॥ १ ॥ विडंगाकल्लकंमस्तासर्वेभ्योद्विगुणोगुडः ॥ चण-

कप्रमाणगुटिकानाश्नाअमरसुंदरी ॥२॥ अपस्मारेसन्निपातेका-सेश्वासेगुदामये ॥ अशीतिवातरोगेषुउन्मादेषुविशेषतः ॥३॥

अर्थ—त्रिकटु, त्रिफला, संभालूके बीज, पीपलामूल, चित्रक, मरासार तुजात, पारा, गंधक, विष, विडंग, अकरकरा, मोथा इनकी समभात्रा, ौर इनसे दूना गुड डालकर चनेके प्रमाण गोली बनावे, यह अमर-न्दरी नाम गोली है यह मिरगी, सन्निपात, १३ श्वास, खांसी, गुदारोग, र्श और ८० प्रकारके वातरोग और उन्मादको विशेषकर दूर करताहै॥

इतिअमरसुन्दरीगुटिका ।

विजयादिगुटिका ।

पलत्रयंहरीतक्याश्चित्रकस्यपलत्रयम् ॥ एलात्वक्पत्रमुस्तानां भागश्चार्द्धपलःस्मृतः॥१॥ व्योषचपिप्पलीमूलंविषंकर्षप्रमाण-कम् ॥ नागकेशरचूर्णंचकर्षंदद्याद्विचक्षणः ॥२॥ रेणुकार्द्धपलं मात्रातथागंधरसौक्षिपेत् ॥ एतान्संभृतसम्भारान्सूक्ष्मचूर्णंतु कारयेत् ॥ ३ ॥ गुड़स्यचतुलांदद्यान्मर्दयेत्तद्विचक्षणः ॥ एते-नगुटिकाःकार्याःषष्ट्याधिकशतत्रयम्॥४॥ एकैकंभक्षयेत्प्रातः कृत्वाहारंयथासुखम् ॥ मासेनपलितं हन्तिकरोत्यग्निंद्वितीय-के ॥ ५ ॥ शुक्रवृद्धिंतृतीयेचबलवर्णप्रसाधिनी ॥ हंत्यष्टादश कुष्ठानिसप्तमेहान्महाक्षयान्॥६॥ प्लीहानंकासश्वासौचअण्डवृ-द्धिमरोचकम् ॥ अशीतिवातजान्रोगान्मूत्रकृच्छ्रंगलग्रहम्॥७॥ सर्वमूर्च्छांविषंहन्तिसर्वस्थावरजंगमम् ॥योनिदोषमपस्मारमु-न्मादंविषमज्वरम् ॥८॥ बलेनगजतुल्योवावेगेनतुरगोपमः ॥ मयूरस्तुभवेदग्नौ वाराहश्रोत्रमेवच ॥ ९ ॥ हयतुल्योभवेत्स्त्री-षुगृध्रदृष्टिर्हिजायते॥उपयोगात्परंजीवेन्नरोवर्षशतत्रयम्॥१०॥ नचात्रपरिहारोस्ति नचकामेनमैथुने ॥ ग्राम्यधर्मोथवाम्बाणो भोजनेचयथेच्छया॥११॥ नकेवलंविष्णुपितामहाभ्यांमूर्च्छा-

चिरेणरोगान् ॥ १२ ॥ विजयानामगुटिकाविख्यातारुद्रभाषिता ॥ भक्षयेद्योनरोवर्षं तस्यसिद्धिर्नसंशयः ॥ १३ ॥

अर्थ–हरड़ ३ पल, चित्रक ३ पल, इलायची ८ टंक, तज ८ टंक, तेजपात ८ टंक, मोथा८टंक, सोंठ, मिरच, पीपल, पीपलामूल, तेलिया ४ टंक, नागकेशर ४ टंक, संभालूके बीज ८ टंक, गंधक १ पल, पारा १ पल, पारे गंधककी कजली करलेवे और सबको महीन पीसकर और सब औषधियोंके बराबर गुड डालकर ३६० गोलियां बनावे प्रातःकाल एक गोली नित्य खाय. भोजन इच्छा रुचिसे करे. तो एक महीनेमें बुढापेको दूरकरे, दोमहीनेमें अग्नि प्रज्वलितकरे. तीन महीनेमें वीर्यको बढावे. बलवर्णको बढावे, कोढ १८, प्रमेह २०, महाक्षय, प्लीहा, श्वास, खांसी, आतें बढनेको, अरुचि, वातजरोग ८०, मूत्रकृच्छ्र, गलग्रह, सम्पूर्ण मूर्छा तथा विष स्थावर, जंगम, योनिदोष, मिरगी, उन्माद, विषमज्वर आदिकोंको नाश करताहै. और हाथीकासा बल, घोडेकासा वेग, मोरकीसी अग्नि, शूकरकासा श्रवण और स्त्रीसंगमें घोडेके समान प्रबलता बहुत होय. नेत्रोंमें ज्योति गीधके तुल्य और इस औषधिके समान दूसरी औषधि जगतके विषे नहींहै जिससे मनुष्य अपनी पूरी आयुष्य भोगे. इसमें मैथुन करना वर्जित नहींहै और ग्राम्यधर्म और भोजन यथेष्ट करना यह ब्रह्मा और विष्णुने बनाया राज्याभिषेक इन्द्रने करी यह श्रेष्ठ रसायन है. यह सब रोगोंका शीघ्रही नाश करतीहै यह विजयानाम गोली प्रसिद्ध महादेवजीने कहीहै जो मनुष्य इसे एक वर्ष सेवन करे उसको सिद्धि प्राप्ति होय निस्संदेह ॥

क्षयरोगेशिवागुटी ।

शिलाजतुपलान्यष्टौतावतीसितशर्करा ॥ त्वक्क्षीरीपिप्पली धात्री कर्कटाक्षापलोन्मिता ॥ १ ॥ निर्दग्धफलमूलाभ्यांपलंयुंज्यात्त्रिगंधकान् ॥ मधुत्रिपलसयुक्ताकुर्यादक्षसमागुटी ॥ २ ॥

अर्थ–शिलाजीत ८ पल, मिश्री ८ पल, वंशलोचन, पीपल, आंवला,

ाकडासिंगी यह एक २ पल लेनी, कटेरी पंचाङ्ग १६ टंक और ्रिफला इनको शहदमें मिलाकर बहेडेके प्रमाण गोली बनावे ॥

शिलाजीतशोधनप्रकार ।

त्रीन्वारान्प्रथमंशिलाजतुजलेभाव्यंभवेत्त्रैफलेनिःक्वाथेदशमूलजे च तदनुच्छिन्नोद्भवायारसैः ॥ वाटयालंक्कथनेपटोलसलिले यष्टीकषायेपुनर्गोमूत्रेचपयस्यथापिचगवामेषांकषायेततः ॥२॥

अर्थ—तीनवार पहिले शिलाजीतको त्रिफलेके काढेकी भावना देय. फिर दशमूलके काढेकी भावना देय. फिर गिलोयके काढेकी भावना देय. फिर पटोलके काढेकी भावना देय. फिर मुरैठी, गोमूत्र, दूध इनकी भावना देय तो शुद्ध होय ॥

शिवगुटिका ।

द्राक्षाऽभीरुविदारिकाद्वयपृथक्पर्णीस्थिरापुष्करैःपाठाकौटजकर्कटाक्षकटुकारास्नांबुदालांबुजैः ॥ दन्तीचित्रकचव्यवारणकणावीराष्टवर्गौषधीर्द्रोणेचरणस्थितेपलमितैरेभिःश्रितैर्भावयेत् ॥१॥ धात्रीमेषविषाणिका त्रिकटुकैरेभिः पृथक्पंचभिर्द्रव्यैश्च द्विपलोन्मितैरपिपलंचूर्णंविदारीभवेत्॥तालीसंकुडवंचतुःपलमिहप्रक्षिप्यतेसर्पिषा तैलस्यद्विपलंपलाष्टकमसौक्षौद्रंभिषग्योजयेत् ॥ २ ॥ तुल्यंपलैःषोडशभिःसितायास्त्वक्क्षीरिकापत्रककेशरस्य ॥ बिल्वांशकैस्त्वक्त्रुटिसंप्रयुक्तैरित्यक्षमात्रागुटिकाःप्रकल्प्याः ॥३॥ तासामेकतमांप्रयुज्यविधिवत्प्रातःपुमान्भोजनात्प्राग्वामुद्गदलांबुजांगलरसंशीतंशृतंवाजलम्॥ माक्षीकंमदिरामथुर्वशनभुक्पीत्वापयोवागवांप्राप्नोत्ययंगमनंगवास्तुभवनंसम्पन्नमानंदकृत्॥४॥शोफग्रंथ्यवमंथवेपथुवमीपांड्वामयाञ्श्लीपदंप्लीहार्शःप्रदरप्रमेहपिटिकामेहाश्मरीशर्करा ॥ हृद्रोगार्बुदवृद्धिविद्रधियकृद्योन्याजरीन्सानिलानूरुस्तंभभगन्दरंज्वरूररुजस्तूनीप्रनीतृषा॥५॥वातासृक्प्रबलंप्रवृद्धमुदरंकप्रंकिला-

सक्रिमीन्कासश्वासज्वरस्वरक्षयमसृक्पित्तंसपानात्ययम् ॥ उन्मादंमदमप्यपस्मृतिमतिस्थौल्यंकृशत्वंतनोरालस्यंचहलीमकंप्रशमयेन्मूत्रस्यकृच्छ्राणिच ॥६॥ झटितियुवासर्वैःश्वेतैरकालजराकृतैःकृतमलिकुलाकारैरेभिःशिरश्चशिरोरुहैः ॥ बलिमदबलिव्यस्तातंकंवपुश्चसमुद्वहन्प्रभवतिशतंस्त्रीणांगन्तुंप्रभुर्जनवल्लभः ॥ ७ ॥ स्तिमितमतिरविज्ञानांधःसदस्यपटुःपुमान्सकृदपिययाज्ञानोपेतःश्रुतिस्मृतिमान्भवेत् ॥ व्रजतिचयथायुक्तोयोगीशिवस्यसमीपतांशिवगुटिकयाकृत्स्नामेकांकरोति हिमानवः ॥ ८ ॥

अर्थ–दाख, शतावर, विदारीकंद, पृष्ठपर्णी, शालपर्णी, कटेरी, पुहकरमूल, पाढ़, कुडाकी छाल, काकडासिंगी, बहेरा, कुटेकी, रास्ना, मोथा, कड़वीतूंबी, दांतौनी, चीता, चव्य, गजपीपल, अष्टवर्ग (महामेद १, मेद २, जीवक ३, ऋषभ ४, सिद्ध ५, रिद्ध ६, कंकोली ७, क्षीरकांकोली ८) और ये न मिलें तो वरी, विदारी, असगंध लेय ये सब औषधि चार २ टंक, लेय और आंवला १६ टंक, मेढ़ासिंगी १६ टंक, सोंठ, मिरच, पीपल दो २ पल, विदारीकंद १६ टंक, तालीसपत्र ६४ टंक, घृत, तेल ३२ टंक, शहद १६ पल, मिश्री २५६ टंक, वंशलोचन, तेजपात, नागकेशर, बेलगिरी, तज, इलायची संयुक्त एक टंकके प्रमाण गोलियां बनावे, प्रातःकाल सदा विधिसे सेवन करे, भोजन पहिले लेवे, मूंगका पानी, मांसरस, ठंढापानी अथवा गरमपानी, शहद, मदिरासे इसके ऊपर गरिष्ठभोजन पहिले लेवे, और गौके दूधके साथ लेय तौ रूप बढे, और सदा आनंदकारी है और सूजन, गांठ, कंपवायु, पांडुरोग, वमन, कृमि, श्लीपद, प्लीहा, अर्श, प्रमेह, पथरी, शर्करा, प्रमेह, हृदयरोग, अर्बुद, वृद्धि, यकृत, योनिदोष, वायुरोग, ऊरुस्तंभ, भगंदर, खांसी, श्वास, ज्वर, स्वरभंग, क्षयी, रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र, तूनी, प्रतूनी, प्यास, वातरक्त, पेटबढ़नेके रोग, कोढ़, कृमि, पानात्ययरोग, और

समस्त देहके रोग, उन्माद, अतिशूल, अतिदुर्बलता, आलस्य, हलीमक सर्व मूत्रकृच्छ्र, बुढापेसे जो बाल सफेद होजायँ इन रोगोंको दूर क मस्तहाथीके समान बल होवे. बलयुक्त मस्तशरीर होजाय, और १० स्त्रियोंसे भोग करनेकी सामर्थ्य होय, लोकमें प्यारा होवे, अज्ञानको दू करे, और महापंडित पुरुष सदा ज्ञानवान् स्मृति भूले नहीं । जो मनुष्य इस औषधिका सेवन करेंगे वो महादेवके समान योगीन्द्र होजावेंगे यह शिवनामगोली महादेवजीने कही है ॥

विरेचननामगुटिका ।

अष्टौविषतुषदंतिबीजकलिकाभागत्रयंनागराद्भौगन्धान्मरिचानि टंकणरसाएकैकभागाःक्रमात् ॥ गुंजामानवटीविरेचनकरी देयासुशीतांबुनागुल्मप्लीहमहोदरार्तिशमनीनाराचनामारसः १

अर्थ—जमालगोटाका छिलका दूर कर दूधमें पकावे जीभ रहित कर ८ टंक सोंठ, ३ टंक शुद्धगंधक, २टंक मिरच, १ टंक शुहागा फूला एकटंक, पारा १ टंक क्रमसे लेकर चिरमिटीके प्रमाण गोली बनावे और ठंढेपानीके साथ लेवे तो प्लीहा, सम्पूर्ण उदररोगोंको शांति करे यह नाराच नामक रस है ॥

ज्वरयोग ।

नेपालकंटंकणपारदंचतुर्थंतथाचामलगंधसारम् ॥ सर्वैःसमांशैरसएषपिष्टंज्वरेषुसर्वेषुचनित्यमिष्टम् ॥ १ ॥ रसःप्रदेयःस्फुटमेकगुंजापथ्यंसितातन्दुलमुद्गयूषा ॥ श्रीपूज्यराजैःकथितोरसोयंसद्योज्वरंचापिनिहंतिसत्यम् ॥ २ ॥ रसंविषंटंकणगंधकंचसत्र्यूषणंभृंगरसेनभाव्यम् ॥ गुटीप्रदेयासमशर्करांशैःसद्योज्वरंनाशयतिक्षणेन ॥ ३ ॥

अर्थ—जमालगोटा, शुद्ध सुहागा, पारा, गंधक शुद्ध इन सबको बराबर लेवे, इसमेंसे गुंजा प्रमाण लेय. पथ्य मिश्री, चांवल, मूंगका पानी देय तो संपूर्ण ज्वरोंको दूरकरे. यह रस श्रीगुरुराजने कहाहै. और शीघ्र ज्वरका नाश करताहै ॥ २ ॥ पारा, तेलिया, मीठा, सुहागा, गंधक, सोंठ, मिरच,

पीपल इनकी समभात्रा लेय, चूर्ण कर भांगके रसमें गोली बनावे. और मिश्रीके साथ खाय तो ज्वर दूर होय ॥

अन्य श्लोक ।

नेपालकंपारदटंकणाक्षं क्षारोयवानीमरिचानिपथ्या ॥
एरण्डबीजानिचगंधकंचइच्छाविभेदीरसचक्रवर्ती ॥ १ ॥

अर्थ–शुद्ध जमालगोटा ३ टंक, पारा ३ टंक, सुहागाफूला, जवाखार, अजवायन, मिरच, हरड, अंडी, गंधक इनको एकत्र कर पीसलेवे. यह रस इच्छाभेदी नाम सब रसोंका राजा है ॥

विश्वौषधंटंकणगंधकं च सपारदंचेतिसमांशयुक्तम् ॥ नेपालचूर्णं त्रिगुणंचदद्याद्गुडेनबद्धागुटिकाप्रसिद्धा ॥ १ ॥ विरेचनीमूत्रविकारनाशिनीलघ्वीहितादीपनपाचनीच ॥ संशोधनी शीतजलेनसत्यंसंस्तम्भनीचोष्णजलेनसत्यम् ॥ २ ॥

अर्थ–सोंठ, सुहागा फूला, पारा, शुद्ध गंधक यह समभात्रा. जमालगोटा तिगुना इनकी गुडके साथ भात्रा बनावे. यह विरेचनकारी, मूत्रविकारको दूर करे. लघुकारी, हितकारी, अग्निदीपन, पाचन, कोठा शुद्ध करे, और ठंढेजलसे विरेचन होय, गरम जलसे विरेचन बंध होय है. विरेचन नाम दस्तोंका है ॥

त्रीकटुत्रिफलासूतंशुद्धंगन्धकटंकणम् ॥
सर्वैःसमानोजैपालोराजयोग्यंविरेचनम् ॥ १ ॥

अर्थ–सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, शुद्धपारा, गंधक, फूला सुहागा, शुद्ध जमालगोटा सबके बराबर लेय. यह दस्तोंके लिये राजयोग है ॥

पुनःगाथाश्लोक ।

नेपालमरिचटंकणसमभागोमेलिएकीकृत्य ॥
अर्द्धोहिंगुलभागोपयडोबुद्धोछुरीकारो ॥ १ ॥

अर्थ–जमालगोटा, मिरच, सुहागा इनको बराबर लेकर और इनसे आधा हिंगुल डाले यह रस छुरिकार नामसे प्रसिद्ध है ॥

टंकणमयूरतुत्थंस्नुहीक्षीरअजैपालमेरण्डम् ॥नाभिप्रलेपदत्तंन-
रपतियोग्यंविरेचनंकुरते ॥ १ ॥ मध्यमस्तृवृतस्तिक्ताराजवृ-
क्षोविरेचनम् ॥ क्रूरास्नुक्पयसाहेमक्षीरदंतीफलादिभिः ॥ २ ॥
एरंडतैलंदुग्धंगांतथातुंबीहरीतकी ॥ वज्रीक्षीरगुटीचाथपिप्प-
लीतेनभाविता ॥ ३ ॥ महिषावलिखाचैवकंपिल्लंतक्रमेवच ॥
उष्ट्रीदुग्धंतथा पेयंघोडाचोलीगुटीतथा ॥ ४ ॥

अर्थ—सुहागा, नीलाथोथा, सेहुंडका दूध, शुद्धजमालगोटा, अरंडीके बीज इनको पीसकर नाभीपर लेप करे. यह राजयोग विरेचनहै.एलुआ, निसोत, कुटकी, अमलतास यह मध्यम जुलाब है, आकका दूध, थूहरका दूध, शुद्ध जमाल गोटा यह क्रूर जुलाब है. अरंडीके तेल वा गायके दूधमें गोली बनावे अथवा पीपलोंको थूहरके दूधमें भावना देय साठी चांवलोंमें कबीला मट्ठा संग पीवे. ऊंटनीके दूधमें अथवा घोडाचोलीरस सेवनकरे ॥

विषूचिकाहर ।

फलत्रिकंव्योषकरंजबीजंरसंतथादाडिममातुलुंगयोः ॥
निशायुगंपिष्यकृताचवर्त्तिस्तदंजनंहन्तिविषूचिकांच ॥१॥

अर्थ—त्रिफला, सोंठ, मिरच, पीपल, करंजुएके बीज, हलदी, दारुहलदी पीसकर बिजौरेके रसमें अथवा अनारके रसमें चनेके बराबर गोलियां बनावे फिर उस गोलीसे अंजन करै तो विषूचिकारोग तथा मूर्च्छा जाय ॥

विषूचिकाअंजनगुटिका ।

व्योषाकरंजस्यफलंहरिद्रेमूलंसमावाप्यचमातुलुंगा ॥
छायाविशुष्कागुटिकाविधेयाहन्याद्विषूचींनयनांजनेन ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, करंजबीज, हलदी, पीसकर बिजौरेके रसमें गोली बनावे.औरछायामें सुखाकरअंजन करै तो विषूचिकारोग नाशहोय ।

पुनःश्लोक ।

मातुलुंगजटाव्योषनिशाबीजंकरंजकम् ॥
कांजिकेनांजनंहन्याद्विषूचीमतिदारुणाम् ॥ १ ॥

अर्थ—बिजौरेकी जड, सोंठ, मिरच, पीपल, हलदी, कंजाके बीज इनकी कांजीके पानीमें गोली बनावे और अंजन करै तो दारुण विषूचिका दूर होवे।

प्रचेतागुटिका।

व्यूषणंत्रिफलाहिंगुसैंधवंकटुकावचा ॥ नक्तमालस्यबीजानि तथा च गौरसर्षपाः ॥ १ ॥ मेषमूत्रेणपिष्टानिच्छायाशुष्कं विधापयेत् ॥ भूतोन्मादेप्यचैतन्येंजनमेकाहिकादिषु ॥ २ ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, हींग, सैंधानोंन, कुटकी, वच, कंजाकी मिंगी, सफेद सरसों इनकी मेंढाके मूत्रमें गोली बनावे और छायामें सुखावे यह अंजन भूतादिकोंको, एकाहिक ज्वरादि, अचेतनता और उन्मादको दूर करे ॥

पुनः श्लोक।

राजिकांमरिचंकृष्णांसैंधवंभूतनाशनम् ॥
नरमूत्रेणसंपिष्यअंजनंज्वरनाशनम् ॥ १ ॥

अर्थ—राई, मिरच, पीपल, सैंधानोंन इनको मनुष्यके मूत्रमें गोली बनावे और अंजन करै तो भूतादिकोंको दूर करे ॥

सर्षपादिगुटिका।

सिद्धार्थकोवचाहिंगुकरंजोदेवदारु च ॥ मंजिष्ठात्रिफलाश्वेता कटुकीत्वक्कटुत्रिकम् ॥ १ ॥ समांशानिप्रियंगुश्चशिरीषोरजनीद्वयम् ॥ बस्तमूत्रेणपिष्टोयमंगेदेयादथांजनम् ॥ २ ॥ नस्यमालेपनश्चैवस्नानमुद्वर्त्तनंतथा ॥ अपस्मारेविषोन्मादेकृत्यालक्ष्मीज्वरापहम् ॥ ३ ॥ भूतेभ्यश्चभयंनास्तिराजद्वारेचशस्यते ॥ ४ ॥

अर्थ—सरसों, वच, हींग, कंजाके बीज, देवदारु, मंजीठ, त्रिफला, मालकांगनी, तज, सोंठ मिरच, पीपल, समभाग प्रियंगु, सिरसके बीज, दोनों हलदी इनकी बकरेके मूत्रमें गोली बनावे और मर्दन करे तो सब रोग दूर होवें, अंजन करै तथा नस्य लेय, लेपन करे, उबटना करे तो मृगी, विष, उन्माद, ज्वरादि, भूतादिकोंको दूर करैं यह राजानके योग्य है ॥

चिंतामणिरसगुटिका ।

द्वौजाजीकणविश्वपंचलवणामारीचगंधाभ्रकं क्षारंत्रीणिरसेन्द्र-
मर्द्धममृतंतत्सर्वमेकीकृतम् ॥ क्षिप्त्वाचार्द्रकनागवल्लिसहितंप-
ञ्चैवगुंजान्वितंसामेसज्वरसन्निपातकमहामेहाद्युदावर्त्तके ॥ १ ॥

अर्थ-दोनों जीरे, पीपल, सोंठ, पाँचोंनोन, मिरच, शुद्धगंधक, अभ्रक सुहागा, सज्जी, जवाखार, पारा, आधीमात्रा तेलिया मीठा यह सब बराबर एकत्र कर अदरखके रसकी पांच भावना देय, पानके रसकी पांच भावना देय, फिर गोलमिरचके बराबर गोली बनावे आमविकार, ज्वरसहित सन्निपात, असाध्य प्रमेह, उदावर्त्तादि रोग दूर होयँ ॥

पुनः श्लोक ।

व्योषंगन्धंरसेन्द्रंविषमपिलवणंनागवङ्गंतथाभ्रंसारंत्रिक्षारयुक्तं
गजकणचविकासाग्निकंजीरकेद्वे॥ पथ्यावाचूर्णमेतत्प्रबलरसयुतं
नागवल्लीकरीरनिम्बूकार्द्रैरसादिप्रबलरसयुतंशुद्धचिन्तामणीशः १

अर्थ-सोंठ, मिरच, पीपल, गंधक, पारा, तेलियामीठा, पांचोंनोंन, सीसा, भस्म, वंग, अभ्रक, खार, सज्जी, सुहागा, जवाखार, चव्य, गजपीपल, चीता, दोनों जीरे, हरड, पारा, गंधक इनको पानके रस, करेलाके रस, नींबूके रस, अदरखके रस, इनकी सात २ भावना देवे, यह शुद्धचिंतामणि रस है ॥

पुनः श्लोक ।

सूतंगन्धकटंकणंसमरिचंशुण्ठीविषंपिप्पलीसर्जिक्षारसुफान्वि-
तंचलवणंपञ्चाभ्रकंजीरकम् ॥ यावक्षारसमंसमांशकमिदंखल्वे
समैः शोषयेत्सप्तैर्निम्बुभुजंगमार्द्रकरसैःशुद्धःसचिन्तामणिः १॥

अर्थ-पारा, गंधक, सुहागा, मिरच, सोंठ, तेलियामीठा, पीपल, सज्जी, सौंफ, पांचोंनोंन, अभ्रक, दोनोंजीरे, जवाखार इनकी सम मात्रा लेय, नींबू और अदरखके रसकी सात२ भावना देय तो शुद्धचिंतामणि रस होवे॥

त्रिपुरभैरवरस ।

वेदवेदगुणापृथ्वीशुण्ठीमारिचटंकणम्॥चतुर्थांशतत्नागश्चरसस्त्रि-
[illegible]

कस्यापिदातव्यावारत्रयमनुक्रमात् ॥२॥ सन्निपातेतथावातेश्लेष्मरोगेमहाज्वरे ॥ ग्रहेचमस्तकस्यापिपीडायामुदरस्यच ॥३॥

अर्थ—सोंठ ४, मिरच ४, सुहागा ३, तेलिया १ इनको पान, नींबू, अदरख इनके रसकी भावना देय, तीन २ अनुक्रमसे तो सन्निपात, वात, श्लेष्म महाज्वर, मस्तकरोग, पेटदरद ये सब दूर होवें. यह त्रिपुरभैरवरस है ॥

वडवानलरसगुटिका ।

सूतंभुजङ्गममृतंलवणंहरिद्राव्योषंधनंजयजटावनि १भू १ धरित्री ॥ अष्टादश १८ त्रि ३ नव ९ वह्नि ३ मितश्चभागःप्रोक्तो रसोरसगुणैर्वडवानलोयम् ॥ १ ॥ निंबुकार्द्रककरीरपयोभिः शिग्रुकेसरिभुजंगलताभिः ॥ साध्यमग्निसदनानिलशूलाध्मानहानिवडवानलचूर्णम् ॥ २ ॥

अर्थ—पारा १ टंक, शीशा १ टंक, गंधक १ टंक, शीशा पारेको मिला एक करले, सैंधानोंन १८, हलदी ३, सोंठ, मिरच, पीपल ९, चीता ३ इन सबको नींबूके रसकी, अदरखके रसकी, करीरके रसकी, दूधकी, सैंजनेके रसकी, नागकेशरकी सात २ भावना देय, फिर गोली बनावे, और खाय तो जड बुद्धिको, मन्दाग्निको, वायु शूलको, अफारेको दूर करे ॥

कफकुंजररस ।

नागंपारदसंयुतंसमरिचंसद्वत्सनाभंशुभंदेवालीरसभावनामुनिमिताकर्चूरकाकल्कयोः ॥ देयंवल्लमितंमहौषधरसैःसन्नागवल्लीदलैःश्लेष्मावातविकारजाठरपरेस्यात्सन्निपातेज्वरे ॥ १ ॥

अर्थ—शीशा, पारा विधिपूर्वक मिलावे, विधि—शीशेको गलाकर चूनेके पानीमें तीनबार डाले, पारेको सातवार कपडेमें छानलेय फिर ईंटके कूकुआसे खरल करे जहर एक १, फिर शीशेको गलाकर पारेमें डालदेय, मिरच ४ टंक, तेलियामीठा टंक, बदाल (डोडी) की ७ भांगरेके रस, कचूरके रस, अकरकराकी, सोंठके रस, पानके रस इनकी सात सात भावना देय, यह रस श्लेष्मविकार, वायुविकार, पेटके रोग, सन्निपातज्वरादिकोंको नाश करे ॥

आनंदभैरवरस ।

हिंगुलंवत्सनागंचमरिचंटंकणंकणा ॥ जंबीरस्यरसंदत्त्वामर्द्यं यामचतुष्टयम् ॥ १ ॥ श्वासेकासेसन्निपाते ग्रहण्यांशूलमेह-योः ॥ अपस्मारानिलच्छर्दौरसश्चानन्दभैरवः ॥ २ ॥

अर्थ—हिंगुल, शुद्ध तेलिया मीठा, मिरच, सुहागा, पीपल, जंबीरीके रसकी चार प्रहरकी भावना देय, यह रस खांसी, श्वास, सन्निपात, संग्रहणी, शूल, प्रमेह, मृगी, वायु, छर्दि इतने रोगोंको दूर करताहै-यह आनंदभैरव रसहै ॥

पंचाननरसगुटिका ।

सूतंगन्धकचित्रकंत्रिकटुकंमुस्तंविडङ्गंविषमेतेषांसमतुल्यमार्क-वरसंगुंजाप्रमाणावटी ॥ कुष्ठाष्टादशगुल्मरोगमुदरप्लीहप्रमेहा-दयो रोगानेकसुभूरिदर्पदलनेख्यातश्चपंचाननः ॥ १ ॥

अर्थ-पारा, गंधक, चीता, सोंठ, मिरच, पीपल, मोथा, वायबिडंग, तेलिया मीठा उनकी समान मात्रा लेय, भांगरेके रसमें गोली बनावे, गुंजाप्रमाण लेय यह १८प्रकारके कुष्ठ, गुल्म, उदररोग, प्लीहा, प्रमेहादि रोगोंको नाश करे ।

दूसरापंचाननरस ।

शंभोःकण्ठनिवासनंचमरिचंगंधंरसेन्द्रोरविःपक्षौसागरलोचने शशिमुखंभागोर्कसंख्याकृतम् ॥ खल्वेतत्खलुमर्दितंरविजलैर्गुं-जार्द्धमात्रंददेत्सिद्धोयंज्वरहस्तिदर्प्पदलनेपंचाननोयंरसः॥ १॥ पथ्यंचदेयंदधिभक्तयुक्तंसिन्धूत्थयुक्तंसितयासमेतम्॥ गन्धानु-लेपं हिमतोयपानंदुग्धंचपेयंशुभदाडिमं च ॥ २ ॥

अर्थ—तेलियामीठा २ टंक, मिरच ४ टंक, गंधक २ टंक, पारा १ टंक, आकका दूध १२ टंकमें खरल करै और आधीरत्ती प्रमाण गोलियां बनावे यह गोली हस्तीरूप ज्वरको सिंहरूप है. पथ्य दही, चावल खाय और सैंधानोंन, मिश्रीसहित लेय सुगंधिद्रव्य अपने शरीरमें लगावे, ठंडा-जल पान, दुग्ध पान, अनार खाय ।

पुनःश्लोक ।

द्विगुणितंगुंजाप्रमाणावटी॥ कुष्ठंगुल्मातिसारजित्कृमिहरंशूल-प्रमेहापहंवातानेककरीन्द्रदर्प्पदलनेख्यातश्चपंचाननः ॥ १ ॥

अर्थ—पारा, गंधक, चीता, सोंठ, मिरच, पीपल, मोथा, तेलियामीठा यह सब बराबर लेय और गुड इनसे दूना लेय गोली गुंजाप्रमाण बनावे. कुष्ठ, गुल्म, अतीसार, कृमि, शूल, प्रमेह, वातादि अनेक मदमस्त हस्ती समान रोगोंको यह पञ्चानन रस नाश करताहै।

ज्वरांकुशरस ।

शुद्धंसूतंविषंगन्धंधूर्त्तबीजंत्रिभिःसमम्।चतुर्णांद्विगुणंव्योषंचूर्णं गुंजाद्वयंमतम् ॥१॥ जंबीरकस्यमज्जायाआर्द्रकस्यद्रवैर्युतम् ॥ महाज्वरांकुशोनामहृष्टज्वरनिवारकः॥२॥ एकाहिकंद्व्याहिकं चतार्तीयंचचतुर्थकम्॥विषमंचत्रिदोषोत्थंहन्त्यवश्यंनसंशयः ३

अर्थ—पारा शुद्ध, तेलियामीठा, गंधक, धतूरेके बीज यह तीनों बराबर इनसे दूनी सोंठ, मिरच, पीपल लेय जंभीरी अथवा अदरखके रसमें गोली दो गुंजाप्रमाण बनावे, यह महाज्वरांकुश नाम रस है, अष्टज्वरोंको एकाहिक, द्व्याहिक, तृतीयक, चतुर्थक, विषमज्वर, त्रिदोष इनको नाश करे।

महावातज्वरांकुश ।

पृष्टेतालकमेतदर्द्धममलंशंखस्यचूर्णंक्षिपेत्प्रक्षिप्याथनवांशकेपि चशिखिग्रीवांपुनःपेषयेत् ॥ कौमारीरसमर्दितंगजपुटेपाच्यंच शीतंततोगृह्णीयादथगुंजिकाज्वरहरंखंडेनसंयोजयेत् ॥ १ ॥ एकाहंत्रितयंचतुर्थकमिदंवेलाज्वरंनाशये-च्छीतादिज्वरसर्वना-शनकरंभानुर्यथाशर्वरीम् ॥ पथ्यंदुग्धमथापितन्दुलयुतंछागं चशीतंपयःपेयंगव्यमिदंस्वभावजनितंपित्तंजयेद्रोगिणाम्॥२॥ ज्वराभिभूतेषडहेव्यतीतेविपक्वदोषेकृतलंघनादि ॥ योभेषजं वैद्यवरःप्रयुंक्तेनिःसंशयंहन्त्यचिरात्सरोगान् ॥ ३ ॥

अर्थ—हरतालसे आधे शंखचूरको गोमूत्रमें बुझावे. फिर शुद्ध नीला-थोथा नवमां हिस्सा डालदेवे; फिर कुमारीरसके तीन पुट देय खरल कर टिकिया बनाय शरावसंपुट कर तीन कपड मिट्टी कर गजपुटकी आंच देवे.

जब शीतल होजाय तब निकाल लेय. मात्रा १ रत्ती या दो रत्तीकी देय. खांड ऊपरसे देय. रस गरम पानीसे देय, पथ्य दूध, चांवल, बकरीका दूध ठंढा पिये और जितनी रुचि होय उतना यथेच्छासे दूध पिये तो पित्तकी शांति करे और खांडके संग लेय तो एकाहिक, तृतीयक, चतुर्थक, वेलाज्वरका नाश करे और ज्वर होनेपर छः दिन लंघन करै अथवा दोष न पचे तबतक लंघन करे, पीछे जो औषधिको देय तो रोग दूर होवे ॥ ३ ॥

घोड़ाचोली ।

विषरसगंधकअरुहरताल, त्रिकटुत्रिफलाटंकणखार ॥ अजयपालभांगरारसगोली, चौंसठरोगगमावैघोडाचोली ॥ १ ॥ खण्डेनसह गृह्णीयाद्वटिकानांचतुष्टयम् ॥ उष्णंजलंचानुपेयं वारान्सप्तचपंचवा ॥ २ ॥ सूक्ष्मंविरेचनंकुर्याज्जीर्णज्वरविनाशिनी ॥ अजीर्णशूलग्रहणीगुल्मवातामवातजित् ॥ ३ ॥

अर्थ-पारा, गंधक, पारे गंधककी कजलीकरे, तेलियामीठा, शुद्ध हरताल, सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, सुहागा इनको चूनेके पानीकी तीन पुट देय फिर भांगरेके रसमें गोली बनावे, यह गोली चौंसठ रोगोंको दूर करे और खांडके साथ चार गोली लेय, ऊपरसे गरम पानी पीवै तो सातवार या पांचवार विरेचन करे. जीर्णज्वर, अजीर्ण, संग्रहणी, गुल्म, आमवातको दूर करे ॥

प्रभावतीगुटिका ।

द्वेहरिद्रेनिंबपत्रपिप्पलीमारिचानिच ॥ भद्रमुस्ताविडंगंचसप्तमं विश्वभेषजम् ॥ १ ॥ सैंधवंचित्रकंचैवबावचीपित्तपर्पटम् ॥ पाठाभया वचाकुष्ठमजामूत्रेणपेषयेत् ॥ २ ॥ साष्टशतंवाभिमंत्र्यजातीपुष्पाणिप्रक्षिपेत् ॥ दीपोत्सवदिनेरात्रौगुटींकृत्वाभिमंत्रयेत् ॥३॥ सर्वेषुबालरोगेषुज्वरएकाहिकादिके ॥ भूतप्रेतादिदोषेषुवश्येनेत्रामयेषुच ॥ ४ ॥ अंजनंभक्षणंपुंड्रंयथायोगंप्रयोजयेत् ॥ प्रभावतीनामगुटीसर्वकार्यप्रसाधिनी ॥ ५ ॥

सोंठ, सैंधानोंन, चीता, बावची, पित्तपापडा, पाठा, हरड, वच, कूठ इनको बकरीके मूत्रमें १०८ चमेलीके फूल डाल मंत्र पढके, अत्र मंत्रः (ॐ नमःपार्श्वनाथायमहासत्त्वाय ॐ अहिमहिचर २ चांडालिनि स्वाहा) और दिवालीकी रातको गोली बनावै यह गोली समस्त बालरोगोंको, एकाहिकादि ज्वरोंको, भूत, प्रेतादिक रोगोंको नाश करे और अंजन करे तो नेत्ररोग नाश होवे. भक्षण करे, तोलके यथायोग्य देय तो यह गोली समस्तकार्योंको सिद्ध करे ॥

प्रकारान्तरेणाजमोदादिगुटिका।

हिंगुभागोभवेदेकोवचाचद्विगुणाभवेत् ॥ त्रयोभागाविडंगानां सैन्धवंचचतुर्गुणम् ॥ १ ॥ अजाजीपंचभागाचषड्भागंनागरं तथा ॥ मारिचंसप्तभागंचपिप्पल्यष्टगुणाभवेत् ॥ २ ॥ कुष्ठस्य नवभागाः स्युर्दशभागाहरीतकी ॥ एकादशचित्रकस्य अजमोदाचद्वादश ॥ ३ ॥ गुडश्चसर्वद्विगुणोगुटिकांकारयेद्दृढाम् ॥ हन्यादनेकवातांश्च हर्षंचैवचतुर्दश ॥ ४ ॥ अष्टादशैवगुल्मानि प्रमेहान्विंशतिं तथा ॥ हृद्रोगकुष्ठशूलानिवातगुल्मगलग्रहम् ॥ ॥ ५ ॥ श्वासंचग्रहणींपाण्डुमग्निमांद्यारुचिस्तथा ॥ धन्वंतारिकृतोयोगोनिजपुत्रस्य हेतवे ॥ ६ ॥

अर्थ—हींग १ भाग, वच २ भाग, सैंधानोंन ४ भाग, जीरा ५ भाग, सोंठ ६ भाग, मिरच ७ भाग, पीपल ८ भाग, कूठ ९ भाग, हरड १० भाग, चीता ११ भाग, अजमोद १२ भाग इन सबसे दूने गुडमें गोली बनावे ७ टंक प्रमाणकी यह अनेक वायुरोग, हर्ष १४ प्रकारका, गुल्म १८ प्रकारका, प्रमेह २० प्रकारका, हृदयरोग, कुष्ठ, शूल, वायगोला, गलग्रह, श्वास, संग्रहणी, पांडुरोग, अग्निमांद्य, अरुचि इन रोगोंको दूर करे यह योग धन्वंतरिने अपने पुत्रके लिये कहाहै ॥

अतीसारे अरलूगुटिका।

अरलूबिल्वजम्ब्वाम्रंकपित्थंचरसांजनम् ॥ लाक्षाहरिद्राह्रीबेरं स्योनाकंकट्फलंतथा ॥ १ ॥ लोध्रंमोचरसंशृंगाधातकीचवटां-

शुष्कांपिवेत्क्षिप्रंज्वरातीसारशान्तये ॥ रक्तपित्तप्रशमनीग्रहणीशूलनाशिनी ॥ ३ ॥

अर्थ—अरलूकी छाल, बेलगिरी, जामुनकी छाल, आमकी छाल, कैथ, रसोत, लाख, हलदी, हाऊबेर, नेत्रवाला, कायफल, लोध, मोचरस, सोंठ, धायके फूल, वटके अंकुर इन सबको चांवलके पानीमें खरल कर बहेडेके समान गोली बनावे. और छायामें सुखाकर सांठी चांवलोंके पानीके संग खाय प्रभात समय तो ज्वर, अतीसार, रक्तपित्त, संग्रहणी और शूलको दूर करै॥

ग्रहणीकपाटगुटिका ।

चातुर्जातकचव्यजीरकयुगंव्योपारलूग्रंथिकं श्रीवृक्षातिविषाजमोदयुगलंचूतास्थिपाठांबुदम् ॥ यष्टीचेंद्रयवाम्लकास्थिकवचालोध्रंसमंगारजः कुर्यान्मोचरसान्वितंसमजयेद्वासावनोतद्गुणान् ॥ १½॥ आबंध्यग्रहणीकपाटवटिकानाक्षप्रमाणान्भजेत्साध्मानग्रहणीविकाररुधिरातीसारविच्छित्तये ॥ २ ॥

अर्थ—तज, तेजपात, इलायची, नागकेशर, चव्य, दोनों जीरे, सोंठ, मिरच, पीपल, अरलूकी छाल, पीपलामूल, बेलगिरी, अतीस, अजमोद, अजवायन, आमकी गुठली, पाठा, मोथा, मुलहटी, इंद्रयव, इमलीके बीज, वच, लोध, मंजीठ इनका चूर्ण कर मोचरस समान मात्रा लेय, इतनाही गुड डालकर बहेडाके समान गोलियाँ बनावे, संग्रहणी, रक्त अतीसारका नाश करे॥

एलादिगुटिका ।

एलात्वक्पत्रकंद्राक्षापिप्पल्यार्द्धपलंतथा ॥ सितामधुकखर्जूरमृद्वीकाश्चपलोन्मिताः ॥ १ ॥ संचूर्ण्यमधुनाकुर्य्याद्गुटिकांचाक्षसंमिताम् ॥ कासंश्वासंज्वरंहिक्कांछर्दिंमूर्छांमतिभ्रमम् ॥ २ ॥ रक्तष्ठीवंपार्श्वशूलंस्वरभेदंक्षतक्षयम् ॥ गुटिकातर्पणीवृष्यारक्तपित्तं च नाशयेत् ॥ ३ ॥

अर्थ—इलायची ४ टंक, तज ४ टंक, तेजपात ४ टंक, दाख ४ टंक, पीपल ८ टंक, मिश्री, मुलहटी, छुहारे, मुनक्का १६ टंक इनको शहदमें

चित्तभ्रम, मुखका रक्तदोष, पसलीका दरद, स्वरभेद, क्षत, क्षयी, रुधिर-विकार और पित्तादिकोंको दूर करे ॥

तालीसादिगुटिका ।

चव्याम्लवेतसकटुत्रिकतिन्तडीकंतालीसजीरकतुगादहनैःस-मांशैः ॥ चूर्णगुडप्रमुदितंत्रिसुगंधयुक्तंवैस्वर्य्यपीनसकफारुचि-षुप्रशस्तम् ॥ १ ॥

अर्थ—चव्य, अमलवेत, सोंठ, मिरच, पीपल, तंतडीक, तालीस पत्र, जीरा, वंशलोचन, इलायची, तज, पत्रज, चीता इनको बराबर लेय और गुडके संग गोली बनावे पीनस, कफ, अरुचि इनको दूर करता है ॥

लघुकामेश्वरगुटिका ।

शतावरीगोक्षुरश्वकपिकच्छुउटिंगणम् ॥ गंगेरीकबिलामुस्ता मुशलीखुरसाणकम् ॥ १ ॥ समुद्रशोषोहिपराचविकशाल्म-लीसटी ॥ मकुष्टस्यजटामांसीवाजिगंधाचरेणुका ॥ २ ॥ विदारीग्रंथिकंगुंदविडंगजीरकंसणम् ॥ मांसीसिताह्वाधान्याकं विजयातुर्यभागिका ॥ ३ ॥ जातिपत्रंजातिफलंचातुर्जातकटु-त्रिकम् ॥ कर्पूरंगगनंलोहंरससिंदूरकासिका ॥४॥ गुटिकाद्वि-गुणखंडेनवृद्धकोलप्रमाणतः ॥ वीर्य्यवृद्धिंबलंपुष्टिंकामदीप्तिं करोत्यलम् ॥ ५ ॥

अर्थ—शतावर, गोखरू, कौंचके बीज, उटंगन, गंगेरन, खरैटी, बाला, मोथा, मूसली, खुरासानी, अजवायन, समुद्रशोष, समुद्रफेन, चव्य, सेम-लका मूसला, मेद, कचूर, जटामांसी, असगंध, संभालूके बीज, जावित्री, जायफल, तज, तेजपात, इलायची, सोंठ, मिरच, पीपल, कपूर, अभ्रक, सार, रससिंदूर, मिश्री, विदारीकंद, पीपलामूल, मस्तंगी, वायविडंग, जीरा, सनके बीज, छड, सोंफ, धनियां इनसे चौथाई भांग और दूनी खांड डालकर बड़े बेरके समान गुटिका बनावें; वीर्यवृद्धि, बल, पुष्टि, कामदीपन कर पूर्ण करै ।

स्तंभनविधि ।

न्दनंचेतिकर्षकान् ॥ १ ॥ चूर्णानिमानतःकुर्यादहिफेनपलो-न्मितान् ॥ सर्वमेकीकृतंचूर्णंमासैकंमधुनालिहेत् ॥ २ ॥ शुक्रस्तभकरंचूर्णंपुंसामानन्दकारकम् ॥ नारीणांप्रीतिजन-नंसेवेतनिशिकामुकः ॥ ३ ॥

अर्थ—अकरकरा, सोंठ, कंकोल, मिरच, केशर, पीपल, जायफल, ंग, चन्दन इन सबको चार २ टंक लेय सबसे आधी अफीम १६ टंक, बका चूर्ण कर शहदके साथ एक मासे नित्य चाटे तो वीर्यको स्तंभन रे, पुरुषको अति आनंद करे, स्त्रियोंको परमप्रीति होवे यह चूर्ण कामी रुषको रात्रिसमय खाना चाहिये ॥

अन्यस्तंभनविधि ।

कंकोलंकुंकुमंफेनंमस्तंगीजातिपत्रिका ॥ जातीफलंचकर्पूरं करहाटमुटींगणम् ॥ १ ॥ जलादिभिर्विनैवैतांगुटिकांवर्द्ध-येद्बली ॥ दिनान्तेभक्षयेच्चैकांरेतस्तंभकरीमता ॥ २ ॥

अर्थ—कंकोल, केशर, अफीम, मस्तंगी, जावित्री, जायफल, कपूर, ाकरकरा, उटंगन इनकी विना पानीसे गोली बनावे. संध्याको एक गोली य तो स्तंभन करे, वीर्यको पुष्ट करे ॥

नेत्राम्बुजवटी ।

शंखनाभिकणातुत्थंबोलखर्परसंयुतम् ॥
निंबूकरसतोयेनह्यंजनंनयनामृतम् ॥ १ ॥

अर्थ—शंखकी नाभि, पीपल, नीलाथोथा शुद्ध, बीजाबोल, खपरिया द्ध इनको नींबूके रसमें खरल कर अंजन करै यह अंजन नयनामृत ामसे प्रसिद्ध है ॥

चन्द्रप्रभागुटिका ।

अशीतितिलपुष्पाणिषष्टिभागाधिकाकणा ॥ पंचाशज्जातिक-लिकामरिचानथषोडश ॥ १ ॥ भृङ्गराजरसेनेदंकांस्यपत्रेणमर्द-

मिरंहन्तिमधुनाहंतिपुष्पकम् ॥ अजामूत्रेणरात्र्यंधंगोमूत्रेण च चिर्प्पटम् ॥ ३ ॥

अर्थ–तिलके ८० फूल, पीपलके ६० दाने, जाईकी कली ५०, मिरच १६ इनको भांगरेके रसमें खरल करे कांसेके पात्रमें, यह चन्द्रप्रभा वटी है. सो संपूर्ण नेत्ररोगोंको नाश करे इसको पानीसे आंजै तो तिमिर जाय, शहदसे आंजै तो फूला जाय, बकरीके मूत्रसे आंजै तो रतोंध जाय, गोमूत्रसे आंजै तो आंखोंका चिमचिमाहट जाय ॥

नेत्रस्रावगुटिका ।

धात्र्यक्षपथ्याबीजानिएकद्वित्रिगुणानितु॥ पिष्ट्वावर्त्तिंजलैः कुर्यादंजनंत्विहरेणुकम् ॥ नेत्रस्रावंहरत्याशुवातरक्तकजंतथा॥ १॥

अर्थ–त्रिफलाकी मिंगी क्रमसे १, २, ३ भाग इनको पीसकर पानीमें गोली बनावै. फिर अंजन करै तो आखोंके पानीको, वायु, रुधिरपीडाको दूरकरे ।

रात्र्यंधतायां गुटिका ।

रसांजनंहरिद्रेद्वेमालतीनिंबपल्लवा ॥ गोशकृद्रससंयुक्तावर्त्तिर्नक्तांध्यनाशिनी ॥ १ ॥

अर्थ–रसोत, सुरमा, दोनों हलदी, मालतीके पत्ता, नीमके पत्ता इनकी गोबरके रसमें गोली बनावै और आंखमें आंजै तो रतोंधका नाश होवे ॥

अतिनिद्रायां गुटिका ।

क्षौद्राश्वलालासंघृष्टैर्मरिचैर्नेत्रमंजयेत् ॥ अतिनिद्राशमंयाति तमःसूर्योदये यथा ॥ १ ॥

अर्थ–शहद, घोडेकी लारमें मिरच घिसकर लगावे तो अतिनिद्रा दूर होय, जैसे सूर्यके उदय होनेसे अंधकार दूर होजाता है ॥

पुनःश्लोक ।

शिरीषबीजगोमूत्रकृष्णामरिचसैंधवम् ॥ अंजनंस्यात्प्रबोधाय

एकविंशतिवेलंतु ततोवर्त्तिंविकल्पयेत् ॥ २ ॥ मनुष्यलालया घृष्टाततोनेत्रेनियोजयेत्।सर्पदंष्ट्राविषंजित्वासंजीवयतिमानवम्

अर्थ—सिरसके चीयां, पीपल, मिरच, सैंधानोंन इनका गोमूत्रसे अंजन करे तो तंद्रा दूर होय ॥ १ ॥ लहसन, मैनसिल, शुद्ध जमालगोटाकी मिंगी, नींबूके रसकी २१ भावनादेय, गोली बनाय मनुष्यकी लारसे अंजन करे तो सर्पका विष उतर जाय ॥

पुनःश्लोक ।

काचंसफेनंकनकंसतुत्थंशंखंशिलारोचनमाक्षिकंच ॥ पुंसःकपालंशिखिकुक्कुटांडमाजन्मजातंकुसुमंनिहंति ॥ १ ॥

अर्थ—काच, समुद्रफेन, धतूरेका फल, शुद्ध नीलाथोथा, शंखका चूर्ण, मैनसिल, गोरोचन, सोनामक्खी, मनुष्यकी खोपडी, मोर तथा मुर्गेका अंडा यह अंजन जन्मभरकी फूलीका नाश करताहै ॥

नयनामृतांजनम् ।

त्रिफलाभृङ्गमहौषधिमध्वाज्यच्छागपयसिगोमूत्रे ॥ नागंनवतिनिषिक्तंकरोतिगरुडोपमंचक्षुः ॥ १ ॥ पारदंशीसकंतुल्यं तयोर्द्विगुणमंजनम् ॥ ईषत्कर्पूरसंमिश्रमंजनंनयनामृतम् ॥ २ ॥

अर्थ—शीसेको त्रिफलामें ३० वार, भांगरेके रसमें १० वार, सोंठके काढेमें १० वार, शहदमें १० वार घीमें १० बार, बकराके दूधमें १० बार, गोमूत्रमें १० वार बुझावे.यह अंजन गरुडके समान नेत्रोंकी जोतको कर देता है. पारा, शीशा, बराबर इनसे दूना सुरमा और थोडासा कपूर मिलाकर अंजन करे तो नेत्रोंको यह अंजन अमृतके तुल्य है ॥

बावलेकुत्तेके काटनेपर गोली ।

तुम्बीगिरंमालवकेक्षुहिंगुलंनेपालमध्यंमरिचानिटंकणम् ॥ भागैःसमानैर्गुटिकाविधेयाविषंशुनोहन्तिसुतप्तवारिणा ॥ १ ॥

अर्थ—कड़वी तुंबीके बीज, मालती, गुड टंक १६, हिंगलू २ टंक, जमालगोटाकी मिंगी, मिरच २ टंक, सुहागा २ टंक, गुंडसे गोली बना-

तथा ।

गुडतैलार्कदुग्धैश्चलेपःश्वानविषंहरेत् ॥

अर्थ–गुड, तेल, आकका दूध लेपन करे तो श्वानका विष दूर होवै ॥

अपामार्गस्यमूलन्तुकर्षैकंमधुनालिहेत् ॥ १ ॥ श्वानदंष्ट्राविषंहन्तिलेपःकुक्कुटविष्ठया ॥ उन्मत्तश्वानदंष्ट्रानांकुमारीदलसैंधवम्॥ सुखोष्णंयःपिबेत्पीडात्रिदिनांतेसुखावहा॥२॥आज्येनतण्डुलीमूलंतुलसीमूलिकापिवा ॥ तन्दुलोदकपानेनगुटी श्वानविषापहा॥३॥तैलंतिलानांपललंगुडंचक्षीरंतथार्कसममेव पीतम् ॥ अलर्कसक्तंविषमाशुहन्तिसद्योभवंवायुरिवाभ्रवृन्दम् ॥ ४ ॥ छायाशुष्कार्कमूलंचमरीचंकर्षंभक्षयेत् ॥ तद्व्रणंतत्क्षणादेवदहेल्लोहशलाकया ॥ ५ ॥ चोकमाज्यंमेघनादौदेयौश्वानविषापहौ॥ अन्येषांसर्वकीटानांविषंहन्तिचराचरम् ॥ ६ ॥

अर्थ–ओंगाकी जड़ ४ टंक, शहदमें चाटे तो कुत्ताका विष जाय, मुर्गाकी बीठका लेप करै तो कुत्ताका विष दूर होय, कुमारपाठा, सैंधानोंन, शहद, गरम जलके साथ पिये तौ तीन दिनमें दरद दूर होय, अथवा घीसे चौलाईकी चडको पिये तौ अथवा तुलसीकी जड घीसे पिये वा तुलसीको चावलोंके पानीसे पिये तो कुत्ताका विष दूर होवे, तेल, गुड, आकका दूध इनको पानीके संग पीनेसे कुत्ताका विष ऐसे दूर होय जैसे बादलोंका समूह पवनसे अथवा छायामें आककी जडको सुखा चार टंक मिरचोंके साथ खाय तो कुत्ताका विष शीघ्रही जाय, नीलाथोथा, घृत, चौलाईका रस इनको मिलाकर कुत्तेके काटेको देय तो विष दूर होवे. अथवा लोहेकी कील गरम कर दाग देय, इन दवाइयोंसे सब कीटादिकोंके विष दूर होतेहैं ॥

कुष्ठविकारे त्रिफलादिगुटिका ।

त्रिफलाषट्पलाकार्याभल्लातानांचतुःपलम् ॥बाकुचीपंचपलिकाविडंगानांचतुःपलम्॥ १ ॥ हतंलोहंत्रिवृच्चैवगुग्गुलुश्चशिलाजतु ॥ एकैकंपलमात्रंस्यात्पलार्द्धंपौष्करंभवेत्॥ २ ॥ चित्रक-

कुंकुमम् ॥ ३ ॥ शाणोन्मितंतदेकैकंचूर्णयेत्सर्वमेकतः ॥
तस्तत्प्रक्षिपेच्चूर्णपक्वखण्डेचतत्समे ॥४॥ मोदकान्पलिका-
कृत्वाप्रयुंजीतयथोचितम् ॥ हन्युःसर्वाणिकुष्ठानित्रिदोष-
भवामयान्॥ ५॥ शिरोक्षभ्रूगताञ्रोगान्हन्यात्पृष्ठगदानपि॥
गन्दरप्लीहगुल्माञ्जिह्वातालुगलामयान् ॥ ६ ॥ प्राग्भोजन-
यदेयंस्यादर्धकायस्थितेगदे॥ भेषजंभक्ष्यमध्येचरोगेजठरसं-
स्थिते ॥ ७ ॥ भोजनस्योपरिग्राह्यमूर्द्धजन्तुगदेषुच ॥ ८ ॥

अर्थ—त्रिफला १६ पल, भिलावा ४ पल, बावची ५ पल, वाय-
क ४ पल, सार १ पल, निसोत १ पल गूगल १ पल, शिलाजीत
ल, पोहकरमूल १ पल, चीता आधापल, मिरच १ पल, सोंठ, पीपल,
ा, तज, तेजपात, इलायची, केशर ये एक २ पल इन सबका
कर और सबकी बराबर खांडकी चासनी कर लड्डू बनालेवे,
ण १६ टंक कोढ़, त्रिदोष, भगंदर, प्लीहा, गोला, जिह्वारोग, तालुरोग,
रोग, आंखरोग, भौंहरोग, पीठरोग, कानरोगादिकोंका नाश करे,
नसे पहिले सेवन करे तो अर्द्धांगरोग जाय और मध्यमें खाय तो
रोग जाय और पीछे खाय तो कमरके रोग दूर होवें ॥

संजीवनीगुटिका ।

डङ्गंनागरंकृष्णापथ्यामलविभीतकौ॥ वचागुडूचीभल्लातंस-
षंचात्रयोजयेत् १ ॥एतानिसमभागनिगोमूत्रेणचपेषयेत्॥
ज्ञाभागुटिकाकार्यादद्यादार्द्रकजैरसैः ॥२॥ एकामजीर्णयुक्त-
द्वेविषूच्यांचदापयेत् ॥ तिस्रश्चसर्प्पदष्टस्यचतस्रःसन्निपाति-
॥ ३ ॥ गुटिकाजीवनीनामसंजीवयतिमानवम् ॥ ४ ॥

अर्थ—वायविडंग, सोंठ, हरड, पीपल, आंवला, बहेडा, वच, गिलोय,
भिलावा, शुद्ध तेलियामीठा इनकी समान मात्रा लेय गोमूत्रमें खरल
जाप्रमाण गोलियां बनावे अदरखके रससे देय. अजीर्णवालेको
गोली, हैजावालेको २ गोली, सर्प काटेहुएको ३ गोली, सन्निपातवा-
४ गोली देय तौ रोग नाश होय ॥

सप्तामृतगुटी ।

त्रिफलालोहचूर्णंचमाक्षिकंमधुयाष्टिका ॥
सायमाज्यान्वितंमाषंसद्यस्तिमिरनाशनम् ॥ १ ॥

अर्थ–त्रिफला, सार, शहद, मुलहटी सायंकालमें घीके संग खाय तो शीघ्रही आंधीको नाश करे ॥

इति श्रीभट्टारकश्रीहर्षकीर्त्युपाध्यायसंकलिते योगचिन्तामणौ वैद्यकसारसंग्रहे गुटिकाधिकारस्तृतीयः ॥ ३ ॥

अथ चतुर्थाध्यायः ।

अथ क्काथाधिकारो लिख्यते ।

रसः १ कल्को २ हिमः ३ क्काथः ४ फांट ५ श्चैवस्मृतस्तथा ॥ भेदाः पंचकषायाणांपूर्वेपूर्वेबलाधिकाः ॥ १ ॥ पानीयंषोडशगुणं क्षुण्णद्रव्यपलेक्षिपेत् ॥ मृत्पात्रेक्काथयेद्ग्राह्यमष्टमांशावशेषितम् ॥ २ ॥ तज्जलंपाययेद्धीमान्कोष्णंमृद्वग्निसाधितम् ॥ स्मृतः क्काथःकषायश्चनिर्यूहःसनिगद्यते ॥ ३ ॥ क्काथःसप्तविधः प्रोक्तःपचनःशमनस्तथा ॥ दीपनःक्लेदनोभेदीसंतर्प्पणविमोहनैः ॥ ४ ॥ पचनः पच्यतेदोषान्दीपनोदीप्यतेनलम् ॥ शोधनोमलशोधीस्याच्छमनःशमतेगदान् ॥ ५ ॥ तर्पणस्तर्प्यतेधीमान्भेदी चोत्क्लेदकारकः ॥ विशोषीशोषमाधत्ते तस्मादुष्णंपरिक्षिपेत् ॥ ६ ॥ क्लेदीविशोषीविज्ञायवमनंकारयेत्ततः ॥ क्काथेकृतेनलंघेतनान्यथान्यत्रचालयेत् ॥ ७ ॥ पचनोर्द्धावशेषोस्याच्छोधनोद्वादशांशकः ॥ क्लेदनश्चतुरंशश्च शमनश्चाष्टशेषतः॥८॥ दीपनीयोदशांशश्चतर्पणश्चदशांशकः ॥ विशोषीषोडशांशश्चक्काथभेदाः प्रकीर्तिताः ॥ ९ ॥

अर्थ–रस १ कल्क २ हिम ३ क्काथ ४ फांट ५ यह पांच भेद काढेके हैं, पूर्व २ में बल अधिक है. पानी १६ गुणा औषधि १६ टंक गेरकर मिट्टीके

बरतनमें काढा पकावे जब आठवां हिस्सा रहे तब उतारलेय. उसका जल रोगीको पिलावे. मंदाग्निसे पकावे. उसको क्वाथ, कषाय, निर्यूह कहतेहैं. क्वाथ सात प्रकारका है. पाचन १,शमन २, क्लेदन ३, दीपन ४, भेदी ५, संतर्पण ६, विमोहन ७, पाचन जो है सो दोषोंको पचाता है (पाचन उसे कहतेहैं जो दो सेरका सेरभर रहजाय) दीपन उसे कहतेहैं जो अग्निको दीप्त करे (दीपन १० कटोरीकी १ रहे.) शोधन मल शुद्ध करे (दोकटोरीकी एक रहे. उसे शोधन कहते हैं.) शमन दोषोंको शांति करे.(आठ कटोरीकी एक रहे.) संतर्पणमें धातु बढे.(छः कटोरीकी एक रहे.)क्लेदी, उत्क्लेद करे. (चार कटोरीकी एक रहे.) विशोषी शोष करताहै. (सोलह कटोरीकी एक रहे.) इससे उष्ण जलकी परीक्षा करलेय. क्लेदी, विशोषी, वमन करावे. क्वाथ करके लांघे नहीं न चलायमान करे॥

सर्ववायुविकारेरास्नादिक्वाथ ।

रास्नागुडूचीएरण्डंदेवाह्वाचाभयासटी ॥ बलोग्रगंधापाठाचशतपुष्पापुनर्नवा ॥ १ ॥ पंचमूलीविषामुंडीसर्षकश्चदुरालभा ॥ यवानीपुष्करंमूलमश्वगंधाप्रसारिणी॥ २ ॥ गोक्षुरंचांद्रूरूपंचहपुषावृद्धदारुकम् ॥ शतावरीतथाब्राह्मीगुग्गुलुःक्षीरकंचुकी ॥ ३ ॥ समभागैरिमैःसर्वैः कषायमुपकल्पयेत् ॥ वातरोगेषुसर्वेषुकंपशोफे प्रतानके ॥ ४ ॥ मन्यास्तंभेतथाशोषे पक्षाघातेसुदारुणे ॥ अर्दिताक्षेपकुब्जेचहनुग्रहस्वरग्रहे ॥ ५ ॥ आढ्यवातेतथामूकेखंजेचैवापबाहुके ॥ गृध्रस्यांजानुभेदेचगुल्मशूलेकटिग्रहे ॥ ६ ॥ सामेचैवनिरामेचसप्तधातुगतानिले ॥ आवृतेनावृतेचैववातरक्तेविशेषतः ॥ ७ ॥ एषद्वात्रिंशकःक्वाथः कृष्णात्रेयेणभाषितः ॥ कृष्णचूर्णेनवायोगोराजगुग्गुलुनाथवा ॥ ८ ॥ आजमोदादिनावापि तैलेनैरण्डजेनवा ॥ ९ ॥

अर्थ—रास्ना,गिलोय, एरंडकी जड, देवदारु,हरड,कचूर, खरैटी, वच, पाढ, सौंफ, साँठकी जड, पंचमूल,रसोत,अंडी धमासा, अजवायन,पुहकरमूल, असगंध, प्रसारणी (लताविशेष लज्जीलूलता) गोखरू, अडूसा,हाऊ

बेर, विधारा, शतावरी, ब्राह्मी, गूगलपंचांग, क्षीरकंद इनकी बराबर मात्रा लेय तीन पुडिया बनावे. अष्टावशेष क्वाथ करे. कुछ गूगल डालदेय. समस्त वायुरोग, कंपवायु, प्रतानकवायु, जावडेका स्तंभ, मुखशोष, पक्षघात, बडी पीडा, कुबड़ापन, हनुग्रह, स्वरभंग, वायुके संपूर्ण विकार, पीपलके चूर्णसे देय अथवा योगराजगूगलसे, अथवा एरंडीके तेलसे, अथवा अजमोदसे देय तौ संपूर्ण वायुके विकारोंको दूर करे ॥ ९ ॥

लघुरास्नादि ।

रास्नागुडूचीवातारिदेवदारुमहौषधैः ॥
पिबेत्सर्वांगकेवातेसाममज्जास्थिसंधिगे ॥ १ ॥

अर्थ–रास्ना, गिलोय, एरंड़का तेल, देवदारु, सोंठ अष्टावशेष क्वाथसे पीवे तो सर्वांगवात दूर होय ॥

सन्निपातलक्षण ।

यदिकथमपिपुंसांजायतेकर्णपीडा भ्रममदपरितापोमोहवैक-ल्यभावम् ॥ विकलनयनहास्योगीतनृत्यप्रलापान्विदधतित-मसाध्यंकंपचित्तभ्रमाख्यम् ॥ १ ॥ उत्तिष्ठतिबलात्कारंकृत्वा ब्रूतेयदृच्छया ॥ यामीतिवदते नित्यंसत्याज्योभिषगुत्तमैः॥२॥

अर्थ–जो कदाचित् पुरुषके कर्णपीडा होय तो तापकी पीडा, भ्रम, मद, परिताप, मोह, विकलता, ऐसा रूप होय, और आखें फटीसी जायँ और हंसे, गावे, नाचे, बके यह लक्षण होंय तो असाध्य और कोई चित्तभ्रमको असाध्य कहते हैं, और बलात्कार करके उठे, जो मनमें आवे सो बोले, और निरन्तर यही कहे 'जाताहूं' तो उत्तम वैद्य उस रोगीको त्याग देवे ॥

हरीतक्यादिक्वाथःसन्निपाते ।

पथ्यापर्प्पटकटुकामृद्वीकादारुजलदभूनिंबैः ॥
ब्राह्मीपटोलसम्यक्क्वाथश्चित्तभ्रमंहंति ॥ १ ॥

अर्थ–हरड़, पित्तपापड़ा, कुटकी, दाख, दारुहलदी, मोथा, चिरायता, ब्राह्मी, पटोलपत्र इनका क्वाथ चित्तभ्रम, सन्निपातको दूर करताहै ॥

पुनःसन्निपातेक्काथः ।

तगरतुरगगंधापर्प्पटः शंखपुष्पीत्रिदशविटपतिक्ताभारतीभूतकेशी ॥ जलधरकृतमालश्वेतकीगोस्तनीनां सहहरतिकषायः पक्षपानात्प्रलापम् ॥ १ ॥

अर्थ—तगर, असगंध, पित्तपापडा, शंखाहूली, देवदारु, ब्राह्मी, कटुक, (कुटकी) छड, अमलतास, मोथा, अमलतासका गूदा, संभालू, दाख इनका गूदा, असाध्य सन्निपातका नाश करताहै ॥

सन्निपातदाग ।

कालीयकेदगंदद्यादंसयोश्चप्रकोष्ठयोः ॥
ब्रह्मस्थानेशंखयोश्चसन्निपातनिवृत्तये ॥ १ ॥

अर्थ—सन्निपातनिवृत्तिके निमित्त हाथोंके दोनों पहुंचोंमें अथवा बीचमस्तक और कनपटीमें अग्निसे दाग देय ॥

दागस्थान ।

शंखयोश्चभ्रुवोर्मध्येदशमद्वारएवच॥ग्रीवायांदाहयेच्छीघ्रंप्रलापे सन्निपातके॥ १॥धनुर्वातेमृगीवातेह्यंतकेचित्तविभ्रमे।अभिन्यासेचउन्मादेनिश्चैतन्येतथावमौ॥२॥एतेषांचैवरोगाणांतप्तलोहशलाकया ॥ भ्रुवौशंखौचपादौचकृकाटीमूलरंध्रयोः ॥ ३ ॥ नेत्ररोगेह्यपस्मारेभ्रुवौशंखौचदाहयेत् ॥ कामलेपाण्डुरोगेचकृकाटीमूलमादहेत् ॥४॥ पादरोगेषुसर्वेषुगुल्फोर्ध्वंचतुरंगुलम् ॥ तिर्यग्दाहंप्रकुर्वीतदृष्ट्वापादशिरोदहेत् ॥ ५॥ उदरंसर्वरोगेषुहृत्पीडापिप्रजायते ॥ हृदयेयदिपीडास्याद्दाहयेद्धृदयोपरि॥६॥ यत्रपीडाश्चजायन्तेतत्रतत्रचदाहयेत् ॥

अर्थ—कनपटी, भौंह, दशमद्वार (ब्रह्मरंध्र) नाडमें दागे, प्रलापक सन्निपातमें और धनुर्वात, मृगी, अंतक, चित्तभ्रम, अभिन्यास, उन्माद, बेहोश,वमन इन रोगोंमें लोहेकी शलाकासे भौंह और कनपटी और कंठ और पैर और गुदामेंसे किसीमें दाग दे. नेत्ररोग, अपस्मार, इनमें भौंह,

णरोग, गुल्मरोग इनमें चरणको ४ अंगुल ऊंचा दाग दे उदरके रोगोंमें पेटको दाग दे हृदयपीडामें हृदयपर दाग दे जहां २ पीडा होय तहां २ दागे ॥

सन्निपातेभाङ्ग्र्यादिक्काथः ।

भार्ङ्गीभूनिंबनिंबैर्घनपटुकवचाव्योषवासाविशालारास्नानंतापटोलीसुरतरुरजनीपाटलाटिंटुकीभिः ॥ब्राह्मीदार्वीगुडूचीत्रिवृतअतिविषापुष्करत्रायमाणव्याघ्रीसिंहीकलिंगीत्रिफलसटीयुतैः कल्पितस्तुल्यभागः ॥ १ ॥ क्काथोद्वात्रिंशनामात्रिकलितदशकान्सन्निपातान्निहंति शूलंश्वासंचहिक्कांकसनगुदरुजाध्मानविध्वंसकःस्यात् ॥ मन्यास्तम्भांत्रवृद्धिंगदगलसुरतंसर्वसंधिग्रहांश्चमातंगौघंनिहन्यान्मृगारिपुरधिकंरोगजालंतथैव ॥ २ ॥

अर्थ—भारंगी, चिरायता, नींबकी छाल, मोथा, कुटकी, सोंठ, मिरच, पीपल, अडूसा, इन्द्रायन, रास्ना, जवासा, पटोल पत्र, देवदारु, हलदी, अरलू, जलशिरस, ब्राह्मी, दारुहलदी, गिलोय, निसोत, अतीस, पुहकरमूल त्रायमाण, कटेरी, इन्द्रजव, त्रिफला, कचूर इन सबको बराबर लेकर काढ़ा करे तो तेरह सन्निपातोंको दूर करे. शूल, श्वास, हिचकी, खांसी, गुदारोग, अफारा, आंतोंकी वृद्धि, गलरोग, अरुचि, सब संधियोंका गठ जाना, जैसे हाथियोंके समूहका सिंह नाश करे तैसे यह रोगोंके जालका नाश करता है ॥

रुधिरविकारेमंजिष्ठादिक्काथः ।

मंजिष्ठापिचुमंदचन्दनघनाछिन्नागवाक्षीवृषात्रायंतीत्रिवृताशतद्विरजनीभूनिंबपाठाविषा॥गायत्रीत्रिफलापटोलकुटकीकीटद्विषापर्प्पटैरुग्रावल्गुजवासवत्सकयुतैःक्काथंविदध्याद्भिषक् ॥१॥ कण्डूमण्डलपुण्डरीककटिभिः पामाविचर्चिव्रणैःसिध्मश्वित्रकिलासदद्रुरसकैर्व्याप्ताप्रसुप्तास्त्वचः ॥ किंचान्यत्क्रिमिभिर्विशीर्णगलितघ्राणांघ्रिपायूद्भवानेनंप्राप्यमहाकषायमरिचात्पंचेषुतुल्यानराः ॥ २ ॥

अर्थ—मंजीठ, नींबकी छाल, रक्तचन्दन, मोथा, गिलोय इंद्रजव, अडूसा, त्रायमाण, निसोत, धमासा, दोनों हलदी, चिरायता, पाढ, अतीस, खैरसार,

त्रिफला, पटोलपत्र, कुटकी, वायविडंग, पित्तपापडा, वच, बावची, नेत्रवाला, जवासा, कुड़ेकी छाल, बकायन इन सबको बराबर लेकर क्वाथ कर पीनेसे खुजली, चकत्ता, फुनसी, फोडा, दाद, खाज ये समस्त विकार दूर होवें ॥

पाठान्तरश्लोक ।

मंजिष्ठाकुटजामृताघनवचाशुंठी हरिद्राद्वयंक्षुद्रारिष्टपटोलकुष्ठ-कटुकीभार्ङ्गीविडंगान्वितम् ॥ मूर्वादारुकलिंगभृङ्गमगधात्रायं-तिपाठावरीगायत्रीत्रिफलाकिरातकमहानिम्बासनारग्वधम् १॥ श्यामावल्गुजचन्दनंवरुणकंपूतीकशाखोटकंवासापर्प्पटसारि-वाप्रतिविषानंताविषालाजलम् ॥ मंजिष्ठादिरयंकषायविधि-नानित्यंपुमान्यःपिबेत्त्वग्दोषाह्यचिरेणयांतिविलयंकुष्ठानि चाष्टादश ॥ २ ॥ रक्तवातप्रसुप्तौचविसर्प्पेविद्रधौतथा ॥ सर्वे-ष्ववातरोगेषुमंजिष्ठादिः प्रशस्यते ॥ ३ ॥

अर्थ—मंजीठ, कुडेकी छाल, गिलोय, मोथा, वच, सोंठ, हलदी, कटेरी, नींबकी छाल, पटोलपत्र, कूठ, कुटकी, भारंगी, वायविडंग, चीता, मूर्वा, देवदारु, इंद्रयव, भांगरा, पीपल, त्रायमाण, पाढ़, शतावर, खैरसार, त्रिफला, चिरायता, बकायन, विजेसार, अमलतास, निसोत, बावची, रक्तचन्दन, वरुणाकी छाल, कुंजुआ, सहोडाकी छाल, बांसा, पित्तपापडा, सारिवा, अतीस, जवासा, नेत्रवाला इनका काढा नित्य पिये तो संपूर्ण त्वचाके दोष दूर होवें और १८ प्रकारके कोढ दूर होवें ॥

मंजिष्ठादिषष्टिवट ।

मंजिष्ठात्रिफलाप्रियंगुममृताब्राह्मीवचापौष्करंभृङ्गास्यास्त्रिकटुः किरातकविषानिर्गुण्डिकारग्वधः॥त्रायन्तीखदिरंकटुत्वचवृकी पीताद्वयंरोहिणीतिक्तापर्प्पटवासकेंद्रफलिनीनंताविशालागदम् ॥ १ ॥ एरण्डंपिचुमंदचित्रकबरीभार्ङ्गीमलेंद्रंसटीबिल्वंनिम्बम-जूलपाडलत्रिवृत्तेजस्विनीवालकम्॥दंतीमूलपलाशचन्दनयुगं

क्षुद्राह्वाद्वयदेवदारुजलदाःकल्हारकंकल्कजमेभिःसिद्धमिदंपटोलसहितःक्काथश्चतुःषष्टिकः॥ अष्टांशेनविपाचयेच्चमतिमानुत्कल्पमृद्भाजने पीतोहन्तिसपित्तरक्तसकलंकुष्ठानिचाष्टादश ॥३॥

अर्थ—मंजीठ, हरड, बहेडा, आँवला, फूलप्रियंगू, गिलोय, ब्राह्मी, वच, पोहकरमूल, भांगरा, सोंठ, मिरच, पीपल, चिरायता, अतीस, संभालू, अमलतास, त्रायमाण, खैरसार, कुडेकी छाल, पाठा, (नेपाली चिरायता) निसोत, कुटकी, दोनों हलदी, पित्तपापडा, अडूसा, इंद्रायण, जवासा, इंद्रयव, कूठ, अंडकी जड़, नींबकी छाल, चीता, शतावरी, भारंगी, चन्दन, कचूर, धायके फूल, छड, पाडल, निसोत, मालकांगनी, नेत्रवाला, दती, (वृक्षविशेष) की जड, ढाकके बीज, चंदन, मुंडी, वायविडग, कायफल, अरनी कंजुआ, धायके फूल और मूल, दोनों कटेरी, देवदारु, मोथा, कमलगट्टा, पटोलपत्र इनका क्काथ करे, जब आठवां हिस्सा रहजावे तब पीनेसे वातरक्त, १८ प्रकारके कुष्ठ हरे ॥

कुष्ठेखादिरादिक्काथः ।

खदिरःकुण्डलीवासापटोलंचफलत्रिकम् ॥
अरिष्टसमभागोयंक्काथःकुष्ठविनाशनः ॥ १ ॥

अर्थ—खैरसार, गिलोय, अडूसा, पटोलपत्र, त्रिफला, नीमकी छाल, इनकी बराबर मात्रा लेकर मिट्टीके बरतनमें काढा कर पिये तो कुष्ठ दूर होय।

सन्निपातज्वरेभूनिंबादिक्काथः ।

भूनिम्बदारुदशमूलमहोषधाब्दतिक्तेंद्रबीजधनकेभकणाकषायः ॥ तन्द्राप्रलापकसनारुचिदाहनाहश्वासादियुक्तमखिलं ज्वरमाशुहंति ॥ १ ॥

अर्थ—चिरायता, देवदारु, दशमूल, सोंठ, जीरा, कुटकी, इंद्रजव, गजपीपल इनकी समान मात्रा लेकर क्काथ पकावे, फिर ठंडा कर पिये तो निद्रा, प्रलाप, खांसी, श्वास, अरुचि, दाह, मोह, मूर्च्छा, ज्वर ये संपूर्ण दूर होवें ॥

अष्टादशांगक्काथ।

किरातकटुकामुस्ताधानेन्द्रयवनागरैः ॥ दशमूलमहादारुगज-पिप्पलिकायुतैः ॥ १ ॥ कृतःकषायः पार्श्वार्तिंसन्निपातज्वरंजयेत् ॥ कासश्वासवमीहिक्कातन्द्राग्रहणिनाशनः ॥ २ ॥

अर्थ—चिरायता, कुटकी, मोथा, धनियां, इन्द्रजव, सोंठ, दशमूल, देवदारु, गजपीपल इनका क्काथ पीनेसे पसलियोंका दरद, सन्निपातज्वर, खांसी, श्वास, वमन, हिचकी, तंद्रादिदोष दूर होतेहैं ॥

विषमज्वरेदार्व्यादिक्काथः।

दार्वीदारुकलिंगलोहिकलता शम्पाकपाठासटीशौण्डीवीरकिरातकुञ्जरकणात्रायंतिकापद्मकैः ॥ चक्राधान्यकनागराब्दशरलाशीघ्रांबुसिंहीशिवाव्याघ्रीपर्प्पटदर्भमूलकटुकानन्तामृतापुष्करैः॥ धातूत्थंविषमंत्रिदोषजनितंचैकाहिकंद्व्याहिकंपित्तंहन्तिमहाज्वरं बहुरुजंसद्यःप्रलापान्वितम् ॥ २ ॥

अर्थ—दारुहलदी, देवदारु, इन्द्रजव, मंजीठ, अमलतास, पाठ, कचूर पीपल, खस, चिरायता, गजपीपल, त्रायमाण, पदमाख, काकडासिंगी, धनियां, सोंठ, मोथा, निसोथ, पियाबांसा, हरड़, कटेरी, पित्तपापडा, कुटकी, अडूसा, गिलोय, पोहकरमूल इनका क्काथ अष्टावशेष लेनेसे, धातुगत ज्वर एकाहिक, द्व्याहिक, त्रिदोष, महाज्वर, पित्तज्वर, प्रलापादि दूर होवें ॥

सूतिकादोषेमस्तकग्रहेसन्निपातज्वरेदशमूलक्काथः।

शालपर्णीपृष्ठपर्णीबृहतीद्वयगोक्षुरैः ॥ बिल्वाग्निमंथस्योनाककाश्मरीपाटलायुतैः ॥ १ ॥ दशमूलमितिख्यातंक्कथितंतज्जलं पिबेत् ॥ पिप्पलीचूर्णसंयुक्तंवातश्लेष्महरंपरम्॥२॥सन्निपातज्वरंहन्तिसूतिकादोषनाशनः ॥हृत्कंठग्रहपार्श्वार्तितंद्रामस्तकशूलहृत् ॥ ३ ॥

अर्थ—शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, दोनों कटेरी, गोखरू, बेलगिरी, अरणी,

इस क्काथको पीपलके चूर्णके संग लेय तो वातश्लेष्मको दूर करै सन्निपात, प्रसूत, हृदयरोग, कंठग्रह, पसलीका दरद, तंद्रा, शिरदरद इनका नाश करे ॥

पाठान्तरश्लोक ।

श्रीपर्णिनीज्वलनमंथवसंतदूतीटिंटूकबिल्वमितितल्लुकपंचमूलम्। व्याघ्रीबृहत्यतिगुहाश्वगुहाश्वदंष्ट्राज्येष्ठद्वयंचगदितंदशमूलमेतत् १

अर्थ—शालपर्णी, अरणी, माधवीलता, बेल, दोनों कटेरी, गोखरू, खंभारी, पाढर ये दोनों पंचमूल बडे और छोटे जानने ॥

वातशोफेपुनर्नवादिक्काथः ।

पुनर्नवानिम्बपटोलशुंठीतिक्तामृतादार्व्यभयाकषायः ॥ सर्वांगशोफोदरपाण्डुरोगान्सम्यक्प्रमुक्तःसकलान्निहन्ति ॥ १ ॥

अर्थ—सांठीकी जड, नींबकी छाल, पटोलपत्र, सोंठ, कुटकी, गिलोय, दारुहलदी, हरड इनकी समान मात्रा लेकर इनका काढ़ा पीनेसे सर्वांग सूजन, उदररोग, पांडुरोग दूर होवें ॥

पाठान्तरश्लोक ।

पुनर्नवाभयानिम्बदार्वीतिक्तापटोलकैः॥ गुडूचीनागरयुतैःक्काथःसर्वांगशोफहा ॥१॥ गोमूत्रगुग्गुलयुतआमशोफोदरापहः॥२॥

अर्थ—सांठीकी जड, हरड, नींबकी छाल, दारुहलदी, कुटकी, पटोलपत्र, गिलोय, सोंठ इनका काढाभी सर्वांगसूजनका नाश करताहै और गोमूत्र तथा गूगलयुक्त लेय तौ आमवात, सोफ और उदरके रोगोंको दूर करताहै॥

कफरोगेकट्फलादिक्काथः ।

कट्फलांबुदभार्ङ्गीभिर्द्धान्यरोहिषपर्प्पटैः॥वचाहरीतकीशृंगीदेवदारुमहौषधैः॥१॥क्काथःकासंज्वरंहन्तिश्वासश्लेष्मगलग्रहान् २॥

अर्थ—कायफल, मोथा, भारंगी, धनियां, रोहिष तृण, पित्तपापडा, वच, हरड, काकडासिंगी, देवदारु, सोंठ इन औषधियोंका काढा कर पिये तौ खांसी, ज्वर, श्वास, कफ, गलग्रह ये संपर्णरोग दर हो जावें ॥

पुनःश्लोक ।

शृंगीदारुनिशासुराह्वमभयाभार्ङ्गीचविश्वौषधंमुस्तापर्प्पटकट्फलंचसवचाकुस्तुंबुरुंकतृणम्॥ क्काथंक्षौद्रयुतंपिबेच्चकफजेकासेक्षयेपीनसेश्वासेवातयुतेज्वरेचवमनेहिक्कासुपित्तामये ॥ १ ॥

अर्थ—काकडासिंगी, दारुहलदी, देवदारु, हरड, भारंगी, सोंठ, मोथा, पित्तपापडा, कायफल, वच, धनियां, रोहिष इनका काढा शहदसंयुक्त पीनेसे कफ, श्वास, खांसी, क्षय, पीनस, वातज्वर, वमन, हिचकी और पित्तरोग नाश होवें ॥

गुडूच्यादिबत्तीसोकफविकारमेंकाथ ।

धाराधाराधरवृषविषागीरवल्लींद्रवल्लीदार्वीकालीकरालीअरणिकरिकणाकट्फलारिष्टकुष्ठैः॥ पृथ्वीपृथ्वीकलिसुरतरूग्राकलिंगाकलिंगैःशिग्रुव्याघ्रीकटुतृणवधूरोहिणीरोहिणीभिः ॥ क्काथश्चैषांकवचरचनापंचकोलानुकूलैस्तुल्यैरेभिः कफगदजयेसिद्धिकंत्रिंशदाव्र्या ॥ १ ॥

अर्थ—गिलोय, नागरमोथा, अडूसा, अतीस, हलदी, इंद्रजव, दारुहलदी, अगर, अरणी, गजपीपल, कायफल, नीवकी छाल, कूठ, जीरा, हींग, बहेडा, देवदारु, वच, इंद्रजव, कुडेकी छाल, सहंजना, कटेरी, कचूर, गंधेल, (गंधपलासी) कुटकी, हरड़ इनमें पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ सममात्रा लेय. अष्टावशेष क्काथ करके पीवे तो कफके रोग दूर होवें ॥

वातरोगेलशुनादिक्काथः ।

रसोनंपिप्पलीमूलंकुचीलंविश्वभेषजम् ॥ भार्ङ्गीपुष्करमूलंच किरातंकलिहारकम्॥ १ ॥ समांशाष्टावशेषःस्यात्क्काथोवातविनाशने ॥ धनुषंमृगवातंचसन्निपातंनिवारयेत् ॥ २ ॥ त्र्यूषणंचार्द्धकर्षंचप्रक्षिप्ययोजयेद्भिषक्॥ अशीतिवातजान्रोगांस्तांश्चसर्वान्प्रणाशयेत् ॥ ३ ॥

अर्थ—लहसन, पीपलामूल, शुद्ध कुचला, सोंठ, भारंगी, पोहकरमूल, चिरायता, अकरकरा इन सबको बराबर लेकर अष्टावशेष क्काढा करके

पीनेसे वायुरोग, धनुर्वायु, मृगी, सन्निपात आदि संपूर्ण दोषोंको दूर करे और टंक २ ऊपरसे सोंठ, मिरच, पीपल, डालकर पिये तो अस्सी प्रकारके वातजन्य रोगोंको नाश करता है ॥

शिरोव्यथायां श्रेष्ठादिक्काथः ।

श्रेष्ठानिम्बपटोलमुस्तरजनीत्रायन्तिहेमामृता कृत्वाषड्गुणवारिणाविनिहितंषष्ठांशपीतानिशि ॥ भ्रूशंखाक्षिशिरोरुजांबहुविधांकर्णास्यनासागदंनक्तांध्यंतिमिरंचकाचपटलंदैत्यान्यथा केशवः ॥ १ ॥

अर्थ—त्रिफला, नींबकी छाल, पटोल, मोथा, दोनों हलदी, त्रायमाण, चिरायता, गिलोय इनका काढा छः गुणे पानीमें करे जब एक हिस्सा रहजाय तब पीवे तो भौंहका रोग, शिखारोग, आंखरोग, मस्तकरोग, कानरोग, रतौंधा, तिमिर, मोतिया बिन्दु, कांचबिन्दु ये संपूर्णरोग नाश होय ॥

पथ्यादिक्काथः ।

पथ्याक्षधात्रीभूनिम्बैर्निशानिम्बामृतायुतैः॥कृतःक्काथःषडंगोयं सगुडः शीर्षशूलहा॥ १॥भ्रूकर्णशंखशूलानितथार्द्धां शिरसो रुजम् ॥ सूर्य्यावर्तंशंखकंचचक्षुःपीडांव्यपोहति ॥ २ ॥

अर्थ—हरड, बहेडा, आंवला, चिरायता, हलदी, नींबकी छाल, गिलोय इनको बराबर लेकर षष्ठांश पानी रहे तब उतारलेय, गुड डालकर पीवे तो माथेका दरद, भौंह, कान, शिखा, आधासीसी, नेत्ररतौंधाआदि पीडा नाश होवे ।

ज्वरेउपद्रवादशभवंतितन्नामानि ।

श्वासमूर्च्छारुचिच्छर्दितृषातीसारहृद्ग्रहाः ॥
हिक्काकासांगभंगश्चज्वरस्योपद्रवादश ॥ १ ॥

अर्थ—श्वास, मूर्छा, अरुचि, वमन, प्यास, अतीसार, हृदयग्रह, हिचकी, खांसी, अंगमर्द ये ज्वरके दश उपद्रव हैं ॥

ज्वरेक्षुद्रादिक्काथः ।

क्षुद्रामृतानागरपुष्कराह्वैःकृतःकषायः कफमारुतोत्तरे ॥ सश्वासकासारुचिपार्श्वशूलेज्वरेत्रिदोषप्रभवेशस्यते ॥ १ ॥

अर्थ—कटेरी, गिलोय, सोंठ, पुहकरमूल इन सबको एक २ टंक लेय और काढ़ा करके पीवे तो कफ, वायु, श्वास, खांसी, अरुचि, पसलियोंका दरद, त्रिदोष ज्वरादि नाश होवें ॥

वृद्धक्षुद्रादिक्काथः ।

क्षुद्रानिम्बपटोलचन्दनघनैस्तिक्तामृतापद्मकैर्वीसावेसणशुंठि-
पुष्करजटाभूनिम्बभाङ्गर्यासह ॥ बीजंकुष्ठधमासकंकृमिहरं
कासंवमिःकामलंक्काथंचाष्टविधंज्वरंकफमरुत्पित्तंसदाहंजयेत् १

अर्थ—कटेरी, नींबकी छाल, पटोलपत्र, चन्दन, मोथा, गिलोय, पदमाख, धनियां, सोंठ, पुहकरमूल, चिरायता, भारंगी, इन्द्रजौ, कूठ, धमासा इनका काढा कर पीनेसे कृमिरोग, खांसी, वमन, कामला, आठ-प्रकारके ज्वर, कफ, वात, पित्त और दाहादि दूर होवें ॥

पाठान्तरेण ।

क्षुद्राधान्यकशुंठीभिर्गुडूचीमुस्तपद्मकैः॥ रक्तचन्दनभूनिम्बप-
टोलवृषपुष्करैः ॥१॥ कटुकेंद्रयवारिष्टभार्ङ्गीपर्प्पटकैःसमैः ॥
क्काथप्रातर्निषेवेतसद्यःशीतज्वरच्छिदम् ॥ २ ॥

अर्थ—कटेरी, धनियां, सोंठ, गिलोय, मोथा, पदमाख, रक्तचन्दन, चिरायता, पटोलपत्र, अडूसा, पुहकरमूल, कुटकी, इन्द्रजव, नींबकी छाल, भारंगी, पित्तपापडा यह सब बराबर लेकर काढ़ा पिये तो शीतज्वरका नाश करे ॥

पाचन।

नागरंदेवकाष्ठञ्चधान्यकंबृहतीद्वयम् ॥
दद्यात्पाचनकंपूर्वंज्वरितायहितावहम् ॥ १ ॥

अर्थ—देवदारु, धनियां, सोंठ, छोटी बडी दोनों कटेरी इन पांच औषधियोंका काढा पाचनके अर्थ ज्वरवालेको ज्वरनाशनार्थ देय ॥

धान्यपंचकक्काथः ।

धान्यनागरमुस्तंचवालकंबिल्वमेवच ॥
आमशूलविबंधघ्नंपाचनंवह्निदीपनम् ॥ १ ॥

अर्थ—धनियां, सोंठ, मोथा, नेत्रवाला, बेलगिरी इनका क्काथ आमशूल विबंधको दूर करे और अग्निको दीप्त करे ॥

पुनःश्लोक ।

धान्यनागरजःक्काथःपाचनोदीपनस्तथा ॥
एरण्डमूलयुक्तश्चजयेदामानिलव्यथाम् ॥ १ ॥

अर्थ–धनियां, सोंठ इनका काढा पाचन, दीपन करे, और जो एरंडकी जड डाले तौ आमवातको दूर करे ॥

आरग्वधादिपंचक ।

आरग्वधंग्रंथिकतिक्तमुस्ताहरीतकीभिःक्कथितःकषायः ॥
सामेसशूलेकफवातयुक्तेज्वरेहितोदीपनपाचनश्च ॥ १ ॥

अर्थ–अमलतास, पीपलामूल, कुटकी, मोथा, हरड इनका काढा आमशूल, कफ, वातज्वर इनमें हितकारी तथा दीपन पाचन है ॥

पंचभद्र ।

पर्प्पटाब्दाऽमृताविश्वकैरातैःसाधितंजलम् ॥
पञ्चभद्रमिदंज्ञेयंवातपित्तज्वरापहम् ॥ १ ॥

अर्थ–पित्तपापडा, मोथा, गिलोय, सोंठ, चिरायता इनका काढा वात पित्तज्वरका नाश करता है ॥

शटचादिक्काथः ।

शटीपुष्करमूलंचभार्ङ्गीशृंगीदुरालभा ॥ गुडूचीनागरापाठाकिरातंकटुरोहिणी॥ १॥एषशटचादिकःक्काथःसर्ववातज्वरापहः ॥ कासादिशोफयुक्तेषुदद्यात्सोपद्रवेषुच ॥ २ ॥

अर्थ–कचूर, पुहकरमूल, भारंगी, काकाडसिंगी, कटेरी, गिलोय, सोंठ, पाढ, चिरायता, कुटकी यह शटचादिक्काथ संपूर्ण वातज्वरोंका नाश करता है और खांसी, सूजनभी होय तो यही काढा दीजै तौ आराम होवे ॥

बृहच्छटचादिक्काथः ।

शटीपटोलद्विनिशोग्रगंधावासाकिरातंदशमूलधारा ॥ सहाचरीभार्ङ्गिवरीसशृंगीरास्नेन्द्रबीजंसुरदारुशिग्रुः ॥ १ ॥ दुरालभाधान्यकशुंठिपाठसुरेन्द्रकल्कंसहरीतकीभिः ॥ त्रायंतकेन्द्रःकटुकागदंचकषायएषांविहितःसवायौ ॥२॥ श्लेष्मज्वरेकाससश-

श्वासशूलेवाताधिकेरोगिणिशीतकेच ॥ चिरज्वरेकाससश्वा-
सहेपिनूनंहितोयंसततंशटचादिः ॥ ३ ॥

अर्थ—कचूर, पटोलपत्र, दोनों हलदी, वच, अडूसा, चिरायता, दशमूल, गिलोय, मूगोनी, भारंगी, शतावरी, काकडासिंगी, रास्ना, इंद्रजौ, देवदारु, सहंजना, कटेरी, धनियां, सोंठ, पाढ, कुडेकी छाल, हरड, त्रायमाण, इन्द्रायण, कुटकी, कूठ इनका काढा ज्वर, श्लेष्मज्वर, खांसी, श्वास, शूल, वात, शीतांग, बहुतदिनोंका ज्वर, दृष्टिज्वर, मल, संग्रहणी आदिको दूर करे ॥

पटोलादि ।

पटोलंचगुडूचीचमुस्ताचैवधमासकम्॥निंबत्वक्पर्प्पटंतिक्ताभू-
निंबत्रिफलावृषाः॥१॥पटोलादिरयंक्काथोवातज्वरहरःस्मृतः२॥

अर्थ—पटोलपत्र, गिलोय, मोथा, जवासा, नींबकी छाल, पित्तपापडा, चिरायता, त्रिफला, अडूसा यह पटोलादिक्काथ, वातज्वरका नाश करताहै।

इति पटोलादिक्काथः ।

मुस्तादि ।

मुस्तापर्प्पटकंशुण्ठीगुडूचीसदुरालभा ॥
कफवातारुचिच्छर्दिदाहशोषज्वरापहः ॥ १ ॥

अर्थ—मोथा, पित्तपापडा, सोंठ, गिलोय, जवासा यह क्काथ वादी, अरुचि, वमन, दाह, शोष, ज्वर इन सर्व रोगोंका नाश करे ॥

वृद्धमुस्तादि ।

मुस्तागुडूचीसहनागरेणवासाजलंपर्प्पटकंचपथ्या ॥
क्षुद्राचदुःस्पर्शयुतःकषायःपीतोहितोवातकफज्वरस्य॥१॥

अर्थ—मोथा, गिलोय, सोंठ, अडूसा, नेत्रवाला, पित्तपापडा, हरड, कटेरी, जवासा यह काढा वातज्वर और कफज्वरका नाश करता है ।

गुडूच्यादि ।

गुडूचीनिम्बधान्याकंपद्मकंरक्तचन्दनम् ॥
एषसर्वज्वरंहन्तिगुडूच्यादिस्तुदीपनः ॥ १ ॥

अर्थ—गिलोय, नींबकी छाल, धनियां, पदमाख, रक्तचन्दन यह सब ज्वरका नाश करता है ॥

वृद्धगुडूच्यादि ।

गुडूचीधान्यकोशीरशुंठीवालकपर्प्पटैः ॥ बिल्वप्रतिविषापाठारक्तचन्दनवत्सकैः ॥ १ ॥ किरातमुस्तैंद्रयवैःक्वथितंशिशिरेजले ॥ सक्षौद्ररक्तपित्तघ्नंज्वरातीसारनाशनम् ॥ २ ॥

अर्थ—गिलोय, धनियां, खस, सोंठ, हाऊबेर, पित्तपापडा, बेलगिरी, अतीस, पाढ, रक्तचंदन, कुडाकी छाल, चिरायता, मोथा, इंद्रजौ इनका अष्टावशेष काढा ठंडाकर शहदके संग लेय तो रक्त, पित्तज्वर, अतीसार ये सब दूर होवें ॥

चन्दनादिक्काथे ।

चन्दनंचसुगंधंचवालकंपित्तपर्प्पटम् ॥
मुस्ताशुंठीकिरातंचउशीरंपित्तनाशनम् ॥ १ ॥

अर्थ—मलयागिरिचंदन, सुगन्धवाला, नेत्रवाला, पित्तपापडा, मोथा, सोंठ, चिरायता, खस इनका काढा पित्तज्वरका नाश करता है ॥

वृद्धचंदनादिक्काथ ।

मलयजपिचुविश्वाश्रीफलंपद्मकं च जलरुहकटुमुस्तासारिवाराहदूरा ॥ अतिविषयवयष्टीकल्पितस्तुल्यभागैर्हरतिगुरुविबाधांपित्तसन्तापमूर्च्छाम् ॥ १ ॥

अर्थ—मलयागिरि चन्दन, नींबकी छाल, सोंठ, बेलगिरी, पद्माख, कमल, कुटकी, मोथा, सारिवा (लताविशेष) मुनक्का, अतीस, इंद्रजव, मुलहटी इनकी सम मात्रा लेकर काढा बनाकर लेयतो पित्तकी मूर्छा दूर होवे।

त्रायमाणादि ।

त्रायंतीपर्प्पटोशीरतिक्ताभूनिम्बदुस्पृशा ॥
कषायोमधुसंयुक्तःपित्तज्वरविनाशनः ॥ १ ॥

अर्थ—त्रायमाण, पित्तपापडा, खस, चिरायता, कुटकी, जवासा इनका काढा शहदके साथ पीनेसे पित्तज्वरका नाश होय ॥

वृद्धत्रायमाणादि ।

यंतींद्रयवावासाछिन्नातिक्तापटोलकैः ॥ निम्बदुस्पर्शभूनिम्बशाकपद्मपर्प्पटैः॥१॥अष्टावशेषितःक्वाथःपित्तश्लेष्मज्वरापहः २॥

अर्थ—त्रायमाण, इंद्रजौ, अडूसा, गिलोय, कुटकी चिरायता, पटोलपत्र, नींबकी छाल, जवासा, अमलतास, पदमाख, पित्तपापडा इनका काढा करके पीवे तो पित्तश्लेष्मज्वरको दूर करताहै ॥

द्राक्षादिक्काथः ।

द्राक्षाभयापर्प्पटकाब्दतिक्ताक्काथंससम्यक्सफलंविदध्यात् ॥ प्रलापमूर्च्छाभ्रमदाहशोफतृष्णान्वितेपित्तभवज्वरेपि ॥ १ ॥

अर्थ—मुनक्का, हरड, पित्तपापडा, मोथा, कुटकी इनका काढा मलतास संयुक्त देनेसे प्रलाप, मूर्छा, भ्रम, दाह,सूजन, प्यास इन करके क जो पित्तज्वर ताहि नाश करे ॥

वासादिक्काथः ।

वासाद्राक्षाभयाक्काथः पीतः सक्षौद्रशर्करः ॥
निहंति रक्तपित्तार्तिश्वासंकासंज्वरंतथा ॥ १ ॥

अर्थ—अडूसा, मुनक्का, हरड इनका काढा शहद और मिश्री डालर पीवे तो रक्तपित्त, श्वास, खांसी और ज्वर इनका नाश करे ॥

पुनःश्लोक ।

वासाक्षुद्रामृतामुस्ताशुंठीधात्रीसमाक्षिकः ॥
पिप्पलीचूर्णसंयुक्तोविषमज्वरनाशनः ॥ १ ॥

अर्थ—अडूसा, कटेरी, गिलोय, मोथा, सोंठ, आंवले, शहद इनको पिपलसंयुक्त काढा कर पीनेसे विषमज्वर जाय ॥

पुनःश्लोक ।

पटोलत्रिफलानिम्बद्राक्षाशम्पाकवासकैः ॥ क्वाथंसितामधुयुतंपिवेदैकाहिकेज्वरे॥१॥ गुडूचीधान्यमुस्ताभिश्चंदनोशीरनागरैः ॥ कृतं क्वाथंपिबेत्क्षौद्रसितायुक्तंज्वरातुरः ॥२॥ तृतीय-

ज्वरनाशायतृष्णादाहनिवारणः॥ पीतोमरीचचूर्णेनतुलसीप-त्रजो रसः॥ द्रोणपुष्पीरसोवापिनिहंतिविषमज्वरान्॥ ३॥

अर्थ–पटोलपत्र, नींबकी छाल, त्रिफला, मुनक्का, अमलतास, अडूसा इनका मिश्री और शहदके साथ काढा पिये तौ एकाहिक ज्वर नाश होय. गिलोय, धनियां, मोथा, खस, सोंठ इनका मिश्री और शहदके साथ काढा पीनेसै ज्वर जाय और मरिच चूर्णका तुलसीपत्ररस संयुक्त पीनेसे तृतीय ज्वर, प्यास, दाह, दूर होवें और गोभीके फूलके रसके साथ पीनेसे विषमज्वरका नाश करे॥

ज्वरातिसारे नागरादिक्काथः।

नागरातिविषामुस्ताभूनिम्बामृतवत्सकैः॥
सर्वज्वरहरःक्काथःसर्वातीसारनाशनः॥ १॥

अर्थ–सोंठ, अतीस, मोथा, चिरायता, गिलोय, कुडेकी छाल इनका काढा संपूर्ण ज्वरों तथा अतीसारको नाश करता है॥

अतीसारे वत्सकादिक्काथः।

सवत्सकःसातिविषःसबिल्वः सोदीच्यमुस्तश्चकृतःकषायः॥
सामेसशूलेचसशोणितेचचिरप्रवृत्तेचहितोतिसारे॥ १॥

अर्थ–कुडेकी छाल, अतीस, बेलगिरी, नेत्रवाला, मोथा इनका काढा कर पिये तौ आमशूल, रक्तातिसार, बहुत दिनका अतीसार ये नाश होवें।

अतीसारे कुटजाष्टकम्।

कुटजातिविषापाठाधातुकीलोध्रमुस्तकैः॥ ह्रीबेरदाडिमयुतैः कृतःक्काथःसमाक्षिकः॥ १॥ पेयोमोचरसेनैवकुटजाष्टकसंज्ञकः॥ अतिसाराञ्जयेद्दाहंरक्तशूलामदुस्तरान्॥ २॥

अर्थ–कुडेकी छाल, अतीस, पाढ, धायकेफूल, लोध, मोथा, हाऊबेर, अनारका बक्कल इनका काढा शहद डालकर मोचरस संयुक्त लेय तौ अतीसार, दाह, रुधिर, शूल, भयानक आमशूल ये दूर होवें॥

मोचरसादिक्काथः ।

मोचरसश्चमंजिष्ठाधातुकीपद्मकेसरम् ॥ पिष्टैरेतैर्यवागूः स्याद्रक्तातीसारनाशिनी ॥ १ ॥ धातुकीविश्वपाषाणसालूरमजमोदकम् ॥ मुस्तामोचरसंतक्रंसर्वातीसारनाशनम् ॥ २ ॥

अर्थ—मोचरस, मंजीठ, धायके फूल, कमल इनका काढा कर लेय तौ रुधिरातिसारको दूर करे । धायके फूल, सोंठ, पाषाणभेद, बेलगिरी, अजगोद, मोथा, मोचरस इनको पेठेके साथ लेनेसे सब प्रकारका अतीसार नाश होवे॥

दार्व्यादिक्काथः ।

दार्व्यबुदातिक्तफलत्रिकंचक्षुद्रापटोलंरजनीसनिंबम् ॥ क्काथंविदध्याज्ज्वरसन्निपातेनिश्चेतनेपुंसिविबोधनार्थम् ॥ १ ॥

अर्थ—दारुहलदी, मोथा, कुटकी, त्रिफला, कटेरी, पटोलपत्र, हलदी नींबकी छाल इनका काढा कर पिये तौ सन्निपात जन्य ज्वरका नाश और अचेतको सचेत करे ॥

हारिद्रादिज्वरेक्काथः ।

हारिद्रकेहारिद्राभोवर्णमूत्रादिरर्तिमाम् ॥ आदौविरेचनंकृत्वा स्तम्भयेत्तदनन्तरम्॥ शृंगैर्यद्वाजलौकाभीरक्तस्रावन्तुकारयेत्॥ त्रायंतीमुस्तमधुकाद्राक्षाभूनिम्बवासकैः ॥ १ ॥ गुडूचीपिप्पलीमूलं निम्बैः क्काथंप्रकारयेत् ॥ शीतंमधुयुतंदद्याद्धारिद्रज्वरनाशनम् ॥ २ ॥ कृतेक्रियाविधानेपिसंज्ञायस्यनजायते ॥ दहेत्तंपादयोर्नालेकृकाटीरंध्रमौलयोः ॥ ३ ॥ शंखयोश्चभ्रुवोर्मध्येदशमद्वारएवच ॥ ग्रीवायांडम्भयेच्छीघ्रंप्रलापेसन्निपातके ॥४॥वालंचपर्प्पटंमुस्तागुडूचीधान्यकंशिफा ॥ आरग्वधंनिम्बछाली तिक्तानंताहरीतकी ॥ ५ ॥ द्राक्षाचचन्दनंरक्तंपद्मकंच शतावरीम् ॥ सममात्रंकृतःक्काथोहारिद्रकहरोमतः ॥ ६ ॥ पुनर्नवानिम्बकिरातकंचपटोलिकाचापिसतिक्तकंच ॥ निशायुतावाखदिरं कणाचहारिद्रकंशाम्यतितत्क्षणाच्च ॥ ७ ॥

अर्थ—हारिद्रकज्वरमें हलदीके समान देहका वर्ण और मूत्र होय पेटमें दरद होय. पहिले विरेचन देय फिर थामलेय फिर सींगी वा जोंक लगवाय रुधिर कढवावे. फिर त्रायमाण, मोथा, मुलहटी, मुनक्का, चिरायता, अडूसा, गिलोय, पीपलामूल, नींबकी छाल इनका काढा ठंढा कर शहद डालकर पिये तो हारिद्रकज्वर नाश होवे और इस उपायसे दूर न हो तो पैर, मस्तक, कपाल, भौंहके मध्यमें दशमद्वार ग्रीवामें इन जगह दाग देय. प्रलापक सन्निपातमें नेत्रवाला, पित्तपापडा, मोथा, गिलोय, धनियां, सोंफ, अमलतास, नींबकी छाल, कुटकी, जवासा, हरड, मुनक्का, रक्तचंदन, पदमाख, शतावर इनकी समभात्रा लेकर काढा कर पिये तो हारिद्रक ज्वर नाश होय और साठीकी जड, नींबकी छाल, चिरायता, हलदी, गिलोय, पीपल, खैरसार इनके देनेसे शीघ्रही हारिद्रक रोग नाश होय ॥

कमलवाते रजन्यादिक्काथः ।

हरिद्रामुस्तभूनिम्बत्रिफलारिष्टवासकम् ॥ कंटकारीद्वयंभार्ङ्गी कटुकंनागरंकणा ॥१॥ पटोलंपर्प्पटंशृंगीदेवदारुसरोहिषम् ॥ विधन्विकंबलाबिल्वकुंभकारीहरीतकी ॥ २ ॥ कट्फलंकुटजं श्यामासर्वमेकैकभागकम् ॥ रास्नाभागद्वयंचात्रदत्त्वाक्काथंच साधयेत् ॥ ३ ॥ व्योषचूर्णयुतःक्काथोज्वरंहन्तित्रिदोषजम् ॥ त्रयोदशमहाघोरानंधकारान्यथारविः ॥४॥ वमिःस्वेदःप्रलापश्चस्तैमित्यं शीतगात्रता ॥ मोहतन्द्रातृषाश्वासकासदाहाग्निमांद्यहा॥५॥ हृत्पार्श्वशूलविष्टंभकंठकूजनकंतथा ॥ जिह्वास्फुटनकंकर्णशूलंचाशुविनाशयेत् ॥ ६ ॥ नातःपरतरंकिंचिदौषधं सन्निपातके ॥ रजन्यादिगणोह्येषधन्वंतरिविनिर्मितः ॥ ७ ॥

अर्थ—हलदी, मोथा, चिरायता, त्रिफला, नींबकी छाल, अडूसा, दोनों कटेरी, भारंगी, कुटकी, सोंठ, पीपल, पटोलपत्र, पित्तपापडा, काकडासिंगी, देवदारु, तृणरोहिष, धन्वयास, नागबला, हरड, कायफल, कुंभकारी (परइन भाषा) कुडेकी छाल, पीपल, प्रियंगुके फूल यह सब बराबर

लेय और रास्ना दोभाग लेकर काढाकर सोंठ, मिरच, पीपल संयुक्त काथ पीनेसे त्रिदोषज्वर और महाघोर १३ सन्निपात दूर होवें, जैसे सूर्यके प्रकाशसे अंधकार दूर होताहै. और वमन, पसीना, प्रलाप, शीत, मोह, तंद्रा, प्यास, श्वास, दाह, मंदाग्नि, हृदय पसलीका दरद, विष्टंभ, कंठकूजन, जिह्वाफटीको, कानका शूल इनका नाश करे. यासे परे कोई औषधि सन्निपातकी नहीं है. यह धन्वंतरिने कहीहै ॥

कमलवातेफलत्रिकादिक्काथः ।

फलत्रिकामृतातिक्तानिंबकैरातवासकाः॥हारिद्रापद्मकंमुस्तापामार्गश्चन्दनंकणा ॥१॥ पटोलंपर्प्पटंचैषांक्काथःकमलवातहा॥ त्रिफलायारसःक्षौद्रयुक्तोदावींरसोऽथवा ॥२॥ निंबस्यवागुडूच्यावापीत्वाजयतिकामलाम् ॥ ३ ॥ कटुकासैंधवंचैवह्यपामार्गस्यभस्मच ॥ श्वेतजीरकसंयुक्तःकामलायाश्चनाशनः ॥४॥

अर्थ—त्रिफला, गिलोय, कुटकी, नींबकी छाल, चिरायता, अडूसा, दोनों हलदी, पदमाख, मोथा, ओंगा, चंदन, पीपल, पटोलपत्र, पित्तपापडा इनका काढा कमलवातको दूर करताहै. त्रिफलाका, हलदीका, नींबका, गिलोयका रस पीनेसे कमलवात जाताहै. कुटकी, सैंधानोंन, ओंगाकी भस्म सफेदजीरेके साथ पीनेसे कमलवात दूर होय ॥

मूत्रकृच्छ्रे एलादिक्काथः ।

एलामधुकगोकंटरेणुकैरंडवासकैः ॥ कृष्णाश्मभेदसहितःक्काथएषसुशोधितः॥शिलाजतुयुतः पेयःशर्कराश्मरिकृच्छ्रहा ॥ १ ॥

अर्थ—इलायची, मुलहटी, गोखरू, संभालू, एरंड, अडूसा, पीपल, पाषाणभेद इनका काढा शुद्ध शिलाजीत संयुक्त पीनेसे कमलवात दूर होय।

पुनःश्लोक ।

हरीतकीगोक्षुरराजवृक्षपाषाणभिद्धन्वयवासकानाम् ॥ क्काथंपिबेन्माक्षिकसंप्रयुक्तंकृच्छ्रेसदाहेसरुजेविबंधे ॥ १॥

अर्थ—हरड, गोखरू, अमलतास, पाषाणभेद, जवासा, इनका काढा शहदके साथ पीनेसे मूत्रकृच्छ्र तथा दाहसंयुक्त और पीडायुक्त विबंध दूर होय ॥

पुनः श्लोक ।

रसांजनंतन्दुलकस्यमूलं क्षौद्रान्वितंतन्दुलतोयपीतम् ॥
असृग्दरंसर्वभवंनिहंतिश्वासंचभार्ङ्गीसहनागरेण ॥ १ ॥

अर्थ–रसोत, चौलाईकी जड, शहद, चांवलोंके पानीके साथ पिये तो संपूर्ण प्रदर रोग दूर होवें और जो भारंगी सोंठसंयुक्त देय तो श्वास दूर होय ॥

पुनःश्लोक ।

फलत्रिकाब्ददार्वीणांविशालायाः घृतंपिबेत् ॥
निशाकल्कयुतंसर्वप्रमेहविनिवृत्तये ॥ १ ॥

अर्थ–त्रिफला, मोथा, दारुहलदी, इंद्राणी इनका काढा हलदी-संयुक्त पीनेसे सब प्रकारका प्रमेह दूर होय ॥

पुनःश्लोक ।

दार्वीरसांजनंमुस्तंभल्लातःश्रीफलंवृषम् ॥ किरातश्चपिबेदेषांक्वाथंशीतंसमाक्षिकम् ॥जयेत्सशूलंप्रदरंपीतश्वेतासितारुणम्॥ १॥

अर्थ–दारुहलदी, रसोत, मोथा, भिलावा, बेलगिरी, अडूसा, चिरायता इनका काढा शहद संयुक्त ठंढाकर पीनेसे शूल सहित पीला, सफेद, काला और लाल प्रदर नाश होवे ॥

पलाशरोहीतकमूलपाठाक्वाथंविदध्यात्प्रदरेसपाण्डौ ॥ पीतेशितेयंमधुसंप्रयुक्तंप्रसिद्धियोगःशतशोऽनुभूतः ॥ १ ॥

अर्थ–ढाक, लालकरंजकी जड, पाठा इनका काढा मिश्री तथा शहद संयुक्त पीवे तो पीलिया संयुक्त प्रदररोग दूर होवे, यह क्वाथ सैकडोंवार परीक्षा किया हुआ है ॥

छर्दिरोगेक्वाथः ।

क्वाथोगुडूच्याःसमधुःसुशीतःपीतःप्रशांतिंवमनस्यकुर्यात् ॥
विण्मक्षिकानांमधुनावलीढासचंदनंशर्करयान्वितावा ॥ १ ॥
नीरेणसिंधूत्थरजोतिसूक्ष्मंनश्येन्नूनंविनिहंतिहिक्काम् ॥मयूर-पिच्छस्यशिखास्यकृष्णामध्वन्वितावाकटुकासधातुः ॥ २ ॥

अर्थ–गिलोयका काढा शहदके साथ ठंढाकर पीवे तो वमन दूर होय

और मक्खीकी विष्ठा शहदके संग चाटे तो वमन दूर होय और पानीसे सैंधानोंन पीवे तो अथवा नास देनेसे हिचकी दूर होवे, और मोरपंखकी चंद्रिकाको जलाकर शहदके साथ चाटे तो वमन नाश होवे अथवा कुटकीसेवनसे वमन नाश होवे ।

बालरोगेक्काथः ।

बिल्वंचपुष्पाणिचधातुकीनांजलंसलोध्रंगजपिप्पलीनाम् ॥
क्काथोवलीढोमधुनाविमिश्रोबालेषुयोगोह्यतिसारितेषु ॥ १ ॥

अर्थ—बेलगिरी, धायके फूल, नेत्रवाला, लोध, गजपीपल इनका काढा शहदसंयुक्त पीनेसे बालकोंका अतिसार दूर होवे ।

कासरोगे क्काथः ।

पुष्करंकट्फलंभार्ङ्गीविश्वपिप्पलिसाधितम् ॥
पिबेत्क्काथंकफेचैतत्कासेश्वासेचहृद्ग्रहे ॥ १ ॥

अर्थ—पुहकरमूल, कायफल, भारंगी, सोंठ, पीपल इनका क्काथ करके पीनेसे कफ, खांसी, श्वास, उदररोग ये सब दूर होवें ॥

पुनःश्लोक ।

शरपुंखायाःकल्कःपीतस्तक्रेणनाशयत्यचिरम् ॥
चिरतरकालसमुत्थंप्लीहानंरूढमागाढम् ॥ १ ॥

अर्थ-करफोंकका काढा मठेके साथ पिये तो पुराना प्लीहाभी दूरहोजाय १

क्षुद्राकुलत्थवासाभिर्नागरेणचसाधितः ॥ क्काथःपुष्करचूर्णाढ्यःश्वासकासौनिवारयेत् ॥पानादेवहिपंचानांहिक्कानां नाशनंक्षणात् ॥ १ ॥

अर्थ—कटेरी, कुलथी, अडूसा इनका काढा सोंठसंयुक्तकर पुहकरमूलका चूर्ण डालकर लेवे तो खांसी नाश होवे और पीतेही पांच प्रकारकी हिचकी दूर होय ।

शृङ्ग्यादिचतुःषष्टिःसर्ववायुविकारे ।

शृङ्गीरामठरामसेनरजनीरुग्वेणिकारोहिणीरास्नैरण्डरसोनदारुरज

नीराजेन्द्रराजैः।फलैःत्रायंतीत्रिवृताहुताशननतानंतामृतासुव्रता-
दंतीतुंबरिचित्रतन्दुलत्रुटित्वक्तिक्तनक्तंचरैः॥ १ ॥ वासावासव-
बीजवासवसुरावल्यावरीवल्गुजाब्राह्मीब्राह्मणयष्टिवारणकणावि-
श्वावयस्थाविषा ॥ मूर्वामालवकासमूलमगधामुस्ताजमोदाद्वयं
मिश्राआगरचन्दनेन्दुचविकास्फोटायुताकट्फलैः ॥ २ ॥ इत्ये-
तद्दशमूलयुङ्निगदितःक्काथश्चतुःषष्टिकःशृंग्यादिर्मथनादिसिंह-
विषजाशेषामयोन्मूलनम् ॥ पुंसामष्टविधज्वरार्तिशमनेमन्दा-
ग्निसंदीपनेसर्वांगीणसमीरणद्विपघटाशार्दूलवक्रासनात् ॥ ३ ॥

अर्थ—काकडासिंगी, हींग, चिरायता,हलदी,कूठ,संभालू,ब्राह्मी,रास्ना, एरण्ड, लहसन, दारुहलदी,अमलतास, पटोल, त्रायमाण, निसोत, चीता, तगर,जवासा,गिलोय,कचूर,दंती(लताविशेष) धनियां,वायविडंग,इला-यची,तज,कुटकी,गूगल,अडूसा,इंद्रजौ,देवदारु, इंद्रायण,शतावर,असगंध, भांरगी,मुलहटी,गजपीपल,सोंठ,कंकोल,अतीस,मरोडफली, कालीनिसोत, पीपलामूल, हरड, अजमोद, अजवायन,सोंफ,अगर,कपूर,चव्य,अफोय, कायफल इनमें दशमूलका काढा सामिल करे,काढा देय तो आठ प्रकारके ज्वर, मन्दाग्नि, सर्वांग वातरोग दूर होवें. जैसे सिंहनादसे हाथी दौडते हैं, तैसे यह रोग--हाथियोंमें शार्दूल है यों इस काढ़ेको जानना चहिये ॥

ज्वरे अष्टावशेषपानीयम् ।

अष्टमेनांशशेषेणचतुर्थेनार्द्धकेनवा ॥ अथवाक्काथनेनैवसिद्धमु-
ष्णोदकेवदेत् ॥ १ श्लेष्मोष्णवातमेदोघ्नंबस्तिशोधनदीपनम् ॥
कासश्वासज्वरंहन्तिपीतमुष्णोदकंनिशि ॥ २ ॥ अर्द्धावर्त्तं
चतुर्थांशमष्टभागावशेषितम् ॥ अतीसारेषुपानीयमधिकाद्-
धिकंफलम् ॥ ३ ॥

अर्थ—जलका आठवां भाग चौथाई तथा आधा अथवा औटानेसेही, इनको सिद्ध गरमपानी कहतेहैं यह पानी कफ,वात, पित्त, मेदका नाशक, बस्तिका शोधनेवाला, दीपन, खांसी, श्वास, ज्वरको दूर करता है,रातमें

पीनेसे खांसी, श्वास, आदि रोग दूर हों, आधा, चौथाई, आठवाँ भाग जो पानीहै सो अतीसार में देय तो अधिकाधिक फल है ॥

पंचकोलक्काथः ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः ॥
पंचकोलमिदंप्रोक्तंदीपनंरुचिकारकम् ॥ १ ॥

अर्थ—पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ यह पंचकोल काथ दीपन और रुचिकारी है ॥

दशांगक्काथः ।

वासामृतापर्पटकनिंबभूनिंबमार्दवैः ॥
त्रिफलाकुलत्थकैःक्काथःसक्षौद्रश्चाम्लपित्तहा ॥ २ ॥

अर्थ—अडूसा, गिलोय, पित्तपापडा, नींबकी छाल, चिरायता, दारु, त्रिफला, कुलथी इनका काढा शहदसंयुक्त पीनेसे अम्लपित्त दूर हो ॥

अम्लपित्तविकारे क्काथः ।

ऊर्ध्वगेचाम्लपित्तेतुवमनंकारयेद्भिषक् ॥अधोगतेचाम्लपित्तेविरेचनंप्रदापयेत् ॥ १ ॥ निस्तुषयववृषधात्रीक्काथस्त्रिसुगंधमधुयुतःपीतः ॥ अपनयतिचाम्लपित्तंयदिभुंक्तेमुद्गयूषेण ॥

अर्थ—जो ऊर्ध्वगत अम्लपित्त होय तो वमन करावै और अधोगत होय तो दस्त करावै फिर कुटेहुए जौ, अडूसा, आंवला इनका काढ़ा, तज, तेजपात, इलायची, शहदसंयुक्त पीनेसे अम्लपित्त दूर होवे. पथ्य मूंगकी दाल खाय॥

पुनःश्लोकः ।

फलत्रिकंपटोलंचतिक्ताक्काथसितायुता ॥
पीतंक्कीतकमध्वाक्तंज्वरच्छर्द्यम्लपित्तजित् ॥ १ ॥

अर्थ—त्रिफला, पटोल, कुटकी इनका काढ़ा मिश्रीसंयुक्त पीवे, तथा मुलहटी शहदके संग पिये तो ज्वर, वमन, अम्लपित्त संपूर्ण जाय ॥

पुनःश्लोकः ।

सद्राक्षामभयांखादेत्सक्षौद्रांसगुडांचताम् ॥
अम्लपित्तंजयेज्जंतुःश्वासंकासंज्वरंवमिम् ॥ १ ॥

अर्थ—मुनक्का, हरड खाय अथवा शहद, गुड खाय तो अम्लपित्त दूर होय और श्वास, खांसी, वमीका नाश करे ॥

मद्यविकारेक्काथः ।

मंथः खर्जूरमृद्वीकावृक्षाम्लाम्लकदाडिमैः ॥
पटूषकैरामलकैर्युक्तोमद्यविकारनुत् ॥ १ ॥

अर्थ—छुहारे, दाख, अमलवेत, अनारदाना, फालसे, आंवले इनका काढा मद्यविकारको नाश करता है

पुनः श्लोकः ।

द्राक्षाकपित्थफलदाडिमपानकंच ॥
प्रायोहिविभ्रमहरंमधुशर्कराढ्यम् ॥ १ ॥

अर्थ—छुहारे, मुनक्का, अम्लवेत, आनारदाना, फालसे, आंवले, इनका काढा शहद मिश्रीके साथ लेय तो भ्रमको दूर करे ॥

पुनः श्लोकः ।

सौवर्चलमजाज्यश्चवृक्षाम्लसाम्लवेतसम् ॥ त्वगेलामरिचार्द्ध-
चशर्कराभागयोजितम् ॥ १ ॥ हितंलवणमष्टांगंमदात्ययरुजा-
पहम् ॥ पूगीमदेजलंशीतंवस्त्रवातोहितोभवेत् ॥ २ ॥ शर्कराभ-
क्षणेदेयामस्तुवाशर्करान्वितम् ॥ लवणस्यभक्षणाद्वापिपूगीफ-
लमदोव्रजेत् ॥३॥ कोद्रवाणांभवेन्मूर्च्छादेयं क्षीरंसुशीतलम् ॥
सगुडः कूष्मांडरसोहंतिकोद्रवजंमदम् ॥४ ॥ धत्तूराजमदेदुग्धं
शर्करादधिवाथवा ॥ कार्पासमज्जापानाद्वावृंताकफलभक्षणात्
॥ ५ ॥ अन्येषुचमदेष्वेवंविषेषुवमनंहितम् ॥ ६ ॥

अर्थ—कालानोंन, सफेदजीरा, अमलवेत, आंवला, तज, इलायची इनसे आधी मिश्री, आठवां भाग सैंधानोंन इनका काढा मद्यविकारको दूर करताहै, सुपारीके मदके ऊपर ठंढा पानी छानकर पिये और मिश्री मुखमें राखे, अथवा मठा मिश्रीसंयुक्त पीवे वा सैंधानोंन डालकर पीवे, तो सुपा ीका मद दूर हो. गायका दूध कच्चा पीनेसे वा पेठेके रसको गुड डाल

कर पीनेसे कोदोंका मद दूर हो और दूध वा दहीमें मिश्री डालकर पीवे तो धतूरेका मद जाय. अथवा कपासकी मिंगी तथा बेंगनका फल खाय. और संपूर्ण विषोंके लिये वमन करावे ॥

इति क्काथाधिकारःसमाप्तः ।

इति श्रीमन्नागपुरीयतपागच्छीयश्रीहर्षकीर्त्युपाध्यायसंकलितेयोगचिन्तामणौ वैद्यकसारसंग्रहे क्काथाधिकारश्चतुर्थः ॥ ४ ॥

अथ घृताधिकारः पंचमोध्यायः ५.

तत्रादौप्रथमंसर्वोन्मादेषुकल्याणघृतम् ।

विशालात्रिफलाकौंतीदेवदार्वेलवालुकम् ॥ स्थिरानन्तेहरिद्रे द्वेसारिवेद्वेप्रियंगुका ॥ १ ॥ नीलोत्पलैलामंजिष्ठादंतीदाडिमकेशरैः ॥ तालीसपत्रंबृहतीमालत्याः कुसुमंनवम् ॥२॥ विडंगंपृष्ठपर्णीच कुष्ठचन्दनपद्मकम् ॥ अष्टाविंशतिभिः कल्कैरेतैः कर्षसमन्वितैः ॥३॥ चतुर्गुणेजलेपक्त्वाघृतंप्रस्थंप्रयोजयेत् ॥ चतुर्गुणंगवां क्षीरंक्षिप्त्वापश्चात्पचेत्पुनः ॥ ४ ॥ अपस्मारेज्वरे कासेशोषेमंदानलेक्षये ॥ वातरक्तेप्रतिश्यायेतृतीयकचतुर्थके ॥ ॥ ५ ॥ वंध्यानांपुत्रदंबल्यंविषमेहार्शसांहरम् ॥ भूतोपहतचित्तानांगद्गदानामचेतसाम् ॥ ६ ॥ कल्याणकमिदंसर्प्पिः सर्वोन्मादहरंस्मृतम् ॥ ७ ॥

अर्थ—इन्द्रायण ४ टंक, त्रिफला ४ टंक, रेणुका, रूखडी, देवदारु, एलुआ, नेत्रवाला, शालपर्णी, तगर,हलदी, सारिवा,(सरयूनदीमें होतीहै) प्रियंगु, नीलोफर, इलायची, मंजीठ, जमालगोटेकी जड, अनारदाना, नागकेशर, तालीसपत्र, दोनोंकटेरी ,मालतीके फूल, वायविडंग, पृष्ठपर्णी, कूठ, चंदन,पदमाख इन अट्ठाइस औषधियोंको समान ४ टंक लेय काढा चौगुने पानीमें उकाले जब चौथाई रहजाय तब २५६ टंक घृत काढेमें डाले, फिर चौगुना दूध डाले, फिर पकावे जब पकजाय तब पात्रमें रखछोडे,यह घी मृगी, ज्वर, खांसी,शोष, मंदाग्नि, क्षयरोग, वातरक्त, पीनस,

तृतीयकज्वर, चातुर्थिकज्वर आदिको दूर करे वांझको पुत्र होवे, बल करे, विषम प्रमेह, विषम अर्श, भूतोन्माद, चित्तभ्रम, तोतलाहट, अचेतन यह कल्याणघृत संपूर्ण उन्मादोंका नाश करे ॥

पुनः श्लोकः ।

ब्राह्मीरसवचाकुष्ठंशंखपुष्पीभिरेवच ॥
पुराणंमद्यमुन्मादंभूतापस्मारनाशनम् ॥ १ ॥

अर्थ—ब्राह्मी रस, वच, कूठ, शंखाहूली इनको घीमें पकावे तो पुराना उन्माद जाय ॥

अथोन्मादेमहाकल्याणनामघृतम् ।

त्रिकटुत्रिफलामुस्ताविडंगैलानिशाद्वयम् ॥ द्वेशारिवेत्रिवृद्दंती-
नंतापद्माकवानरी ॥ १ ॥ मंजिष्ठामधुकंकुष्ठंब्राह्मीतालीसबि-
ल्वकम् ॥ अष्टवर्गोजीवनीयोगणःस्याच्चंदनद्वयम् ॥ २ ॥
द्राक्षामधूकपुष्पाणिबलापर्णीचतुष्टयम् ॥ देवदारुसटीपाठारे-
णुकाजीरकद्वयम् ॥ ३ ॥ अश्वगंधाजमोदाचकटुदाडिमसार-
कम् ॥ इन्द्रवारुणिकाशंखपुष्पीचबृहतीद्वयम् ॥ ४ ॥ चातु-
र्जातशुभोशीरंशिरसंवालकंतथा ॥ प्रियंगुमालतीजातीपुष्पं
पुष्करमूलकम् ॥ ५ ॥ विदारीकदलीकन्दंमुशलीहस्तिपर्णि-
का ॥ त्रिविषंत्रपुषीबीजंकौंतीमाल्येलवालकम् ॥ ६ ॥ एतैर-
क्षसमैः कल्कैर्घृतप्रस्थंचतुर्गुणम् ॥ क्षीरं च द्विगुणंनीरंतत्त्वातंद्रा-
भयाग्निना ॥ ७ ॥ प्राप्तेचतप्तसंयुक्तेपचेत्खादेच्चनित्यशः ॥
सर्पिरेतन्नरोनारीपीत्वाकर्षंवृषायते ॥ ८ ॥ याचवंध्याभवेन्नारी
याचकन्याःप्रसूयते ॥ याचैवास्थिरगर्भा स्याद्यावा जनयतेमृ-
तम् ॥ ९ ॥ अल्पायुषंवाजनयेद्यावाशूलान्वितापुनः ॥ ईदृशी
जनयेत्पुत्रंतस्यादोषोव्यपोहति ॥ १० ॥ एतत्कल्याणकंनामघृतं-
शम्भुप्रकीर्तितम् ॥ जीवद्वत्सैकवर्णायाघृतंतस्यास्तुगृह्यते ॥ ११ ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, वायविडंग, इलायची, दोनों हलदी, दोनों सा-
रीवा, निसोत, दंती, (वृक्षविशेष) जवासा, हरड, बहेडा, आंवला, पदमाख,

कौंचके बीज, मंजीठ, कूठ, ब्राह्मी, तालीसपत्र, बेलगिरी, अष्टवर्ग, (जीवक १, ऋषभक २, मेदा, ३ महामेदा, ४ काकोली, ५ क्षीरकाकोली, ६ ऋद्धि, ७ वृद्धि, ८) जीवनीयगण, (अष्टवर्ग, जीवंती, नागपर्णी, मुद्गपर्णी, मधुयष्टी,) प्रसिद्ध है. दोनों चंदन, मुनक्का, महुआके फूल, नागबला, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, देवदारु, कचूर, पाढ, दोनों रेणुका, गगनधूल, दोनों जीरे, असगंध, अजमोद, कुटकी, अनारका दाना, तुम्बीकी जड, इन्द्रायण, शंखाहूली, दोनों कटेरी, तज, तेजपात, इलायची, नागरमोथा, नागकेशर, वंशलोचन, खस, सिरस, नेत्रवाला, प्रियंगु, मालतीके फूल, जायफल, जावित्री, पुहकरमूल, बिदारीकंद, केलेका कंद, मूसली, हस्तिपर्णी, अतीस, ककडीके बीज, छड, एलुआ इन औषधियोंको चार २ टंक लेकर २५६ टंक घृतमें डाले और घीसे चौगुना दूध डाले दूधसे दूना पानी डालकर, आरने उपलोंकी आगसे पकावे जब पकजाय तब तीन टंक नित्य पुरुष और चार टंक स्त्री पीवे तो वंध्या पुत्रवती होय और जिसको कन्याही होवे और जो अस्थिरगर्भवाली होय और जिसके मराहुआ बालक होय, अथवा थोडी उमर होय तो पूर्ण आयु होवे, जो शूलसे युक्त होय जिसको गर्भ न रहे वे पुत्र जनें, और सब दोषोंको दूर करताहै. यह कल्याणघृत महादेवजीने कहाहै, जिस गौका बछडा जीता होय उस गौका घृत लेय॥

पाठान्तरेकल्याणघृतम् ।

सिद्धार्थस्त्रिकटुःक्षपायुगवचामंजिष्टकारामठंश्वेताहात्रिफलाकरंजकटुभिःश्यामाशिरीषामरैः॥ इत्यष्टादशभिःस्मृतंघृतमिदंगोमूत्रयुक्तंनृणामुन्मादघ्नमपस्मृतिघ्नमगदःस्याद्वस्तिमूत्रेणच॥१॥

अर्थ—सरसों, सोंठ, मिरच, पीपल, दोनों हलदी, वच, मंजीठ, हींग, सफेद कटेरी, त्रिफला, करंजके बीज, मालकांगनी, निसोत सिरसके फूल, देवदारु इन अठारह औषधियोंको घी और गोमूत्रमें औटावे और बकरेके मूत्रमें देय तो उन्माद दूर होवे ॥

अन्यश्च श्लोकः ।

तालीसत्रिफलैलवालुफलिनीसौम्यापृथक्पर्णिनीदंतीदाडिमदा-

रुचंदननिशादार्वीविशालोत्पलैः ॥ जातीपुष्कररेणुपद्मकयुतै-र्जंतुघ्नमंजिष्ठकारुक्सिंहीत्रुटिसारिवाद्वयनतैर्नागेंद्रपुष्पान्वितैः ॥ १ ॥ अष्टाविंशतिभिश्चतुर्गुणजलंकल्याणमेभिः श्रितंहंत्ये-तच्चचतुर्थकज्वरमुरःकंपंसवंध्यामयम् ॥ सापस्मारगदोदरौ सपवनोन्मादौसजीर्णज्वरौजायन्तेनपुनः कृतेनहविषाकल्या-णकेनामुना ॥ २ ॥

अर्थ–तालीस, त्रिफला, एलुआ, भौंफली, प्रियंगु, शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, दंती, अनारदाना, चंदन, दोनोंहलदी, देवदारु, इंद्रायण, कमलगट्टा, जायफल, जावित्री, रेणुका, पदमाख, वायविडंग, मजीठ, कटेरी, इलायची, दोनों सारिवा, जवासा, नागकेशर इन अट्ठाइस औषधियोंको चौगुने पानीमेंऔटावे जब चौथाई रहजाय तब घीमें पकावे यह घृत तृतीयक चतुर्थक ज्वरको और हृदयकंपको दूर करे वांझ स्त्रीके पुत्र होवे मृगी, उदररोग, उन्माद, पुरानाज्वर आदि दूर होवें यह कल्याणघृत कल्याणऋषिने कहाहै ॥

बुद्धिवर्धकमहापैशाचिकघृतम् ।

जटिलांपूतनांकेशींवरटींमर्कटींवचाम् ॥ त्रायमाणांजयांवीरां चोरकंकटुरोहिणीम् ॥ १ ॥ कायस्थांशूकरांछत्रांसातिच्छत्रां पलंकषाम् ॥ महापुरुषदत्तांचवयस्थांनाकुलीद्वयम् ॥ २ ॥ कटंभरांवृश्चिकालींस्थिरांचाहृत्यतैर्घृतम् ॥ सिद्धंचतुर्थकोन्मा-दंग्रहापस्मारनाशनम् ॥ ३ ॥ महापैशाचिकंनामघृतमेतद्यथा-मृतम् ॥ मेधाबुद्धिस्मृतिकरंबालानांचांगवर्द्धनम् ॥ ४ ॥

अर्थ–बालछड, हरड, कौंचके बीज, वच, त्रायमाण, अरणी, खसकी जड, गंटोल, कुटकी, कांकोली, वाराहीकंद, वाराही, गंधतृण, गूगल, विष्णु-क्रांता, गिलोय, जवासा, जवासी, आकाशबेल, शालपर्णी इनके काढेको चौथाई घृतमें पकावे, यह घृत उन्माद, मृगी इनको दूर करता है यह महापिशाच नाम घृत बुद्धिको बढावे, और चैतन्य करे, और बालकके शरीरको पुष्टि करे ॥

सन्तानार्थं फलघृतम् ।

त्रिफलामधुकंकुष्ठद्वेनिशेकटुरोहिणी॥विडंगंपिप्पलीमुस्ताविशालाकट्फलंवचा ॥ १॥ द्वेमेदेद्वेचकाकोल्यौसारिवेद्वेप्रियंगुका ॥ शतपुष्पाहिंगुरास्नाचंदनरक्तचंदनम् ॥२ ॥ जातीपुष्पं तुगाक्षीरीकमलंशर्करातथा ॥ अजमोदाचदंतीचकल्कैरेतैश्च कार्षिकैः ॥ ३ ॥ जीवद्वत्सैकवर्णायाघृतप्रस्थंचगोःक्षिपेत् ॥ शतावरीरसंचापिघृताद्देयंचतुर्गुणम् ॥ ४ ॥ चतुर्गुणेनपयसा पचेदारण्यगोमयैः ॥ सुतिथौपुष्यनक्षत्रेमृद्भाण्डेताम्रजेऽथवा ॥ ५ ॥ ततः पिबेच्छुभदिनेनारीवापुरुषोऽथवा॥एतत्सर्पिर्नरः पीत्वा स्त्रीषु नित्यंवृषायते ॥६॥ पुत्रानुत्पादयेद्वीरान्वन्ध्यापिलभतेसुतान् ॥ अल्पायुषंयाजनयेद्याचस्रुत्वापुनःस्थिता ॥ ॥ ७ ॥ पुत्रंप्राप्नोति सानारीबुद्धिमन्तंशतायुषम् ॥ याचवंध्या भवेन्नारीयाचकन्याः प्रसूयते ॥ ८ ॥ याचैवास्थिरगर्भास्याद्यावाजनयतेमृतम् ॥ तादृशीजनयेत्पुत्रंवेदवेदांगपारगम् ॥९॥ रूपलावण्यसंपन्नंशतायुर्विगतज्वरम् ॥ जीवद्वत्सैकवर्णायाघृतमत्रप्रशस्यते॥१०॥ एतत्फलघृतंनामभारद्वाजेन भाषितम्॥ अनुक्तंलक्ष्मणामूलं क्षिपत्यत्रचिकित्सकः ॥ ११ ॥

अर्थ—त्रिफला, मुलहटी, कूठ, दोनों हलदी, कुटकी, वायविडंग, पीपल, नागरमोथा, इंद्रायण, कायफल, वच, कांकोली, क्षीरकांकोली, दोनों सारिवा, प्रियंगु, सोंफ, हींग, रास्ना, चंदन, रक्तचंदन, जावित्री, वंशलोचन, कमलगट्टा, मिश्री, अजमोद, जमालगोटेकी जड इन सब औषधियोंको चार २ टंक लेकर काढा करे और बछडेवाली एकरंगी गायका २५६ टंक घी शतावरी ४ प्रस्थ, चौगुने घीमें औटावे, फिर चौगुने दूधमें आनें उपलोंकी आग देकर औटावे, अच्छी तिथि और शुभ नक्षत्रमें मिट्टी वा तांबेके पात्रमें औटावे, फिर अच्छा दिन देखकर स्त्री अथवा पुरुष पीवे, जो पुरुष सेवन करे तो स्त्रीको सदा सुख देवे, और पुत्र वीर्यवंत होवे. और वंध्या पुत्र जने,

और जिसका अल्पायु पुत्र होवे, और गूंगा, वो स्त्री बुद्धिमान् और सौवर्ष-की आयुवाला पुत्र जने, जिस स्त्रीके कन्या होती होय वो पुत्र जने, जिसका गर्भपात होता होवे उसको गर्भ स्थिर होवे, जो मराहुआ पुत्र जनती हो वह बुद्धिमान् पुत्र जने, रूपवान् निरोगी पुत्र होय, परंतु एकवर्णी गौका घी लेवे, यह संतानके लिये घृत भारद्वाज ऋषिने कहाहै और अच्छे वैद्योंने कहाहै कि पीछे लक्ष्मणा जडी डालकर लेवे ॥

अन्यश्चश्लोकः ।

सहचरेद्वेत्रिफलागुडूचीसपुनर्नवा ॥ शुकनासाहरिद्रेद्वेरास्नामे-दाशतावरी ॥ १ ॥ कल्कीकृत्यघृतप्रस्थंपचेत्क्षीरंचतुर्गुणम् ॥ तत्सिद्धंयापिबेन्नारीयोनिशूलंनिवारयेत् ॥ २ ॥ पीडिताचलि-तायाचनिःसृताविवृताचया ॥ पित्तयोनिश्चविभ्रांताषण्डयो-निश्चयास्मृता ॥ ३ ॥ प्रपद्यंतेहिताःस्थानं गर्भगृह्णंतिचास-कृत् ॥ एतत्फलघृतनाम योनिदोषहरं परम् ॥ ४ ॥

अर्थ—त्रिफला, अडूसा, पियावांसा, गिलोय, सांठीकी जड, अरलूकी छाल, दोनों हलदी, रास्ना, शतावरी इनका काढा करै, जब सिद्धहोजाय तब एक प्रस्थ सेवनकरे तो स्त्रीका योनिशूल जाय, पीडा, वहना, विवृता, पित्तयोनि, डरावनी, खंडयोनि, जिसकी रग भीतर हों ये संपूर्ण योनिदोष दूर होवें ॥

उदररोगेबिन्दुघृतम् ।

अर्कक्षीरपलेद्वेचस्नुहीक्षीरपलानिषट् ॥ पथ्याकंपिल्लकश्यामा शम्याकंगिरिकर्णिका ॥ १ ॥ नीलिनीत्रिवृतारत्नीशंखिनीचि-त्रकंतथा ॥ वृद्धदारुर्देवदालीदंतीबीजंचशातला ॥ २ ॥ हेमक्षी-रीचकटुकीविडंगंग्रंथिकतथा ॥ एतेषांपलिकैर्भागैर्घृतप्रस्थंवि-पाचयेत् ॥ ३ ॥ अथास्यमलिनेकोष्ठे बिन्दुमात्रंप्रदापयेत् ॥ यावंतोस्यपिबेद्बिंदूंस्तावद्वारान्विरिच्यते ॥ ४ ॥ कुष्ठंगुल्म-मुदावर्त्तंश्वयथुंसभगन्दरम् ॥ शमयत्युदरान्यष्टौवृक्षमिंद्राशनि-र्यथा ॥ ५ ॥ एतद्बिन्दुघृतंनामतेनाभ्यक्तोविरिच्यते ॥

अर्थ—आकका दूध २ पल, थूहरका दूध २ पल, हरड १६ टंक, कबीला १०१ टंक, प्रियंगु १६ टंक, अमलतास १६ टंक, सेंहुड १ पल, नीलका बीज १ पल, निसोत १ पल, दंती १ पल, शंखाहूली १ पल, चित्रक १ पल, विधारा १ पल, देवदारु १ पल, जमालगोटा १ पल, सातला १ पल, कौंच १ पल, कुटकी १ पल, वायविडंग १ पल, पीपलामूल १ पल इन औषधियोंको एक २ पल लेवे और एक प्रस्थ घृतमें औटावे. फिर जिसका कोठा मलयुक्त हो उसको एक बूंद दे और जितनी बूंद देवे उतनेही दस्त होवें और कोढ, गुल्म, अफारा, उदावर्त्त, वमन, भगन्दर और आठ प्रकारकी उदरव्याधि दूर होवें, जैसे इंद्रके वज्रसे वृक्ष कटताहै वैसे इस बिन्दुनाम घृतसे विरेचन होवे ॥

दुष्टव्रणादौजात्यादिकंघृतम् ।

जातीपत्रपटोलनिंबकटुकादार्वीनिशाशारिवामंजिष्ठामयसिक्यरक्तमधुकैर्नक्ताह्वबीजैःसमम् ॥ सर्प्पिःशीघ्रमनेनसूक्ष्मवदनं मर्माश्रिताःश्रावणागंभीराःसरुजोव्रणाःसुगतिकाः शुध्यंतिरोहन्तिच ॥ १ ॥

अर्थ—जायफलके पत्ते, पटोल, नींबकी छाल, कुटकी, दारुहलदी, मंजीठ, हरड, गौरीसर, कूठ, मोम, केशर, मुलहटी, कंजा इनकी समान मात्रालेकर घृत डाल काढा करै, यह घृत गम्भीरव्रण, दुष्टव्रण, फोडा, फुसियोंको दूर करे ॥

रुधिरविकारेमहातिक्तकंघृतम् ।

करंजसप्तच्छदपिप्पलीनांमूलानिकृष्णामधुकाविशाला॥यवासकश्चंदनमुत्पलंचसत्रायमाणाकटुकावचाच॥ १॥उशीरपाठातिविषारजन्यौकिराततिक्तंकुटजस्यबीजम्॥निवासनारुग्वधमालतीनांपत्राणिमूलानिचकंटकार्याः॥२॥शतावरीपद्मकदेवदारुमुस्तानिकालेयककेशराणि॥ वासागुडूचीनतसारिवेद्वेबलापटोलीत्रिफलाचमूर्वा ॥३॥ नीपाकदंबौधववेतसौचककोटकंपर्पटकंयवासा ॥ वाराहिकंदंदमयंतिकाचब्राह्मीममंगर्षभवालकं

च ॥ ४ ॥ एभिःसमांशैरथकार्षिकैश्चघृतस्यप्रस्थंविपचेन्नद-स्य ॥ द्रोणंजलस्याकलुषस्यदद्यात्प्रस्थद्वयंचामलकीरसस्य ॥ ५ ॥ पक्वंप्रशांतंगतफेनशब्दंप्रयोजयेत्कुष्ठहरंप्रशस्तम् ॥ तद्र-क्तपित्तानिलसन्निपाते विस्फोटदुष्टव्रणविद्रधीनाम् ॥ ६ ॥ किलासकासज्वरगंडमालाग्रंथ्यर्बुदान्वितंचवातरक्तम् ॥ घृतं महातिक्तमिदंप्रशस्तंनिहंतिसर्वाञ्छ्यथून्विचर्चीन् ॥ ७ ॥

अर्थ—करंजाके बीज, सतवन, पीपलामूल, पीपल.मुलहटी,इन्द्रायण, जवासा, चन्दन, कमल, त्रायमाण, कुटकी, वच, खस, पाढ, अतीस, दोनों हलदी, चिरायता, इंद्रजौ, विजैसार, अमलतास, मालतीपत्र, तथा जड,कटेरीकी जड, शतावर,पदमाख, पीलाचन्दन, देवदारू, मोथा,अगर, नागकेसर, अडूसा, गिलोय,तगर, सारिवा २,नागबला,पटोल,त्रिफला, मुलहटी,नीलकंद धायके फूल, वेतस, करंलाकी जड, पित्तपापडा,जवासा, वाराहीकंद, केवडेकी जड, ब्राह्मी, मंजीठ, ऋषभ (लहसनके मुवाफिक हिमालयके पहाडमें होताहै) नेत्रवाला यह सब औषधि चार २ मासे लेवे और २५६ टंक घृतमें औटावे पानी पल २५६ में औटावे फिर ६४ पल रखे. आमलेका रस ५१२ टंक डाल देवे. जब झाग और शब्द बंद होजावे, तब निकाल लेवे. १८ प्रकारके कोढ, रक्तपित्त,वायु-रोग, सन्निपात, दुष्टफोडे, दुष्टरोग, दाद, भ्रम, खांसी, ज्वर, गंडमाला, गांठ, अर्बुद, त्वचारोग, वातरक्तपर यह घृत महातीक्ष्ण है. यह घृत संपूर्ण प्रकारकी सूजनको दूर करता है ॥

मस्तकरोगेषड्बिंदुघृतम् ।

शुंठीविडंगयष्ट्याह्वाभृंगतोयैः शृतंघृतम् ॥
नस्यंषड्बिन्दुदानेनसर्वमूर्द्धगदापहम् ॥ १ ॥

अर्थ—सोंठ, वायविडंग, मुलहटी इनका भांगरेके काढेमें घृत बनाय नास देनेसे संपूर्ण मस्तकरोग जातेहैं ॥

वायुविकारेदशमूलादिघृतम् ।

दशमूलस्यनिर्व्यूहैर्जीवनीयैः पलोन्मितैः ॥

क्षीरेणचघृतं पक्वंतर्प्पणंपवनार्तिजित् ॥ १ ॥
क्वाथेनत्रिगुणंसर्पिः प्रस्थसाध्यपयःसमम् ॥ २ ॥

अर्थ-दशमूल १ पल, जीवनीयगण १ पल इनको दूध और घीमें औटावे और काढेसे तिगुना घी डाले दूध २५६ टंक यह संपूर्ण वायुरोगोंका नाश करता है ॥

अश्वगंधाघृतम् ।

अश्वगंधाकषायेण कल्के क्षीरं चतुर्गुणम् ॥
घृतपक्वं तु वातघ्नं वृष्यं मांसविवर्द्धनम् ॥ १ ॥

अर्थ—असगंधका काढा कर चौगुना दूध उसमें डाले, फिर घृतमें पकावे यह घृत वायुको दूर करे मांसको बढावे और वृष्य है ॥

वातरक्तेगुडूचीघृतम् ।

अमृतायाः कषायेणकल्केनचमहौषधात् ॥ मृद्वग्निनाघृतंसिद्धं वातरक्तहरंपरम् ॥ १ ॥ आमवातादिवातानांकृमिदुष्टव्रणान्यपि ॥ अर्शांसिगुल्मांश्चतथानाशयत्याशुयोजितम् ॥ २ ॥

अर्थ—गिलोयके काढेमें सोंठ डाल कर फिर घृतमें मन्दाग्निसे औटावे, वातरक्त और आमवातयुक्त वा कृमि, दुष्टव्रण, बवासीर, गुल्म इन संपूर्ण रोगोंको यह घृत नाश करता है ॥

वातशूलेशुंठ्यादिघृतम् ।

नागरक्वाथकल्काभ्यांघृतप्रस्थंविपाचयेत्॥ चतुर्गुणेनतेनाथकेवलेनोदकेनवा ॥ १ ॥ वातश्लेष्मप्रशमनमग्निदीपनकंपरम् ॥ नागरंघृतमित्युक्तंकटीशूलनाशनम् ॥ २ ॥

अर्थ—सोंठके काढेको एक प्रस्थ घीमें औटावे, परंतु सोंठका पानी घृतसे चौगुना होवे. यह घृत वातश्लेष्मको दूर करता है, मन्दाग्निको दीपन करे, यह सोंठका घृत कटिशूल आमवात और कठिन दरदका नाश करताहै॥

लूताविचर्चिकायाःकाशीसादिघृतम् ।

काशीसंद्वेनिशेमुस्तेहरितालंमनःशिला ॥ कंपिल्लकंचगंधंच विडंगंगुग्गुलंतथा ॥ १ ॥ सिद्धकंमरिचंकुष्ठंतुत्थकंगौरसर्षपाः॥

रसांजनंचसिन्दूरंश्रीवासंरक्तचन्दनम् ॥ २ ॥ अरिमेदंनिम्बपत्रंकरंजंसारिवावचा ॥ मंजिष्ठामधुकंमांसीशिरीषंलोध्रपद्मकम् ॥ ३ ॥ हरीतकीप्रपुन्नाटंचूर्णयेत्कार्षिकान्पृथक् ॥ ततस्तुचूर्णमालोड्यत्रिंशत्पलमितेघृते ॥ ४ ॥ स्थापयेत्ताम्रपात्रेषुघर्मेसप्तदिनानिच॥अस्याभ्यंगेनकुष्ठानिदद्रूपामाविचर्च्चिकाः ॥५॥ शूकदोषाविसर्प्पाश्चविस्फोटावातरक्तजाः ॥ शिरःस्फोटोपदंशश्चनाडीदुष्टव्रणानिच ॥ ६ ॥ शोफाभगन्दराश्चैवलूताःशाम्यंतिदेहिनाम् ॥ शोधनंरोपणंचैवसर्ववर्णकरंमतम् ॥ ७ ॥

अर्थ—हीराकसीस, दोनों हलदी, मोथा, हरिताल, मैनसिल, कबीला, गंधक, वायविडंग, गूगल, मोम, मिरच, नीलाथोथा, सरसों, रसोत, सिंदूर, चीढ, रक्तचंदन, कत्था, नीमके पत्ता, करंजुआ, गौरीसर, वच, मंजीठ, मुलहटी, बालछड़, लोध, पदमाख, हरड, पमारके बीज इन सबको जुदी २ चार २ टंक लेय, इनका चूर्ण ३० पल घृतमें डालकर औटावे, तांबेके पात्रमें सात दिन राखे, फिर मर्दन करे तो दाद, पामा, विचर्चिका, शूकदोष, विसर्प, विस्फोटक, वातरक्त, शिरदोष, गरमी, नाडीव्रण, दुष्टव्रण, भगन्दर, मकडी फैलना इनको शोधन करे देहका कालापन दूर होवे ।

पंचतिक्तकंघृतम् ।

वृषानिम्बामृताव्याघ्रीपटोलानांशृतेनच ॥ कल्केनपक्वंसर्पिस्तु निहन्याद्विषमज्वरान् ॥ १ ॥

अर्थ—अडूसा, नींबकी छाल, गिलोय, कटेरी, पटोल इनके काढेको घीमें औटावे तो विषमज्वर तत्काल दूर होवे ॥

पुष्टौकामदेवघृतम् ।

अश्वगंधातुलैकास्यात्तदर्द्धोगोक्षुरस्तथा । बलामृताशालिपर्णी विदारीचशतावरी ॥ १ पुनर्नवास्वच्छशुंठीकाश्मर्यास्तुपलान्यपि ॥ पद्मबीजंसटीबीजंदद्याद्दशपलंघृतम् ॥ २ ॥ चतुर्द्रोणं पयःपक्त्वापादशेषंशृतंनयेत । जीवनीयगणःकुष्ठंपद्मकंरक्त च-

दनम् ॥ ३ ॥ पत्रकंपिप्पलीद्राक्षाकपिकच्छुफलंतथा । नीलोत्पलंनागपुष्पंसारिवेद्वेतथाबला ॥ ४ ॥ पृथक्कर्षसमाभागाशर्करायाःपलद्वयम्॥रसस्यपौण्ड्रकेक्षूणामाढकैकंसमाहरेत्॥५॥ घृतस्यचाष्टकंदत्त्वापाचयेन्मृदुवह्निना । घृतमेतन्निहंत्याशुरक्तपित्तंसुरक्षितम् ॥ ६ ॥ हलीमकंपाण्डुरोगंव्रणभेदंस्वरक्षयम् ॥ वातरक्तं मूत्रकृच्छ्रं शश्वच्छूलंतुदारयेत् ॥ ७ ॥ शुक्रक्षयमुरोदाहंकार्श्यमोजःक्षयंतथा । स्त्रीणांचैवप्रजननंगर्भदंशुक्रदंनृणाम् ॥ ८ ॥ कामदेवघृतंनामह्रद्यंबल्यंरसायनम् ॥

अर्थ—अब पुष्टताके ऊपर कामदेवघृत लिखते हैं । असगंध १०० पल, गोखरू ५० पल, खरैटी, गिलोय, शालपर्णी, विदारीकंद, शतावरी, सांठी, पीपल, सोंठ, कुंभेरन, ककडी यह सब एक २ पल, कमलगट्टा, कचूर, बीजफल ४० लेय, ६४ सेर पानीमें चढावे, जब १ चौथाई रहजाय तब उतारलेय. जीवनीयगण (अर्थात् औषधि) कूठ, पदमाख, रक्तचंदन, तेजपात, पीपल, दाखके बीज, कौंचके बीज, कमल, नागकेशर, दोनों गौरीसर, बेलगिरी यह चार २ टंक लेय मिश्री २ पल, कमलकेशर, तथा गौडकेशर पल ६४ डालकर पकावे, जब सिद्ध होजाय तब निकाले, यह घृत बहुत दिनोंका रक्तपित्त, हलीमक, पांडुरोग, व्रणभेद, स्वरक्षय, वातरक्त मूत्रकृच्छ्र, पसलीके दरद, पीलिया, वीर्यक्षय, पेटका दरद, दुबलापन और क्षयका नाश करे और स्त्रियोंको संतानदायक, पुरुषोंके वीर्यको बढावे, यह कामदेवघृत हृदयको हित बलकारक रसायन है ॥

रुधिरविकारेमंजिष्ठादिघृतम् ।

मंजिष्ठाचहरिद्राचदेवदारुहरीतकी । शृंगवेरंह्यतिविषावचाकटुकरोहिणी ॥ १ ॥ हिंगुतश्चाक्षमात्रेणतत्सिद्धमवतारयेत् । एतन्मांजिष्ठकंसर्पिर्बहून्रोगान्निवारयेत् ॥ २ ॥ हिक्कांश्वासंज्वरं कुष्ठंग्रहणींपाण्डुरोगताम् । प्रमेहमधुमेहांश्चक्रिमिगुल्ममरोचकम् ॥ ३ ॥ कासंशोषमुपावर्त्तमपस्मारंतथैवच । अर्शांसिश्वयथुं

अर्थ—मजीठ, हलदी, देवदारु, हरड, सोंठ, अतीस, वच, कुटकी, हींग एक २ पल लेकर अठगुने पानीमें पकावे. जब चौथाई रहजाय तब घृत डालदेय, जब सिद्ध होजाय तब उतार लेवे, यह घृत बहुत दिनके रोगोंको दूर करै. हिचकी, श्वास, ज्वर, कोढ़, संग्रहणी, पांडुरोग, प्रमेह, अर्श, सूजन, गंडमाला, कृमिरोग, गांठ, अरुचि, खांसी, शोष, उदावर्त्त, मृगी, उदररोगादिकोंको दूर करै ॥

संग्रहणीविकारे कल्याणगुडः ।

पाठाधान्यजवान्यजाजिहपुषाचव्याग्निसिंधूद्भवैःसश्रेयस्यज-मोदकीटरिपुभिःकृष्णाजटासंयुतैः ॥ सव्योषैःसफलत्रिकैःस-त्वटिभिस्त्वग्यत्नजैरौषधैःप्रत्येकंपलिकैःसतैलकुडवैःसार्द्धत्रिवृ-न्मुष्टिभिः ॥ १ ॥ सर्वैरामलकीरसस्यतुलयासार्द्धन्तुलार्द्धंगु-डंसम्पाच्योभिषजावलेहवदयंप्राग्भोजनाद्भुज्यते । येकेचिद्ग्र-हणीगदाः सगुदजाःकासाःसशोफामयाःसश्वासंश्वयथुंशिरो-दररुजःकल्याणकस्ताञ्जयेत् ॥ २ ॥

अर्थ—पाढ, धनियां, अजवायन, जीरा, कबाबचीनी, चव्य, चित्रक, सैंधा-नोंन. पीपल, अजमोद, वायविडंग, पीपलामूल. सोंठ, मिरच, पीपल, त्रिफला, इलायची, तज, तेजपात, नागकेशर यह सब बराबर अर्थात् एक २पल लेय तेल ६४ टंक निसोत १६ टंक आंवलोंका रस १६० टंक गुड १००० टंकडालकर अच्छे प्रकार औटावे फिर औषधियोंको डालकर अवलेह बनावे, भोजनके प्रथम चार टंक खाय यह गुड संग्रहणी, उदररोग, गुदारोग, खांसी, कंठसूखना, श्वास, कंठसूजन आदिका नाश करे. इति घृताधिकारः समाप्तः॥

इति श्रीमन्नागपुरीयतपागच्छीयश्रीहर्षकीर्त्युपाध्यायसंकलितेश्रीयोग-चिन्तामणौवैद्यकसारसंग्रहेघृताधिकारे पंचमोऽध्यायःसमाप्तः ॥

अथ षष्ठोऽध्यायः ।

तैलाधिकारः ।

सर्ववातेषु नारायणतैलम् ।

बिल्वाग्निमंथश्योनाकपाटलापारिभद्रकाः॥प्रसारण्यश्वगंधाच बृहतीकंटकारिका॥ १॥बलाचातिबलाचैव श्वदंष्ट्रासपुनर्नवा ॥ एषांदशपलान्भागांश्चतुर्द्रोणेंभसःपचेत् ॥ २ ॥ पादशेषंपरिश्रावंतैलाढकंप्रदापयेत् । शतपुष्पादेवदारुमांसीशैलेयकंवचा॥ ॥ ३ ॥ चन्दनंतगरंकुष्ठमेलापर्णीचतुष्टये ॥ रास्नातुरगगंधाच सैंधवंसपुनर्नवम् ॥४॥ एषांद्विपलिकान्भागान्पेषयित्वाविनिक्षिपेत् ॥ शतावरीरसंचैवतैलतुल्यंप्रदापयेत् ॥ ५ ॥ आजंवा यदिवागव्यंदद्यात्क्षीरंचतुर्गुणम् ॥ शनैर्विपाचयेत्सर्वंतत्सिद्धमवतारयेत् ॥ ६ ॥ पानेबस्तौतथाभ्यंगेभोज्येचैवप्रशस्यते । अश्वोवावातसंभग्नोगजोवायदिवानरः ॥७॥ पंगुलःपीठसर्पीच तैलेनानेनसिद्ध्यते ॥ अधोभागाश्चयेवाताःशिरोमध्यगताश्चये ॥८॥ दंतशूलहनुस्तम्भेमन्यास्तम्भेगलग्रहे ॥ क्षीणेंद्रियानष्टशुक्राज्वरक्षीणाश्चयेनराः ॥९॥ बधिरालग्नजिह्वाश्चवितलामंदमेधसः ॥ मंदप्रजाचयानारीयाचगर्भंनविंदति॥ कुरंडमंत्रवृद्धिश्चयेषांतेषामिदंहितम् ॥१० ॥ यथानारायणोदेवोदुष्टदैत्यविनाशनः ॥ तथेदंवातरोगाणांतैलंनारायणंस्मृतम् ॥ ११ ॥

अर्थ—बेल, अरणी,अरलू,पाढल, नीबकी छाल, गंधप्रसारणी, असगंध,कटेरी, खरैटी, गंगेरन, गोखरू, सांठ यह सब १० पल लेकर ६४ सेर पानीसे औटावे, जब चौथाई रहजाय, तब १०२४ टंक तेल डाले सोंफ, देवदारु, बालछड, छारछबीला, वच, चंदन,तगर,कूठ,इलायची, शालपर्णी,माषपर्णी,मुद्गपर्णी, पीलवनी, रास्ना, असगंध, सैंधानोंन, सोंठ यह सब दो २ पल ले पीसकर डालदेवे और शतावरीका रस तेलके बराबर अर्थात् चार सेर डाले बकरीका गायका चौगुना दूध डालकर मंदी२

आंचसे पकावे, जब सिद्ध होजाय तब उतारले. तेलको पीवे तथा मर्दन करे, भोजनके प्रथम तेल लेय, घोडा हाथीके वातरोग, तथा मनुष्यके पंगु, पीठभग्न, वायु इस तेलसै इतने रोग नाश होवें, नीचे अंगकी वायु, माथेकी वायु, दांतशूल, हनुस्तंभ, जबाड़ास्तभ, गलग्रह, इन्द्रीक्षीण, वीर्य्यनष्ट होय, ज्वरकरके क्षीण होय, जीभ फूलना, विकलता, मंदबुद्धि, स्त्रीके संतान न होय, नलबंधना, आतोंकी वृद्धि आदिक संपूर्ण रोगोंका नाश करताहै ॥

जीर्णज्वरेतापातिदाहादौचलाक्षादितैलम् ।

चन्दनांबुनखंवाद्यंयष्टीशैलेयपद्मकम्।मंजिष्ठासरलादारुसटचेलानागकेशरम् ॥ १ ॥ पत्रंचैलामुरामांसीकंकोलंचनतांबुदम् । हरिद्रेसारिवेतिक्तंलवंगागुरुकुंकुमम् ॥ २ ॥ त्वग्रेणुनलिकास्त्वेभिस्तैलंमस्तुचतुर्गुणम् ॥ लाक्षारसंसमंसिद्धंग्रहघ्नंबलवर्णवत् ॥ ३ ॥ अपस्मारक्षयोन्मादेकृतालक्ष्मीविनाशनम् ॥ गात्राणांस्फुटनेदाहेकण्डुजीर्णज्वरापहम् ॥ ४ ॥

अर्थ—चंदन, नेत्रवाला, नख, मुलहटी, शिलाजीत, पदमाख, मंजीठ, निसोत, देवदारु, कचूर, इलायची, नागकेशर, तेजपात, बालछड, क्षीरकंकोली, तगर, मोथा, दोनों हलदी, दोनों गौरीसर, कुटकी, लौंग, अगर, केशर, रेणुका, चीता इनसे चौगुना तेल, गायका मट्ठा ५ सेर लाखका रस ५ सेर इन सबको औटावे, जब सिद्ध हो जाय तब काममें लावे, गलग्रहका नाश करे, शरीरका अच्छा वर्ण करे, मृगी, क्षयी, उन्मादको दूर करे, शरीरको पुष्ट करे, गात्रभंग, फूटन, दाह, खाज, जीर्णज्वर आदिकोदूरकरे।

पुनःश्लोकः ।

लाक्षाढकक्काथयित्वाजलस्यचतुराढकैः ॥ चतुर्थांशंशृतंनीत्वा तैलप्रस्थेविपाचयेत् ॥ १ ॥ तक्राढकंचगोदध्नस्तत्रैवचनियोजयेत्॥शतपुष्पामश्वगधाहरिद्रादेवदारुच ॥२॥ कटुकारेणुकामूर्वा कुष्ठंचमधुयष्टिका ॥ चन्दनंमुस्तकंरास्नापृथक्कृत्वाप्रमाणतः ॥ ॥ ३ ॥ चूर्णयेत्तत्रनिक्षिप्यसाधयेन्मृदुवह्निना । अस्याभ्यंगात्प्रशाम्यंतिसर्वेपिविषमज्वराः ॥४॥ वातपित्तेक्षयेदाहेगुर्विणी

पुष्टिदंमतम् । कासश्वासासृग्विकारकण्डुशूलभ्रमेषुच ॥ ९ ॥

अर्थ—१०२४ टंक लाखका रस, पानी २५६ पल डालकर काढा कर मीठा तेल १६ पल डाले, गायका मट्ठा १६४ पल डाले और विधिपूर्वक पकावे फिर सोंफ, असगंध, हलदी, देवदारु, कुटकी, संभालू, मुलहटी, कूठ, मोथा, रक्तचंदन, रास्ना, मूर्वा इन सबको चार, २ टंक लेय, पीसकर डाले फिर मन्दाग्निमें पकावे, इसके मर्दन करनेसे संपूर्ण विषमज्वर नाश होवें. वायु, पित्त, क्षय, दाहको हित और खांसी, श्वास, रुधिरविकार, खाज, शूल, भ्रमादिकोंको दूर करताहै, गर्भिणीको हित है ॥

दद्रुमण्डलपामाविचर्चिकादौमरिचादितैलम् ।

मरिचचन्दनदारुनिशाद्वयंजलदमेघशिलालशकृद्रसैः। त्रिवृतयाश्वहरोर्कपयोर्विषैःसुरभिमूत्रयुतंविपचेद्भिषक् ॥१॥ कटुकतैलमिदंमरिचादिकंकठिनचर्मदलारसकापहम् ॥ बहुलमंडलसिध्मविचर्चिकाप्रवरकुष्ठकिलासविसर्पजित् ॥ २ ॥

अर्थ—मिरच, चन्दन, दोनों हलदी, देवदारु, खस, मोथा, मैनसिल, हरताल, गोबरका रस, निसोत, असगंध, आकका दूध, तेलिया मीठा इनको गोमूत्रमें औटावे, फिर कडवा तेल डालकर उतार लेवे. यह तेल चर्मदल, दाद, बडे चकत्तोंको, कोढ, पामा, फोडा, विचर्चिकादिसंपूर्ण रोगोंको दूरकरे।

वृद्धमरिचादितैलम् ।

मरिचंत्रिफलादंतीक्षीरमार्कशकृद्रसैः॥ देवदारुहरिद्रेद्वेमांसीकुष्ठं सचन्दनम्॥ १॥विशालाकरवीरंचहरितालंमनःशिला॥चित्रकोलांगलीलाक्षाविडंगंचक्रमर्दकम्॥२॥ शिरीषकुष्ठजोनिम्बसप्तपर्णसुहीमृता । सम्पाकोनक्तमालश्चखदिरंपिप्पलीवचा ॥३॥ ज्योतिष्मतीचपलिकाविषंचद्विपलंनयेत् ॥ आढकंकटुतैलस्य गोमूत्रंचचतुर्गुणम्॥४॥मृत्पात्रेलोहपात्रेचशनैर्मृद्वग्निनापचेत्॥ पक्त्वातैलवरंह्येतत्कर्षयेत्कोष्ठकंव्रणम् ॥ ९ ॥ पामाविचर्चिकाकण्डुदद्रूविस्फोटकानिच। वलितंपलितंछायानीलीव्यंगत्व-

मेवच ॥ ६ ॥ अभ्यंगेनप्रणश्यंतिसौकुमार्यंचजायते । प्रथमे वयसिस्त्रीणांनस्यमस्यतुदीयते ॥ ७ ॥ जरामपितथाप्राप्यनाम्नानायातिविक्रियाम् । बलीवर्दस्तुरंगोवागजो वा वायुपीडितः ॥ ८ ॥ त्रिभिरभ्यंजनैर्बाढं भवेन्मारुतविक्रमः ॥

अर्थ—मिरच १ पल, त्रिफला १ पल, जमालगोटाकी जड १ पल, आकका दूध दो सेर, थूहरका दूध दो सेर, गोबरका रस दो सेर, देवदारु १ पल, दोनों हलदी १ पल, बालछड १ पल कूठ १ पल, चन्दन १ पल, इन्द्रायण १ पल, कनेरकी जड १ पल, हरताल १ पल, मेनसिल १ पल, चित्रक १ पल, करीहारी १ पल, लाख १ पल, वायविडंग १ पल, पमाड़के बीज १ पल, सिरसकी छाल १ पल, कुडेकी छाल १ पल, नींबकी छाल १ पल, सातपूडा १ पल, थूहर, गिलोय, अमलतास, कंजा, जावित्री, पीपल, खैरसार, वच, मालकांगनी, मंजीठ, तेलियामीठा कडवातेल ६४ पल, गोमूत्र २५६ पल इनको मिट्टीके पात्रमें अथवा लोहेके पात्रमें मन्दाग्निसे पकावे जब पकजाँय तब उतार लेवे, यह तेल कोढ, व्रण, पामा, विचर्चिका, शरीरमें गुलजट और सफेद बालोंका होना, खुजली आदिमें हितकर है इस तेलके मर्दनसे शरीर सुंदर होय. प्रथम उमरवाली स्त्रीको नास देय, और बुढापेमें देय तो सुन्दर दृढ़ शरीर होय. किसी तरह विकारको प्राप्त नहीं होय. बैल, घोडा, हाथी ये वायुविकारसे पीडित होवें तो तीन दिन मर्दन करनेसे पवनके समान पराक्रम होय ॥

सर्ववातरोगेविषगर्भतैलम् ।

विषंचपुष्करंकुष्ठंवचाभार्ङ्गीशतावरी । शुंठीहरिद्रेलशुनंविडंगं देवदारुच ॥ १ ॥ अश्वगंधाजमोदाचमरिचंग्रंथिकंबला । रास्नाप्रसारिणीशिग्रुगुडूचीहपुषाभया ॥ २ ॥ दशमूलानिनिर्गुंडी मिशीपाठाचवानरी ॥ विशालाशतपुष्पाचप्रत्येकंपलिकान्मितान् ॥ ३ ॥ चतुर्गुणैर्जलैःपक्त्वापादशेषंशृतंनयेत् ॥ तिलतैलंक्षिपेत्प्रस्थंतथैरण्डंचसार्षपम् ॥ ४ ॥ धत्तुरंचाण्डभृंगार्करसान्प्रस्थमितान्क्षिपेत् ॥ पाचयेद्गोमयरसैस्तैलशेषंसमुद्धरे-

त् ॥५॥ पलमेकं विषंचात्रसूक्ष्मंकृत्वाविनिक्षिपेत्।सर्वेषुवात-रोगेषुसदाभ्यंगोविधीयते॥६॥संधिवातेसन्निपातेत्रिकपृष्ठेकटि-ग्रहे ॥ पक्षाघातेतथार्द्धांगेगात्रकंपेतिदारुणे॥७॥ कुब्जकेचधनु-र्वातेगृध्रस्यांचप्रतानके॥विषगर्भमिदंतैलंयोजनीयंसदाबुधैः ८॥

अर्थ—तेलियामीठा, पुहकरमूल सोंठ, वच, भारंगी, सतावर, मंजीठ, हलदी, लहसुन, वायविडंग,देवदारु,असगंध,अजमोद, मिरच,पीपलामूल, खरैटी, गंधप्रसारणी, सहंजना, गिलोय, हाऊबेर, हरड, दशमूल, संभालू, मेथी, पाढ, कौंचके बीज, इंद्रायणकी जड, सोंफ इन सबको एक २ पल लेवे चौगुने जलमें औटावे, जब चतुर्थांश बाकी रहे तब उतारलेवे, इसमें एक प्रस्थ मीठा तेल डाले और एक प्रस्थ अंडीका तेल, एक प्रस्थ सर-सोंका तेल पीछे इनमें धतूरा, अंड भांगरा, आकका रस, एक २ प्रस्थ डाले फिर गोबरका रस डालकर पकावे. जब तेल सिद्ध होजाय तब एक पल विष डालकर देहमें लगावे तो यह तेल संपूर्ण वातरोगोंका नाश करे, इसकी मालिशसे संधिगतवायु, सन्निपात, त्रिक, पीठ, कमर इनका दुखना, पक्षाघात, अर्द्धांग, कंपनवायु, कुबडापन, धनुषवायु, गृध्रसीवायु, प्रतानवायु आदिक रोग दूर होवें, यह विषगर्भ तैल है ॥

पुनः श्लोकः ।

कनकश्चापिनिर्गुंडीतुंबिनीसपुनर्नवा ॥ वानरीयाश्वगंधाचप्र-पुन्नाटःसचित्रकः॥१॥सौभांजनंकाकमाचीकलिहारीतुनिंबकैः॥ महानिंबेश्वरीचैवदशमूलीशतावरी॥२॥ कारेल्लीसारिवेद्वेचश्री-पर्णीचविदारिका। वज्रार्कमेषशृंगीचकरवीरद्वयंतथा॥३॥काक-जंघात्वपामार्गस्तथास्यात्सुप्रसारिणी । त्रिफलातत्समांशेनरसं तैलंसमानिच ॥ ४ ॥ कृष्णस्यतिलतैलंचतैलमेरण्डसार्षपम् । पचेदेकत्रसर्वंतत्तैलंसिद्धंचबुद्धिमान्॥ ५ ॥ त्रिकटून्यश्वगंधाच रास्नाकुष्ठंचनिंबके।देवदारुकलिंगंचद्वौक्षारौलवणानिच॥ ६ ॥ तुत्थंकटुफलंपाठाभार्ङ्गीचनवसादरम् ॥ गंधकंपुष्करंमूलंशि-

लाजतुसटीवचा॥७॥एतानिकर्षमात्राणितैलशेषेविनिक्षिपेत्॥ प्रसृतंचविषंदद्यात्सूक्ष्मचूर्णीकृतंक्षिपेत् ॥ ८॥ विषगर्भमिदंतैलं सर्वव्याधीन्व्यपोहति । कुक्षिभ्रूपृष्ठगंडेषुसंधानंशोफमेवच ॥९॥ गृध्रसींचशिरोवायुंसर्वांगस्फुटनंतथा । दंडापतानकाष्टीलंकर्ण-नादस्यशून्यताम्॥१०॥कंपनंचोर्ध्ववातंचबाधिर्यंपलितंतथा। गंडमालापचीग्रंथिशिरःकंपापतंत्रकम्॥११॥ अनेनसर्ववाता-श्चसन्निपातास्त्रयोदश । वनमभ्यागतेसिंहेपलायंतेयथामृगाः ॥ १२ ॥ तथावातेषुसर्वेषुयोजनीयंभिषग्वरैः ॥ १३ ॥

अर्थ—धतूरेके बीज, संभालू, कडवी तुंबी, सोंठ, कौंचके बीज, असगंध, पमाड, चीता, सहजना, मकोय, कलिहारी, नींबकी छाल, बकायन, दशमूल, शतावरी, करेला, दोनों गौरीसर, श्रीपर्णी, बिदारीकंद, सेहुंड, आक, मेढा-सिंगी, लाल कनेर तथा सफेद कनेर, काकजंघा, ओंगा, प्रसारिणी, त्रिफला यह सब बराबर लेवे और चौगुने, पानीमें काढा करे. काले तिलका तेल काढेके बराबर, एरंडका तेल दूना, सरसोंका तेल तिगुना इन सबको बुद्धि-मान् एकत्रकर पकावे. तदनंतर सोंठ, मिरच, पीपल, असगंध, रास्ना, कूठ, नींबकी छाल, देवदारु, इन्द्रयव, जवाखार, सज्जी, पांचों नोंन, शुद्ध नीलाथोथा, कायफल, पाढ, भारंगी, नवसादर, गंधक, पुहकरमूल, शिलाजीत, कचूर, वच यह औषधि चार२टंक, शेष तेल रहे तब डाल देवे फिर बत्तीस टंक तेलिया मीठा डाले यह विषगर्भ तेल संपूर्ण रोगोंको दूर करताहै. पीठका दरद, भौंहकी पीडा, कूखकी दरद, कनपटीपीडा, संधिपीडा, सूजन, गृध्रसी, माथेकीवायु, सर्वांगफूटन, प्रतानवायु, उदरगांठ, कर्णरोग, सुन्न-वायु, कंपवायु, ऊर्ध्ववायु, अधोवायु, बहरापन, पलित, गंडमाला, अपचीवात, मस्तककंप इस तेलसे संपूर्ण वातरोग नाश होतेहैं, तेरह प्रकारका सन्निपात जैसे वनमें सिंहको देखकर सब मृग भाग जाते हैं उसी प्रकार इस दवाके सेवनसे संपूर्ण रोग नाश होतेहैं, इसको अच्छा वैद्य संपूर्ण वातरागोंमें देवे॥

मस्तकरोगेषड्बिन्दुतैलम् ।

एरण्डमूलंतगरंशताह्वाजीवंतिरास्नालवणोत्तमंच॥भृंगंविडङ्गंम-

धुयष्टिकाचमहौषधंचेतितिलस्यतैलम् ॥१॥ एतैर्विपकैःपयसा चतुल्यंचतुर्गुणंभृङ्गरसेचसम्यक्॥षड्बिंदवोनासिकयोपयुक्ताः सर्वान्निहन्युःशिरसोविकारान् ॥२॥ च्युतांश्चकेशान्स्खलितांश्चदंतानुद्बद्धमूलांश्चदृढीकरोति ॥ सुपर्णनागप्रतिमंचचक्षुर्बुद्धिं बलंचाभ्यधिकंकरोति ॥ ३ ॥

अर्थ—एरंडमूल, तगर, सतावर, जैती, रास्ना, सैंधानोंन, भांगरा, वायविडंग, मुलहटी, सोंठ, तिलका तेल, पहले तेलको बकरीके दूधमें पकावे फिर तेलसे चौगुना भांगरेका रस डाले और औषधियोंका काढा डालकर पकावे जब सिद्ध होजाय तब वर्ते. इस तेलकी छःबूंद नाकमें डाले तो सर्व मस्तकविकार नष्ट होवें, बालोंको दृढ करे, उखडे बालोंको फिर जमावे और दांतोंको दृढ करे, दृष्टि बढावे, बल अधिक करे ॥

वातरोगेशतावरीतैलम् ।

शतावरीरसंग्राह्यंपाच्यंवायंत्रपीडितम्॥ प्रभूतंतद्रसंक्षिप्त्वातैलस्याढकमेवच ॥१॥ दधिक्षीरेणविपचेद्द्रव्याण्येतानिदापयेत्॥ शतपुष्पावचाकुष्ठंमांसीशैलेयचन्दनैः ॥ २ ॥ प्रियंगुपद्मकंमुस्ताह्रीबेरोशीरकट्फलम् ॥ सैंधवंमधुकंरोध्रंगैर्यकंरक्तचन्दनम् ॥ ३ ॥ चंडाचैलामुरास्पृक्कानलिकापद्मकेशरम् ॥ श्रीवेष्टकंसर्ज्जरसंर्जीविकर्षभकौसटी ॥४॥ पतंगरेणुकादार्वीकर्पूरंसारिवातथा॥मंजिष्ठामधुकंचैवद्रव्यैरेतैःपलोन्मितैः ॥५॥ मध्यपाकंविजानीयात्ततस्तमवतारयेत् ॥ पथ्यंपानेतथाभ्यंगेनस्ये भोज्येचदापयेत॥६॥ पीड्यमानेतथावातेपक्षाघाताभिमंथके॥ अर्दितेकर्णशूलेचऊरुस्तंभेकटिग्रहे ॥ ७ ॥पवनेचशिरःकम्पेमूर्तिकायांप्रदापयेत् ॥ मन्यास्तंभेधनुःकम्पेह्यस्थिभंगेचदारुणे ॥ ८ ॥ तथासर्वगतेवायौशुष्यमाणेषुधातुषु ॥ अनार्त्तक्षीणरेतःसुवंध्यायांगर्भिणीषुच ॥९॥ वृक्षंपुनर्नवाकारंबलमारोग्यदं महत्॥शतावरीतैलमिदंसर्ववातविकारनुत् ॥ १० ॥

अर्थ–शतावरीका रस १०२४ टंक निकालकर मीठा तेल १०२४ टंक डाले. फिर दही दूध डालकर पकावै सोंफ, वच, कूठ, शिलाजीत, चन्दन, प्रियंगु, पदमाख, मोथा, हाऊबेर, खस, कायफल, सेंधानोंन, मुलहटी, लोध, अगर, पतंग, लाल कनेर, कस्तूरी, इलायची, वालछड, छारछबीला, कमल, नागकेशर, चीढ, राल, जीवक, ऋषभ, कचूर, संभालू, दारुहलदी, गौरीसर, मंजीठ यह सब औषधि एक २ पल लेकर तेलमें डालकर पकावे. जब पकजांय तब उतारकर भोजनसमय पानमें मर्दन, नास, भोजन आदिमें लेवे. यह वायुपीडा, पक्षाघात, दरद, कानका दरद, ऊरुस्तंभ, कमरका दरद, वमन, मस्तकरोग, प्रसूतिका इन रोगोंमें अवश्य देवे. जावडास्तंभ, धनुषवात, हडफूटन, भयानक दरद, धातु सूखना, क्षीणवीर्य आदिक रोगोंको दूर करताहै, वंध्या सेवनकरे तो पुत्रवती होवे. शरीरको पुष्ट करे, बल करे, आरोग्य करे, सब प्रकारके वायुका नाशकहै॥

वातपित्तादिरोगेबलाद्यंघृतम् ।

बलाशतंगुडूच्याश्चपादंरास्नाष्टभागकम् ॥ जलाढकशतैःपक्त्वा शतभागस्थितेरसे ॥ १ ॥ दधिमस्त्विक्षुनिर्यासेशुक्लैस्तैलाढकेशनैः ॥ पचेत्साचपयोर्द्धांशंकल्कैरेभिःपलोन्मितैः ॥ २ ॥ सटीसरलदार्व्येलामंजिष्ठागरुचन्दनैः ॥ पद्मकात्रिफलामुस्तासूर्य्यपर्णीहरेणुभिः ॥ ३ ॥ यष्ट्याह्वासुरसाव्याघ्रीनखर्षभकजीवकैः ॥ पलाशरसकस्तूरीनलिकाजातिकोशकैः ॥ ४ ॥ स्पृक्काकुंकुमशैलेयामालतीकट्फलांबुभिः।त्वक्कुन्दरसकर्पूरीतुरुष्कश्रीनिवासकैः ॥ ५ ॥ लवंगनखकंकोलकुष्ठमांसीप्रियंगुभिः ॥ क्षीरेयतगरंवापिवचादमनकच्छुकैः ॥ ६ ॥ सनागकेशरंसिद्धेदद्याच्चात्रावतारिते ॥ पलमात्रंततःपूतंविधिनातत्प्रयोजयेत् ॥ ७ ॥ कासंश्वासंज्वरंमूर्च्छांछर्दिगुल्मक्षतक्षयान् ॥ दौर्बल्यं शिरसस्तापंसर्वधात्वावृतानिलम् ॥ ८ ॥ प्लीहशोषावपस्मारमलक्ष्मींचप्रणाशयेत् ॥ बलातैलमिदंश्रेष्ठंवातव्याधिविनाशनम् ॥ ९ ॥

अर्थ—खरैंटी १०० पल, गिलोय २५ पल, रास्ना १२ पल, दश मन पानीमें पकावे, जब सौ पल रहजाय तब उतारलेवे, फिर दही, मद्द गुड इनके काढेमें पकावे, फिर १ आढक तिलके तेलमें पकावे, बकरी आधे आढ़क दूधमें काढ़ाकर इन औषधियोंको डाले कचूर, देवदारु,दार हलदी, इलायची, मजीठ, अगर, चन्दन, पदमाख, त्रिफला, मोथ माषपर्णी, रेणुका, मुलहटी, रास्ना, कटेरी, नख, सुगंधिद्रव्य, ऋषभ जीवक, पलाश (ढ़ाक) रस, कस्तूरी, निसोत,जायफल, केशर, शिल जीत, मालतीपुरुष, कायफल, नेत्रवाला, तज,कुन्द, त्वचा, कपूर, लो बान, चीढ़, लौंग, करंजी, मिरच, कंकोल, कूठ, दोनों मरुआ, वाल छड, प्रियंगू, फावूला, तगर, वच, दमनफूल, कौंचके बीज, नागकेश जब तेल पकजाय तब इन औषधियोंको १६ टंक डालकर फिर पका विधिसंयुक्त सेवन करे तो खांसी, श्वास,ज्वर, मूच्छा, छर्दि,गोला, क्ष दुर्बलता, मस्तकशूल, संपूर्ण धातुओंके भीतरकी वायु,प्लीहा,सूजन,मू शरीरमल इतने रोगोंको बलातेल नाश करताहै और संपूर्ण प्रकार वायुको दूर करता है ॥

वातरोगेप्रसारणीतैलम् ।

प्रसारणीक्काथपयोंबुतक्रमस्त्वारनालंविपचेत्तुतैलम्॥ कल्कीकृतंविश्वघनांबुकुष्टंमांसीशताह्वामरदारुसेव्यः ॥ १ ॥ शैलेयरास्नागरुसारिवाचसिंधूत्थबिल्वानलमंथचोञ्चैः॥ तगरलतांभोजपुननवास्याच्छयोनाकयष्ट्याभकुटंनटैश्च ॥ २ ॥ छिन्नोद्भवादार्व्यभयाकरंजमेदानिशाह्वैः सफलत्रिकैश्च ॥ एरण्डगोकंटकजीवकैश्चतत्साधितंहंत्यनलोत्थरोगान् ॥ ३ ॥ सर्वांश्चदीप्तानपिपक्षघातान्वाताश्रिताध्मानहनुग्रहादीन् ॥ सगृध्रसीविश्वविबाहुशोषंहन्मूर्द्धसंस्थांश्चगदांश्चतांस्तान् ॥४॥ सशुष्कभग्नप्रबलांगयष्टियोसाध्यतामुल्बणमारुतेन ॥ नीतःपुमांस्तस्यभवेदवश्यंप्रसारणीतैलमिदंहिताय ॥ ५ ॥

अर्थ—प्रसारणीका काढाकर, दूध,दही, मद्य,कांजी इनको मिलाक

पकावे जब तेल शेष रहजाय तब उतारकर सोंठ, मोथा, नेत्रवाला, कूठ, छड, सोंफ, देवदारु, शिलाजीत, रास्ना, अगर, गौरीसर, सेंधानोंन, बेल, अरणी, तज, मंजीठ, अगर, कमल, सांठी, अरलू, मुलहटी, मनसिल, गिलोय, दारुहलदी, हरड, करंज, अष्टवर्ग, हलदी, बहेडा, आंवला, एरंडज, गोखरू, जीवक इनका तेल संपूर्ण वायुरोगोंको दूर करताहै. इन्द्री चैतन्यकरे पक्षाघात, पेटका अफरा, हनुग्रह, गृध्रसी, सब भुजारोग, बाहुशोष, हृदय, मस्तक, शरीरफटेको, उल्बण सन्निपात, सम्पूर्ण वायुरोगोंको दूर करताहै ॥

साधारणगुणभूषाद्यर्हचन्दनादितैलम् ।

चन्दनंपद्मकंकुष्टमुशीरंदेवदारुच ॥ नागकेशरपत्रैलात्वङ्मांसी तगरंजलम् ॥ १ ॥ जातीफलंघोंटफलंकुंकुमंजातिपत्रिका ॥ नखंकुन्दरुकस्तूरीचण्डासैलेह्रदंमनः ॥ २ ॥ पतंगंपुष्करंमुस्ता रक्तचन्दनसारिवा ॥ शटीकर्पूरमंजिष्ठालाक्षायष्टिप्रियंगुभिः ॥ ॥ ३ ॥ शतपुष्पावरीमूर्वाह्यश्वगंधामहौषधम् ॥ पद्मकेशरश्री- बिल्वमरलागरुरेणुभिः ॥ ४ ॥ स्पृक्कालवंगकंकोलंद्रव्यैरेभि- र्द्विकर्षकैः ॥ दशमूलकषायस्यभागाःषष्ट्यायसस्तथा ॥ ५ ॥ यवकोलकुलत्थानांबलमूलस्यचैकतः ॥ निक्वाथ्यभागोभागा- श्चतैलस्यचचतुर्दश ॥ ६ ॥ ततः पक्कंविजानीयात्क्षिप्रंतदवता- रयेत् ॥ शुभेपात्रेविनिक्षिप्तमौषधैस्तुसुगंधिभिः ॥ ७ ॥ प्रती- वापंततःकार्यमेषांसंयोजनेविधिः ॥ प्रयोज्यंसुकुमाराणामीश्वरा- णांसुखात्मनाम् ॥ ८ ॥ स्त्रीणांस्त्रीवृन्दभर्तॄणामलक्ष्मीकलिनाश- नम् ॥ सर्वकालेप्रयोगेणकांतिलावण्यपुष्टिदम् ॥ ९ ॥ जीर्णज्व- रंसदाहंचशीतचविषमज्वरम् ॥ शोषापस्मारकुष्ठघ्नं[illegible]नांच- सुतंप्रदम् ॥ १० ॥ अशीतिंवातजान्रोगान्वातरक्तंविशेषतः ॥ सूतिकाबालमर्म्मास्थिहतक्षीणेषुपूजितम् ॥ ११ ॥ व्याधिता- नांहितार्थायचैनकंडर्निपीडिताः ॥ विशेषात्क्षदेहानांविचित्रा-

णांविशेषतः ॥ १२ ॥ विनिर्मितमिदंतैलंचात्रेयेणमहर्षिणा । नचास्मात्सदृसारोगाः प्रभवंत्यूर्ध्वजन्तुजाः ॥१३॥ अस्यप्रयोगात्तैलस्यजरांनलभतेनरः ॥ चन्दनादित्वदंतैलंलोकानां चहितप्रदम् ॥ १४ ॥

अर्थ—चन्दन, पदमाख, कूठ, उशीर, देवदारु, नागकेशर, तेजपात, इलायची, तज, बालछड, तगर, नेत्रवाला, जायफल, सुपारी, केशर, जावित्री, नख (नख नामसे प्रसिद्ध सुगंधियुक्त होताहै) गोंद, कस्तूरी, कोकेछ, छारछबीला, पतंग, पुहकरमूल, मोथा, रक्तचन्दन, गौरीसर, कचूर, कपूर, मंजीठ, लाख, मुलहटी, प्रियंगु, सौंफ, शतावर, मूर्वा, अक्षगंध, सोंठ, कमलकेसर, हाऊबेर, चीढ, पित्तपापडा, गठिवन, लौंग, कंकोल इन औषधियोंको ८ टंक लेकर और दशमूल १ भाग ले, लोहेकी कढाईमें काढा करे बेर, कुलथीका काढा करे. इनको एकत्र कर और खरैटीकी जडका काढा यथोक्त कर चौगुना तेल डाले. जब परिपक्व होजावे तब उतार लेवे और सुन्दर पात्रमें रख देय और सुगंधवाली औषधियोंको ऊपरसे डाल देवे इसके मर्दनसे शरीर सुन्दर होवे. स्त्री, पुरुष दोनों लगावें तो शरीर शोभायुक्त होवे, बहुत दिनका ज्वर, दाह, शीतज्वर, विषमज्वर, मुख शोष, मृगी, कोढ आदिको दूर करे, बाँझ स्त्रीके पुत्र होय, ८० प्रकारके वातरोग, प्रसूतरोग, बालकका मर्मरोग, वीर्य्यक्षीण, हतवीर्य, खाज, रूखीदेह और त्वचाके रोगोंको और जंतुसे जो रोग होवें उन सबमें यह चन्दनादि तेल हितकारक है. आत्रेय मुनिने कहाहै ॥

कुष्ठदद्रुविकारेवज्रतैलम् ।

वज्रीक्षीररविक्षीरेद्रव्यधान्यारचित्रकम् ॥महिषीविड्भवंद्रावंसर्वांशतिलतैलकम् ॥१॥ पचेत्तैलावशेषन्तुगोमूत्रेऽथचतुर्गुणम् तैलावशेषंपक्वाचतत्तैलंप्रस्थमात्रकम्॥२॥ गंधकाग्निशिलातालविडंगातिविषाविषम् ॥ तिक्तकोशातकीकुष्ठंवचामांसीकटु-

दारुचकर्षांशचूर्णंतैलेविमिश्रयेत् ॥४॥ वज्रतैलमितिख्यातम-भ्यंगात्सर्वकुष्ठनुत् ॥ ५ ॥

अर्थ—थूहरका दूध, आकका दूध, धतूरेका रस, चीतेका रस, भैंसके गोबरका रस इन सबके बराबर तिलका तेल डालकर पकावे, जब तेल-मात्र रहजाय तब उतारलेय, तेल एक प्रस्थ डाले फिर गोमूत्र चौगुना डालकर पकावे फिर चीता, गंधक, मनसिल, हरताल, वायविडंग, अतीस, तेलियामीठा, सज्जीखार, जीरा, देवदारु इनको चार २ टंक चूर्णकर डाले इस तेलके लगानेसे सम्पूर्ण कुष्ठ नाश होवें ॥

कुष्ठेकालानलतैलम् ।

त्रिक्षारंपटुपंचकोलरजनीतालंशिलागंधकं सिन्दूरंरसराठराम-ठनृपंलोहंरसोनांजनम् ॥ कुष्ठंतुत्थकदारुवेल्लमहिजंसुह्यर्कदु-ग्धप्लुतंपाच्यंसर्षपतैलमष्टदधिकंकुष्ठेहिकालानलम् ॥ १ ॥

अर्थ—सज्जी, जवाखार, सुहागा, पांचों नोंन, बेर, हलदी, हरताल, मनसिल, गंधक, सिंदूर, पारा, मैनफल, हींग, भांगरा, सार, लहसन, रसोत, कूठ, नीलाथोथा, दारुहलदी, वायविडंग, चिरायता, थूहर, आकका दूध इन सबको बराबर लेकर सरसोंका तेल आठ पल, गायका मट्ठा ८ पल यह तेल १८ प्रकारके कुष्ठोंका नाश करे ॥

सिन्दूरादितैलम् ।

सिन्दूरंचन्दनंमांसीविडंगंरजनीद्वयम् ॥ प्रियंगुःपद्मकंकुष्ठंमं-जिष्ठाखदिरंवचा ॥ १ ॥ जात्यर्कत्रिवृतानिम्बकरंजविषमेवच ॥ कृष्णाछत्रकरोध्रंचप्रपुन्नाटंचसंहरेत् ॥ २ ॥ अम्लपिष्टानिसर्वा-णियोजयेत्तैलमात्रया ॥ अभ्यंगेनप्रयुंजीतसर्वकुष्ठविनाशनः ॥ ॥ ३ ॥ पामाविचर्चिकाकच्छूविसर्पेविहितंमतम् ॥ रक्तपित्तो-त्थितान्हन्तिरोगानेवंविधान्बहून् ॥ ४ ॥

अर्थ—सिन्दूर, चन्दन, बालछड़, वायविडंग, दोनों हलदी, प्रियंगु, पदमाख, कूठ, मंजीठ, खैरसार, वच, चमेली, आकका दूध, निसोथ नींबकी छाल,

कंजा, तेलियामीठा, पीपल, छोतोना, छारछबीला, लोध, पमारके बीज इनको एकत्र कर इमलीके रसमें पीस तेलमें पकावे जब सिद्ध होजाय तब मर्दन करे तो सम्पूर्ण कोढ दूरहोवें और पामा, विचर्चिका, दाद, फोडा, रक्तपित्तादि रोग दूरहोवें ॥

गुंजादितैलम् ।

गुंजामूलंफलंतैलंतोयंद्विगुणितंपचेत् ॥
तस्याभ्यंगेनसंमर्दैद्गण्डमालांसुदारुणाम् ॥ १ ॥

अर्थ—चिरमिठीकी जड, फल, चिरमिठी तेल दुगने पानीमें औटावे जब सिद्ध होजाय तब इसके मर्दन करनेसे कठिन गंडमाला दूर होवे ॥

कुष्ठभल्लातकंतैलम् ।

भल्लातकत्र्यूषणमुक्षचूर्णंकुष्ठंचगुंजात्रिफलाचतैलम् ॥
क्षारांश्चपंचाथविपच्यचैतदभ्यंजनाद्धन्तिचकुष्ठदद्रुम् ॥ १ ॥

अर्थ-भिलावा, सोंठ, मिरच, पीपल, बहेडा, कूठ, चिरमिठी, त्रिफला, कडवातेल, पांचों नोंन इन औषधियोंको पकाकर तेल मर्दन करनेसे कोढ, दाद, दूर होवे ॥

कुष्ठोपारिसिन्दूरादितैलम् ।

सिन्दूरार्द्धपलेपिष्टंजीरकस्यपलंतथा ॥ कटुतैलंपचेत्ताभ्यां सद्यःपामाहरंपरम् ॥ वृद्धवैद्योपदेशेनपचेत्तैलंपलाष्टकम् ॥१॥

अर्थ—सिन्दूर ८ टंक, जीरा १६ टंक, सरसोंका तेल ८ पलमें पकावे इसके मर्दनसे पामा कुष्ठ दूर होवे ॥ १ ॥

पामाखाजकेऊपरलेप ।

रसंगंधंमरिचंतुत्थंसिन्दूरंजीरकद्वयम् ॥ गोघृतेनसमायुक्तंसर्वाःकंडूर्विनाशयेत् ॥ १ ॥

अर्थ—पारा, गंधक, मिरच, दोनों जीरे, नीलाथोथा, सिन्दूर इनको गौके घीमें मिलाकर, लगानेसे संपूर्ण खुजली दूर होवे ॥

अर्कतैलम् ।

अर्कपत्ररसेपक्वंहरिद्राकल्कसंयुतम् ॥ शोधयेत्सार्षपंतैलंपामाकच्छूविचर्चिकाः ॥ १ ॥

अर्थ-आकके पत्तोंके रसमें हलदी पीसकर काढा करे, सरसोंका तेल डालकर पकावे, जब तेल शेष रहे तब उतारलेवे. यह पामा, दाद, विचार्चिकाको दूरकरे।

नीलकाद्यंतैलम् ।

नीलकाकेतकीकन्दंभृङ्गराजकुरंटकः ॥ तथार्जुनस्यपुष्पाणिबीजकाक्षसमानपि ॥ १ ॥ कृष्णास्तिलाश्चतगरंसमूलंतगरंतथा॥ अयोरजःप्रियंगुश्चदाडिमत्वग्गुडूचिका ॥ २ ॥ त्रिफलापद्मकाष्ठंचकल्कैरेभिःपृथक्पृथक् ॥ कर्षमानंपचेत्तैलंत्रिफलाक्वाथसंयुतम् ॥ ३ ॥ भृङ्गराजरसेनैवसिद्धंकेशस्थिरीभवे॥ अकालपलितंकण्डुमिन्द्रलुप्तंचनाशयेत् ॥ ४ ॥

अर्थ—नीलवृक्ष (पत्रज) केतकीजड, भांगरा, पियाबाँसा, अर्जुनवृक्षके फूल, बिजैसार, बहेडा इनकी बराबर मात्रा ले, फिर काले तिलका तेल, तगर, कमलकी जड, लोहचूरा, प्रियंगू, अनारकी छाल, गिलोय, त्रिफला, पद्माख इन सबको चार २ टंक लेकर तेलमें पकावे, फिर त्रिफला, काढा, भांगरेका रस डालकर पकावे जब तेल रहजाय तब उतारलेवे इसके लगानेसे बाल स्थिर होवें और जवानीमें बाल सफेद होजायँ तो काले होवें, खाज होनेसे बाल उडजांय तो फिर आवें ॥

रोमशातनेनाडीव्रणादौक्षारादितैलम् ।

शुक्तिशम्बूकशंखानांदीर्घवृन्तान्समाक्षिकान् ॥ दुग्धक्षारंसमादायखरमूत्रेणभावयेत् ॥ १ ॥ क्षाराष्टभागंविपचेत्तैलंसर्षपजंबुधः ॥ इदमन्तःपुरेदेयंतैलमात्रेणपूजितम् ॥ २ ॥ बिन्दुरेकःपतेद्यत्रतत्ररोमपुनर्नहि ॥ इदंनाडीव्रणेतैलमश्विभ्यामेवनिर्मितम् ॥३॥ अर्शांसिकुष्ठरोगाणिपामादद्रूविचर्चिका ॥ क्षारतैलमिदंश्रेष्ठंसर्वकेशहरं परम् ॥ ४ ॥

अर्थ—सींप, घोंघा, बड़ाशंख, भानामकडु इनको गरम कर गधेके पेशाबमें बुझावे, आठ भाग क्षारको एक भाग सरसोंके तेलमें पकावे, जब तेल शेष रहे तब उतार लेवे यह तेल अन्तःपरमें देय एक बूँद डालनेसे रोग दूर होवें नाडी

व्रणके निमित्त यह तैल अश्विनीकुमारने कहाहै अर्श, १८ प्रकारका कोढ, पामा, दाद आदिका नाशकरे यह क्षारतेल श्रेष्ठ है. संपूर्ण बालोंको दूरकरताहै।

स्तनविकारेकासीसादितैलम् ।

कासीसतुरगगंधासांबरगजपिप्पलीविपक्केन ॥ तैलेनयान्तिवृद्धिं स्तनकर्णवरांगलिंगानि ॥ १ ॥ कटीतटनिकुंजेषुसंस्थितोवातकुंजरः ॥ एरण्डतैलसिंहस्यगंधमाघ्रायगच्छति ॥ २ ॥

अर्थ—कसीस, असगंध, लोध, गजपीपल इनको तेलमें डालकर पकावे जब तेल मात्र रहजाय तब उतारलेय इसके मलनेसे स्त्रियोंके स्तन बढें, योनिवृद्धि, लिंगवृद्धि कमरमें दर्द करनेवाला वातरूपी हाथी एरंडतेलरूपसिंहकी गंध सूंघतेही भागता है ॥

इति तैलाधिकारःसमाप्तः ।

इति श्रीमन्नागपुरीयतपागच्छीयश्रीहर्षकीर्त्युपाध्यायसंकलिते श्रीयोगचिंतामणौ वैद्यकसारसंग्रहे तैलाधिकारे षष्ठोऽध्यायः समाप्तः ॥६॥

अथ सप्तमोऽध्यायःप्रारभ्यते ।

मिश्राधिकारः ।

गुग्गुलुःशंखकद्रावोगंधकंचशिलाजतु ॥ स्वर्णताम्रादिवंगादिसारमण्डूरमारणम् ॥ १ ॥ अभ्रकंतस्यसत्त्वंचपारदंतालकंतथा ॥ नागताम्रंचमाक्षीकंमनःशिलादिशोधनम् ॥२॥ रसास्तथासवारिष्टलेपाश्चमल्लमागुदम् ॥ रक्तस्रावंचनस्यंचविरेचोवमनंतथा ॥ ३ ॥ स्वेदबंधेरणोद्भूलरोष्टगंडूषधूपवत् ॥ तक्रपानकटीरोहा हिमाघामाश्चमुद्गकैः (?) ॥४॥ केचित्साधारणायोगाःकेचित्कायचिकित्सकाः ॥ वंध्यौषधंतथाकर्मविपाकंकिंचिदुच्यते ॥५॥ ज्वरादिरोगसंख्याचनाडीमूत्रपरीक्षणम् ॥ नेत्रास्यरसनाज्ञानंपरीक्षामात्रयासह ॥ ६ ॥ राजप्रशस्तिरध्यायेसप्तमेपरिकीर्त्तिता: ॥ ७ ॥

अर्थ—इसमें इतनी चीजें कहेंगे, योगराजगूगल आदि १, शंखद्रावादि २, गंधकशोधन ३, शिलाजीतशोधन ४, सुवर्ण ५, तांबा ६, वंगादिमारण, ७, मंडूरमारण ८, अभ्रक ९, अभ्रकसत्व १०, पारदशोधन तथा मारण ११, हरतालशोधनमारण १२, शीसाशोधनमारण १३, सोनारूपामक्खी-शोधनमारण १४, मनसिलशोधन १५, रसक्रिया १६, आसव १७, अरिष्ट १८, लेप १९, मलहम २०, रुधिरस्राव २१, नस्य २२, विरेचन २३, वमन २४, स्वेदक्रिया २५, वधेरण २६, उद्धूलन २७, रोटीबांधना २८, कुल्ला करना २९, धूपदेना ३०, तक्रपान ३१, कटिरोह ३२, हिम ३३, घाम ३४, मधुरलवण ३५, कुष्ठसाधारणयोग ३६, कायचिकित्सा ३७, बंध्या-औषध ३८, कर्मविपाक ३९, ज्वरादिरोगोंकी गिनती ४०, मूत्रपरीक्षा ४१, नेत्रज्ञान ४२, मुखज्ञान ४३, जिह्वाज्ञान ४४, मात्राकी परीक्षा ४५, राज-प्रशंसा ४६, ग्रंथकी तारीफ ४७, यह सातवें अध्यायमें कही हैं ॥ ७ ॥

प्रथमं गुग्गुलुप्रकरणम् ।

तत्रवातव्याधौगुग्गुलुप्रकरणम् ।

पिप्पलीपिप्पलीमूलचव्यचित्रकनागरैः॥ घृष्टंहिंग्वजमोदाचस-र्षपाजीरकद्वयम् ॥१॥ रेणुकेन्द्रयवापाठाविडङ्गगजपिप्पली ॥ कटुकातिविषाभार्ङ्गीवचामौर्वातिभागतः ॥ २ ॥ प्रत्येकंशाण-मात्राणिद्रव्याणीमानिविंशतिः ॥ द्रव्येभ्यःसकलेभ्यश्चत्रिफला द्विगुणाभवेत् ॥३॥ एभिश्चूर्णीकृतैःसर्वैःसमोदेयस्तुगुग्गुलुः ॥ घृतेनपिण्डंसंकुट्यधारयेद्घृतभाजने ॥४॥ गुटिकांशाणमात्रा-न्तुकृत्वाग्राह्यायथोचिता ॥ गुग्गुलुर्योगराजोयंत्रिदोषघ्नोरसा-यनम् ॥ ५ ॥ मैथुनाहारपानानांत्यागोनैवात्रविद्यते ॥ सर्वा-न्वातामयान्कुष्ठानर्शांसिग्रहणीगदान् ॥ ६ ॥ प्रमेहंवातरक्तंच नाभिशूलंभगन्दरम् ॥ उदावर्त्तंक्षयंगुल्ममपस्मारमुरोग्रहम्॥७॥ मन्दाग्निंश्वासकासौचनाशयेदरुचिंतथा ॥ रेतोदोषहरःपुंसोरजो दोषहरःस्त्रियाः ॥ ८ ॥ [illegible] ॥

रास्नादिक्काथसंयुक्तोविविधंहन्तिमारुतम् ॥ ९ ॥ काकोल्यादि शृतात्पित्तंकफमारग्वधादिना ॥ दार्वीशृतेनमेहांश्चगोमूत्रेणच पाण्डुताम् ॥ १० ॥ मेदोवृद्धिंचमधुनाकुष्ठंनिंबशृतेनच ॥ छिन्नाक्काथेनवातास्रंशोफंशूलंकफामयान् ॥ ११ ॥ पाटलाक्काथसहितोविषंमूषकजंजयेत् ॥ त्रिफालाक्काथसहितोनेत्रार्तिंहन्तिदारुणाम् ॥ १२ ॥ पुनर्नवादिक्काथेनहन्यात्सर्वोदराणिच ॥

अर्थ-पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ, भूनीहींग, अजमोदा, सरसा, दोनोंजीरे, संभालू, इन्द्रायण, पाढ, वायविडंग, गजपीपल, कुटकी, अतीस, भारंगी, वच, मरोडफली इन २१ दवाइयोंकी जुदी २ मात्रा एक २ टंक और इन सबसे दूना त्रिफला इन सबका चूर्ण कर सबके बराबर शुद्धगूगल डाले और घीमें सानकर सबकी गोली बनाय चिकने बर्तनमें रखदेवे, गोली टंक दोके प्रमाण सेवन करे, यह योगराजगूगल संपूर्ण वातरोगोंको, कोढ, अर्श, संग्रहणी, प्रमेह, वातरक्त, नाभिशूल, भगंदर, उदावर्त, क्षयी, गुल्म, मृगी, उरग्रह, मन्दाग्नि, श्वास, खांसी, अरुचि, वीर्य्यगत दोष, स्त्रियोंका प्रदर दूर करे. पुरुषोंके सन्तान उत्पत्ति करे सर्व त्रिदोषोंका नाश करै रसायन है और मैथुन, आहार, पानका कुछ परहेज नहीं है. वंध्या पुत्रवती होय और रास्नाके काढेके साथ ले तो बहुत प्रकारके वातरोग नाश होवें और कङ्कोलीके काढेके साथ लेय तौ पित्त दूर होवै, अमलतासके काढेके साथ लेय तौ कफ नाश होवे, दारुहलदीके काढेके साथ लेनेसे प्रमेह दूर होय, गोमूत्रसे लेय तौ पांडुरोग जाय, शहदके साथ लेय तो मेदरोग दूर होय, नींबकी छालके काढेके साथ लेय तौ १८ प्रकारका कोढ नाश होय, गिलोयके काढेके साथ लेय तौ आमवात, सूजन, शूल, कफ दूर होवें, पाढरीके साथ उदरविष जाय, त्रिफलाके काढेके साथ नेत्रदरद जाय और सोंठके साथ सम्पूर्ण उदररोग नाश होवें ।

अन्यपाठ ।

गुभाङ्गीवचान्वितैः ॥ १ ॥ सर्षपातिविषाजाजीजीवकारेणुकान्वितैः ॥ गजकृष्णाजमोदाचमूर्वाकटुकमिश्रितम् ॥ २ ॥ समभागान्वितैरेतैस्त्रिफलाद्विगुणा भवेत्॥ त्रिफलासहितैरेतैःसमभागस्तुगुग्गुलुः॥ ३ गुग्गुलस्यसमंक्षीरंक्षीरादर्द्धंचसर्पिषा ॥ सर्पिःषोडशगोमूत्रंसाधितंगुग्गुलीसह ॥ ४ ॥ त्रिफलासममांडूरं लोहंचैवंचतुर्गुणम् ॥ मधुनापरिप्लुतंचैवभेषजंतत्प्रकारयेत् ५ योगराजइतिख्यातोभक्षयेत्प्रातरुत्थितः ॥ अर्शांसिवातगुल्मं चपाण्डुरोगमरोचकम् ॥६॥ नाभिशूलमुदावर्तंप्रमेहान्वातशोणितम् ॥ भगन्दरंक्षयंकुष्ठंहृद्रोगंग्रहणीगुदम् ॥ ७ ॥ महान्तमग्निसादंचश्वासंकासंतथैवच ॥ रेतोदोषाश्चयेपुंसांयोनिदोषाश्चयोषिताम्॥८॥ निहंत्युदायुधान्सर्वान्दुर्वारान्त्रात्रसंशयः ॥ अस्मिन्नपरिहारस्तुपानभोजनमैथुनम् ॥ ९ ॥

अर्थ–पीपल, पीपलामूल, चव्य, चीता, सोंठ, पाढ, वायविडंग, इंद्रजौ, भुनीहींग, भारंगी, वच, सरसों, अतीस, जावित्री, दोनोंजीरे, सँभालू, गजपीपल, अजमोद, मरोड़फली, कुटकी इनकी समान मात्रा लेवे और सबसे दूना त्रिफला और सबके बराबर शुद्ध गूगल, गूगलके बराबर गौका दूध, दूधसे आधा घी और घीसे सोलहगुणा गोमूत्र इन सबको मिलाकर पकावे. शहद डाले, त्रिफलाके बराबर मांडूर उससे दोगुणा सार, मांडूरसार डालकर काममें लावे इस योगराजगूगलको प्रातःकाल सेवन करनेसे अर्श, वायुगोला, पांडुरोग, अरुचि, नाभिशूल, उदावर्त्त, प्रमेह, वातरक्त, भगन्दर, क्षय, कोढ हृदयरोग, ग्रहणी, श्वास, खांसीको दूर करे अग्निदीपन करे वीर्य्यको बढावे. स्त्रियोंके योनिदोषोंको दूर करे इसपर खाना पीना कुछभी वर्जित नहीं है॥

किशोरगुग्गुल ।

त्रिफलायास्त्रयःप्रस्थाःप्रस्थैकममृताभवेत् ॥ संक्षिप्यलोहपा-

द्वस्त्रगालितम् ॥ तत्क्काथेक्षिपेच्छुद्धंगुग्गुलंप्रस्थसंमितम् ॥२॥ पुनःप्रदेयंतत्पात्रेदार्व्यासंचालयेन्मुहुः ॥ सान्द्रीभूतंचतज्ज्ञात्वागुडपाकसमाकृतिः ॥ ३ ॥ चूर्णीकृत्वाततस्तत्रद्रव्याणीमानिनिक्षिपेत्॥पथ्याद्विपलिकाज्ञेयागुडूचीपलकामिता॥४॥ षडक्षंत्र्यूषणंप्रोक्तंविडंगानिपलार्द्धकम् ॥ कर्षंकर्षंत्रिवृद्दंत्यौपीडितंस्निग्धभाजने ॥५॥गुटिकांशाणिकांकृत्वायुंज्यादोषाद्यपेक्षया ॥ अनुपानेभिषग्दद्यात्कोष्णंनीरंपयोथवा ॥ ६ ॥ मंजिष्टादिशृतेनापियुक्तंयुक्तिमतापरम् ॥ जयेत्सर्वाणिकुष्ठानि वातरक्तंत्रिदोषजम् ॥ ७ ॥ सर्वव्रणानिगुल्मांश्चप्रमेहपिडकास्तथा ॥ प्रमेहोदरमन्दाग्निकासश्वयथुपाण्डुताः ॥ ८ ॥ हन्ति सर्वामयानित्थंसुखयुक्तोरसायनः ॥ कैशोरिकाभिधानोयंकुर्यात्कैशोरकंबलम्॥९॥ अम्लंतीक्ष्णमजीर्णंचव्यवायंश्रममातपम् ॥ मद्यंरोषंत्यजेत्सम्यग्गुणार्थीपुरुसेवकः ॥ १० ॥

अर्थ—त्रिफला ४८ पल, गिलोय १० प्रस्थ इनको २४ सेर पानीमें डालकर लोहेके पात्रमें पकावे, जब आधापानी शेष रहे तब उतारकर कपडेमें छानलेय,फिर गुग्गुल १ प्रस्थ डालकर औटावे कलछीसे हिलाता जाय,जब गुडकी चासनीके समान गाढा होजाय तब उतार ठंढा कर निम्नलिखित औषधियोंको डाले हरड २ पल,गिलोय २पल,सोंठ,मिरच, पीपल २४ टंक, वायविडंग८ टंक, निसोत ४ टंक, जमालगोटेकी जड २ टंक फिर सबको मिलाकर एक २ टंकके प्रमाण गोलियां बनावे और चिकने बर्तनमें रख छोडे,दोष और बलाबल देखकर वैद्य गरम पानीके साथ अनुपान देवे अथवा दूध वा मजीठके काढ़ेसे देवे तो संपूर्ण रोग,वातरक्त,त्रिदोष सब प्रकारके व्रण, गुल्म,प्रमेह, फुन्सी,गांठ,१८ प्रकारका कोढ़, उदरविकार, मन्दाग्नि,खांसी,सूजन, पांडुरोग,आमवात इन रोगोंको नाश करे और यह किशोरगुग्गुल जवानकासा बल करे, खट्टा, चरपरा, अजीर्ण, श्रम, धूप, मद्य, रोष इनको त्याग करे जो अपनी इच्छा करे तो ॥

त्रिफलागुग्गुल ।

त्रिफलंत्रिफलाचूर्णंकृष्णाचूर्णपलोन्मितम् ॥ गुग्गुलंपञ्चपलिकं कुट्टयेत्सर्वमेकतः ॥ १ ॥ ततस्तुगुटिकांकृत्वाप्रयुंज्याद्बह्वचपेक्षया ॥ भगन्दरंगुल्मशोफमर्शांसिचविनाशयेत् ॥ २ ॥

अर्थ–त्रिफलाचूर्ण ३ पल, पीपल १ पल, गूगल ५ पल इन सबकं पीसकर गोली बनावे, यथायोग्य बल देखकर गोली देवे. भगन्दर,गुल्म सूजन और अर्शको दूर करे ॥

कांचनारगुग्गुलः ।

कांचनारत्वचोग्राह्याःपलानांदशकंबुधैः ॥ त्रिफलाषट्पलाकार्या त्रिकटुस्यात्पलत्रयम् ॥ १ ॥ पलैकंवरुणःकार्यएलात्वक्पत्रकंतथा ॥ प्रत्येकंकर्षमात्रंस्यात्सर्वानेकत्रचूर्णयेत् ॥ २ ॥ यावत्सर्वमिदंचूर्णंतावन्मात्रस्तुगुग्गुलः ॥ संकुट्यसर्वमेकत्रपिण्डंकृत्वा च धारयेत् ॥ ३ ॥ गुटिकाःशाणिकाःकृत्वाप्रातर्ग्राह्यंयथोचितम् ॥ गण्डमालांजयंत्युग्रामपचीमर्बुदंतथा ॥ ४ ॥ ग्रंथीन्व्रणानिगुल्मांश्चकुष्ठानिचभगन्दरम् ॥ प्रदेयश्चानुपानार्थंक्काथोमुण्डीतिकाभवः ॥ ५ ॥ क्काथःखदिरसारस्यपथ्याक्काथोयवोष्णकः ॥

अर्थ–कचनारकी छाल १० पल, त्रिफला ६ पल, सोंठ, मिरच पीपल ३ पल, बरना १ पल, इलायची, तज, तेजपात ४ टंक इन सबं बराबर गूगल डालकर गोली १ टंकके प्रमाण बनावे, प्रातःकाल बलाबल देखकर देवे तो गंडमाला, अपची, अर्बुद, गाँठ, व्रण, १८ प्रकारक कोढ, भगन्दरको हरे. अनुपान मुंडीके काढेके साथ देवे तथा खैरसारं काढ़के साथ देवे, तथा हरडके काढेके साथ देवे, वा गरम पानीसे दे ऊपर लिखे रोग दूर होवें ॥

गोक्षुरादिगुग्गुलः ।

अष्टाविंशतिसंख्यानिपलान्यानीयगोक्षुरान्॥ विपचेत्षड्गुणे

पेत् ॥ गुडपाकसमाकारंज्ञात्वातंतत्रनिक्षिपेत् ॥२॥ त्रिकटुत्रिफलामुस्तंचूर्णंतुपलसप्तकम् ॥ ततःपिण्डीकृतस्तस्यगुटिकामपियोजयेत् ॥ ३ ॥ हन्यात्प्रमेहंकृच्छ्रंचप्रदरंमूत्रघातकम् ॥ वातास्रंवातरक्तंचशुक्रदोषंतथाश्मरीम् ॥ ४ ॥

अर्थ—गोखरू २८ पल, छःगुणे पानीमें औटावे, जब आधा पानी रहजाय तब उतार लेवे, छानकर ८ पल गूगल डाले जब गाढा होजाय तब उतारलेवे, और ठंढा होजानेपर इन औषधियोंको डाले. सोंठ, मिर्च, पीपल, त्रिफला, मोथा ७ पलका चूर्णकर डाले सबको मिलाकर एक टंक प्रमाण गोली बनावे. यह औषधि प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, प्रदर, वातरक्त, वीर्यदोष, पथरी आदिको दूर करती है ॥

सिंहनादगुग्गुल ।

फलत्रिकोशीरविडंगदन्तीपुनर्नवांभोधरवह्निविश्वा ॥ रास्नामृताभीरुसुराह्वदार्वीसग्रंथिकैलेभकणापलांशैः ॥ १ ॥ द्रोणांभसोगुग्गुलतुल्यभागैरर्द्धंशृतःसूक्ष्मपटान्तपूतैः ॥ भूयःशृतैरंगुलिधेयरूपोलेहःसुशीतोभुविभाजनस्थः ॥ २ ॥ सचूर्णितस्त्र्यूषणजन्तुहंत्रीछिन्नोद्भवादार्व्यभयात्रिजातैः ॥ त्रिवृत्समैरक्षमितंविचूर्णं निधायगुप्तं यवधान्यपूते ॥ ३ ॥ मासेस्थितंप्राश्यशुभेह्निशुद्धःप्रयात्यरोगंरुजितोमनुष्यः॥शोफोदरप्लीहरुजोविकारनाभिव्रणार्शोग्रहणीप्रदोषैः ॥ ४ ॥ सवातरक्तैः सकलैश्चकुष्ठैर्विमुच्यतेपाण्डुगदैश्चघोरैः ॥ प्रभंजनोरोगमहातरूणां विवर्द्धनोरोगबलायुषांच ॥ ५ ॥ नासाध्यमस्तीतिविकारजातंख्यातस्तुएषोभुवि सिंहनादः ॥ ६ ॥

अर्थ—त्रिफला, खस, वायविडंग, सोंठ, मोथा, दंती, चीता, रास्ना, गिलोय, कटसेना, देवदारु, हलदी, पीपलामूल, इलायची, गजपीपल, सोलह सेर पानी सब औषधियोंके बराबर गूगल इनको मिलाके औटावे. जब आधा पानी रहजाय तब छान लेवे. फिर मन्दाग्निसे औटाकर जब गाढा होजाय तब उतारलेवे, और इन औषधियोंको डाले. सोंठ, मिर्च, पीपल,

वायविडंग, गिलोय, दारुहलदी, हरड, तज, तेजपात, इलायची, निसोत इनकी समान मात्रा १४ टंक चूर्णकर डाले, फिर चिकने बासनमें भरकर रख देवे, यव तथा धानमें एक महीना राखै, फिर अच्छा दिन देखकर सेवन करे तो ये रोग नाश होवें सूजन, उदररोग, प्लीहा, दरद, नाभीके व्रण, बवासीर, संग्रहणी वातरक्त, संपूर्ण कोढ, पांडुरोग, रोगरूपी वृक्षोंका यह छेदन करनेवाला है॥

प्रमेहेमूत्रकृच्छ्रे चन्द्रप्रभागुग्गुलः ।

विल्वंव्योषफलत्रिकंत्रिलवणंद्विक्षारचव्यानिचश्यामापिप्पलमूलमुस्तककणामाध्वीकधान्यात्वचः ॥ षड्ग्रंथामरदारुवारणकणाभूनिम्बदन्तीनिशापत्रैलातिविषाःपिचुप्रमितयोलोहस्यकर्षाष्टकम् ॥ १ ॥ त्वक्क्षीरंपलिकांपरंदशजलान्यष्टौशिलाजिन्मतौमत्स्यंडीकुडवोन्मितेतिपुटिकांसंयोज्यकुर्य्याद्भिषक् ॥ तत्रैकांप्रतिवासरंसहविषाक्षौद्रेणलिह्यादिमांतप्तंमस्तुपयोरसंमधुयुतंतावत्पिबेन्मात्रया ॥ २ ॥ अर्शांसिप्रदरंज्वरं सुविषमंनाडीव्रणानश्मरींकृच्छ्रंविद्रधिमग्निमांद्यमुदरंपाण्डामयंकामलाम् ॥ यक्ष्माणंसभगन्दरंसपिडिकागुल्मप्रमेहारुचीरेतोदोषमुरःक्षतंकफमरुत्पित्तार्तिमुग्रांजयेत् ॥ ३ ॥ वृद्धंसंजनयेद्युवानमसमोजस्कंबलंवर्द्धयेदेतस्यांननिषिद्धमंगमसकृन्नेच्छागमंमैथुनम् ॥ विख्यातागुटिकेयमंचिततराचन्द्रप्रभानामतश्चन्द्रानन्दकरीकरोतिरुचिरांचन्द्रेणतुल्यांतनुम् ॥ ४ ॥

अर्थ—बेल, सोंठ, मिर्च, पीपल, त्रिफला, सैंधानोंन, कालानोंन, कचनोंन, सज्जीखार, जवाखार, चव्य, निसोत, पीपल, पीपलामूल, मोथा, चिरायता, जमालगोटाकी जड, हलदी, तेजपात, इलायची, सोनामक्खी, धनियां, तज, अजमोद, देवदारु, गजपीपल, अतीस, नींब चार टंक, लोहसार ३२ टंक, वंशलोचन १ पल, गूगल १६० टंक, शिलाजीत ८ पल, मिश्री खांड ६४ टंक इन सबको इकट्ठा कर गोली एक टंक प्रमाण बनाकर घृतके

संग नित्य सेवन करे अथवा शहदके साथ सेवन करे, मट्ठा, दूध शहद, ऊपरसे पीवे, यथाबल देख लेवे, बवासीर, प्रदर, विषमज्वर, नसोंके फोडे, फुन्सी, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, मन्दाग्नि, पेटका दर्द, पांडुरोग, कमलवायु, भगन्दर, गांठ, प्रमेह, बीसप्रकारकी, अरुचि, वीर्यदोष, उरःक्षत, कफ, वात, पित्त इनकी पीडाको जीते, बुड्ढेको जवान करे जब इस औषधिको सेवन करे तब मैथुनको न छोडदेवे यह संपूर्ण रोगोंको दूर करताहै ॥

शंखद्राव ।

स्फटिकाचयवक्षारंसोरोथनवसादरम् ॥ समभागैरिमाभिश्च शंखद्रावोरसोमतः॥ १ ॥ काचकूपिद्रवंनीत्वादत्त्वाकर्पटमृत्तिकाम्॥एकस्यविवरंकृत्वाभृत्वाचान्याःसदौषधीः ॥ २॥ गजकुम्भास्ययंत्रेणचुल्यांचखर्परोपरि॥धृत्वादत्त्वाचमन्दाग्निंतद्रसंकाचभाजने॥३॥ गृहीत्वास्थापयेत्सम्यग्ग्रहणीयंशुभेदिने॥शंखोद्रवतितन्मध्येशंखद्रावस्ततोमतः॥४॥ कुम्भकेनप्रमुंचेतजिह्वाग्रेतालुकोपरि ॥ दन्ताःपतंतिलग्नेस्मिञ्छेषरोगस्यकाकथा ॥५॥ अखिलोदररोगाणांनिहंत्यागुल्मकस्यच॥कालिंजंप्लीहकंहन्तिहृद्रोगंग्रहणींयकृत्॥ ६ ॥उर्द्धंकासंकफंश्वासंह्यामवातं विनाशयेत् ॥ कांतिंनीरोगतांपुष्टिंजठराग्निंविवर्धयेत् ॥ ७ ॥

अर्थ—फिटकरी, यवक्षार, शोरा, नौसादर इन सबको बराबर लेकर कांचकी दो शीशी लेवे. कपरमिट्टीकर एकमें दवा भर देवे फिर गजकुंभकर चूल्हेपर चढादेवे मन्दाग्नि देवे जब उसका रस दूसरी शीशीमें आजाय, फिर लेकर अच्छी जगह रक्खे और अच्छा दिन देखकर सेवन करे इसमें शंख तथा कौडी डालनेसे भस्म होजाती है इसीसे इसको शंखद्राव कहते हैं ॥ इसकी मात्रा रूईके फोहेमें लगाकर जबानपर लगा देवे, और जो दांतोंमें लग जायगा तो दांत गिरजावेंगे और संपूर्ण उदररोगोंको और गुल्मको नाश करै, प्लीहा, हृद्रोग, ग्रहणी, यकृत, ऊर्द्धश्वास, कफ, खांसी, आमवात इनको दूर करे सुन्दर काया करे पुष्टि करे जठराग्निको बढावे ॥

गंधकविधि ।

लोहपात्रेविनिक्षिप्यघृतमग्नौप्रतापयेत् ॥ तप्तेघृतेतत्समानंक्षिप्रंगंधकजंरसः ॥ १ ॥ गलितंगंधकंज्ञात्वादुग्धमध्येविनिक्षिपेत् ॥ एवं गंधकशुद्धिःस्यातसर्वकार्येषुयोजयेत् ॥ २ ॥

अर्थ—लोहेके पात्रमें घृत डालकर तडकावे जब खूब गरम होजाय, तब गंधक पीसकर डालदेय जब गंधक गलजाय तब घीसहित दूधमें डालदेय. यह शुद्ध गंधक सब काममें लावे ॥

पुनःश्लोकः ।

दुग्धेघृतेनिम्बरसेभृंगराजरसेथवा ॥ गंधकंशोधयेत्प्राज्ञोदोलायंत्रेणवाससा ॥ १ ॥ सदुग्धभाण्डेपिपटस्थितोयंशुद्धोभवेत्कूर्मपटेनगंधः ॥ सदुग्धभाण्डस्यमुखेसुवस्त्रंबद्धंक्षिपेद्गंधकसूक्ष्मखण्डाम् ॥ २ ॥ विमुद्रयित्वासमितादिनातन्मंदाग्निनायामयुतं पचेच्च ॥ ३ ॥ शोधितंगंधकंयावत्तावतीत्रिफलाभवेत् ॥ द्वयोस्तुल्यासितादेयाकर्षार्द्धंखादयेत्सुधीः ॥ ४ ॥ कण्डूविचर्चिकादद्रूसिध्ममण्डलकुष्ठनुत् ॥ अम्लक्षारंहिंगुतैलमग्नितापंचवर्जयेत् ॥ ५ ॥

अर्थ—दूध, घी, नींबका रस, भांगरेका रस, प्रत्येकमें गंधक शोधे एकहांडीमें गंधक कपडेकी पोटली बनाय दोलायंत्रमें मन्दाग्निसे पकाके फिर दूध हांडीमें भरकर ऊपर कपडा बांधकर गंधक रख मन्दाग्नि देय, कूर्मपुटसे इस प्रकार गंधक शुद्ध होवे, फिर गंधक सूक्ष्म पीसकर, कपडेमें बांधकर सूक्ष्म वस्त्रकर मुद्राकर चार प्रहर यंत्रमें राखे, फिर दोप्रहर मन्दाग्नि देवे, जब शुद्ध होजाय तब त्रिफलाका चूर्ण, गंधक, त्रिफलाकी बराबर मिश्री टंक २ मिलाकर खाय. खाज, विचर्चिका, दाद, सिध्म, मंडल, कोढ, दूर करे. परहेज खट्टा, खारी, हींग, तेल अग्निका तापना बंद करे ॥

शिलाजतुसत्त्व ।

शिलाजतुसमानीयग्रीष्मतप्तशिलाजतु ॥ गोदुग्धैस्त्रिफलाक्वा-

अर्थ—शिलाजीतको गरमीके दिनोंमें गौके दूधसे, त्रिफलाके काढेसे, भांगरेके रससे मर्दन करे, फिर एक २ दिन पुट देता जाय और धूपमें सुखाता जाय तो शिलाजीत शुद्ध होवे ॥

पुनःश्लोक ।

मुख्यंशिलाजतुशिलासूक्ष्मखण्डंप्रकल्पयेत्॥निक्षिप्यात्युष्णपानीयेयामैकंस्थापयेत्सुधीः ॥१॥मर्दयित्वाततोनीरंगृह्णीयाद्वस्त्रगालितम् ॥ स्थापयित्वाचमृत्पात्रेधारयेदातपेपुनः ॥२॥ आलोडयचपुनस्तस्मादुपरिस्थंघनंनयेत् ॥ अधःस्थितंचयच्छेषंतस्मिन्नीरंविनिक्षिपेत् ॥ ३ ॥ विमर्द्यधारयेद्धर्मेपूर्ववच्चैवतंनयेत् ॥ एवंपुनःपुननींत्वाद्विमासाभ्यांशिलाजतु ॥ ४ ॥ भूयात्कार्यक्षमंवह्नौक्षिप्तंलिंगोपमंभवेत् ॥ निर्धूमंचततःशुद्धंसर्वकर्मसुयोजयेत् ॥ ५ ॥ एलापिप्पलिसंयुक्तंमाषमात्रंतुभक्षयेत् ॥ मूत्रकृच्छ्रंमूत्ररोधंहन्तिमेहंतथाक्षयम् ॥ ६ ॥

अर्थ—शिलाजीतके छोटे२टुकडे कर एक प्रहर पानीमें भिगोवे, फिर मलकर कपडेमें छानलेवे और मिट्टीके पात्रमें डालकर धूपमें रख देवे, फिर मथे जो ऊपर मलाई आवे उसे लेताजाय जो पानी नीचे शेष रहे उसे फेंक देवे, ऐसे ही मलताजाय और धूपमें रख २कर ऊपरकी मलाई लेताजाय और नीचेको फेंकता जाय, इसीतरह दोमहीने शिलाजीतको शोधन करे, और अग्निपर रक्खे तो लंबासा आकार होजाय और धुआं न देवे तो जाने शुद्ध होगया इस शिलाजीतको सब कामोंमें वर्ते इलायची और पीपलके साथ एक महीने खाय तो मूत्रकृच्छ्र, मूत्रका रुकना, क्षय इनको दूर करे ॥

स्वर्णादिधातुमारणम् ।

तैलेतक्रेगवांमूत्रेकांजिकेचकुलत्थके । तप्ततप्तानिसिंचेतद्रावेद्रावेतुसप्तधा ॥ १ ॥ सुवर्णतारताम्राणांपत्राण्यग्नौप्रतापयेत् ॥ प्रसिंचेत्तप्ततप्तानितैलेतक्रेचसंस्थिते ॥ २ ॥ गोमूत्रेचकुल-

त्थानां कषायेचत्रिधात्रिधा ॥ एवंस्वर्णादिलोहानांविशुद्धिः संप्रजायते ॥ ३ ॥

अर्थ–तेल, मठा, गोमूत्र, कांजी, कुलथी इन प्रत्येकमें धातुको तपा २ कर सात २ बार बुझावे. सोना, चांदी, तांबा इनके पत्र कर तपा २ कर तेल, मठा, कांजीमें बुझावे, और गोमूत्र, कुलथीके काढेमें तीन २ बार बूझावे, इसप्रकार लोहे, सोने आदिकी शुद्धि होती है ॥

मृगांकविधिः ।

स्वर्णस्यद्विगुणंसूतमम्लेनसहमर्दयेत् ॥ तद्गोलकसमंगन्धंनिदध्यादधरोत्तरम् ॥ १ ॥ गोलकंचततोरुद्ध्वाशरावदृढसंपुटे ॥ त्रिंशद्वनोपलैर्दद्यात्पुटेनैवचतुर्दश ॥ २ ॥ निरुत्थंजायतेभस्म गंधोदेयःपुनःपुनः ॥ २ ॥

अर्थ–सोनेसे दुगुना पारा नींबूके रसमें घोटे, फिर गोली बनावे और उस गोलीके बराबर ऊपर नीचे गंधकका संपुट देय. फिर दो शरावोंमें रखकर सात कपरमिट्टी और ३० आरने उपलोंकी अग्नि देवे. जब भले प्रकार निर्धूम होजावे. इसी तरह चौदह पुट देय और बार २ गंधक डाले तो निरुत्थ भस्म होवे ॥

पुनःश्लोक ।

भूर्जवत्सूक्ष्मपत्राणिहेम्नःसूक्ष्माणिकारयेत् ॥ तुल्यानितानिसूतेनखल्वेक्षिप्त्वाविमर्दयेत् ॥१॥ कांचनाररसेनैवज्वालामुख्यारसेनवा ॥ लांगल्यावारसैस्तावद्यावद्भवतिपिष्टकम् ॥२॥ तथा हेम्नश्चतुर्थांशटंकणंतत्रनिक्षिपेत् ॥ पिष्टमौक्तिकचूर्णंचस्वर्णाद्द्विगुणितंक्षिपेत् ॥ ३ ॥ तेषुसर्वसमंगन्धंक्षिप्त्वाचैकत्रमर्दयेत् ॥ तेषांकृत्वाततोगोलंवासोभिःपरिवेष्टयेत् ॥४॥ पश्चान्मृदावेष्टयित्वाशोषयित्वाचसाधयेत्॥शरावसंपुटस्यांतेतत्रमुद्रांप्रयोज

शोषयित्वाबहुभिर्गोमयैःपचेत् ॥ ६ ॥ ततः शीतेसमाहृत्यगंधंसूतसमंक्षिपेत् ॥धृत्वाचपूर्ववत्खल्वेपचेद्गजपुटेनच॥७॥स्वांगशीतंततोनीत्वागुंजायुग्मंप्रयोजयेत् ॥ अष्टाभिर्मरिचैर्युक्ताकृष्णात्रयंयुतातथा ॥ ८ ॥ विलोक्यदेयादोषादीनेकैकारसरक्तिका॥सर्पिषामधुनाचापिदेयापथ्यंचभोजयेत्॥९॥ मृगांकोयंरसोहन्यात्कृशत्वंबलहानिताम् ॥ श्लेष्माणंग्रहणींकासंश्वासं क्षयमरोचकम्॥१०॥अग्निंचकुरुतेदीप्तंकफवातान्नियच्छति ११॥

अर्थ-सुवर्णका भोजपत्रके समान सूक्ष्म पत्र करे और उतनाही पारा डालकर खरल करे फिर कचनारका रस,ज्वालामुखीका रस,कलयारीका रस इनमें मर्दन करे जबतक पिट्ठीके समान न हो तबतक.फिर सोनेसे चौथाई सुहागा डाले,फिर सोनेसे दुगुना मोतियोंका चूर्ण डालकर और सबकेबराबर गंधक डालकर मर्दन करे.फिर सबका गोला बनावे फिर उसपर कपडा लपेट पीछे कपरमिट्टीकर सुखा लेवे,जब सूखजाय तब दो शंखोंमें रखकर कपरमिट्टीकर सुखालेवे फिर एक हांडीमें ऊपर नीचे नोंन भर बीचमें रख पुट कपरमिट्टी कर सुखालेवे फिर खूब आरने उपलोंकी आंच देवे जब ठंढा होजाय तब निकालकर गंधक,पारा बराबर डालकर पूर्वोक्त रीतिसे मर्दन करे,फिर गजपुटकी आंच देवे. जब खूब ठंढा होजाय तब निकाल लेवे, आठ मिर्चके योगमें दोरत्तीके प्रमाण देय.अथवा तीन पीपलसयुक्त देय और जैसा दोष देखे वैसा दे. वा एक रत्ती दे,बलाबल देखकर घी,शहद,पथ्यमें देवे.यह मृगांकरस कृशता,बलहानि,श्लेष्म,ग्रहणी,खांसी,श्वास,क्षय और अरुचिको दूर करे और अग्निको दीप्त करे और कफ,वातका नाश करे ॥

पुनःश्लोक ।

शुद्धंसूतंस्वर्णपत्रंजम्बीरेमर्दयेत्समम् ॥ तयोर्द्विगुणितामुक्तास्त्रिभिस्तुल्यंतुगंधकम् ॥१॥ टंकणंगन्धकादूर्ध्वंसर्वंजम्बीरजैर्द्रवैः॥मर्द्दयामेनतद्दोलंवस्त्रेबद्धाविपाचयेत्॥२॥दोलायंत्रेणपाता-

लेयामादुद्धृत्यशोषयेत् ॥ ततोमृन्मयभाण्डांतर्लवणंचांगुली-द्वयम्॥३॥क्षिप्त्वातद्विक्षिपेत्पूर्वगोलकंवस्त्रवेष्टितम् ॥ लवणैः पूरयेद्भाण्डमुद्रयित्वादिनंपचेत् ॥ ४ ॥ चुल्ल्यांक्रमाग्निनासि-द्धोमृगांकोयंमहारसः ॥ राजरोगनिवृत्त्यर्थंदेयोगुंजामितो वृते ॥ ५ ॥ दशभिर्मरिचैःसार्द्धंपिप्पल्यामधुनापिवा ॥

अर्थ–शुद्धपारा, सुवर्णपत्र, बराबर लेवे और जंबीरीके रसमें मर्दन कर इनमें दूने मोती लेवे, और सबके बराबर गंधक, गंधकसे आधा सुहागा, इन सबको जंबीरीके रसमें एक प्रहर घोटकर गोला बनावे फिर ऊपर कपडा लपेटकर दोलायंत्र पातालयंत्रमें पकावे, कांजीमें पकावै, फिर एक प्रहरके बाद सुखावे, फिर मिट्टीके बर्तनमें दो अंगुल नोंन ऊपर और दो अंगुल नोंन नीचे भरकर कपरमिट्टी कर एक दिन चूल्हेपर अग्नि देय,क्रम (मंद,मध्य,तीक्ष्ण)से यह मृगांक महारस सिद्ध होवे यह रोगोंका नाश करे, एक रत्ती घीके साथ देय अथवा दश मिर्च,अथवा पीपल शहदके साथदेवे॥

राजमृगांकरस ।

भस्ममूतत्रयोभागाभागैकंभस्महेमकम् ॥ मृततास्रस्यभागैकं शिलागंधकतालकम् ॥१॥ प्रतिभागद्वयंशुद्धमेकीकृत्यविचूर्ण-यत् ॥ वराटंपूरयेत्तेनछागीक्षीरेणटंकणम् ॥ २ ॥ क्षिप्त्वातेन मुखंरुद्धामृद्भाण्डेतन्निरोधयेत् ॥ शुष्कंगजपुटेपक्त्वाचूर्णये-त्स्वांगशीतलम् ॥ ३ ॥ रसोराजमृगांकोयंचतुर्गुंजःक्षयापहः॥ दशपिप्पलिकाक्षौद्रैएकोनत्रिंशद्गुणैः ॥ ४ ॥

अर्थ–पारेकी भस्म तीनभाग, सोनेकी भस्म एक भाग, तांबेकी भस्म एक भाग, शिलाजीत, गंधक शुद्ध, हरिताल ये सब दो २ भाग सबको मिला चूर्ण कर कौडियोंमें भरदेवे, फिर बकरीके दूध और सुहागेसे इनका मुह बंद करदेवे, फिर मिट्टीके पात्रमें भरकर कपरमिट्टीकर सुखालेवे, फिर गजपुटकी आंच देवे. जब शीतल होजांय तब निकाले,यह राजमृगांकरस चार रत्ती बलाबल देखकर देवे, क्षयरोगका नाश करे, पीपल १०,शहद, मिरच २१ क्षयादि रोगोंको नाश करे ॥

तांबामारणविधि ।

सूक्ष्माणितास्रपत्राणिकृत्वासंस्वेदयेद्बुधः ॥ वासरत्रयमम्लेनततःखल्वेविनिक्षिपेत् ॥ १ ॥ पादांशंसूतकंदत्त्वायाममम्लेनमर्दयेत्॥ ततउद्धृत्यपत्राणिलेपयेद्द्विगुणेनच ॥२॥ गंधकेनाम्लपृष्ठेनतस्यकुर्याच्चगोलकम् ॥ धृत्वातद्गोलकंभाण्डेशरावेण चरोधयेत् ॥ ३ ॥ वालुकाभिःप्रपूर्याथविभूतिलवणांबुभिः ॥ दत्वाभाण्डंमुखेमुद्रांततश्चुल्ल्यांविपाचयेत् ॥४॥ क्रमवृद्धाग्निनासम्यग्यावद्यामचतुष्टयम् ॥ स्वांगशीतलमुद्धृत्यमृततास्रशुंभवेत् ॥ ५ ॥

अर्थ—तांबेके सूक्ष्म पत्र कर शोधलेवे, फिर छाँछमें तीन दिन रख मर्दन करे फिर चौथाई पारा डालकर इमलीके रसमें एक प्रहर मर्दन करे, फेर तांबेके पत्र निकालकर और दुगुनी गंधक नींबूके रसमें घोटकर तांबेके पत्रोंपर लेपकर गोली बनावे. फिर दो सकोरोंके बीचमें गोली रखदेय, कपरोटीकर एक हांडीमें बालू वा नोंन भर बीचमें सरवा रखदेय हांडीको कपरमिट्टी कर चुल्हेपर चढावे अग्नि क्रमसे देवे पहले मन्दाग्नि पीछे मध्यम तत्पश्चात् तीक्ष्णाग्नि देवे प्रहर चार भलेप्रकार अग्नि देवे जब ठंढा होजाय तब निकाल लेवे यह तांबेश्वर रस है ॥

गुणाःश्लोकैः ।

ऊर्ध्वश्वासंकफंकासंहृद्रोगंपाडुतांक्षयम् ॥ जयेत्प्रमेहकुष्ठार्शःशोफशूलाग्निमन्दताम् ॥ १ ॥ अशुद्धंवातमुत्क्लेदंमूर्च्छादोषकरोतिच ॥ अपक्वंकांतिधातुघ्नंभ्रमशूलोष्मकुष्ठनुत् ॥ २ ॥ नविषंविषमित्याहुस्ताम्रंतुविषमुच्यते॥एकोदोषोविषताम्रेचाष्टौदोषाः प्रकीर्त्तिताः ॥ ३ ॥ भ्रमोमूर्च्छाविदाहश्चस्वेदःक्लेदस्तथा तमः ॥ अरुचिश्चित्तसंतापास्ताम्रेदोषाःप्रकीर्त्तिताः ॥ ४ ॥

अर्थ—ऊर्ध्वश्वास, कफ, खांसी, हृद्रोग, पांडुरोग, क्षय, प्रमेह, कोढ, अर्श, सूजन, शूल, मन्दाग्निको दूर करे और जो अशुद्ध रहजाय तो वात, उत्क्लेद, मूर्च्छा दोष करे, अपक्व धातुका नाशक, भ्रम, शूल, गरमी, कोढ़ करे,

विषहीको विष मत जानो, ताम्र विष है, विषमें एक दोष है, तांबेमें आठ दोष हैं भ्रम, मूर्च्छा, दाह, स्वेद, क्लेद, तम, अरुचि, चित्तसंताप, यह तांबेमें दोष हैं॥

वंगमारणविधिः ।

मृत्पात्रेद्रावितेवंगेचिंचाश्वत्थत्वचोरसः॥क्षिप्त्वाक्षिप्त्वाचतुर्थांशमयोदार्व्याप्रचालयेत् ॥ १ ॥ ततोद्धियाममात्रेणवंगभस्मप्रजायते ॥ प्रमेहदाहपाण्डुघ्नंपुष्टिकान्तिबलप्रदम् ॥ २ ॥

अर्थ—मिट्टीके ठीकरामें रांगको गलावे, इमली, पीपलकी छालका चूर्ण चौथाई डालकर लोहेकी कलछीसे चलावे, दो प्रहरमें रांगकी भस्म होजावेगी प्रमेह, दाह, पांडुरोगको दूर करे, और पुष्टि कान्ति बलकी देनेवाली है ॥

सीसामारणविधि ।

अश्वत्थचिंचात्वग्भस्मभस्मतुल्यामनःशिला॥ जम्बीरैरारनालैश्चपिष्ट्वारुद्धापुटेपचेत् ॥ १ ॥ स्वांगशीतंपुनःपिष्ट्वाविंशत्यंशशिलात्मकैः ॥नागसिन्दूरवर्णाभोम्रियतेसर्वकार्यकृत् ॥२॥

अर्थ—पीपलकी छाल, इमलीकी छाल इनकी भस्म करलेवे, और सीसेकी बराबर मनशिल लेय जंभीरीके रसमें कांजीके रसमें, पीसकर सीसेके पत्रके ऊपर लेप करे और अग्नि देय, जब ठंढा होजाय तब निकालेय, फिर वीस भाग मनसिल संपुट कर फूंके जब सिन्दूरकासा रंग होजाय, यह रस सब कार्योंको करै ॥

सारमारण ।

शुद्धंलोहभवंचूर्णंपातालगरुडीरसैः॥गोमूत्रत्रिफलाक्काथैमर्दयित्वाग्निनापुटेत् ॥१॥ अर्कदुग्धैःपुनःपिष्ट्वापुटेद्यामचतुष्टयम् ॥ पुनःकन्यारसैःपिष्ट्वापचेद्गजपुटेनच ॥ २ ॥ पुटत्रयंकुर्मायाश्च अर्कदुग्धेपुटत्रयम्॥ एवंसप्तपुटैर्मृत्युंलोहचूर्णमवाप्नुयात्॥ ३ ॥ यथायथाप्रदीयन्तेपुटास्तुबहवोयतः॥तथातथाविवर्द्धन्तेगुणा-

स्तरंगोलघुस्तोयेसमुत्तरतिहंसवत् ॥ ५ ॥ तावद्विचूर्णयेदेत-द्यावत्कज्जलसन्निभम् ॥ करोतिनिहितंनेत्रेनैवपीडांमनागपि ॥ ६ ॥ आयुःप्रदाताबलवीर्यकर्त्तारोगग्रहर्त्तामदनस्यकर्त्ता ॥ अयःसमानंनहिकिंचिदन्यद्रसायनंश्रेष्ठतमंहितंच ॥ ७ ॥

अर्थ—शुद्धलोहेके चूर्णको छिरहटीके रसमें मर्दन करै और गोमूत्र, त्रिफलाके काढेमें मर्दन करे. अग्नि देय, फिर आकके दूधमें चार प्रहरावना देवे, फिर ग्वारके पाठेके रसमें पीसकर गजपुटमें फूंके, फिर ग्वारपारमें तीन भावना देय और अर्कदूधमें ऐसे सातपुट देनेसे लोहा मरता है, और ज्यों २ जियादह पुट देय त्यों २ गुण बढते जातेहैं, वैद्य जबतक पुट ता रहै तबतक जलपर तैरे नहीं, और जबतक जलके समान न होय तबतक ट देता रहे नेत्रोंकी पीडा दूर करे, आयुका देनेवाला, वीर्य बढावे, रोगोंका ाश करे, कामोद्दीपन करे लोहके समान दूसरा रसायन नहीं है, श्रेष्ठ और हेतकारक है ॥

माण्डूरकरणम् ।

अक्षांगारेधमेत्तिकट्टंलोहजंतद्वांजलैः ॥ सिंचयेत्तप्ततंचसप्त-वारं पुनःपुनः ॥ १ ॥ चूर्णयित्वाततःक्वाथैर्द्विगुणैस्त्रिफलाभ-वेत् ॥ पचेत्ततश्चार्कदुग्धैर्माण्डूरंजायतेपरम् ॥ २ ॥ त्रिफला त्रिकटुर्मुस्ताग्निविडंगैश्चगुडेगुटी ॥ तक्रेणपीतमथवामासंवास-प्तसप्तकैः ॥ ३ ॥ ऊर्ध्वश्वासेपाण्डुरोगेशोफआमानिलेकृमौ ॥ मृद्भक्षितविकारेषुवारिरोगेचशस्यते ॥ ४ ॥

अर्थ—खैरसार, वा बहेडेकी लकडीके कोयलोंमें लोहेकेकीटको तपावेऔर गोमूत्रमें सातबार बुझावे पीछे दूना त्रिफला लेकर दोनोंको आकके दूधमें भावना देकर संपुटमें फूंकदेवे तो मांडूर उत्तम बने, फिर त्रिफला, सोंठ, मिरच, पीपल, मोंथा, चित्रक, वायविडंग इनको मिलाकर गुडमें गोली बनावे, प्रातःकाल छाछके साथ गोली खाय, एक महीना अथवा ४९ दिन तो ऊर्द्धश्वास पांडुरोग, सूजन, आमवात, कृमिरोग, मिट्टीविकार, पानी लगना ये दूर होवें।

अभ्रकमारणविधि ।

कृष्णाभ्रकंधमेद्वह्नौततोदुग्धेनसिंचयेत् ॥ भिन्नपत्रंततःकृत्वा तन्दुलीयाम्लयोर्द्रवैः ॥ १ ॥ भावयेदष्टयामन्तदेवंशुध्यतिचाभ्रकम् ॥ बद्धाधान्ययुतंवस्त्रेमर्दयेत्कांजिकैःसह॥ २ ॥आदायाम्लगतंशुद्धंशुद्धधान्याभ्रकंभवेत्॥ अर्कक्षीरैर्दिनंपिष्ट्वाचकाकारंचकारयेत् ॥ ३ ॥ वेष्टयेदर्कपत्रांश्चसम्यग्गजपुटेपचेत् ॥ पुनर्मर्द्यपुनःपाच्यंसप्तवारंप्रयत्नतः ॥ ४ ॥ ततोवटजटाक्काथैस्तद्वदेयंपुटत्रयम् ॥ म्रियतेनात्रसन्देहःसर्वकार्येषुयोजयेत्५ निश्चन्द्रमभ्रकंतत्स्याज्जरामृत्युरुजापहम् ॥

अर्थ—काले अभ्रकको अग्निमें तपावे, फिर दूधसे सींचे फिर जुदे२ पत्र करलेवे,आंवलोंके पानीमें इमलीके रसमें आठ प्रहरकी भावना देय तो अभ्रक शुद्ध होवे फिर धान्ययुक्त कपडेमें बांधकर कांजीमें मर्दन करे तो शुद्ध धान्याभ्रक होवे, फिर आकके दूधमें एक दिन घोटकर टिकिया बनावे, और आकके पत्ते ऊपर नीचे लपेटकर गजपुटकी आंच देवे फिर घोटकर आंच देवे, ऐसे ७ वार आंच देवै, फिर वटकी जडके काढेमें तीन पुट देय इस प्रकार निस्सन्देह अभ्रक मरे फिर सब काम्योंमें वर्त्ते, जो अच्छा अभ्रक बने तो बुढापे व मृत्युको दूर करे ॥

अमृतीकरणम् ।

क्षिप्त्वाभ्रेणघृतंतुल्यंलोहपात्रेतिपाचयेत् ॥ घृतेजीर्णेतदभ्रन्तु सर्वकार्येषुयोजयेत् ॥ १ ॥

अर्थ—अभ्रकके बराबर घृत डाले और लोहेके पात्रमें पकावे, जब सब घृत सूखजाय, तब उतारकर काममें लावे ॥

अन्यविधिः ।

कृष्णाभ्रकंसमादाय द्विप्रस्थंचूर्णयेद्बुधः ॥ गोमूत्रालोडितंभाण्डेक्षिप्त्वावह्नौदिनंपचेत् ॥ १ ॥ अर्कदुग्धेपुनःपिष्ट्वाकृत्वाटिकडिकाःशुभाः॥वेष्टयित्वार्कपत्रैश्चखर्परस्थाःपुनःपचेत ॥२॥

एवमेवार्कदुग्धस्यदद्यात्सप्तपुटानिच॥ पुटत्रयंकुमार्याश्चत्रिफलायाःपुटत्रयम् ॥ ३ ॥ गुडस्यचपुटंदत्त्वापुनःपंचामृतैःपचेत् ॥ ततोवटजटाक्वाथैःसम्यग्देयंपुटत्रयम् ॥४॥ एवंनिश्चन्द्रतांयातिसर्वरोगेषुयोजयेत् ॥ मृतमभ्रंहरेन्मृत्युंजरापलितनाशनम् ॥ ५ ॥ योजितेचानुपानेनसर्वरोगहरंस्मृतम् ॥ ६ ॥

अर्थ—कालाभोडल दो प्रस्थ चूर्ण करे आकके पत्ते लपेटकर ठीकरेमें आंच देय, ऐसेही आकके दूधकी सात पुट देय और पकावे, फिर तीन पुट कुमारीके रसकी देय, फिर तीन पुट त्रिफलाके रसकी देय, फिर गुडकी एक पुट देय, फिर पंचामृतकी एक पुट देय, फिर बड़की जटाके काढेकी तीन पुट देय, इस प्रकार उज्ज्वल करे, फिर सब रोगोंमें वर्ते यह मरा हुआ अभ्रक मृतकको जिलावे, बुढ़ापेको दूर करे, अनुपानसे देय तो सहसा रोग न होवें. सब रोग नाश होवें ॥

अभ्रकसत्त्वविधिः ।

लाक्षामीनंपयश्छागंटंकणंमृगशृंगकम्॥ पिण्याकंसर्षपाशिग्रुगुंजोर्णागुड़सैंधवम् ॥१॥ यवतिक्ताघृतंक्षौद्रंयथालाभंविचूर्णयेत् ॥ एभिर्विमिश्रिताःसर्वेधातवोगाढवह्निना ॥ २ ॥ मूषाध्माताप्रजायन्तेमुक्तसत्त्वानसंशयः ॥ ३ ॥

अर्थ—लाख, मछली, बकरीका दूध, सुहागा, हिरनका सींग, सरसोंकी खल, सहँजना, चिरमिटी, ऊन, गुड, सैंधानोंन, यव, कुटकी, घृत, शहद जिस प्रकार होसके उस प्रकार चूर्ण करे और सब धातुमात्रका सत्त्व निकाले, इन चीजोंका मूष संपुट कर सत्त्व निकाले॥

दूसरागुड़गूगल।

गुडंचगुग्गुलंचैवलाक्षापामांडटंकणम्॥उष्णंमीनंसमादायसमभागानिकारयेत्॥द्रावयेत्सर्वसत्त्वानिपाषाणादपिमृत्तिका॥१॥

अर्थ—लाख, पमार, सुहागा, ऊन, मछली इनको समान ले, इन सबको मिलाकर मूसमें सत्त्व निकाले, इससे पत्थरसे भी मिट्टीका सत्त्व निकलता है।

मृत्युधातुसंजीवनी ।

घृतमधुटंकणगुंजागुडेनपिंडीकृतोमृतोधातुः ॥ सपुनर्जीवति यदातदानिरुत्थोमृतोधातुः ॥१॥

अर्थ–घी, शहद, सुहागा, चिरमिठी, गुड इनमें धातुको मिलाय गोली बनावे तो मरी हुई धातु जीवे और फिर उस धातुको मारै तो वह निरुत्थ अर्थात् पूर्णमृत होजाताहै ॥

रससिन्दूरपाराविधिः ।

येक्षीणागतवीर्य्याश्चकथंसीदन्तितेनराः ॥
ईश्वरेणत्विदंप्रोक्तंहरगौरीरसायनम् ॥ १ ॥

अर्थ–जिन मनुष्योंका वीर्य्य क्षीण है वे क्यों दुःख पाते हैं, इश्वरने उनके लिये हरगौरीरस कहा है ॥ १ ॥

शोधनविधिः ।

कुमारीचित्रकंव्याधिर्मूलकांकुल्यवारिणा ॥ पृथक्पृथक्च-तुर्यामंमर्दयेत्सर्वकर्मसु॥ १ ॥ अंकोलेनविषंहन्तिपावकंहन्ति चित्रकैः॥ राजवृक्षैर्मलंहन्तिकुमारीसप्तकंचुकैः ॥ २ ॥

अर्थ–घीग्वारके पाठेके रसमें मर्दन करै, चार प्रहर चीता, अमलतास, कूठमें मर्दन करै चार प्रहर अंकोलकी जडके रसमें मर्दन करे, फिर सब काममें लावै अंकोलके मर्दनसे पारेका विष नाश होवे चीतेसे मर्दन करनेसे दाह दूर होवे अमलतासके मर्दनसे मल दूर होवे, कुमारीरसके मर्दनसे सात काँचली पारेकी दूर होवें ।

पारदमारणविधिः ।

रसभागोभवेदेकोद्विगुणोगंधकोमतः॥खल्वेकज्जलसंकाशंकाच-कुप्यांक्षिपेत्सुधीः॥ १॥खर्प्परेवालुकापूर्णेस्थापयेत्तत्रकूपिकाम्॥ इष्टिकांचमुखेदत्त्वाकृत्वाकर्प्पटमृत्तिकाम् ॥ २ ॥ सप्तविंशति-यामैश्चत्रिभिःकूपैर्विपाचयेत् ॥ पश्चादूर्ध्वंसमायातिरसंज्ञात्वा विचक्षणः ॥ ३ ॥ हंसपादसमंवर्णंनिष्पन्नंरसमादिशेत्॥ गुंजा-युग्मंप्रदातव्यंसितादुग्धानुपानयुक्॥४॥ प्रमेहश्वासकासेषुषंढे क्षीणेल्पवीर्यके ॥ हरगौरीरसोदेयःसर्वरोगप्रशान्तये ॥ ५ ॥

अर्थ—एक भाग पारा, दो भाग गंधक, खरलमें घोटकर, कजली करे, फिर शीशीमें डालकर इकट्ठी करे, फिर बांबूके यंत्रमें रख ऊपर नीचे बालू भरै, बीचमें शीशी रक्खे और पक्की ईंटसे मुख बंद करे और विधिपूर्वक सात कपरोटी कर सत्ताईस प्रहर तीन२शीशियोंमें पकावे, फिर जब ऊपर उडकर आजाय तब जानो रस बनगया, सिंगरफकासा रंग निष्पन्न रस जानो दो रत्ती पानमें ले और मिश्री मिलाकर ऊपरसे दूध पिये. प्रमेह, श्वास, खांसी, नपुंसकता, क्षीणता, वीर्य्यक्षय यह हरगौरीरस सब रोगोंका नाश करताहै ॥

अन्यच्चश्लोकः ।

सूतकंचसमादायद्विगुणंगन्धकंक्षिपेत्॥ततश्चकज्जलींकृत्वाकाचशीश्यांतुधारयेत्॥ १॥मृन्मयांमुद्रितांदत्त्वानंदसंख्याप्रमाणतः॥पृथग्भाण्डंतुसंस्थाप्यवालुकार्द्धप्रमाणतः॥ २ ॥ मध्ये चशीशिकांधृत्वामुखेमुद्रांचकारयेत्॥ द्वात्रिंशद्यामममग्निश्चस्वांगशीतोवतारयेत् ॥ ३॥ रससिन्दूरनामेदंभास्करेणविनिर्मितम् ॥ गुंजायुग्मंसदाग्राह्यंनागवल्लीदलैःसह ॥४॥

अर्थ—पारेसे दूनी गंधक डालकर कजली करे, फिर काचकी शीशीमें भर मुख बंदकर कपरमिट्टी नौ बार कर एक पात्र आधेमें बालू भर बीचमें शीशी रख फिर ऊपर बालू भर मुख बन्द करे. सात कपड़मिट्टी कर बत्तीस प्रहरकी आंच देवे. जब ठंढा होजाय तब उतारलेवे. यह रससिन्दूर भास्करजीने कहाहै. मात्रा दो रत्ती नित्य पानके साथ सेवन करै ॥

मदनमुद्रा ।

नागेन्द्रसिक्थकमयोमलसर्ज्जिकाभिर्लाक्षाचचुम्बकमधूफलभूर्जपत्रम्॥ संकुट्यमानमतसीफलतैलमिश्रंश्रीपारदस्यमरणेमदनाख्यमुद्रा ॥ १ ॥

अर्थ—सिन्दूर, मोम, लोह, कीट, सज्जी, लाख, चुम्बकपत्थर, महुआफल, भोजपत्र इनको कूटकर अलसीके तेलमें मिलावे. यह पारा मारनेके लिये मदनमुद्रा है ॥

पुनः श्लोकः ।

उदुम्बरार्कवटदुग्धपलंचलंचलाक्षापलंपलचतुष्टयभूर्जपत्रम् ॥ संकुट्यसर्वमतसीफलतैलमिश्रंश्रीपारदस्यमरणेमदनाख्यमुद्रा १॥

अर्थ—गूलरका दूध, आकका दूध, वटका दूध, एक २ पल ले,लाख १ पल ले भोजपत्र चार पल इन सबको कूटकर अलसीके तेलमें मिलावे. यह भी पारा मारनेके लिये मदनमुद्रा है ॥

वज्रमुद्रा ।

षडीखदिरभस्मांबुलवणश्चाथवाध्रुवम् ॥ कारीषभस्मलवणांबुद्वाभ्यांमुद्राप्रकीर्तिता ॥ १ ॥

अर्थ—खडिया, खैरसार, राख, पानीनोन, अथवा केवल राख, नोंन, पानीसे यह दोनों मिलाकर वज्रमुद्रा बनती है ॥

पारदगुणाः ।

देहस्यशुद्धिंकुरुतेचपारदोनानागदानांहरणेसमर्थः ॥ करोतिपुष्टिंहरतेचमृत्युंकल्पायुषंचापिकरोतिनूनम् ॥ १ ॥ पारदःसकलरोगपारदोराजयक्ष्मसरनैकपारदः ॥ सर्वरोगमपिहन्तितत्क्षणान्नामवल्लिरसराजभक्षणात् ॥ २ ॥ मूर्छितोहरतेव्याधिंबद्धःखेचरतांव्रजेत्॥सर्वसिद्धिकरोनीलोनिश्चलोमुक्तिदायकः ॥३॥ तारेगुणाशीति ८० तदर्द्धकांते ४० वंगेचतुःषष्टि ६४रवौतदर्द्धम् ३२ ॥ हेम्नः शतैकं १०१ गगनेसहस्रं १००० वज्रेगुणाः कोटि १०००००००रनंतसूते ॥ ४ ॥ संस्कारहीनंखलुसूतराजं यःसेवतेतस्यकरोतिबाधाम्॥देहस्यनाशंविदधातिनूनंकुष्ठान्समग्राञ्जनयेन्नराणाम् ॥ ५ ॥ विकारोयदिजायेतपारदान्मलसंयुतात् ॥ गंधकंसेवयेद्धीमान्पाचितंविधिपूर्वकम् ॥६॥ गंधकंमाषयुग्मंचनागवल्लीदलैःसह ॥ खादेत्पारदसंग्रस्तोदोषशान्तिस्तदाभवेत् ॥ ७ ॥

अर्थ—पारा देहकी शुद्धि करताहै. और नानाप्रकारके रोगोंके नाशकर-

नेको समर्थ है. पुष्टिकारक, मृत्युका हर्त्ता, निश्चय कल्पकी उमर करताहै पारा संपूर्ण रोगोंको पार करता है. शोष, यक्ष्मा, दाह इनको मेघके समान शांत करताहै. पारा नागरपानके साथ सेवन करनेसे संपूर्ण रोगोंको दूर करताहै. मूर्च्छित रोगनाश पारेकी गोली मुखमें राखनेसे आकाशमार्गमें होकर चले नीला पारा सर्व सिद्ध करता निश्चल मुक्तिका देनेवाला है, चांदीमें ८० गुण, कांतिसारमें ४० गुण, बंगमें ६४ गुण, ताँबेमें ३२ गुण, सुवर्णमें १००, अभ्रकमें १००० गुण, हीरामें १०००००० गुण और पारेमें अनगिनत गुण जानों, पर इन सबकी भस्ममें गुण है ॥ और संस्कारहीन पारा खाय तो अवगुण करता है, देहका नाशक, कोढ करे और पारा खानेसे जो विकार होवें तो दो महीने पानमें शुद्ध गंधकका सेवन करे तो पारा खानेके सर्व रोग शांत होवें ॥

पारदविकारशान्तिः ।

द्राक्षाकूष्मांडखण्डाश्चतुलसीशतपुष्पिका॥लवंगतजनागंचगंधकेनसमांशकः॥ १ ॥कर्षमात्रपयोभुक्तंसर्वंसर्वंपृथक्पृथक् ॥ सर्वयोगांतरासाध्यसूतदोषविकारनुत् ॥२॥ नागवल्लीरसंप्रस्थं भृंगराजरसंसमम् ॥ तुलसीरसप्रस्थंचच्छागदुग्धंसमांशकम् ॥ ॥ ३ ॥ मर्दयेत्सर्वगात्रेषुयामयुग्मंदिनत्रये ॥ स्नानंशीतलनीरेणसूतदोषप्रशान्तये ॥ ४ ॥

अर्थ—मुनक्का, पेठा, खांड, तुलसी, सोंफ, लौंग, तज, नागकेशर, गंधक इनकी समान मात्रा लेवे इन सबको गंधक संयुक्त चार टंक खाय, उपरसे दूध और घी पीवे एक२ कर्ष जुदी २ औषधि लेवे, यह सब रोगोंको शांति करे और पारेके विकारोंको दूर करताहै. पान और भांगरेका रस एक२प्रस्थ लेवे तुलसीपत्रका रस एकप्रस्थ और बकरीका दूध एकप्रस्थ इनको प्रहर२ शरीरमें मर्दन करे और ठंडे पानीसे स्नान करे तो पारेका दोष दूर होय ॥

भस्मसूतम् ।

शुद्धंसूतंसमंगन्धंवटक्षीरैर्विमर्दयेत्॥पाचयेन्मृत्तिकापात्रेवटका-

ण्डैर्विचालयेत् ॥ १ ॥ लघ्वग्निनादिनंपाच्यंभस्मसूतंभवेद्ध्रु-वम् ॥ द्विगुंजंनागपत्रेषुपुष्टमग्नेश्चवृद्धिकृत् ॥ २ ॥

अर्थ—पारा ४ टंक, गंधक ४ टंक, बडके दूधमें मर्दन करे और मिट्टीके पात्रमें पकावे, बडकी लकडीसे हिलाता जाय, एक दिन मन्दाग्नि देय, पारा भस्म होजायगा. मात्रा एकरत्ती पानमें देवे, पुष्टि करै, अग्निदीपन, और क्षुधाको बढावे ।

हरितालशुद्धिः ।

तालकंकणशःकृत्वातच्चूर्णेकांजिकेक्षिपेत् ॥ दोलायंत्रेणयामै-कंततः कूष्मांडजैर्द्रवैः॥ १॥ तिलतैलंपचेद्यामंयामंचत्रिफलाज-लैः ॥ एवंयंत्रेचतुर्यामंपाच्यंशुद्ध्यतितालकम् ॥ २ ॥ शुद्धं स्यात्तालकं छिन्नंकूष्माण्डसलिलेततः ॥ चूर्णोदकेपृथक्तैलेभ-स्मीभूतंनदोषकृत् ॥ ३ ॥ तालकंपोट्टलीबद्धामृद्भाण्डेकांजि-केक्षिपेत् ॥ दोलायंत्रेणयामैकंततःकूष्माण्डजैर्द्रवैः ॥ ४ ॥ तिलतैलेपचेद्यामंयामंचत्रिफलाजलैः ॥ ५ ॥

अर्थ—हरितालके टुकडे कर कांजीमें डाल दोलायंत्रमें पकावे एकप्रहर फिर पेंठके रसमें एक प्रहर पकावे, तिलके तेल और त्रिफलाके काढेमें एक २प्रहर पकावे, ऐसे चार प्रहर आँच देवे, तो हरिताल शुद्ध होवे उस शुद्ध हरितालको पेंठके रसमें पकावे फिर तेलमें शुद्ध करलेवे निर्दोष होय, एक प्रहर त्रिफलामें पकावे ॥

पुनःश्लोकः ।

तालंविचूर्णयेत्सूक्ष्मंमर्द्यंनागार्जुनीद्रवैः ॥ सहदेव्याबलायाश्च मर्दयेद्दिवसद्वयम् ॥ १॥ तत्तालंरोटककृत्वाच्छायायांचविशो-षयेत् ॥ हंडिकायंत्रमध्यस्थंप्लुक्षभस्मतलोपरि ॥ २ ॥ पाच्यं वालकयंत्रेणभिदितंचण्डवह्निना ॥ स्वांगशीतंसमुद्धृत्यसर्व-योगेषुयोजयेत् ॥ ३ ॥

अर्थ—हरितालको नागार्जुनीके रसमें ३ दिन और सहदेवी कँगईके रसमें २ दिन मर्दन करे फिर हरितालकी टिकिया कर छायामें सुखावे,

ढाककी राख भर बीचमें टिकिया रख पकावे अ
ठंडी होजाय तब निकाल संपूर्ण काममें लावे ॥

रसकर्पूरविधिः ।

ः स्फटिकाचैवहीराकासीसमेवच ॥ सैंधवंसमभागेतेविं-
शांशंनवसादरम् ॥ १ ॥ खल्वेविमर्द्यसर्वाणिकुमारीरसभाव-
ना ॥ क्रमवृद्धाग्निनापक्वोरसःकर्पूरसंज्ञकः ॥ २ ॥

अर्थ—पिसी फिटकरी, हीराकसीस, नोंन, प्रत्येक एक २ सेर, बीसवां हिस्सा नवसादर इनको खरल कर कुमारीरसमें क्रमसे अग्नि देवे, पहिले मन्दाग्नि फिर मध्यमाग्नि, तीक्ष्णाग्नि दे तो रसकपूर बने ॥

पुनः श्लोकः ।

सूतंसंशोध्यचक्राभंकृत्वालिप्त्वाचहिंगुना ॥ द्विस्थालीसम्पु-
टेधृत्वापूरयेल्लवणेनच ॥ १ ॥ अधःस्थाल्यांततोमुद्रांप्रदद्या-
द्दृढतांबुधैः ॥ विशोष्याग्निंविधायाधोनिषिंचेदंबुनोपरि॥ २ ॥
ततस्तु कुर्यात्तीव्राग्निंतदधःप्रहरत्रयम् ॥ एवंनिपातयेदूर्ध्वंरसो
दोषविवर्जितः ॥ ३ ॥ अथोर्ध्वेपिठरीमध्येलग्नोग्राह्योरसो-
त्तमः ॥ ४ ॥

अर्थ—पारेको शोधकर निर्मल करे, फिर एक हांडीमें हींगका लेप करे फिर दूसरी हांडीका सम्पुटकर, नोंनसे भर दे और नीचेकी हांडीमें दृढ मुद्रा देय, जब सूख जाय तब चूल्हेपर चढावे, क्रमसे अग्नि देय और तीन प्रहर तीक्ष्ण अग्नि देवे और पानीसे भीगा कपडा रक्खे थोडा २ पानी डालता जाय, फिर शीतल होवे तब निकाले जो ऊंचा चढजाय वो निर्दोष जानो ऊपरकी हांडीमें हो उसे उत्तम जानो ॥

शुद्धरसस्यमुखकरणम् ।

अर्कसीहुंडधत्तूरलांगुलीकरवीरका॥गुंजाहिफेनाचेत्येताःसप्तो-
पविषजातयः ॥ १ ॥ एतैर्विमर्दितःसूतश्छिन्नपक्षःप्रजायते ॥
मुखंचजायतेतस्यधातूंश्चग्रसतेद्रुतम् ॥ २ ॥

अर्थ—आक, थूहर, धतूरा, करिहारी रूखडी तथा शाकविशेष, कनेर,

चिरमिठी, अफीम यह सात उपविषकी जाति हैं, इन करके पारेको मर्दन करे तो छिन्नपक्ष होजाय और पारेके मुख होय, (बुभुक्षित) सम्पूर्ण धातुओंको शीघ्र ग्रस जाय ॥

पुनःश्लोक ।

अथवाकटुकःक्षारोराजीलवणपंचकम् ॥ रसोनोनवसारश्चशिग्रुश्चैकत्रचूर्णयेत् ॥ १ ॥ समांशैःपारदादेतैर्जम्बीरेणद्रवेणवा॥ निम्बुतोयेकांजिकैर्वासोष्णखल्वेविमर्दयेत् ॥२॥ अहोरात्रत्रयेणस्याद्रसेसुरुचिरंमुखम् ॥ ३ ॥

अर्थ—सोंठ, मिरच, पीपल, सज्जी, जवाखार, राई, पांचोंनोन लहसन, नौसादर, सहँजना इनका चूर्ण कर तीन दिन अर्थात् २४ प्रहर मर्दन करनेसे पाराके मुख होता है, इसमें सन्देह नहीं ॥

कच्छपयन्त्रेगन्धकजारणमुच्यते।

मृत्पिण्डेप्रक्षिपेन्नीरंतन्मध्येचशरावकम्॥ महत्कुण्डंपिधानाभं तन्मध्येमेखलायुतम् ॥ १ ॥ लिखेच्चमेखलामध्येस्वर्णेनात्र रसंक्षिपेत् ॥ रसस्योपरिगन्धस्यरजोदद्यात्समांशकम् ॥ २ ॥ दत्त्वोपरिशरावंचभस्ममुद्रांप्रदापयेत् ॥ तस्योपरिपुटंदद्याच्चतुर्भिर्गोमयोपलैः ॥३॥एवंपुनःपुनर्गन्धंषड्गुणंजारयेद्बुधः॥गन्धे जीर्णेभवेत्सूतंतीक्ष्णाग्निःसर्वकर्मकृत् ॥ ४ ॥ धूमसाररसंतारो गन्धकं नवसादरम्॥ यामैकंमर्दयेदम्लैर्भागंकृत्वासमंसमम् ॥ ॥ ५ ॥ काचकुप्यांविनिःक्षिप्यतांचमृद्रत्नमुद्रया ॥विलिप्यपरितोवक्त्रमुद्रां दत्त्वाचशोषयेत् ॥ ६ ॥ अधःसिच्छिद्रपिठरीमध्येकूपंनिवेशयेत्॥पिठरीवालुकापूरैर्भृत्वाआकूपिकागलम्॥ ॥७॥निवेश्यचुल्ल्यांतदधःकुर्याद्वह्निंशनैःशनैः॥तस्मादप्यधिकंकिंचित्पावकंज्वालयेत्क्रमात्॥८॥ एवंद्वादशभिर्यामैर्म्रियते सतकोत्तमः॥स्फोटयेत्स्वांगशीतंतमूर्ध्वगंगन्धकंत्यजेत्॥ ९ ॥ अधःस्थंमृतसूतंचसर्वकर्मसुयोजयेत् ॥ १० ॥

अर्थ—मिट्टीके बरतनमें पानी भर बीचमें सरवा रक्खे, उसके ऊपर एक बडा ढक्कन ढके, उसके चारों तरफ गड्ढा करै, उस गढेमें सोनेके बरतनसे रस डालता जाय, उस रसके ऊपर गन्धक पीसकर समान मात्रा डाले, ऊपर एक सरवा रक्खे, फिर भस्ममुद्रा देय, तिसके ऊपर पुट देकर उपलोंकी आंच देवे इसी प्रकार छः बार गन्धकको बुद्धिमान् जलावै, जैसे २ गन्धक जले वैसे २ पारा तीक्ष्णाग्नि होवे, सर्व कर्ममें धूमसार पारा, फिटकरी, गन्धक, नौसादर, प्रहर एक खटाईमें मर्दन करे और सब औषधि बराबर लेवे, फिर कांचकी शीशीमें भरकर एक शीशी उसके सम्पुटमें देवे, फिर वालुकायन्त्रमें शीशीके गलेतक बालू भरदेवे और हांडीके मुखमें कपरमिट्टी कर चूल्हे पर रख क्रमसे अग्नि देय, ऐसे बारह प्रहर आँच देवे पारा उत्तम मरै, जब ठंढा होजाय, तब फोडकर ऊपरकी गन्धक छोडदेवे, नीचेका पारा काममें लावे।

हिंगलूसे पारा काढनेकी विधि।

निंबूरसैर्निम्बपत्ररसैर्वायाममात्रकम् ॥ पिष्ट्वादरदमूर्ध्वंचपातयेत्सूतयुक्तवत्॥ १॥ततःशुद्धंरसंतस्मान्नीत्वाकार्येषुयोजयेत् ॥

अर्थ—नींबूके रस तथा नीमके पत्तोंके रसमें हिंगलूको एक प्रहर खरल करे, फिर डमरूयंत्रमें चढावे, उससे उडकर पारा ऊपर जा लगे उसे शुद्ध जाने और सब काममें लावे ॥

हरतालशुद्धि।

पलाशभस्ममृद्भाण्डंक्षिप्त्वोपरिचतालकम्॥ तालोपरिपुनर्भस्म दत्त्वास्थालींविमुद्रयेत् ॥१॥ चुल्ल्यांपचेच्चतुर्यामंपश्चात्तत्सिद्धतांव्रजेत् ॥ गाढेतथायस्मिन्यस्तंनिर्धूमंचतदाशुभम् ॥ २॥ खंडेनरत्तिकामात्रंखादेत्कुष्ठनिवृत्तये॥ पथ्यंमकुष्टचणकाल-वणस्नेहवर्जिताः ॥ ३ ॥

अर्थ—ढाककी राखको हांडीमें भरकर बीचमें हरताल रक्खे, फिर मुद्रा चढावे, चूल्हेपर रख चार प्रहर अग्नि देवे, मृत होजाय तब परीक्षा

करे,लोहेको गरम कर उसमें डाले जो धुआं न देवे तो जाने शुद्ध होगई खांडमें एक रत्ती देवे तो कोढ दूर होवे पथ्य मोठ,नोंन, चना,तेल,घृत न देवे इनको छोड़कर और पथ्य देवे ॥

अन्यः श्लोकः ।

पलमेकंशुद्धतालंकुमारीरसमार्दितम् ॥ शरावसंपुटेक्षिप्त्वायामा-न्द्वादशतत्पचेत् ॥ १ ॥

अर्थ–शुद्ध हरताल १ पल,कुमारीरसमें मर्दन करे और दो शरावों-में संपुट कर १२ प्रहरकी आँच देवे ॥

अन्यः श्लोकः ।

हरितालंकर्षमात्रंमर्दितंकन्यकाद्रवैः ॥ सतैलेचायसेपात्रेक्षि-प्त्वामन्दाग्निनापचेत् ॥ १ ॥

अर्थ–एक कर्ष हरताल कुमारीरसमें मर्दन कर तेल डाल लोहेके पात्रमें मन्दाग्नि देवे ॥

नागतांबाविधि ।

मयूरपिच्छानादायज्वालयेदाज्यसर्षपैः ॥ गुडगुग्गुलमीनो-र्णाटंकणंसर्जिकामधु ॥ १ ॥ गुंजाचपिप्पलीलाक्षाघृतंचैक-त्रकारयेत् ॥ धमेत्तदधंमूषायांनागताभ्रंप्रजायते ॥ २ ॥

अर्थ–मोरपंख ४ सहस्रोंके चन्दा निकाले और मिट्टीके बड़े बर्तनमें डालकर जलावे,फिर दो टंक गुड़,सरसों,गूगल छोटी मच्छी, ऊन,सुहागा, सज्जी,शहद,चिरमिठी,पीपल,लाख यह सब बराबर लेकर एक हाथ नीचा गढा खोदे और एकमें मोरपंखकी राख रक्खे और ऊपर दवाई डालता जाय और नीचेसे धोंकता जाय, जब सब डालचुके और ठंडा होजाय तब छोटे २ कण बीन लेवे और गलालेवे तो नागतांबा होवे ॥

सुवर्णमाक्षिकशोधनम् ।

माक्षिकंस्वेदयेत्पूर्वंकुलत्थक्काथयोगतः ॥ अथवानरमूत्रेणदो-लायंत्रेविशुद्धचति॥१॥ माक्षिकस्यत्रयोभागाभागैकंसैंधवस्य च॥ मातुलुंगद्रवैश्चाथजम्बीरोत्थद्रवैःपचेत॥२॥क्षालयेल्लोहजे

पात्रेयावत्पात्रंसलोहितम् ॥ भवेत्ततःसुसिद्धःस्यात्स्वर्णमाक्षिकमृच्छति ॥ ३ ॥ कुलत्थस्यकषायेणघृततैलेनवापचेत् ॥ तक्रेणवाजमूत्रेणम्रियतेस्वर्णमाक्षिकम् ॥ ४ ॥

अर्थ-सोनामक्खीको पहले शहदमें घोटे फिर कुलफीके काढेमें मनुष्यके मूत्रमें दोलायंत्रमें शुद्ध करे शहद तीन भाग सैंधानोंन एक भाग बिजौरा तथा जंभीरीके रसमें पकावे, लोहेके पात्रमें डालकर हिलाताजाय, जब लाल होजाय तबतक हिलावे तो सोनामक्खी शुद्ध होय, कुलथीके काढे अथवा घृत तेलमें पकावे मट्ठामें पकावे बकरीके मूत्रमें पकावे, तो सोनामक्खी मरै॥

रूपमाक्षिकशोधनम् ।

ककोटीमेषशृंग्युत्थैर्द्रवैर्जंबीरजैर्दिनम् ॥ भावयेदातपेतीव्रेविमला शुद्धचतिध्रुवम् ॥ १ ॥

अर्थ-ककोडा, मेढ़ासींगीका रस, जंभीरीका रस इनमें भावना देवे एक दिन; फिर धूपमें सुखावे तो शुद्ध होवे ॥

मनःशिलाशोधनम् ।

पचेत्त्र्यहमाजामूत्रेदोलायंत्रेमनःशिलाम् ॥ भावयेत्सप्तधापित्तैरजायाःशुद्धिमृच्छति ॥ १ ॥

अर्थ-मनशिलको बकरीके मूत्रविषे दोलायंत्रमें पकावे तीन दिन; फिर बकरीके पित्तकी सात भावना देय तौ शुद्ध होवे ॥

नीलांजनशोधनम् ।

नीलांजनंचूर्णयित्वाजम्बीरद्रवभावितम् ॥ दिनैकमातपेशुद्धं सर्वकार्येषुयोजयेत् ॥ १ ॥ एवंगैरिककासीसंटंकणानिवराटिका ॥ शंखत्रुटीचकंकुष्ठंशुद्धिमायान्तिनिश्चितम् ॥ २ ॥

अर्थ-सुरमाको पीसकर जंबीरीके रसकी एक दिनकी भावना दे, फिर धूपमें सुखावे शुद्ध होय तब सब काममें वर्तै इसी प्रकार गेरू, कसीस, सुहागा, कौडी, शंख, फिटकरी, खपरियादि शुद्ध होते हैं ॥

इति धातुप्रकरणम् ।

अथ रसप्रकरणम् ।

प्रथमलोकनाथरसः ।

भागौदग्धकपर्दकस्यचतथाशंखस्यभागद्वयंभागौगंधकसूत-
योर्मिलितयोःपिङ्गामरीचादपि ॥ भागामीत्रितयंनियोज्यसक-
लंनिम्बूरसैश्चूर्णितंपीतस्तक्रमनुग्रहण्युपहरंश्रीलोकानाथोरसः १

अर्थ—कौडीभस्म दो भाग, शंख दो भाग, गंधक एक भाग, पारा एक भाग इनको पीसकर तीन टंक मिरच डाल, सबको मिलाय नींबूके रसमें गोली बनावे और छाछके साथ लेय तो संग्रहणी दूरहोवे यह श्रीलोकनाथरसहै ॥

पुनः श्लोकाः ।

शुद्धोबुभुक्षितःसूतोभागद्वयमितोभवेत् ॥ तथागंधकभागौद्वौ
कुर्यात्कज्जलिकान्तयोः ॥ १ ॥ सूताच्चातुर्गुणेष्वेवकपर्देषुवि-
निक्षिपेत् ॥ भागैकंटंकणंदत्त्वागोक्षीरेणविमर्दयेत् ॥ २ ॥ तथा
शंखस्यखंडानांभागानष्टौप्रकल्पयेत् ॥ क्षिपेत्सर्वंपुटश्चान्तश्चू-
र्णलिप्तशरावयोः ॥ ३ ॥ गर्तेहस्तोन्मितेधृत्वापुटेद्वज्जपुटेनच ॥
स्वांगशीतंसमुद्धृत्यपिष्ट्वातत्सर्वमेकतः ॥ ४ ॥ षड्गुंजासंमितं
चूर्णमेकोनत्रिंशदूषणैः ॥ घृतेनवातजेदद्यान्नवनीतेनपित्तजे ॥ ५ ॥
क्षौद्रेणश्लेष्मजेदद्यादतीसारक्षयेतथा ॥ अरुचौग्रहणीरोगेकास-
मन्दानलेतथा ॥ ६ ॥ कासश्वासेषुगुल्मेषुलोकनाथोरसोहितः ॥
तस्योपरिघृतान्नंचभुंजीतकवलत्रयम् ॥ ७ ॥ मंचेक्षणैकमुत्ता-
नंशयीतानुपधानके ॥ रसाच्चजायतेतापस्तदाशर्करयायुतम् ॥
गुडूच्यावाथगृह्णीयाद्वंशलोचनयाथवा ॥ ८ ॥

अर्थ—शुद्ध और भूखा पारा दो भाग, गंधक दो टंक इनकी कजली कर पारेसे चौगुनी कौड़ी डाले, सुहागा एक टंक डालकर गौके दूधमें खरल करै फिर शंखकी भस्म एक टंक डालकर, फिर सबको सकोरेमें रख कपरमिट्टी कर एकहाथ गड्ढे तथा गजपुटमें फूंक देवे जब ठंढा होजाय तब निकाल

लेवे पीसकर काममें लावै छः रत्ती २५ काली मिरच वायुवालेको घृतमें देवे और पित्तवालेको माखनमें, कफवालेको शहदमें देवे, अतीसार और क्षयमें शहदके साथ लेवे. अरुचि, संग्रणी, खांसी, मन्दाग्नि, श्वास, गुल्ममें लोकनाथरस फायदा करता है और तीन ग्रासोंके साथ घृत लेवे और खाट पर सीधा तकिया लगाकर क्षणमात्र लेटे रससे गरमी होवे तो मिश्रीसंयुक्त लेवे अथवा गिलोय वा वंशलोचनमें लेवे तो अरुचि संग्रहणी आदि दूर होवें।

रसगंधःसीपिमासंस्नुह्यर्कंचपयःपलम् ॥ पलंपलंपञ्चलूणमेकीकृत्वातुचूर्णयेत्॥ १॥आलोड्यचार्कदुग्धेनपूरयेच्छंखमध्यतः। पिप्पलीविषकवीरंचूर्णंकृत्वाप्रलेपयेत् ॥ २ ॥ प्रज्वालयेद्याममात्रंसूक्ष्मंचूर्णन्तुकारयेत्॥कर्पूरनागपत्रैश्चदेयामात्रार्द्धगुंजया॥ ॥३॥ श्वासंकासंचहृद्रोगंकफंपञ्चविधंतथा ॥ वज्रवद्धन्तिरोगांश्चरसोयंकफकुंजरः ॥ ४ ॥

अर्थ-पारा १६ टंक, गंधक १६ टंक, सीपी १६ टंक, थूहरका दूध १ पल, आकका दूध १ पल, नोंन पांचों इनको एकत्र कर आकके दूधमें सान शंखमें भरै. पीपल, तेलियामीठा, कनेर इनको भी शंखमें भरदेवे और कपरोटी कर एक प्रहर अग्नि देय जब ठंढा होजाय, तब सबका चूर्णकर कपूर पानके संग आधी रत्ती दे, श्वास, खांसी, हृदयरोग, पाँच प्रकारके कफ वज्रके समान रोगरूपी वृक्षोंको कफकुंजर रस जड़से उखाड़े ॥

श्वासकुठारो रसः ।

रसंगन्धंविषंचैवटंकणंचमनःशिला ॥ एतानिटंकमात्राणिमरिचंटंकाष्टकम् ॥ १॥ एकैकंमरिचंदत्त्वाखल्वेसूक्ष्मंविमर्दयेत् ॥ त्रिकटुटंकषट्कंचदद्यात्पश्चाद्विमर्दयेत् ॥ २॥ रसःश्वासकुठारोयं पूर्णखण्डेनबुद्धिमान्॥श्वासेतिदुस्तरंदद्याद्गुंजामात्रंप्रयत्नतः३॥

अर्थ-पारा, गंधक, तेलियामीठा, सुहागा, मनशिल इन सबको एक २ टंक लेवे. मिरच ८ टंक, एक एक मिरच डालता जाय और खरल करे.

सोंठ, मिरच, पीपल ६ टंक डालकर महीन पीसे. इस श्वासकुठार नाम रसको बुद्धिमान् पुरानी खांडके साथ देवै. बडे कठिन श्वासको एक रत्ती मात्रा यत्नसे देवे ॥

कालारिरसः ।

त्रिशाणंपारदंचैवगंधकंशाणपंचकम्॥ त्रिशाणंवत्सनागंचपिप्पलीदशशाणिका ॥ १॥ लवंगञ्चचतुःशाणंत्रिशाणंकनकाह्वयम्॥ टंकणंवह्निशाणंचपंचजातीफलंक्षिपेत् ॥ २ ॥ मरिचंपञ्चशाणंस्यादकल्लंचत्रिशाणकम् ॥ करीरार्द्रकनिम्बूकैर्मर्दयेच्चदिनत्रयम् ॥ ३ ॥ कालारिरसनामायंवातव्याधिविनाशनः ॥ मर्दने भक्षणे नस्येद्विगुंजंसन्निपातजित् ॥ ४ ॥

अर्थ—पारा ३ टंक, गंधक ५ टंक, तेलियामीठा ३ टंक, पीपल १० टंक, लोंग ४ टंक, धतूरा ३ टंक, सुहागाफूला ३ टंक, जायफल ५ टंक, मिरच ५ टंक, अकरकरा ३ टंक, करील, अदरक नींबूके रसमें मर्दन करै तीन दिन. कालारिरस नाम वातरोगोंको दूर करै. मर्दन करै, भक्षण करै, नासदेय, दो रत्ती प्रमाण, तो सन्निपातको जीते ॥

पुनरन्यपाठः ।

शुद्धंसूतंमृतंताम्रंगन्धकंनागरंविषम्॥ जातीफलंलवंगानिकनकं मरिचैःसह ॥ १॥ रसाच्चद्विगुणंग्राह्यंटंकणंभृष्टमेवच ॥ पिप्पली करहाटश्चसर्वार्द्धंग्राह्यकोविदैः ॥२॥कर्षमात्राणिसर्वाणिरसाद्या मरिचांतका ॥ पिष्ट्वासूक्ष्ममिदंयोज्यंनस्यभक्षणयोर्द्वयोः ॥३॥ भावनानिम्बुकावल्लीहिमार्द्रकरसस्तथा ॥ वारत्रयंसदादेयोरसः कालारिसिद्धये॥ ४ ॥ सर्वेवाताःशिरोवातोमेहःप्रस्वेदएवच॥ सूतिकानांचयेरोगाःसर्वेनश्यंतिवेगतः ॥५॥ रसःकालारिसंज्ञोयंप्रतीतोबहुषुश्रुतः ॥ शिरोग्रहःकर्णनादोमन्यास्तम्भोहनुग्रहः ॥ ६ ॥ धनुर्वातादयोप्येवबाह्याःपामादयस्तथा ॥ ७ ॥

अर्थ—शुद्धपारा, फूंका तांबा, गंधक, सोंठ, तेलियामीठा, जायफल, लोंग,

धतूरेके बीज, मिर्च, पारेसे दूना सुहागा भूना, पीपल, अकरकरा सब आधे लेय. सब औषधि मरिच पर्य्यंत चार २ टंक लेवे इनको पीसकर नस्य और खानेमें वर्ते. नींबूके रसकी ३ भावना, ब्राह्मीके रसकी ३ भावना, अदरकके रसकी ३ भावना, कनेरके रसकी ३ भावना देय, जब कालारिरस सिद्ध होजाय यह संपूर्ण वात, शिरका वात, प्रमेह, पसीना, प्रसूतिकादि रोगोंको दूर करे यह कालारिरस बहुत जगह अजमाया हुआ है. शिरोरोग, उरग्रह, मन्यास्तंभ, जाबड़ोंका जिकड़ना, धनुर्वात, बाहरकी खाज आदि रोग नाश करै ॥

चैतन्येसूचीभरणोरसः ।

विषंपलमितंसूतंशाणकंचूर्णयेद्वयम्॥ तच्चूर्णंसम्पुटेधृत्वाकाच-लिप्तशरावयोः ॥ १ ॥ मृदंदत्त्वाचसंशोध्यततश्शुल्ल्यांनिवेशये-त् ॥ वह्निंशनैःशनैःकुर्यात्प्रहरद्वयसंख्यया॥२॥ ततश्चोद्घाट्य तन्मुद्रामुपरिस्थशरावकात्॥ संलग्नोयोभवेत्सूतस्तद्गृह्णीयाच्छ-नैःशनैः ॥ ३ ॥ वायुस्पर्शोयथानस्यात्तथाकुप्यांनिवेशयेत् ॥ यावत्सूच्यामुखेलग्नंकुप्यांनिर्यातिभेषजम् ॥ ४ ॥ तावन्मात्रो रसोदेयोमूर्च्छितेसन्निपातके ॥ क्षुरेणप्रस्थितेमूर्ध्नितत्रांगुल्याच घर्षयेत् ॥ ५ ॥ रक्तभेषजसंपर्कान्मूर्छितोपिहिजीवति ॥ ६ ॥ यदातापोभवेत्तस्यमधुरंतत्रदीयते ॥ ७ ॥

अर्थ—शुद्ध तेलिया मीठा १ पल, पारा १ पल इन दोनोंको पीसकर कांचकी शीशीमें भरदे, कपरमिट्टीकर मुद्राकर सकोरामें कपरमिट्टीकर धूपमें सुखावे, चूल्हेपर चढाकर दो प्रहरकी मन्दाग्नि देवे, जब ठंढा होजाय तब संपुट खोले, जो काचके पात्रमें पारा लगा होवे उसे खुरच लेवे, हौले २ दूसरे पात्रमें भरकर बर्तावमें लावे. पवन न लगने देवे, फिर शीशीमें भरकर रखदेय और जितना सुईके मुखमें लगे उतना काढे, सुईके अग्रभागकी बराबर मात्रा लेवे, मूर्छितके सन्निपातीके चक्कूसे मस्तकपर रखकर, उँगलीसे मर्दन करे, तो अचेत मूर्छित जीवे ऐसेही सांपका काटा मरावस्थासे जीवे, और जिसे ताप होय तब उसे मीठा खवावे ॥

आमवाते उदयभास्कररसः ।

पारदंगन्धकंदिव्यंव्योषंत्रिलवणानिच ॥ सितकन्दाचवृद्धैलार-सकर्पूरमेवच ॥ १ ॥ समानिसर्वंतुल्यंचशुद्धंजैपालकंक्षिपेत् ॥ बीजपूररसैर्भाव्योरसोह्युदयभास्करः ॥ २ ॥ पारदंगन्धकंव्योषंद्वौक्षारौलवणानिच ॥ टंकणंचेतितुल्यानिजैपालंसकलैःसमम् ३॥ भावनाबीजपूरस्यसूक्ष्मंचूर्णंविचूर्णयेत् ॥ संग्राह्यंरक्तिकायुग्मं वातंसामंविनाशयेत् ॥ ४ ॥ गोदुग्धंकेवलंपथ्यंदेयमुष्ट्रीपयोथवा ॥ अन्नंचवर्जयेत्तावद्यावच्छोफंनिवारयेत् ॥ ५ ॥

अर्थ—पारा, गंधक शुद्ध, सोंठ, मिरच, पीपल, तीनों नोन, मिश्री, बडी इलायचीके दाने, शुद्ध रसकपूर इन सबको बराबर ले. शुद्ध जमालगोटामें मिलाकर फिर बिजौराके रसकी तीन भावना देवे यह उदय भास्कररस है. पारा, गंधक, सोंठ, मिरच, पीपल, सज्जी, जवाखार, तीनों नोंन ये सब बराबर, सुहागा सबके बराबर, जमालगोटा सबके बराबर इनका चूर्ण कर बिजौरेके रसकी भावना देय, दोरत्तीप्रमाण मात्रा देवै संपूर्ण वातको नाश करे. और केवल गोदुग्ध या उँटनीका दूध पथ्यमें देवे आदमीकी सूजन न जाय तबतक अन्न न खाय ॥

वातेकासेभूतांकुशोरसः ।

सूतशुद्धस्यभागैकंद्विभागंशुद्धगन्धकम् ॥ भागत्रयंमृततंताम्रंमरिचंदशभागकम् ॥ १ ॥ मृताभ्रकंचतुर्भागंभागमेकंविषं क्षिपेत् ॥ भूतांकुशस्य भागैकंसर्वमम्लेनमर्दयेत् ॥ २ ॥ यामं भूतांकुशोनाममाषैकंवातकासजित् ॥ अनुपानंलिहेत्क्षौद्रंविभीतकफलत्वचा ॥ ३ ॥

अर्थ—शुद्धपारा १ टंक, शुद्धगंधक १ टंक, तामेश्वर ३ टंक, मिर्च १० टंक, अभ्रक ४ टंक, तेलिया मीठा १ टंक, सब इकट्ठी कर इमलीके रसमें मर्दन करैं, एक प्रहरमें यह भूतांकुश रस, एक मासे शहद, बहेडेकी राखके साथ चाटनेसे वायुरोग और खांसीको दूर करे ॥

तालकेश्वरः ।

तालंताप्यंशिलासूतंशुद्धंसैंधवटंकणम् ॥ समांशंचूर्णयेत्खल्वेस-

ताद्विगुणगंधकम् ॥ १॥ गंधतुल्यंमृततंताम्रंजम्बीरीदिनपंचकम्॥ मर्द्यस्वद्भिःपुटैःपाच्यंभूधरोदरसंपुटे ॥ २ ॥ पुटेपुटेद्रवैर्मर्द्यंसर्वमेकत्रषट्पलम् ॥ द्विपलंमारितंताम्रंलोहभस्मचतुःपलम् ॥ ॥ ३ ॥ जम्बीराम्लेनतत्सर्वंदिनंमर्द्यंपुटेलघु ॥ त्रिंशदंशंविषं चास्यक्षिप्त्वाचूर्णंविमर्दयेत् ॥४॥ माहिष्याज्येनसंमिश्रंकर्षार्धंभक्षयेत्सदा ॥ मध्वाज्यैर्बाकुचीचूर्णंकर्षमात्रंलिहेदनु ॥ सर्वकुष्ठान्निहन्त्याशुमहातालेश्वरोरसः ॥ ५ ॥

अर्थ—हरताल, सोनामक्खी, मनसिल, पारा, शिलाजीत शुद्ध, सोधा सुहागा इन सबको बराबर लेकर चूर्ण कर पारेसे दूना गंधक गंधकके बराबर तामेश्वर जंबीरीके रसमें पांच दिन मर्दन करे. ऐसे ६ पुट देवे. और जमीनमें गाड देवे और दो पुटोंमें जंबीरीका रस देता जाय सबको प्रमाण छः पल एकत्र कर दो पल तामेश्वर और लोहभस्म ४ पल इनको जंबीरीके रसमें मर्दन करे एक दिन और तीसवां हिस्सा तेलियामीठा डालकर चूर्ण कर भैंसके घीके साथ आधा कर्ष भक्षण करे. घी, शहद, बावचीका चूर्ण ४ टंक लेय तो संपूर्ण कोढोंका नाश करे, यह महा तालकेश्वर रस है ॥

अतिसारे रसः ।

लवंगमहिफेनंचहिंगुलंशाल्मलीरसः ॥ सितासमागुटीज्येष्ठा जलपीतातिसारजित् ॥ १ ॥

अर्थ—अफीम, हींगलू, सेमल, मोचरस, मिश्री इन सबको बराबर लेकर बेरके प्रमाण गोली बनावे एक गोली जलके साथ लेवे तो अतीसार दूर होवे।

पुनः श्लोकाः ।

दरदंवत्सनागंचमरिचंटंकणंकणा ॥ चूर्णयेत्क्रमभागेनरसोह्यानन्दभैरवः ॥१॥ गुंजैकावाद्विगुंजावाबलंज्ञात्वाप्रयोजयेत् ॥ मधुनालेहयेच्चानुकुटजस्यफलत्वचः ॥ २ ॥ चूर्णितंकर्षमात्रन्तु द्विदोषोत्थोतिसारजित् ॥ मध्याह्नेदापयेत्पथ्यंगवाज्यंतक्रमेव च ॥ ३ ॥ पिपासायांजलंशीतंविजयांनिशिदापयेत् ॥ ४ ॥

अर्थ—शिंगरफ, तेलिया, मिरच, सुहागा, पीपल इन सबको बराबर लेवे और चूर्ण करे, यह आनंदभैरव रस है, एक वा दो रत्ती बलाबल देखकर देवे शहदमें चाटे कुडेकी छाल, वा कुडेके फलका चूर्ण एक कर्षमात्र देय तो द्विदोषज अतीसार दूर होवे मध्याह्नमें गौका दूध तथा घृत तथा मट्ठा लेवे, प्यास लगे तो ठंढा जल पीवे, रात्रिको भांग पीवे ॥

कनकसुन्दररसः ।

हिंगुलंमरिचंगन्धंपिप्पलीटंकणंविषम्। कनकस्यचबीजानिसमांशंविजयाद्रवैः ॥ १ ॥ मर्दयेद्यामंमात्रेणचणकाभावटीकृता ॥ भक्षिताग्रहणीं हन्ति रसःकनकसुन्दरः ॥ २ ॥

अर्थ—शिंगरफ, मिरच, गंधक, सुहागा, पीपल, तेलियामीठा, धतूरेकेबीज, समान लेकर भांगके रसमें चनेके प्रमाण गोलियां बनावे, खानेसे संग्रहणी नाश होवे ॥

अजीर्णेक्रव्यादरसः ।

पलंरसस्यद्विपलंबलिःस्याच्छुक्लायसीचार्द्धपलप्रमाणम् ॥संचूर्ण्यसर्वंद्रुतमग्नियोगादेरण्डपत्रेषुनिवेशनीया ॥ १ ॥ पिष्ट्वाथतांकज्जलिकांनिदध्याल्लौहंचपात्रंवरपूतमस्मिन् ॥ जम्बीरजंपक्करसंफलानिशतंतलेस्याग्निमथाल्पमात्रम् ॥२॥ जीर्णेरसेभावितमेतदेतैः सुपंचकोलोद्भववारिपूतैः ॥ सवेतसाम्लैःशतपत्रयोज्यं समंरजष्टंकणजंसुमृष्टम्॥३॥विडंतदर्द्धंमरिचंसमंच तत्सप्तवारंचणकाम्लतोयैः॥क्रव्यादनामाभवतिप्रसिद्धोरसस्तुमंथानकभैरवोक्तः ॥ ४ ॥ मासद्वयंसैंधवतक्रपीतमेतस्यधन्वौखलुभोजनांते॥ गुरूणिमांसानिपयांसिपिष्टैःकृतानिखाद्यानिफलानिवेगात्॥५॥मात्रातिरिक्तान्यतिसेवितानियामद्रयाज्जारयतिप्रसिद्धः॥निहन्त्यजीर्णान्यपिषट्प्रकाराण्यग्निंकरोतिक्रमसेवनेन ॥ ६ ॥ कुर्य्याद्दीपनमुद्धतंचपवनंदुष्टामयोयक्ष्मणांतुंदस्थौल्यनिबर्हणेसुगहनंशूलार्तिनिर्मूलनम्॥गुल्मप्लीहविनाशनोबहुरुजां

अर्थ--पारा १६ टंक, गंधक ३२ टंक, तांबा ८ टंक, सार ८ टंक इन सबको पीसकर अग्नि देवे, और अरंडके पत्तोंमें बसावे, फिर पीसकर कजली करै. फिर कपरछान कर लोहेके पात्रमें डालकर पकी जंबीरीके १०० फलोंका रस डाले नीचे मन्दाग्नि देय और अजीर्णके लिये बनावे, पंचकोलके पानीकी भावना देवे अमलवेतके रसकी भावना देय. इसके बराबर फूला सुहागा कचानोंन आधा डाले. मिरच सुहागेकी बराबर डालकर चनेके खारमें सातबार मले. यह क्रव्यादनाम प्रसिद्ध रस है, रसोंके बीचमें बडा भयानक रस है दो मासे छाँछ और सेंधानोंनके साथ नित्य पीवे, भोजन पीछे करे भारी अन्न, मांस, खोआ आदि, पेठेके पदार्थ, फलादि खाया होय तो इसकी मात्रा सेवनसे दो प्रहरमें जीर्ण होवे. गरिष्ठ भोजन, मांसखाना, छाय, मीठाफल इनके खानेसे जो अजीर्ण होवे, तो एक मात्रा रत्तीभर सेवन करनेसे दो प्रहरमें सबको भस्म कर देवे, छः प्रकारके अजीर्णका नाश करे, और अग्निको प्रबल करे, क्रमसे सेवन करै तो वात और दुष्टरोगोंका नाश करे पेटसूजनको दूर करै, शूलका नाश करे, गुल्म, गांठ, प्लीहा इनका नाश करे, और बहुतसे रोगोंका नाश करे, इसका निरन्तर सेवन करनेसे सब उदरविकार दूर होवें यह क्रव्यादनामा रस अतिश्रेष्ठ है ॥

वाजीकरणेचन्द्रोदयरसः ।

पलंमृदुस्वर्णदलंरसेंद्रंपलाष्टकंगन्धकषोडशांशम्॥शाणैस्तुकार्पासभवैःप्रसूनैःसर्वंविमर्द्याथकुमारिकाभिः॥१॥ तत्काचकुम्भेनिहितंसुगाढंमृत्कर्प्पटंतद्दिवसत्रयेचपचेत्क्रमाग्नौसिकताख्ययंत्रेततोरजःपल्लवरागरम्यम्॥२॥निगृह्यचैतस्यपलंपलानिचत्वारिकर्प्पूररजस्तथैव॥जातीफलंशोषणमिन्द्रपुष्पंकस्तूरिकायाइहशाणएकः ॥३॥ चन्द्रोदयोयंकथितश्चमासं भक्ष्योहिवल्लीदलमध्यवर्ती ॥ मदोन्मदानांप्रमदाशतानां गर्वाधिकत्वंश्लथयत्यकांडे ॥ ४ ॥ शृतंघनीभूतमतीवदग्धंमृदूनिमांसानिचमंडकानि ॥ लवान्नपिष्टानिभवन्तिपथ्यान्यानन्ददायीन्यपराणि

चात्र ॥ ५ ॥ वलीपलितनाशनस्तनुभृतांवयःस्तंभनःसमस्त-गदखण्डनःप्रचुररोगपंचाननः ॥ गृहेनरसराजकोभवतियस्य चन्द्रोदयःसपंचशरदर्पितोमृगदृशांकथंवल्लभः ॥ ६ ॥

अर्थ—सोनेके वर्क १६ टंक, शुद्धपारा ८ पल,गंधक १६ पल,कपास-के फूल १पल इन सबको पीस ग्वारपाठेके रसमें सान आतिशी शीशीमें भर कपरमिट्टी कर वालुकायंत्रमें क्रमसे अग्नि देय दो दिन जब लाल होजाय तब ग्रहण करे, फिर १ पल कपूर ४पल जायफल, समुद्रशोष, लौंग,कस्तूरी १ टंक इन सबको मिलाकर वर्त्ते,यह चन्द्रोदय नाम रस है, १मासे पानमें खाय, १०० मदमाती स्त्रियोंका गर्व भंजन करे,ऊपरसे कढ़ती बिरियांका दूध पिये नरम मांस खाय,मैदाकी रोटी,तीतर,रोटी और गरिष्ठ वस्तु,गरि-ष्टबीज पथ्य लेवे आनंदकारी भोजन करे तो बुढापेको दूर करै,देह पुष्ट करे स्तंभनकारक,संपूर्णरोगोंको दूर करे,हाथीरूप रोगोंको यह रस सिंहसमान जानो,जिसके घरमें चन्द्रोदय रस नहीं है,वे मृगनयनियोंको कैसे प्यारेलगें।

सर्वज्वरेमृत्युंजयरसः ।

प्रवालमुक्ताफलवज्रतारसुवर्णताम्राभ्रकसारसीसाः ॥ यथोत्तरा वंगशिलालनाथाः पलोन्मितैःसूतकसप्तभागाः ॥१॥चतुश्चतुः शंखकपर्दिकानां सतक्रजम्बीरविमर्दितानाम् ॥ अहिफेनपिप्प-ल्यविषत्रयाणां पलंपलंदन्तिफलान्वितानाम् ॥२॥ समस्तमे-कीकृतमत्रचूर्णंदिनत्रयंचित्रकवारिपूर्णम् ॥ विशुष्कभृंगारसका-कतुंडीस्नुह्यर्कधूर्तामरदारुमुंडी ॥३॥ किरातभल्लातनिकुम्भकु-म्भांकुठेरवीराकरवीररम्भा ॥४॥ बलात्रिवृन्नागवल्ल्याखुकर्णी कटुत्रिकंशीतिशिवाद्रिकर्णी ॥ यासोमृताकाण्डरुहासलज्जा विंशोवृषाक्षाचरुजःसगुंजा ॥५॥ अमीभिरुच्चाभुजगार्तियुक्तै-र्वराहसेधाशिखिमीनपित्तैः ॥ पृथक्पृथक्साधितमेवमस्यांदृढे

पुटेताम्रमयेविपक्वम् ॥ ६ ॥ सुशीतमुद्धृत्यसुपेषणीयोरसोहि-मृत्युंजयनामधेयः ॥ ७ ॥

अर्थ—मूंगा, मोतीचूर,हीरा, चांदी,सोना, तांबा,अभ्रक, गंधक और मोम, वंग,मनशिल, हरताल, एक २ पल लेवे, पारा७भाग, शंख,कौडी ये चार२पल इनको मढा, जंबीरीके रसमें घोटे फिर तेलियामीठा,अफीम, १पल,पीपल१पल, जमालगोटा१पल इनको एकत्र कर चूर्ण कर दो दिन चीतेके काढेमें मर्दन करे,जब सूख जाय तब भांगरेकारस,काकतुडीकारस, सेहुँड़, आक, धतूरा, देवदारु, गोखरू, मुंडी,चिरायता, भिलावा,जमाल-गोटा,नागदूली,वनतुलसी,कांकनेर,केला,खरैटी,निसोत,गंगेरन,मूसाकर्णी सोंठ, मिरच, पीपल, सेंधानोंन, विष्णुक्रांता, जवासा, गिलोय, कुटकी, लज्जावंती, अडूसा, भृंगराज, चिरमिठी, सूअर, गोह, मोर, मछलीका पित्ता सबको अलग २ साधन कर और दृढ पुट तांबेके पात्रमें देकर पकावे जब ठंढा होजाय तब इसको पीस रक्खे यह मृत्युंजय नाम रसहै, और दो गुंजा मिश्रीमें देय, बलाबल देखकर देवे, बहुत दोषोंकरके संयुक्त उग्र दोषोंको दूर करे और मृत्युको जीते ॥

अथासवाः ।

प्रथमंद्राक्षासवः ।

द्राक्षायाश्चपलशतंसितायास्तच्चतुर्गुणम् ॥ कर्कंधुमूलंतस्यार्द्धं मूलार्द्धंपुष्पधातकी॥ १॥क्रमुकंचलवङ्गंचजातीपुष्पंफलानिच॥ चातुर्जातंत्रिकटुकंमस्तकीकरहाटकम्॥२॥आकल्लकरसंकुष्ठंप-लानिदशचाहरेत्॥एभ्यश्चतुर्गुणंतोयंभाण्डेचैवविनिक्षिपेत्३॥ स्थापयेद्भूमिमध्येतुचतुर्दशदिनानिच॥ ततोजातरसंशुद्धंक्षिपे-त्कच्छपयंत्रके ॥ ४ ॥ मुद्रयित्वाचतस्याधोवह्निंप्रज्वालये-त्सुधीः ॥ तस्यान्तःप्लावितंसीधुंगृह्णीयात्सर्वमेवतत्॥५॥पूनरे-वचतत्सीधुंक्षिपेत्कच्छपयंत्रके ॥ धराधोनिक्षिपेत्तस्यमृगनाभिं सकुंकुमम् ॥६॥ एतत्सिद्धंक्षिपेद्धीमान्काचभांडेनिधापयेत् ॥ त्रिदिनेषुव्यतीतेषुतत्पेयंपलसंख्यया ॥ ७ ॥ मध्याह्नेद्विप-

लंग्राह्यंसंध्याकालेचतुःपलम्॥गरिष्टंस्निग्धमाहारंभक्षयेदस्यसेवकः ॥ ८ ॥ वीर्याभिवृद्धिःप्रभवेन्नराणांरामासुवश्याभवतीह लोके ॥ तएवधन्यामनुजानरेन्द्राद्राक्षासवंयेकिलसेवयन्ति॥९॥

अर्थ—मुनक्का सौ पल, मिश्री ४०० पल,बेरकी जड़ ५० पल, धायके फूल २५ पल, सुपारी १० पल, लोंग १० पल, जावित्री १० पल, जायफल १० पल,तज इलायची,तेजपात ४० पल, सोंठ, मिरच, पीपल ३० पल,नागकेशर १० पल, मस्तंगी १० पल,कशरू १० पल, अकरकरा १० पल, कूठ १० पल इन औषधियोंसे चौगुना पानी मिट्टीके बरतनमें भरकर दवा डालकर जमीनमें गाड देवे और १४ दिन बाद निकालकर भभकेमें चढावे और मन्दाग्निसे सिद्धकर केशर, कस्तूरी डाल कांचके पात्रमें रखदेवे, जब तीन दिन होजायँ तब बलप्रमाण देखकर सबेरे पीवे और मध्याह्नमें दो पल लेवे और सायंकालमें चार पल पीवे, गरिष्ठ तथा चिकना आहार सेवन करै, तो वीर्य्यको बढावे, स्त्रियोंको वशीभूत करै, लोकमें वे लोग धन्य हैं, जो द्राक्षासवका सेवन करतेहैं ॥

द्राक्षारिष्ट ।

द्राक्षातुलार्द्धद्विद्रोणेजलस्यापिपचेत्सुधीः॥पादशेषैकपात्रेचपूतशीतेविनिक्षिपेत् ॥ १ ॥ गुडस्यद्वितुलांतत्रत्वगेलापत्रकेशरम्॥प्रियंगुमरिचंकृष्णाविडङ्गंचेतिचूर्णयेत् ॥ २ ॥ पृथक्पलोन्मितैर्भागैस्ततोभांडेनिधापयेत् ॥ समन्ततोहिदूषित्वापचेज्जातरसंततः॥३॥ उरःक्षतंक्षयंहंतिकासश्वासगलामयान् ॥४॥

अर्थ—मुनक्का ५० पल,पानी दो द्रोणमें औटावे जब चौथाई रहजाय तब कपडेमें छानकर ठंढाकर फिर २०० पल गुड डाले तज, तेजपात, इलायची, नागकेशर, प्रियंगु, मिरच, पीपल, वायविडंग इन सबका एक २ पल चूर्ण कर डाले और हिलाताजाय पकावे जब शुद्ध होजाय तब वर्त्ते उरःक्षत, क्षय, खांसी, श्वास आदिका नाश करे ॥

लोहासवः ।

लोहचूर्णत्रिकटकंत्रिफलाचव्यवासकम ॥ विडङ्गंचित्रकंमस्ता

चतुःसंख्यापलंपृथक् ॥ १ ॥ चूर्णीकृत्यततःक्षौद्रं चतुःषष्टिपलंक्षिपेत् ॥ दद्याद्गुडतुलांतत्रजलंद्रोणद्वयंततः ॥ २ ॥ घृतभांडेविनिक्षिप्यनिदध्यान्मासमात्रकम् ॥ लोहासवममुंमर्त्यः पिबेद्वह्निकरंपरम् ॥ ३ ॥ पांडुश्वयथुगुल्मानिजाठराण्यर्शसां रुजम् ॥ कुष्ठप्लीहामयंकण्डूंकासंश्वासंभगन्दरम् ॥ ४ ॥ अरोचकंचग्रहणींहृद्रोगंचनिवारयेत् ॥ ५ ॥

अर्थ—लोहचूर्ण ४ टंक, सोंठ, मिरच, पीपल, १२ टंक, त्रिफला १२ टंक, जवासा, वायविडंग, चीता, मोथा प्रत्येक चार २ टंक इनका चूर्ण कर शहद ६४ पल, गुड १०० पल, पानी दो द्रोण चिकने पात्रमें भर सब औषधियोंको डाल, एक महीनातक राखे पीछे लोहासव शुद्ध होय अग्निको दीप्त करे. पांडुरोग, सूजन, गुल्म, पेटके रोग, अर्श, कोढ़, प्लीहा, आम, खाज, खांसी, श्वास, भगन्दर, अरुचि, संग्रहणी, हृदयरोग आदिको दूर करता है ॥

दशमूलासव ।

दशमूलंतुलार्द्धंचपौष्करंचतदर्द्धकम् ॥ हरीतकीनांप्रस्थार्द्धंधात्रीप्रस्थद्वयंतथा ॥ १॥ चित्रकंपुष्करमितंचित्रकार्द्धंदुरालभा ॥ गुडूच्यावैशतपलंविशालापलपंचकम् ॥ २ ॥ खदिरस्यपलान्यष्टौतदर्द्धंबीजकंतथा ॥ मंजिष्ठामधुकंकुष्ठंकपित्थंदेवदारुच॥ ॥ ३ ॥ विडंगंचविकंलोध्रंभार्ङ्गीचाष्टकवर्गकम् ॥ कृष्णाजाजीपिप्पली चक्रमुकंपद्मकंसटी ॥ ४ ॥ प्रियंगुःशारिवामांसी रेणुकानागकेशरम् ॥ त्रिवृतारजनीरास्नामेषशृंगीपुनर्नवा ॥ ॥ ५ शतंचेंद्रयवामुस्ताद्विपलान्काथयेज्जले ॥ चतुर्गुणेपादशेषे द्राक्षामष्टपलंक्षिपेत्॥६॥ त्रिंशत्पलांतुधातक्यांगुडंपलचतुःशतम्॥मधुद्वात्रिंशत्पलंचसर्वमेकत्रकारयेत्॥७॥भांडेपुराणेस्निग्धेचमांसीमरिचधूपिते ॥ पृथग्द्विपलिकानेतान्पिप्पलीचन्दनंजलम्॥ ८ ॥ जातीफलंलवङ्गंचत्वगेलापत्रकेशरम् ॥ कर्ष-

मात्रंचकस्तूरींदद्यात्पथ्यंनिधापयेत् ॥९॥ ततोराजरसंशुद्धक्षिपेत्कच्छपयंत्रके ॥ कतकट्टफलंचूर्णंक्षिपेन्निर्मलतांव्रजेत् ॥१०॥ पक्षादूर्ध्वंपिबेद्यस्तुमात्रयाचयथाबलम्॥धातुक्षयंजयत्येतत्कासंपंचविधंतथा ॥ ११ ॥ अर्शांसिषट्प्रकाराणितथाष्टाबुदराणि च ॥ प्रमेहंचमहाव्याधिमरुचिंपाण्डुतांतथा ॥ १२ ॥ सर्वान्वातांस्तथाशूलंश्वासंछर्दिमसृग्दरम्॥ अष्टादशैवकुष्ठानिशोफंशूलं भगन्दरम् ॥ १३ ॥ शर्कराद्यंमूत्रकृच्छ्रमश्मरींचविनाशयेत् ॥ कृशस्यपुष्टिंकृत्वाचपुष्टस्यचमहाबलम्॥१४॥महावेगोमहातेजामहावेगीमहोद्धतः॥कामपुष्टिंकरोत्येषवंध्यानांपुत्रदोभवेत्१५

अर्थ–दशमूल (शालपर्णी, पृष्ठिपर्णी, दोनोंकटेरी, गोखरू, बेल, अरणी, अरलु, खंभारि, पाढ) ५० पल, पोहकरमूल २५पल, हरड ३८ पल, आंवला १२८ पल, चीता २५ पल, जवासा १२ पल, गिलोय १०० पल, इन्द्रायण ५ पल, खैरसार ८ पल, बिजैसार ४पल, मजीठ, मूलहठी, कूठ, कैथ, देवदारु, वायविडंग, चव्य, लोध, भारंगी, अष्टवर्ग (जीवक १, ऋषभक २, मेदा ३, महामेदा ४, कांकोली ५, क्षीरकांकोली ६, ऋद्धी ७, वृद्धी ८) काला जीरा, पीपल, पठानीलोध, पद्माख, कचूर, प्रियंगु, सारिवा, बालछड, रेणुका, नागकेशर, निसोत, हलदी, रास्ना, मेढासिंगी, सांठी, सोंफ, इंद्रजौ, मोथा इन सबको दो२ पल लेवे और इनसे चौगुने पानीमें काढा करे, जब चौथाई शेष रहे तब आठ पल मुनक्का डाले और तीसपल धायके फूल, १०० पल गुड, बत्तीस पल शहद सबको मिला, पुराने चिकने बरतनमें दो पल बालछड़ और दो पल मिरचोंकी धूनी देवे; पीपल, चन्दन, मोथा, जायफल, लौंग, तज, तेजपात, इलायची, नागकेशर इन सब औषधियोंको चार२ टंक, कस्तुरी ४ टंक, डालकर पंदरह दिन जमीनमें गाडदेवे, जब रस शुद्ध हो जाय तब भभकेमें खेंचलेवे, फिर कतकफलका चूर्ण डालनेसे निर्मल होजाय, तब पंदरह दिन पीछे पीवे मात्रा बलाबल देखकर देवे. यह दशमूलासव धातुक्षय, पांचप्रकारकी खांसी, छः प्रकारकी

बवासीर, आठ प्रकारके उदररोग, महारोग प्रमेह, अरुचि, पांडुरोग, संपूर्ण प्रकारके वातरोग, दर्द, श्वास, वमन, प्रदर, कोढ १८ प्रकारका सूजन, शूल, भगन्दर, शर्करादि, मूत्रकृच्छ, पथरी आदि रोगोंका नाश करे, दुबलेको मोटा करे और पुष्टको महाबल करे महावेग अति वीर्यवान् अतिबलवान् कामोद्दीपन करे, वंध्याको पुत्रवती करै ॥

कूष्माण्डकासवः ।

कूष्मांडंचफलंपक्वंतस्मिच्छिद्रंतुकारयेत् ॥ छिद्रमध्येगुडोदेयो द्वितुलश्चशनैःशनैः ॥१॥ त्वचाबीजंचउत्कृष्यस्निग्धभांडेनिधापयेत् ॥ बदरीत्वक्पलान्यष्टौतस्यक्काथंप्रदापयेत् ॥२॥ द्वौ कसेलौचधातक्याहपुषाचपलंपलम्॥त्रिफलाहौहबेरंचशृङ्गीभार्ङ्गीचपुष्करम् ॥३॥ तालमूलीस्वयंगुप्ताकंकोलंवंशलोचनम् ॥ यष्टीमोचरसंमुस्ताग्रंथिकंचाष्टवर्गकम् ॥४॥ चातुर्जातंविडंगानिव्योषंचित्रककुंकुमम् ॥ जातीपत्रंलवंगंचकरभंमालतीफलम् ॥ ५ ॥ दशांघ्रिरक्तसारंचकट्फलंरेणुकासटी ॥ तिक्तसारंचतुःकर्षमाटरूषंकुलिंजनम् ॥६॥ अजमोदाश्वगंधाचचव्यंमाजूफलंवरी ॥ सारंसूर्णंतेजबलंतालीसंश्यामपूगकम् ॥७॥ एतेषांकर्षमात्रंचसूक्ष्मचूर्णन्तुकारयेत्॥ मूलभांडेक्षिपेत्सर्वंपलमेकंभजेन्नरः ॥ ८ ॥ कासंश्वासंचहृद्रोगंपाण्डुरोगंक्षतंक्षयम्॥ गुल्मोदरंग्रहण्यर्शोमूत्रकृच्छ्रंतथाश्मरी ॥९॥ प्रमेहशोफातीसारवातपित्तकफापहः ॥ कूष्माण्डासवइत्येषबलकृन्मलशोधनः ॥१०॥

अर्थ-पेठेके पके हुए फलमें छेद करे उस छेदमें दो तोला गुड़ हौले २ भरै फिर छिलका और बीज अलगकर चिकने बरतनमें भरदेवे झडबेरीकी ८ पल छालका काढाकर उसमें डाले, कसेला दो पल, धायके फूल दो पल, हाऊबेर १ पल, त्रिफला, काकडासिंगी, भारंगी, पोहकरमूल, मूसली, गोखरू, कंकोल, वंशलोचन, मुलहठी, मोथा, मोचरस, पीपलामल, अष्टवर्ग, चात-

जीत,वायविडग,सोंठ,मिरच,पीपल,चीता, केशर, जायफल, अकरकरा, मालतीफल, रक्तचन्दन, दशमूल, कायफल,रेणुका, कचूर, कंद,संभालू, अडूसा,कुलिंजन,अजमोद,असगंध,चव्य,मांजूफल, शतावरी, सार, तेजबल,तालीसपत्र,चिकनी सुपारी इन सबको चार २ टंक लेकर महीन चूरणकर एक बरतनमें डाल देवे उसमेंसे एकपल सेवन करनेसे खांसी,श्वास,हृदयरोग,क्षत,क्षयरोग,गांठ, उदररोग, ग्रहणी,मूत्रकृच्छ्र, पथरी,प्रमेह,सूजन, अतीसार,वात,पित्त,कफ इत्यादिक रोगोंका नाश करता है यह कूष्माण्डा सब बलकारी और मलका शोधनेवाला है ॥

उदरविकारे जंबीरद्रावः ।

शतंजम्बीररसकंरामठंचपलद्वयम् ॥सैंधवंचविडंगंचपृथग्दत्त्वा पलंपलम् ॥ १ ॥ त्र्यूषणंपलमेकैकंसौवर्चलचतुष्टयम् ॥ यवानिकापलंचैकंकर्षमानचतुष्टयम् ॥ २ ॥ स्निग्धभांडेविनिक्षिप्यअश्वशालांनिधापयेत् ॥एकविंशद्दिनंयावत्ततःसर्वंसमुद्धरेत् ॥ ३ ॥ सुचन्द्रेसुदिनेलोकेपूजयित्वाभिषग्गुरून् ॥ यकृत्प्लीहामगुल्मंचविद्रध्यष्ठीलिकादयः ॥४॥ वातगुल्ममतीसारंशूलं पार्श्वहृदामयान्॥नाभिशूलंविबंधंचआध्मानंचगुदोदरम् ॥५॥ नश्यंतितस्यशीघ्रेणवातश्लेष्मामयाश्चये ॥ जीर्यन्तेतस्यकोष्ठेतु जम्बीरीद्रावसेवनात् ॥ ६ ॥

अर्थ—जंबीरीका रस १०० पल,हींग २ पल,सैंधानोन १ पल,वायविडंग १ पल, सोंठ,मिरच,पीपल एक२ पल,काचनोंन ४ पल,अजवायन १पल, सरसों ४ पल चिकने बरतनमें भर जहां घोडा बँधता होवे वहां गाड देवे.फिर इक्कीसवें दिन निकाल अच्छा चंद्रमा, अच्छा दिन देख अच्छे वैद्यका पूजन कर उसका सेवन करे तो यकृत्, प्लीहा, आम, गांठ, विद्रधि, अष्ठीलिका,वातगुल्म,अतीसार,शूल, पसली,हृदयरोग, नाभिशूल, दस्त बंदहोना,अफारा,उदररोग आदिका जल्दी नाश करे और वातश्लेष्म आदिकोंको और जंबीरीद्राव सेवन करनेसे पेटका अजीर्ण नाश होवे ॥

अथ लेपप्रकरणम् ।

तत्र व्रणे लेपः ।

शिरीषयष्टीनतचन्दनैलामांसीहरिद्राद्वयकुष्ठवालैः ॥
लेपोदशांगःसघृतप्रलेपाद्विसर्पकण्डूव्रणदाहहंता ॥ १ ॥

अर्थ—सिरसकी छाल, मुलहठी, तगर, लालचन्दन, एलुआ, बालछड, हलदी, दारुहलदी, कूठ, नेत्रवाला इन दश चीजोंको घीमें मिलाकर लेप करनेसे खुजली, फोडा, फुनसी, विसर्प, व्रण, दाह आदिका नाश होवे ॥

पुनः श्लोकः ।

कृष्णाजाजीब्रह्मदण्डीमरिचंरामपिप्पली ॥
स्फोटिकायांहितोलेपःपानेवातंडुलांभसा ॥ १ ॥

अर्थ—कालाजीरा, ब्रह्मदण्डी, पीपल, मिरच इनके लेपसे फोडा फुनसी दूर होवें इसको चांवलके पानीसे करै ॥

शोफेलेपः ।

पुनर्नवादारुशुंठीसिद्धार्थंशिग्रुरेवच ॥पिष्ट्वाचैवारनालेनप्रलेपः सर्वशोफजित् ॥ १ ॥ बीजपूरजटाहिंस्रादेवदारुमहौषधैः ॥ रास्नाग्निमंथलेपोयंवातशोथविनाशनः ॥ २ ॥

अर्थ—सांठीकी जड, देवदारु, सोंठ, सरसों, सैंजना इनको पीस कांजीमें मिलाकर लेप करनेसे सब प्रकारकी सूजन जाय, बिजौरेकी जड, वायविडंग अथवा कटेरी, देवदारु, सोंठ, रास्ना, अरणी इनका लेप करनेसे वातकी सूजन जाय ॥

पुनःश्लोकः ।

मधूकंचन्दनंदूर्वानलमूलंचपद्मकम् ॥उशीरंवालकंपद्मंपित्तशोफेप्रलेपनम् ॥१॥ कृष्णापुराणपिण्याकंशिग्रुत्वक्चशतावरी ॥ मूत्रेपिष्ट्वासुखोष्णोयंप्रलेपःश्लेष्मशोफहा॥२॥अजादुग्धतिलैर्लेपोनवनीतेनसंयुतः॥शोथमारुष्करंहन्तिलेपश्चकृष्णमार्त्तिकः ३॥

अर्थ—मुलहठी, चन्दन, दूर्वा, नलमूल, पद्माक, खस, नेत्रवाला, कमल,

इनका लेप करनेसे पित्तकी सूजन दूर होवे; पीपल, पुरानी खल, सैंजनेकी छाल, सफेद सांठी इनको गोमूत्रमें पीस गरम कर लेप करनेसे कफकी सूजन जाय. बकरीका दूध और तिल इनको मक्खनमें मिलाकर लगानेसे भिलावेकी सूजन जाय अथवा काली मिट्टीका लेप करनेसे भी जाय ॥

शिरोर्तिलेपः ।

कुष्ठमैरंडतैलेनलेपःकांजिकपेषितः॥शिरोर्तिंवातजांहन्यात्पुष्पं वामुचुकुंदजम् ॥ १ ॥ देवदारुनतंकुष्ठंनलदंविश्वभेषजम्॥ सकांजिकःस्नेहयुक्तोलेपोवातशिरोर्तिनुत् ॥ २ ॥ धातृकसेरुह्रीबेरपद्मपद्मकचन्दनैः ॥ दूर्वोशीरनलानांचमूलैःकुर्यात्प्रलेपनम् ३॥ शिरोर्तिंपित्तजांहन्याद्रक्तपित्तरुजस्तथा ॥ हरेणुनतशौलेयमुस्तैलागरुदारुभिः ॥ ४ ॥मांसीरास्नासचुक्रश्च लेपःश्लेष्मशिरोर्तिनुत् ॥ मरिचकुष्ठमधुकंवचाकृष्णोत्पलैस्तथा ॥ ५ ॥ लेपः सकांजिकस्नेहःसूर्यावर्त्तार्द्धभेदयोः॥६॥शुंठीचन्दनमेरंडजटालेपःशिरोर्तिनुत् ॥राजिकाभिःसर्षपैश्चशुंठ्याथमरिचैरथ॥७॥

अर्थ—कूठको अंडीके तेलमें कांजीमें पीसकर लेप करनेसे वातज शिरकी पीडा दूर होवे,अथवा मुचकुन्दके फूलका लेप करनेसे दूरहोवे और देवदारु, तगर, कूठ, बालछड़,सोंठ इनको कांजी और तेलमें मिलाकर लेप करै तो वातज शिरदरद दूर होवे. आमला,कसेरू, हाऊबेर,कमल,पदमाख,चन्दन, दूर्वा, खस, छड, नींबकी जड़ इनका लेप करनेसे पित्तज शिरदर्द दूर होवे और रक्तपित्तरोग दूर होवे संभालू, तगर,पाषाणभेद,मोथा,इलायची,अगर देवदारु, बालछड़, अंडीकी जड इनका लेप करनेसे कफज शिरदरद नाश होय. मिरच,कूठ, मुलहठी, चव्य, पीपल इनको कांजी और तेलमें पीसकर लेप करै तो आधासीसी और सूर्यावर्त्त जाय.सोंठ,चन्दन,एरंडीकी जड इनके लेपसे शिरदरद जाय राई,सरसों, सोंठ,मिरच इनके लेपसे शिरदरद जाय ।

कर्णपीडाविषे लेप ।

कुष्ठशुंठीवचादारुशताह्वाहिंगुसैंधवम् ॥
वर्त्तीमत्रश्रुतंतैलंसर्वकर्णामयापहम् ॥ १ ॥

अर्थ—कूठ,सोंठ, बच, दारुहलदी, हींग, सैंधानोंन,सोंफ इनको बछियाके मूत्रके साथ कानमें डालनेसे कानके सब रोग जायँ ॥

उदरपीडा ।

एलीयकंहरिद्राचस्फटिकानवसादरम् ॥ टंकणंधेनुमूत्रेणकोष्णंजठरलेपनम् ॥ १ ॥

अर्थ—एलुआ, हलदी, फटकरी, नौसादर, सुहागा इनको गोमूत्रमें गरम कर, पेटपर लेप करनेसे दरद जाय ॥

शूलेश्लोकः ।

मदनस्यफलंतिक्तांपिष्ट्वाकांजिकवारिणा ॥कोष्णंकुर्यान्नाभिलेपंशूलशांतिर्भवेत्ततः ॥ १ ॥ पुष्करंशांबरंशृङ्गंकुष्ठंविश्वौषधं तथा ॥ उष्णोदकेनसंपिष्टो लेपःशूलविनाशकृत् ॥ २ ॥

अर्थ—मैनफल, कुटकी इनको कांजीके पानीमें घोल गुनगुनीकर नाभिपर लेप करनेसे दर्द दूर होवे. पोहकरमूल, साबरसिंगी, कूठ, सोंठ इनको पीसकर गरम गरम लेप करनेसे दर्द दूर होवे ॥

व्रणे च श्लोकः ।

गृहधूमंचकंपिल्लंटंकणमारिचंनिशा ॥ घृतेघृष्ट्वाप्रलेपोयंसर्वव्रणनिवृत्तये ॥ १ ॥ तैलेनवाघृतेनैवपिष्ट्वाचूर्णंप्रलेपयेत् ॥ धात्रीफलानांरक्षावाव्रणेलेप्याघृतेनसा ॥२॥ अपक्कोयदिवापक्कोनिम्बःसर्वव्रणेहितः ॥ अपक्वंपाचयेन्निम्बंपक्वंचापिविशोधयेत् ३॥

अर्थ—घरका धुआं,कबीला, सुहागा, मिरच,हलदी इनको घीमें पीसकर फोडे, फूनसी पर लेप करनेसे फोडा फुनसी दूर होवें, तेल अथवा घीमें मिलाकर लगावे, आंवलेकी राख घीमें मिलाकर लेप करनेसे फोडा दूर होवे नींबके पत्तोंका लेप करनेसे कच्चा वा पका फोडा दूर होवे विनपकेको पकावे और पकेको शोधन करे ॥

गंडमालायांलेपः ।

सर्षपाञ्छिग्रुबीजानिशणबीजातसीयवान्॥मूलकस्य चबीजानि

तक्रेणाम्लेनपेषयेत् ॥ १ ॥ गण्डमालार्बुदंगण्डंलेपेनानेनशाम्यति ॥ कटुतैलान्वितेलेपात्सर्प्पकंचुकभस्मभिः ॥ २ ॥ रयःशाम्यतिगण्डस्यप्रकोपात्स्फुटतिध्रुवम् ॥ ३ ॥ शाणमूलकशिग्रूणांफलानितिलसर्षपाः ॥ रामठःकिण्वमलसीप्रदेहःपाचनःस्मृतः ॥ ४ ॥ दन्तीचित्रकमूलत्वक्स्नुह्यर्कपयसागुडैः ॥ भल्लातकास्थिकासीससैंधवैर्दारुणःस्मृतः ॥ ५ ॥ कपोतकंकगृध्राणांमललेपेनदारुणः ॥ ६ ॥ दूर्वाभयासैंधवैश्चचक्रमर्दंकुठेरका ॥ निशातक्रयुतोलेपःकण्डूदद्रुविनाशनः ॥ ७ ॥ चक्रहसर्षपयुक्तिलकुष्ठंवावचिकारजनीद्वयतक्रम् ॥ हन्तिविचर्चिकमण्डलदद्रूवर्षशतान्यपिनश्यतिकण्डूः॥ ८ ॥ पलाशपर्प्पटंघृष्ट्वालेप्यंनिम्बुरसेनवा ॥ गुंजादालीचित्रकंचप्रपुन्नाटजटाथवा ॥ ९ ॥ प्रपुन्नाटस्यबीजानिधात्रीसर्ज्जरसोनिशा ॥ तैलेसर्षपतैलेनघृष्ट्वादद्रुविनाशनम् ॥ १० ॥

अर्थ–सरसों, सिरसके बीज, सनके बीज, अलसी, मूलीके बीज इनको मट्ठेमें पीसकर लेप करनेसे गंडमाला, अर्बुद गांठ दूर होवे, सांपकी कांचलीकी राख कडुवे तेलमें मिलाकर लगानेसे गंडमाला जाय, अर्थात् फूटजाय सनके बीज, मूलीके बीज, सहँजनेकी फली, तिल, सरसों, हींग, सुराबीज, अलसी इनका लेप करनेसे पकजाय, जमालगोटा, चीताकी जड और छाल, थूहरका दूध, आकका दूध, गुड, भिलावेकी मिंगी, कसीस, सैंधानोंन इनका लेप करनेसे गंडमाला जाय, पुरानी बेलगिरी, अरणी, जमालगोटा, चीता, कनेरकी जड, कबूतर, गीदडकी बीट लेप करनेसे गंडमाला दूर होजाय दूर्वा, हरड, सेंधानोंन, पमार, थूहर, हलदी इनको मट्ठेमें मिलाकर लेप करे तो खुजली, दाद दूर होवे. पमाड, सरसों, तिल, कूठ, बावची, दोनों हलदी इनको मट्ठेमें मिलाकर लेप करनेसे विचार्चिका और सौ वर्षका दाद तथा खाज दूर होवे. ढाकके बीज. पित्तपापडा इनको नींबूके रसमें लेप करनेसे दाद दूर होवे. चिरमिठी, देवदारु, चिता, पमाडके बीज इनका लेप करनेसे दाद दर होवे पमाडके

बीज, आमलेका रस, सज्जी, हलदी, सरसोंके तेलमें घोलकर लेप करे तो दाद दूर होवे ॥

अनुभूतोलेपः ।

दार्वीमूलकबीजानितालकंसुरदारुच ॥ ताम्बूलपत्रंसर्वाणिकार्षिकाणिपृथक्पृथक् ॥ १ ॥ शंखचूर्णंशाणमात्रंसर्वाण्येकत्रकारयेत् ॥ लेपोयंवारिणापिष्टः सिध्मानांनाशनंपरम् ॥ २ ॥ धात्रीसर्जरसश्चैवयवक्षारश्चचूर्णितः ॥ सौवीरेणप्रलेपोयंप्रयोज्यःसिध्मनाशकः ॥ ३ ॥ सगंधकंयवक्षारश्चूर्णंपिष्टंनिहन्तितान् ॥ अपामार्गरसात्पिष्टमूलिकाबीजलेपतः ॥४॥ सर्वांगसम्भवंसिध्मंनाशयत्यपिवेगतः ॥ ५ ॥

अर्थ—दारुहलदी, मूलीके बीज, हरताल, देवदारु, पान इन सबको जुदी २ चार २ टंक लेवे. और शंखका चूरा १ टंक इन सबको इकट्ठी पीसकर लेप करनेसे सिध्मकोढ दूर होवे. आमला, केशर, सज्जी, जवाखार इनका चूर्ण कांजीमें मिलाकर लेप करनेसे सिध्मकोढ जाय, गंधक, जवाखार इनको कांजीमें मिलाकर लेप करनेसे सफेदकोढ जाय, ओंगाके रसमें मूलीके बीज मिलाकर लेप करनेसे तत्काल सर्वांगसिध्मकोढ नाशहोवे॥

मुखच्छाया।

रक्तचन्दनमंजिष्ठालोध्रंकुष्ठंप्रियंगवम् ॥ वटांकुराहरिद्रेद्वेव्यंगेहामुखकान्तिदः ॥ १ ॥ कुष्ठतिलजीरकद्वयसिद्धचर्थानिशायुगैःसमः पयसा ॥ लेपोवदनसुधाकरव्यंगकलङ्कंविनाशयति ॥ २ ॥ वटस्यपाण्डुपत्राणिमालतीरक्तचन्दनम् ॥ कुष्ठंकालीयकंलोध्रमेभिर्लेपोविधीयते ॥ ३ ॥ तारुण्यपिडिकाव्यंगनीलिकादिविनाशनम् ॥ ४ ॥

अर्थ—रक्तचन्दन, मंजीठ, लोध, कूठ, प्रियंगू, वटके अंकुर, दोनों हलदी इनको बराबर मात्रा दूधमें मिलाकर लेप करे, मुखकी कांति बढे और छायाके दाग नाश होवें. वटके पके पत्ते. चमेली. रक्तचन्दन. कठ, अगर,

लोध इनका लेप करनेसे जवान अवस्थामें मुहाँसे तथा मुखच्छाया और नीले दाग दूर होवें ॥

नासारुधिरे ।

आमलकंघृतभृष्टंपिष्टंकांजीकवारिभिः ॥ जयेन्मूर्द्धप्रलेपेनरक्तं नासिकयास्रुतम् ॥ १ ॥

अर्थ—आमला घृतमें भूनकर कांजीमें पीसकर पहिले आमलोंको पीसकर फिर कांजीमें पीसकर माथेपर लेप करै तो नाकसे खूनका बहना बन्द होवे॥

नेत्रलेपः ।

पथ्यागैरिकसिंधूत्थदार्वीताक्ष्यसमांशकैः ॥ जलपिष्टैर्बहिर्लेपः सर्वनेत्रामयापहः ॥ १॥हरीतकीसैंधवमक्षशैलैःसगैरिकास्वच्छ- जलेनपिष्टैः ॥ बहिःप्रलेपंनयनस्यकुर्यात्सर्वाक्षिरोगोपशमार्थ- मेतत् ॥ २ ॥

अर्थ—हरड,गेरू,सैंधानोंन,दारुहलदी, रसोत ईनकी समान मात्रा ले. जलमें पीसकर नेत्रोंमें लगावे तो नेत्रोंके सब रोग जावें, परन्तु नेत्रोंके बाहर लेप करे. हरड,सैंधानोंन,अक्ष,शैल, गेरू इनको साफ जलमें पीस- कर आंखोंके बाहर लेप करे तो आंखोंके सर्व रोग नाश होजावें ॥

केशकल्पलेपः ।

अयोरजोभृंगराजस्त्रिफलाकृष्णमृत्तिका ॥ स्थितमिक्षुरसेमासं लेपनात्पलितंजयेत् ॥ १ ॥ त्रिफलानीलिकापत्रंलोहंभृङ्गरसः समम्॥अजामूत्रेणसम्पिष्टंलेपात्कृष्णीकरंस्मृतम्॥२॥त्रिफला लोहचूर्णंतुदाडिमंत्वाग्विषंतथा॥प्रत्येकंपञ्चपलिकंचूर्णंकुर्याद्वि- चक्षणः ॥३॥ भृंगराजरसस्यापिप्रस्थषट्कंप्रदापयेत्॥ क्षिप्त्वा लोहमयेपात्रेभूमिमध्येनिधापयेत्॥४॥ मासमेकंततःकुर्याच्छा- गीदुग्धेनलेपनम्॥कुर्याच्छिरसिरात्रौचसंवेष्टयैरंडपत्रकैः ॥५॥ स्वप्यात्प्रातस्ततःकुर्यात्स्नानंतेनप्रजायते ॥पलितस्याविनाश- श्चत्रिभिर्लेपैर्नसंशयः ॥ ६ ॥ ताम्रचूर्णंलोहचूर्णंतत्थंमाजफलं

तथा॥धात्रीभृंगरसंनीलीमहिदीसर्वमीलितम् ॥ ७ ॥ लोहपात्रेतुलोहस्यवटकेनविघर्षयेत् ॥ शीर्षकूर्चादिपलितेलेपनात्केशरंजनम् ॥ ८ ॥ काकिण्याःपत्रमूलंसहचरसहितंकेतकीनांच कन्दं छायाशुष्कंचभृंगंत्रिफलरसयुतंतैलमध्येनिधाय॥ निक्षिप्यालोहभाण्डे क्षितितलनिहितं मासमेकंचयावत्काशाकाशप्रकाशाभ्रमरकुलनिभामासमेकंभवन्ति ॥ ९ ॥

अर्थ-लोहचूरा, भांगरा, त्रिफला, कालीमिट्टी इनको लोहेके पात्रमें गन्नेके रसमें एक मास पर्यंत राखे और लेप करे तो बालोंका गिरना बन्द होजाय. त्रिफला, नीलके पत्ते, लोहका चूरन इनकी समान मात्रा ले भाँगरेके रस और बकरीके मूत्रमें पीसकर लगानेसे काले बाल होजावें. त्रिफला, लोहाचूर, अनारकी छाल, पांच २ पल लेकर भांगरेके रसमें डालकर एक महीना जमीनमें गाड देवे. फिर बकरीके दूधमें मिलाकर रातमें लेप करे और ऊपर अंडके पत्ते बांधकर सोवे. फिर प्रातःकाल स्नान करडाले तो सफेद बाल एकदफेके लेपसे काले होजावें. तांबेका चूरा, लोहेका चूरा, नीलाथोथा, माजूफल, आमले, नील, महदी इनको लोहेके बरतनमें लोहेके मूसलसे घोटे. इसके लगानेसे सफेद बाल काले होजावें. काकजंघाके पत्ते और जड, पियाबाँसा, केतकीकी जड छायामें सुखाकर भांगरा, त्रिफलाके रससंयुक्त तैलमें डाल, लोहपात्रमें एक महीने पर्य्यंत जमीनमें गाड देवे फिर बालोंमें लगावे. तो भ्रमरके समान काले होजावें ॥

केशवर्द्धनम् ।

गोक्षीरेतिलपुष्पाणितुल्येनमधुसार्पिषा॥शिरःप्रलेपनंकुर्यात्केशसंवर्द्धनंपरम् ॥१॥ हस्तिदन्तमषिंकृत्वाछागीदुग्धरसांजनम् ॥ रोमाण्येतेनजायंतेहस्तपादतलेष्वपि ॥२॥ चतुष्पदानांत्वग्रोमनखशृङ्गास्थिभस्मभिः॥तैलेनसहलेपोयंरोमसंजननंपरम् ३॥

अर्थ-गौके दूधमें तिलके फूल, शहद, घी बराबर मिलाकर शिरपर लेप करै तो बाल बढैं हाथीदांतको जलाकर रसोतसहित बकरीके दूधमें

मिलाकर शरीरमें लगानेसे हाथ पैरोंतकके रोम बढें, चौपायोंकी खाल और उनके रोम, नख, सींग, हाड इन सबकी भस्म करलेवे, फिर तेलके साथ मिलाकर लेप करनेसे रोम उत्पन्न होंय ॥

रोमशातने ।

शंखचूर्णस्यभागौद्वौहरितालैकभागकम् ॥ मनःशिलार्द्धभागा स्यात्सर्जिकाचैकभागिका ॥ १ ॥ लेपोयंवारिपिष्टस्तुकेशानुत्पाटचदीयते॥ अनयालेपयुक्त्याचसप्तवेलंप्रयुक्तया ॥ २ ॥ निर्मूलनंस्यात्केशस्यक्षपणस्यशिरोयथा ॥ ३ ॥

अर्थ—शंखकी भस्म दो टंक, हरताल १ टंक, मनसिल आधी टंक, सज्जीखार १ टंक इनको पानीमें पीसकर लगावे, बालोंको उखाडे और सातबार लगानेसे निर्मूल करै जैसे जैनी, बैरागीका शिर ॥

अग्निदाहे ।

अग्निदग्धेतुगाक्षीरीप्लक्षचन्दनगैरिकैः ॥ सामृतैःसर्पिषास्निग्धैरालेपंकारयेद्भिषक् ॥१॥ यवान्दग्ध्वामषीकार्यातिलतैलेनसंयुता ॥ अयंसर्वाग्निदग्धेषुप्रलेपोव्रणलेपनः ॥ २ ॥ निम्बपत्राणिसुरसाकुष्टंधात्रीफलानिच ॥ ईषद्दग्धेयथालाभेलेपनं भिषगुत्तमम् ॥ ३ ॥ कुष्टंमधुकयष्टीचचन्दनैरंडपत्रकैः ॥ मध्ये दग्धेहिते लेपोदुग्धेनपरिपेषिते ॥ ४ ॥

अर्थ—तवाखीर, पाखर, चन्दन, गेरू, गिलोय, घी अथवा चिकनाईसे वैद्य लेप करे तो अग्निका जला अच्छा होवे अथवा जलाये, यव तिलके तेलमें मिलाकर लगानेसे अग्निका जला और फफोला अच्छा होवे, नींबके पत्ते तथा तुलसीके पत्ते, कूठ, आमला इनका लेप उत्तम वैद्य जो थोडा जला होवे उसके करे तो अच्छा होवे. कूठ, महुआ, मुलहठी, चन्दन इनका लेप दूधमें मिलाकर लगानेसे मध्यम जला अच्छा होवे ॥

हस्तपाददाहेलेपः ।

बदरीपल्लवलेपःश्रीखण्डारिष्टफेनसंयुक्तः॥ दातव्यःपदलेपःशा-
म्यतिकुज्वालकंतस्य ॥ सैंधवंतैलसंयुक्तकालोमेदाहस्यनाशनः १॥

अर्थ-बेरके पत्तोंका लेप पैरोंपर करै, वा चन्दन, नीमकी छालका लेप करनेसे पैरोंका दाह दूर होवे अथवा निमक और कलई खडियाका इनका लेप करनेसे पैरोंका दाह नष्ट होवे ॥

अंत्रवृद्धिकुरंडवृद्धिरोगप्रतीकारमाह ।

लाक्षाकांचनकाबीजंशुण्ठीदारुसगैरकम् ॥ कुन्दरूकांजिकै-र्लेप्यमुष्णमंत्रविवर्द्धने ॥ १ ॥

अर्थ-लाख,कचनारके बीज, सोंठ,देवदारु, गेरू, कुंदुरू, गोंद इनको कांजीके रसमें घोलकर गरम कर लेप करनेसे आंतोंका बढना दूर होवे॥ १ ॥

नलवृद्धौ लेपः ।

एरण्डबीजंनिर्गुण्डीनिशालाक्षाचपुष्करम् ॥ आरनालेनसंपि-ष्यउष्णांपिंडीकरण्डहृत् ॥ १ ॥ रामठंसैंधवंकुष्ठंजीरकंगोमया-न्वितम् ॥ लेपस्तैलेनवासम्यगन्तर्गुण्डविनाशनः ॥ २ ॥

अर्थ-अंडीके बीज,संभालू, हलदी, लाख, पुहकरमूल इनको कांजीमें पीस गरम कर लेप करनेसे नल न बढे. हींग,सैंधानोंन, कूठ, जीरा इनको गोबरमें अथवा तेलमें पीसकर लेप करै तो अंतरगलगंड दूर होवे ॥

अर्शउपरिलेपः ।

शिरीषबीजकुष्ठार्कक्षीरपिप्पलिसैंधवाः ॥
लांगलीमूलगोमूत्रैरर्शोघ्नंहन्तिचित्रकैः ॥ १ ॥

अर्थ-शिरसके बीज, कूठ, आकका दूध, पीपल, चीता, कलहारीकी जड, गोमूत्रमें मिलाकर लगानेसे अर्शरोग अवश्य दूर होवे ॥

भगन्दरे लेपः ।

कासीसंसैंधवैरण्डतैलयुक्तंविमर्दितम् ॥
भगन्दरंप्रलेपेननाशयेन्नात्रसंशयः ॥ १ ॥

अर्थ-कासीस, सैंधानोंन,अंडीके तेलमें पीसकर लगानेसे निस्सन्देह भगन्दर दूर होवे ।

कुष्ठे लेपः ।

गृहधूमंपञ्चलवणंक्षारद्वयचक्रमर्दसलिलेच ॥ व्योषंविषवह्निबृहतीरात्रिद्वयकुष्ठकंपिल्लैः ॥ १ ॥ उग्रशिलासर्षपमतकसिंदरत-

त्थकासीसैः ॥ गोमूत्रेसंपिष्टैःस्नुह्यर्कदुग्धान्वितैर्लेपः॥२॥कुष्ठमपहन्त्यशेषंसमुत्थितमण्डलंसमुल्लिखति॥ नाशयतिसप्तवाराच्चिरमपिसंवर्णयेच्चित्रम् ॥ ३ ॥शिलालकोग्रारसताप्यगंधकं कंपिल्लतुत्थोषणसर्जिटंकणम् ॥ कासीसकुष्ठंनवनीतसंयुतंस्रवत्सुकुष्ठेष्वधिकंप्रशस्तम् ॥ ४ ॥

अर्थ—घरका धुआं, पांचोंनोंन, सज्जीखार, जवाखार, पमाडके बीज, पानीमें पीसकर लेप करे सोंठ, मिरच, पीपल, तेलियामीठा, चीता, कटेरी, दोनों हलदी, कूठ, कबीला इनका लेप करनेसे कोढ जाय. वच, मनशिल, हरताल, सरसों, पारा, नीलाथोथा, कसीस इनको गोमूत्र वा थूहरके दूध अथवा आकके दूधमें पीसकर लेप करनेसे अठारह प्रकारके कोढ तथा मंडल दूर होवें, चर्मरोग दूर होवें और सातवार लगानेसे पुराना कोढ जाय. मनसिल, हरताल, वच, पारा, गंधक, कबीला, नीलाथोथा, मिरच, सज्जी, सुहागा, कसीस, कूठ इनको माखनके साथ लगानेसे बढाहुआ कोढ(गलितकुष्ठ)दूर होवे।

श्वेतकुष्ठे लेपः ।

गुजावचाग्निकंकुष्ठंबाकुचीकांजिकान्वितम् ॥
सुपिष्टंचूर्णमेतेषांप्रलेपःश्वेतलक्ष्महृत् ॥ १ ॥

अर्थ—चिरमिठी, वच, चीता, शंख, मुरदासंग, बावची इन सबको कांजीके पानीमें पीसकर लगानेसे सफेद दाग दूर होवे ॥

पादस्फुटितोपरिलेपः ।

कनकभुजगवल्लीमालतीपत्रदूर्वारसगुदकुनटीभिर्मर्दितस्तैललिप्तः ॥ अपनयतिरसेन्द्रःकुष्ठकण्डूविचर्चिःस्फुटितचरणरंध्रंश्यामलत्वंत्वचायाः ॥ १ ॥

अर्थ—धतूरेके बीज, पान, मालतीके पत्ता, दूर्वा, पारा, कूठ, मनसिल, गंधक इनको पीसके मर्दन कर तेलसे छुटावे, तो यह रस कोढ, खाज, बिवाई इनको दूर करे और त्वचा काली होवे ॥

मस्सालेपः ।

चूर्णंसज्जिकयाघृष्टंमसालेप्यंजलेनवा ॥
तूर्णंनौसादरंचोक्तंतुत्थकंस्वर्णगैरिकम् ॥ १ ॥

अर्थ-चूना, सज्जी पानीमें घिसकर लेपकरै तो मस्सा दूरहोवें अथवा नौसादर, चौक, नीलाथोथा, लालगेरू पानीमें घिसकर लेप करनेसै मस्सा दूर होवें।

प्रहारोपरिलेपः ।

सर्जिकाचहरिद्राचप्रहारेलेपनंहितम् ॥
टंकणंसर्पिषालेपःकालमेषीजलेनवा ॥ १ ॥

अर्थ—सज्जी, हलदी, दोनोंको चोटपर लेप करनेसै आराम होवे. सुहागा, घीमें लगानेसे अथवा मजीठके पानीका लेपकरनेसे चोटअच्छीहोवे॥

गांठऊपरलेप ।

मरिचंपुष्करंकुष्ठंहरिद्रासैंधवंवचा ॥
सर्वग्रन्थौहितोलेपः षटिकालवणेनच ॥ १ ॥

अर्थ—मिरच, पोहकरमूल, कूठ, हलदी, सैंधानोंन इनके लेपसे सर्व अंगकी गाँठ दूर होवें. अथवा खडिया नोंन पानीमें घिसकर गांठपर लेप करनेसै गांठ दूर होवे ॥

फोडाऊपरलेप ।

कृष्णाजाजीब्रह्मदंडीमरिचंरामपिप्पली ॥
स्फोटिकायांहितोलेपःपानंवातण्डुलांभसा ॥ १ ॥

अर्थ—कालाजीरा, ब्रह्मदंडी, मिरच, पीपल इनका लेप करनेसै फोडा आराम होवे अथवा चांवलोंके पानीके साथ इनके पीनेसै आराम होवे ॥

वातरक्तेलेपः ।

दूर्वामूर्वाशठीशुंठीधान्यकंमधुयष्टिका ॥
सुपिष्टंशीततोयेनरक्तवातेप्रलेपनम् ॥ १ ॥

अर्थ—दूर्वा, मुर्वा, सोंठ, धनियां, मुलहठी इनको ठंढे पानीमें घिसकर लेप करनेसे वातरक्त दूर होवे ॥

पादोपरिलेपः ।

ललनास्तनदुग्धेनसिक्तंगुडघृतंमधु ॥ गैरिकास्फुटपा-
दोपिजायतेपंकजोपमः ॥ १ ॥

अर्थ–स्त्रीके स्तनका दूध, गुड, घी, शहद, गेरू इनका लेप करनेसे फटेहुए पैर कमलके समान होवें ॥

भगलेपः ।

सूकडंधातुकीजांगीसौराष्ट्रीफुल्लकंतथा ॥ माजूफलंहौहबेरंलोध्रं
दाडिमत्वक्तथा ॥ कादम्बर्याभगेलेपोगाढीकरणमुत्तमम्॥ १॥

अर्थ–कूट, धायके फूल, बडी हरड, फूली फटकरी, माजूफल, हाऊबेर, लोध, अनारकी छाल, शराब मिलाकर लेप करनेसे योनि दृढ होय (अर्थात् सिकुडजाय)

लिंगदृढीकरणम् ।

मरिचंसैंधवंकृष्णातगरंबृहतीफलम् ॥ अपामार्गस्तिलाःपुष्टंय-
वमाषाश्चसर्षपाः॥ १॥ अश्वगंधाचतच्चूर्णंमधुनासहयोजयेत् ॥
अस्यसन्ततलेपेनमर्दनाच्चप्रजायते ॥ लिंगवृद्धिःस्तनोत्सेध-
सहिताभुजकर्णयोः ॥ २ ॥ बृहतीफलसिद्धार्थकव्याधिवचा-
तगरतुरगगंधाभिः॥एभिःप्रलेपितंस्यात्पुरुषवराङ्गंहयस्येव॥३॥

अर्थ–मिरच, सैंधानोंन, पीपल, तगर, कटेरीका फल, ओंगा, तिल, कूठ, जौ, उडद, सरसों, असगंध इनका चूरण शहदमें मिलाकर सदा लेप करनेसे तथा मलनेसे लिंग बढे, तथा घोडेके समान होजाय स्तनकी वृद्धि होवे तथा भुज और कान इनकी वृद्धि होवे, बृहतीफल, सरसों, वायविडंग, वच, तगर और असगंध इनका लेप करनेसे पुरुषका लिंग घोडेके लिंगसमान होता है ॥

इति लेपप्रकरणं समाप्तम् ।

मलहम ।

तप्तेघृतेक्षिपेत्तुत्थमुत्तार्यमदनंक्षिपेत् ॥ सर्वस्मिन्गलितेतस्मिं-श्चूर्णमेषांविनिक्षिपेत् ॥ १ ॥ कुंकुमंमुरदाशृंगंसिन्दूरंहिंगुलंत-था ॥ क्षिप्त्वाततोजलंभूरिहस्तेनपरिमर्दयेत् ॥ २ ॥ दूरीकृत्य जलंसर्वंसिद्धभाण्डेनिधापयेत् ॥ दग्धव्रणेदग्धमेद्रेचन्द्रिका-यांसदाहितम् ॥ ३ ॥ तप्तेघृतेक्षिपेत्तुत्थमुत्तार्यचक्षिपेदिमा-न् ॥ कपिलंमुरदाशृंगंखदिरंरंगपत्रिका ॥ क्षिप्त्वाजलंमथित्वा तत्सर्वव्रणविरोपणम् ॥ ४ ॥

अर्थ—घीको तपाकर उसमें नीलाथोथा, डाले और उतारलेवे फिर मोम डाले फिर नीचे लिखी औषधियोंको डाले केशर, मुरदासिंग, सिन्दूर, सिंगरफ इनको डालकर और बहुतसा जल डालकर हाथसे मर्दन करे फिर जलको अलग कर मलहम किसी बरतनमें रखलेवे इस मलहमके लगानेसे जलनेके फफोले गरमीके चकत्ते और गरमी दूर होवे तपे हुए घीमे नीला-थोथा डालकर उतार लेवे फिर इन औषधियोंको और डाले, कबीला, मुरदासिंग, खैरसार, रांगके तवक इनमें जल डालकर मथे फिर अच्छे पात्रमें रक्खे इसके लगानेसे संपूर्ण व्रण दूर होवें ॥

पुनःश्लोकः ।

तप्तेघृतेक्षिपेद्रालमुत्तार्यचजलंक्षिपेत् ॥ मथित्वानिर्जलंकृत्वा व्रणादौतत्प्रयोजयेत् ॥ १ ॥ मदनंमस्तकीतुत्थंरालिसिन्दूर-टंकणम् ॥ गुग्गुलंमुरदाशृंगंबेरजंरंगपत्रिका ॥ २ ॥ कपिलंकुं-कुमंक्काथंमाजूमदनकट्फलम् ॥ मरिचंहिंगुलंजांगीपलाचेति समाःसमाः ॥ ३ ॥ लोहपात्रेघृतेतप्तेयथायोग्यमिमान्क्षिपे-त् ॥ प्रक्षिप्यचजलंपश्चान्मथित्वाजलमुत्सृजेत् ॥४॥ तत्स्था-पयेच्छुभेभाण्डेव्रणादौविनियोजयेत् ॥ नासूरचन्दनादुष्टव्र-णशोधनरोपणम्॥ ५ ॥ ॥

अर्थ—तपेहुए घीमें राल डालकर उतार लेवे फिर पानी डालकर ऐसा

मथे कि उसमें पानी न रहे इसके लगानेसे फोडा फुनसी दूर होवें सोम, मस्तंगी, नीलाथोथा, राल, सिंदूर, सुहागा, गूगल, मुरदासिंग, बेरकी मिंगी, गोंद, रांगके वर्क, कबीला, केशर, माजूफल मैनफलका काढ़ा, मिरच, सिंगरफ, बडीहरड, इलायची इन सब चीजोंको बराबर लेवे फिर लोहपात्रमें घीको तपाकर उसमें यथायोग्य इन औषधियोंको डालकर मथे और जलको दूर करे फिर उस मलहमको अच्छे पात्रमें रख देवे और फोडा, फुनसियोंपर लगावे, इनके लगानेसे नासूर, चकत्ते, दुष्टव्रण इनका शोधन करे तथा आरामहोवे॥

उदरोपरि ।

विषंतुत्थंतथागुंजासिन्दूरंनवसादरम् ॥ नरमूत्रेणसंघृष्यकृत्वारुधिरमोक्षणम् ॥ १ ॥ विषंचसूतंनवसादरंचमयूरतुत्थंकलहंसवल्लीम् ॥ शल्येचनष्टेशतवर्षपक्केवातारिगद्यंमुनयोवदन्ति ॥२॥

अर्थ—तेलियामीठा, नीलाथोथा, चिरमिठी, सिंदूर, नौसादर इनको मनुष्यके मूत्रमें घिसकर, रुधिर निकालकर लेप करनेसे आराम होवे. तेलियामीठा, पारा, नीलाथोथा, नौसादर, हंसपदी इनका लेप करनेसे नष्टसंधियोंका दर्द सौ वर्षतक पकाहुआ घाव आराम होवे. यह दवा मुनीश्वरोंने कही है ॥

विषोपरि ।

सिन्दूरंविषपारदंसुगणिकाचोकंविषंसर्ज्जिकाक्षारंत्र्यूषणसंचलंसलवणापंचार्णवाग्रेनिशे ॥ एरण्डस्वरगंधकंहिरमजारक्तावलीअग्निकानेपालंनवसादरंक्षुपरकंभागैःसमैःपेषयेत् ॥ १ ॥ गोमूत्रेणगुडेनचार्कपयसासुह्याश्चधूमोगृहादेतन्नामरसेनसिंहसहितःसारंगराजोऽगदः ॥ २ ॥

अर्थ—सिन्दूर, तेलियामीठा, पारा, सुहागा, चूक, निसोत, सज्जीखार, सोंठ, मिरच, पीपल, पांचोंनोंन, दोनोंहलदी, कमलपत्र, वच, फटकरी, अंडी, कपूर, मंजीठ, चीता, नौसादर इनकी बराबर मात्रा लेकर गोमूत्र तथा गुड, आकका दूध, थूहरका दूध इनमें मिलाकर लगानेसे सम्पूर्ण विषरोग दूर होवें. यह सारंगराजने कहाहै ॥

विषसर्पगदे ।

शम्भोःकण्ठनिवासनंमनशिलानौसादरंनीलकंमाजीचौककचूरसावणरसंधूमंचमात्राद्वयम् ॥ नेपालंविषगंधकंचलशुनंशिल्याचमूत्रंनरैरित्येतद्विषनाशनंहिमुनिभिःकालाहिभुक्तेःस्मृतम्॥ १॥

अर्थ—तेलियामीठा, मनसिल, नौसादर, नीलाथोथा, सज्जी, चक, कपूर सावनका रस, धुआं टंक दो, जमालगोटा, गंधक, लहसन यह विषपीडापर मनुष्यके मूत्रमें लगावे तथा मले तो सर्पके काटनेका विष दूर होवे ॥

रुधिरस्राव ।

शरत्कालेवसंतेचकुर्याद्रक्तस्रुतिंनरः॥ तुंबीशृंगीजलौकाभिःशिरामोक्षैःकरैस्तथा ॥ १ ॥ आषाढआर्द्राशरदीहचन्द्रावसन्तके मीनगतेचभानौ ॥ वमिर्विरेचंरुधिरस्रुतिश्चतदानराणांसुखदा भवन्ति॥२॥दशांगुलंहरेच्छृंगीतुम्बीचद्वादशांगुलम्॥ जलौका हस्तमात्रन्तुशिरासर्वांगशोधिनी ॥३॥ क्षुरश्चांगुलमात्रंतुगृह्णातिरुधिरंबलात्॥ शोफेदाहेंगपाकेचरक्तवर्णेऽसृजःस्रुतौ ॥ ४ ॥ वातरक्तेतथाकुष्ठेसर्पीडेदुर्जयेऽनिले॥ पांडुरोगेश्लीपदेचविषदुष्टेचशोणिते॥५॥ग्रंथ्यर्बुदापचीक्षुद्ररोगरक्ताधिमादिषु ॥विदारीस्तनरोगेषुगात्राणांस्वरगौरवम्॥ रक्ताभिष्यंदरौद्रायांपूतघ्राणस्यदेहके॥६॥ यकृत्प्लीहविकर्षेषुविद्रधौपिटिकोद्गमे॥कर्णोष्ठघ्राणवक्त्राणां पाकेदाहेशिरोरुजि ॥७॥उपदंशेरक्तपित्तेरक्तस्रावःप्रशस्यते ॥नकुर्वीतशिरामोक्षंकृशस्यातिव्यवायिनः ॥८॥ क्लीबस्यभीरोर्गर्भिण्याःसूतिकापाण्डुरोगिणाम् ॥ व्यायाममैथुनक्रोधशीतस्थानप्रवातकान्॥९॥ एकाशनंदिवानिद्राक्षाराम्लकटुभोजनम्॥अभिजल्पंजलंभूरित्यजेदाबलदर्शनात्॥१०॥

अर्थ—शरदकालमें तथा वसंतकालमें, स्त्री पुरुष रुधिर निकलवावें. तूंबी सींगी, जोंक, फस्त इन करके नसोंमेंसे, आषाढ़ और आर्द्राके सूर्यमें, शरद, चित्राके सूर्य, वसंत, मीनके सूर्य, इन ऋतुओंमें वमन, दस्त, (जुल्लाब)

और रुधिर निकलवाना पुरुषोंको सुखदेने वाला है, दश अंगुल रुधिरको सींगी निकालतीहै, और तूंबी बारह अंगुलको निकालतीहै, जोंक हाथभरका खून खींचतीहै, और फस्द कुल शरीरका रुधिर निकालतीहै, और नश्तर एक अंगुलमात्र बलकर खींचती है, और सूजन, दाह, अंगका पकना देहका लाल होजाना, इनमेंसे रुधिर निकलवावे; वातरक्त, कोढ, पीनस, दुष्टवात, पांडुरोग, श्लीपद, विषदुष्ट इनकरके दुष्ट रुधिर होवे तो निकलवावे, और गांठ, अर्बुद, अपची, क्षुद्ररोग, रक्तव्रण, स्तनरोग, स्वरभंग, रुधिरविकार होवे तो रुधिर निकलवावे. कान, होठ, नाक, मुँह यह सब पकजावें, अथवा इनमें दाह होवे, शिरमें दरद होवे, यकृत्, प्लीहा, विसर्प, विद्रधि, फोडे, उपदंश, रक्तपित्त, इनमेंसे रुधिर निकलवावे, दुर्बलके अतिमैथुन करनेवालेके, नपुंसकके, गर्भवाली स्त्रीके, भयभीतके, पांडुरोगीके, कसरत करनेवालेके, क्रोधीके, शीत और वातवालेके एकबार भोजन करना, दिनमें सोना, खारा, खट्टा, कडवा भोजन करना, बहुत बोलना, बहुत पानी पीना इन सबको जबतक देहमें बल न आवे तबतक त्यागदेवे ॥

जलूकादिदंशस्रवे उपचारः ।

अतिप्रवृत्तेरक्तेचयवगोधूमचूर्णकैः ॥ सर्प्पनिर्मोकचूर्णैर्वाक्षौमवस्त्रस्यभस्मना ॥ मुखेव्रणस्यबद्धाचशीतैश्चोपचरेद्व्रणम् ॥ १ ॥

अर्थ—जो अति रुधिर बहतारहै तौ जौका आटा, गेहूंका आटा, सर्पकी कांचली, रेशमीकपडेकी राख इनको पीसकर फोडेके मुँहपर बांध देवे और शीतल उपचार करे ॥

नस्यविधिः ।

उत्तानशायिनंकिंचित्प्रलम्बशिरसंनरम् ॥ आशीर्णहस्तपादंच वस्त्राच्छादितलोचनम् ॥ १ ॥ समुन्नमितनासाग्रंवैद्योनस्येनयोजयेत् ॥ कोष्णमच्छिन्नधारंचहेमतारादिशुक्तिभिः ॥ २ ॥ नस्येष्वासिच्यमानेषुशिरोनैवप्रकम्पयेत् ॥ नकुप्येतप्रभाषेतनोच्छिकेन्नहसेत्तथा ॥ ३ ॥ उपविश्याथनिष्ठीवेद्घ्राणवक्त्रगतन्द्रवम् ॥

अर्थ—मनुष्यको सीधा सुलावे, और माथा उंचा रक्खे, और लम्ब शिर करलेवे और हाथ पैरोंको फैलादेवे, और कपडेसे आंख ढकलेवे, औ नाकको ऊंचा करके वैद्य नस्य देवे, और गरमपानीकी धारा देय, अधि अर्थात् धार टूटै नहीं सोना, चांदी, सीपीमें भस्म कर, और वह नास लेने वाला शिरको हिलावे नहीं और न क्रोधित होवे, न बोले, न धारा टूट पावे, न हँसै, फिर उठकर छींकलेवे और नाक मुँहसे पानी गिरे, और बां तथा दाहिनी तरफ थूके सन्मुख न थूके यह नासविधि कहीहै ॥

नासलेनेकी औषधि ।

नस्यंस्याद्गुडशुंठीभ्यांविकारेवातकेहितम् ॥शर्कराघृतयष्टीभिः पित्तकेनस्यमेवच॥ १॥श्लेष्मकेसुरसावासारसंसुविहितंचतत्॥ विडंगहिंगुमगधाकृमिदोषेहितंमतम् ॥ २ ॥ रक्तजेऽसृग्विरेकन्तुशिरोरोगमुपक्रमः ॥ शर्काराकुंकुमंनस्यंघृतंभृष्टंशिरोर्तिनुत् ॥३॥ समुद्रफलनस्येनछीकन्यासंभवेनवा ॥ षड्बिन्दुतैलनस्येनयांतिरोगाःकपालजाः ॥ ४ ॥

अर्थ—वातविकारवालेको गुड और सोंठकी नास देवे और पित्तविकारमें मिश्री, घी, मुलहठीकी नास देवे. और श्लेष्मविकार(कफके विकारमें तुलसी और अडूसेके रसकी नास देवे. और जो मस्तकमें कीडे पड जायँ तो वायविडंग, हींग, पीपलकी नास देवे. तौ हित करै और रुधिरसे मस्तक भारी होजाय तो खांड और केशरको घीमें भूनकर बूराकी नास देवे. समुद्रफलकी नास देवे, अथवा नकछिकनीकी औ षड्बिन्दु तेलकी नास लेनेसे कपालके सब रोग नाश होवें ॥

पुनःश्लोकः ।

सैंधवंश्वेतमरिचंसर्षपाःकुष्ठमेवच ॥बस्तमूत्रेणपिष्ट्वाचनस्यन्तन्द्रानिवारणम्॥ १॥दूर्वारसोदाडिमपुष्पजोवाघ्राणप्रवृत्तेऽसृजिनस्यमुक्तम् ॥ स्तन्येनवालक्तरसेनवापिविनिक्षिकाणांविनिहन्तिहिक्काम् ॥ २ ॥ नस्यंदाडिमपुष्पोत्थंरसोदूर्वाभवस्तथा ॥

अर्थ—सेंधानोंन, सफेदमिरच, सरसों, कूठ इनको बकरीके मूत्रमें पीसकर नस्य देनेसे तन्द्रा दूर होवे. दूबका रस, अनारके फूल इनकी नस्य देनेसे नकसीर दूर होवे. स्त्रीका दूध, महावरका रस, मक्खीकी बीट इन सबकी नाश देनेसे हिचकी दूर होवे अनारके फूलका रस, दूबकारस, आमकी गुठली दूबके रसमें मिलाकर नास देनेसे नकसीर बहती बन्द होवे ॥

नासिकयाजलपानम् ।

द्विघटिघननिशायांप्रातरुत्थायनित्यं पिबतिखलुनरोयोघ्राण-रंध्रेणवारि ॥ सभवतिमतिपूर्णश्चक्षुषातार्क्ष्यतुल्योवलिपलि-तविहीनःसर्वरोगैर्विमुक्तः ॥ १ ॥ अपस्मारेतथोन्मादेशिरोरोगे चपीनसे ॥ अचैतन्येऽक्षिनासादिरोगेनस्यंदिवाहितम् ॥ २ ॥ एकान्तरंव्यतरंवानस्यंदद्याद्विचक्षणः ॥ त्र्यहंपञ्चाहमथवास-प्ताहंवायुयंत्रितः ॥ ३ ॥

अर्थ—दो घडी रात रहे तब उठकर नाकके रस्तेसे नित्य पानी पिये तो बुद्धिमान् होवे. और नेत्र गरुडके नेत्रोंके समान होजावें. और बुढापा कभी न आवे और कोई रोग न होवे. मिरगी, उन्माद, शिरके रोग, पीनस, बेहोशी, नाकरोग इनमें नस्य देनाही उत्तम है और एक दिन बीचमें देकर अथवा दो दिन बीचमें देकर अथवा तीन दिन बीचमें देकर अथवा सातदिन बीचमें देकर अच्छा वैद्य युक्तिपूर्वक देवे ॥

वायुरोगोंमेंविरेचनविधि ।

शरत्कालेवसन्तेचप्रावृट्कालेचदेहिनाम्॥वमनंरेचनंचैवकारये-त्कुशलोभिषक् ॥१॥ त्रिदिनंपाचनंपूर्वंगृहीत्वाघृतभोजनम् ॥ स्नेहनंस्वेदनंकृत्वादद्यात्सम्यग्विरेचनम् ॥२॥ दोषाःकदाचि-त्कुप्यन्तिजितालंघनपाचनैः॥ येतुसंशोधनैःशुद्धास्तेषांनपुनरु द्भवः ॥३॥ पीत्वाविरेचनंशीतंजलैःसंसिच्यचक्षुषी ॥ सुगंधिं किंचिदाघ्रायताम्बूलंशीलयेन्नरः ॥ ४ ॥ निवातस्थोनवेगांश्च

हुः ॥ ५ ॥ इच्छाभेदीचनाराचच्छुरीकारोरसोऽथवा ॥ पूज्य-
पादगुटीशीतंरेचत्युदयभास्करः ॥६॥ अभयामोदकंपश्चात्कि-
रमालादिपंचकम्॥दन्तीविशालास्नुग्दुग्धखण्डेनत्रिवृतातथा ॥
॥७॥ दुग्धेनैरण्डतैलेनअथदुग्धेननागरम् ॥ उष्ट्रीपयोऽथकंपिल्लं
घोडाचोलीगुटीतथा ॥ ८ ॥ मात्रोत्कृष्टाविरेकस्यत्रिंशद्वेगैःस्मृ
ताथवा ॥ वेगैर्विंशतिभिर्मध्याहीनोक्तादशवेगकैः॥९॥ विरेक-
स्यातियोगेनमूर्च्छाभ्रंशोगुदस्यच॥शूलंकफोतिच्छर्दिःस्याद्रक्तं
वापिविरिच्यते॥१०॥तदाशीताम्बुनाहस्तौपादौप्रक्षालयेन्मुहुः
शालिभिःषष्टिकैर्दुग्धैर्मसूरैश्चापिभोजयेत् ॥ ११ ॥ पित्तेविरे-
चनंयुंज्यादामोद्भूतेतथागदे ॥ उदरेचतथाध्मानेकोष्ठशुद्धौवि-
शेषतः ॥ १२ ॥ कुष्ठार्शःकृमिवीसर्पवातासृक्पांडुरोगिणः ॥
कफकासविषार्ताश्चविरेच्याःस्युर्भिषग्वरैः ॥ १३ ॥ बालवृद्धा
वतिस्निग्धःक्षतक्षीणोरुजान्वितः ॥ श्रांतस्तृषार्त्तःस्थूलश्चगु-
र्विणीचनवज्वरी ॥ १४ ॥ नवप्रसूतानारीचमन्दाग्निश्चमदा-
त्ययी ॥ शल्यार्दितश्चरूक्षश्चनविरेच्याविजानता ॥ १५ ॥

अर्थ—शरदकाल, वसंत, बरसात इन ऋतुओमें वैद्य मनुष्योंको वम
विरेचन करावे,पहले तीन दिनतक विरेचन (मुंजिस) देवे. और घृत भोज
तथा खिचडी आदि नरम भोजन करावे. तेल लगावे.पसीना निकलवा
पीछे भलेप्रकार विरेचन करावे, लंघन और पाचनसे जो रोग जीते गये
वो कदाचित् कुपित होजाते हैं.परंतु जो संशोधन (विरेचन) से नाश हु
रोग उनका कोप फिर कभी नहीं होता विरेचन वस्तु लेकर आंखोंको जल
धो. और फूल अतर इत्यादिककी कुछ सुगंध सूंघे. और पान खावे, ज
हवा न लगती होवे, वहां बैठे, और बहुतसी मेहनत न करे. और सो
नहीं. ठंढे जलका स्पर्श न करे, और जब प्यास लगे तब गुनगुना ज
पिये. इच्छाभेदी,नाराच,छुरीकार रस,पूज्यपाद गोली,विरेचनको निरा ठं

जलसे उदयभास्कररस देवे, अभयादिमोदक, अमलतासका पंचक, जमालगोटा, इन्द्रायण, सेहुंडका दूध, खांडके संग निसोत दूधमें अथवा दूध, सोंठ, ऊंटनीका दूध, कबीला, अथवा घोडाचोली गोली देवे तीस वेग होवें तो विरेचनको श्रेष्ठ जानना और बीस वेग होवें तो मध्यम जाने और दश वेग होवे तो हीन जुल्लाब जाने और विरेचन जियादा होवें तो मूर्च्छा हो भ्रम होवें, गुदामें दरद होवे कफ और रुधिरकी उलटी करे और दस्तके रस्तेसे रुधिर तो जाय ठंढे पानीसे बार २ हाथ पैरोंको धोवे और साठीचावल और मसूरकी दाल पथ्यमें खाय और पित्तके रोगमें विरेचन देवे तो आमरोग, उदररोग, अफारा, कोढ इनकी शुद्धि करे. विशेष करके कोढ, अर्श, कृमी, विसर्प, वात, रुधिर, पांडुरोग, कफ, खांसी, विषकी पीडावालेको विरेचन लेना चाहिये. और योग्य है. बालक, बूढा, अतिकोमल, क्षीणबल, डरपोकता, हाराहुआ, प्यास करके दुःखित, मोटा, गर्भवती स्त्री, नयेज्वरमें, हालकी जनी हुई स्त्री, मंदाग्नि, अत्यन्त मद पीनेवाला, जिसकी संधियोंमें दरद होवे रूखा भोजन करनेवाला इनको चतुर वैद्य विरेचन न देवे ॥

वमनम् ।

कासेश्वासेकफव्याप्तेहृद्रोगेविषपीडिते ॥ गलशुंड्यांभ्रमेकुष्ठे वमनंकारयेद्भिषक् ॥ १ ॥ पीत्वायवागूमाकण्ठंक्षीरंतक्रंदधीनिवा ॥ भुक्त्वाचश्लेष्मलंभोज्यंस्निग्धःस्विन्नस्ततोवमेत् ॥ २ ॥ वमनेषुचसर्वेषुसैंधवंमधुनाहितम् ॥ कृष्णाराठफलंसिंधुकफेकोष्णजलैःपिबेत् ॥ ३ ॥ पटोलवासानिम्बैश्चपित्तेशीतलजंपिबेत् ॥ सश्लेष्मवातपीडायांसक्षीरंमदनंपिबेत् ॥ ४ ॥ अजीर्णेकोष्णपानीयंसिंधुंपीत्वावमेत्सुधीः ॥ कंठमेरण्डनालेनस्पृशन्तंवमयेद्भिषक् ॥ ५ ॥ पिप्पलींद्रयवासिंधुस्तथामदनकं [illegible] ॥ ६ ॥ [illegible]

तक्रंसलवणंतथामदनकंफलम् ॥ तुत्थंकार्पासमज्जावाश्वानविट् विषवामने ॥ ७ ॥ अतिवांतौ भवेद्धिक्काकंठपीडाविसंज्ञिता ॥ शाम्यत्यनेनतृष्णायाःपीडाच्छर्दिसमुद्भवा ॥ ८ ॥ धात्र्यंजनारसोशीरलाजचन्दनवारिभिः ॥ मंथंकृत्वापाययेच्चसघृतंक्षौद्रशर्करम् ॥ ९ ॥

अर्थ—खांसी, श्वास, कफ करिके युक्त, हृदयरोग, विषपीडित, गले फन्दा पडे, भ्रम, कुष्ठवाले इनको वैद्य (वमन करावे) लपसी पीवे और खू दूध पीवे, अथवा मट्ठा, दही, पीवे और कफकारक चीजोंका भोजन करे फिर वमन करावे सब वमन करानेमें सेंधानोंन और शहद हितकारी है पीपल, मैनफल, सैंधानोंन, कफविकारमें गरमजलके साथ देवे पटोलपत्र अडूसा, नीमके पत्ता पित्त विकारमें ठंडे जलके साथ पीवे और कफ वा विकारमें दूधके साथ मैनफल पीवे और अजीर्णविकारमें सैंधानिमक गर जलके साथमें पीवे तो वमन होवे और गलेमें पतली अंडकी लकडी डा कर वैद्य वमन करावे. पीपल, इन्द्रयव, सैंधानोंन, मैनफल इनको शहद मिलाकर चटानेसे कफरोगीको वमन होवे. खट्टा, मीठा, सैंधानोंन तथ मैनफल, नीलाथोथा, कपासकी मिंगी, अथवा कुत्तेकी बीटसे जिसने वि खाया हो उसे वमन करावे, और बहुत वमन करानेसे यह रोग पैदा हो हैं. हिचकी, कंठमें दरद, बेहोशी, जो वमन करके पीडा होवे, अथव प्यास लगे इनकी शांतिके अर्थ यह दवा देवे. आमला, निसोत, खस, धानव खील इनको जलमें मथकरके पिलावे. अथवा घी शहद दे तो आराम होवे

स्वेदः ।

स्वेदश्चतुर्विधःप्रोक्तस्तापोष्णौस्वेदसंज्ञितौ ॥
उपनाहोद्भवःस्वेदः सर्वेवातार्तिहारिणः ॥ १ ॥

अर्थ—पसीना चार तरहपर उत्पन्न होता है एक तो ताप, दूसरा उष्ण

तेषुतापाभिधःस्वेदोवालुकावस्त्रपाणिभिः ॥
कपालंकण्टकाङ्गारैर्यथायोग्यंप्रयुज्यते ॥ २ ॥

अर्थ—और ताप स्वेद वह है जो कपडेमें वालू भरकर गरम करके सेंकै अथवा ठीकरेमें अंगार भरकर सुहाता २ सेक करै ॥

उष्णस्वेदःप्रयोक्तव्योलोहपिण्डेष्टकादिभिः ॥
प्रतप्तैरम्लसिक्तैश्चकार्योनक्तकवेष्टितैः ॥ ३ ॥

अर्थ-उष्णस्वेद, लोहेका गोला अथवा ईंट इनको गरमकर मट्ठेमें बुझाकर और कपडा लपेटकर सेंक करै ॥

खर्पराभृष्टंपटस्थितंकांजिकसिक्तोहिवालुकास्वेदः ॥
शमयतिवातकफामयमस्तकशूलांगभंगादीन् ॥ ४ ॥

अर्थ—खर्परके ऊपर भुनीहुई वालूको कपडेमें बांध गरमकर कांजीमें बुझावे सेक करनेसे वायु, कफके रोग, मस्तकका दरद, अंगभंग इनको यह स्वेद दूर करै ॥

पुनःश्लोकः।

फलस्वेदंघटीस्वेदंवालुकास्वेदमेवच ॥ कारयेद्धस्तपादेषुतथा शिरसियुक्तितः ॥ ५ ॥ अग्नितप्तेष्टिकासिक्ताकांजिकेनपुनःपुनः सवस्त्रजातयास्वेदोरुजंजयतिवातजाम् ॥ ६ ॥ पुरुषायाममात्रं वाभूमिमुत्कीर्यखादिरैः ॥ काष्ठैर्दग्ध्वातथाभ्युक्ष्यक्षीरधान्याम्लवारिभिः ॥ ७ ॥ वातघ्नपत्रैराच्छाद्यशयानंस्वेदयेन्नरम् ॥ एवमापादिभिःस्विन्नेशयानंस्वेदमाचरेत् ॥ ८ ॥

अर्थ—ईंट, पत्थर, ठीकरा, वालू इनसे स्वेद करावे और युक्ति करके इतनी जगह करावे, हाथ, पैर, शिर, अग्निमें ईंट वा वालूको तपाकर कांजीमें बुझाय, कपडेमें बांधकर बार २ सेंक करनेसे जो स्वेद उत्पन्न होताहै, वह स्वेद वात करके जितने रोग उत्पन्न होते हैं उन सबका नाश करता है,

पीछे अंगारोंको उसमेंसे निकालकर, दूध, कांजी, अथवा धानके पानीसे बुझा कर फिर अंडके पत्तोंको ऊपर नीचे लगाकर और मनुष्यको स्वेदन करे॥

कटाहेकोष्ठकेवापिसूपविष्टोविगाहयेत् ॥ नाभेःषडंगुलंयाव-न्मग्नःक्वाथस्यधारया ॥९॥ कोष्ठेचस्कंधयोःसिक्तस्तिष्ठेत्स्निग्धतनुर्नरः ॥ एवंतैलेनदुग्धेनसर्पिषास्वेदयेन्नरः ॥ १० ॥

अर्थ—कढाव वा किसी और पात्रमें मनुष्यको बैठाकर स्वेदन करे; जबतक काढेकी धारासे टूंडी छः अंगुल ऊंचीरहे, अर्थात् टूंडीके नीचे जल रहे तबतक उसमें बैठा रहनेदे, और काढेकी धारासे (कोठा) और कंधोंको सेंके उसीप्रकार मनुष्य खडा रहै, इसी प्रकार तेल, दूध, और घृतसे स्वेदन करे ॥

अथ बन्धनम् ॥

तप्तभस्मनृमूत्रेणात्युष्णागर्दभविट्तथा॥ उष्णंसर्षपपिण्याकंतैलंकोष्णाचगाढमृत् ॥ १ ॥ स्निग्धोष्णान्यर्कपत्राणिमधुकंवटपत्रकैः ॥ स्वेदयित्वाचबध्नीयादुदराध्मानशान्तये ॥ २ ॥

अर्थ—गरम राख मनुष्यके मूत्रमें सानकर बांधे, तथा गरम गधेकी लीद बांधे, वा सरसोंकी गरम खल बांधे अथवा जहां घानीके बैल चलाकरतेहैं उस जगहकी मिट्टी बांधे. अथवा चिकने और गरम आकके पत्ते अथवा महुआके पत्ता बांधे इस प्रकार स्वेदन करके बांधनेसे पेटका अफारा दूर होवे॥

बफारा ।

अपामार्गंचनिर्गुंडीमुंडापातीचनागरम् ॥ ग्रंथिकंनिंबपत्राणि जलेनोत्कालयेद्दृढम् ॥ १ ॥ तद्भांडंनिश्चलंधृत्वावस्त्रेणाच्छादयेद्वपुः॥गृह्णातिनम्रस्तद्वाष्पंशिरःपीडांनिवारयेत् ॥ २ ॥

अर्थ—ओंगा, सँभालू, गोरखमुंडी, पत्रज, सोंठ, पीपलामूल, नींबके पत्र इन सबको जलमें उबाले, पीछे उस पात्रको निश्चल स्थापन कर और अपने शरीरको कपडेसे ढककर उसपात्रकी भाफसे मस्तक सेंके तो सिरपीडा दूरहोवे।

इतिबधंरेणबफारा ।

उद्वूलनम् (उबटना)

पिप्पलीकट्फलंशृंगीवचाकुष्ठंयवानिका ॥ पुष्करंनागरंतिक्ता ग्रंथिकंसुरदारुच ॥ १ ॥ मुद्गपिष्टंमाषपिष्टंपुराणावसुधेष्टिका॥ तुंब्याश्चूर्णंवत्सनागंशिरीषस्यापिभस्मच॥२॥त्रिचतुर्वाद्दढेवस्त्रे गालनीयंपुनःपुनः॥तच्चूर्णमर्दनाद्गात्रेशीतांगत्वंनिवर्त्तयेत्॥३॥

अर्थ–पीपल, कायफल, काकडासिंगी, वच, कूठ,अजमायन, पोहकरमूल, सोंठ, कुटकी, पीपलामूल,देवदारु, मूंगका चून,उडदका चून, पुरानी गचका चून, पुरानी ईंटका कूकुआ,तूंबेका चूर्ण, वच्छनागविष, सिरसकी राख इन सबको कूट पीस तीन चार बार गाढे कपडामें बार २ छाने इस चूर्णको शरीरमें मर्दन करनेसे शीतांग सन्निपात दूर होवे ।

कृष्णासुपर्ववटपीसहनागरेणतिक्ताचदीपकयुताअनुलेपनंस्यात्॥ चूर्णंप्रशस्तमितिजारयतेशरीरेस्वेदंचशीतलतनुत्वमिदंनिहन्ति १॥

अर्थ–पीपल,देवदारु,सोंठ,कुटकी, अजमोद इन सबको पीसकर शरीरमें मालिश करनेसे पसीना आना और देहकी शीतलता दूर होवे ॥

इति ।

अथनस्यम् ।

एकंबृहत्याःफलपिप्पलीक शुंठीयुतंचूर्णमतिप्रशस्तम् ॥ प्रध्मापयेद्घ्राणपुटेतिसंज्ञांकरोतिचेष्टांविनिहन्तिमूर्छा ॥१॥ एलीयकंवचातिक्तामुस्ताकट्फलजंरसः॥ उद्वूलयेत्रिदोषोत्थेस्वेदाभिष्यंदजेज्वरे ॥ २ ॥

अर्थ–कटेरीका एकफल, पीपल,और सोंठ इनका चूर्ण कर कागजकी फुकनी बनाय नाकमें फूंकनेसे मूर्च्छाका नाश करे, और संज्ञा तथा चेष्टा होवे. एलुआ, वच, कुटकी, नागरमोथा, कायफल इनके रसका उद्वूलन त्रिदोषज्वरवालेको करे ॥

मस्तक टोपबंधनम् ।

कालोंजीपुष्करंकुष्ठमजगंधावचाविषम् ॥ यवानीखुरसाणन्तुसर्वंसूक्ष्मंप्रपेषयेत् ॥ १ ॥ गोधूमचूर्णरचितेरोटकेनिहितेतथा ॥ प्रतप्तंमस्तकेबद्धंसन्निपातांगशीतहृत् ॥ २ ॥

अर्थ—कलौंजी, पुहकरमूल, कूठ, अजगंध, वच, एलुआ, खुरासानी, अजमायन इन सबको महीन पीसकर गेहूंकी रोटीमें रख गरमकर मस्तकमें बाँधे तो शीत नष्ट होवे ॥

नेत्रपिंडी ।

पिण्डिकाकवलीप्रोक्ताबद्धावस्त्रस्यपट्टकैः ॥ नेत्राभिष्यन्दयोग्यासाव्रणेष्वपिनिबद्ध्यते ॥ १ ॥ एरण्डमूलपत्रत्वङ्निर्मितावातनाशिनी ॥ पित्ताभिष्यन्दनाशायधात्रीपिण्डीसुखावहा ॥ २ ॥ पिण्डीनिम्बदलोद्भूतावातपित्तप्रणाशिनी॥त्रिफलापिण्डिकाप्रोक्तानाशिनीश्लेष्मपित्तयोः॥३॥शुंठीनिम्बदलैःपिण्डीसुखोष्णास्वल्पसैंधवा॥धार्यांचक्षुषिसंयोगाच्छोथकण्डूव्यथापहा ॥ ४ ॥

अर्थ—पिंडिकाको कवली भी कहते हैं इस पिंडिकाको कपडेकी पट्टीसे बाँधते हैं,नेत्राभिष्यंदके योग्य है. और व्रणपरभी बांधी जाती है, एरंडकी जड,तज,पत्रज इनकी बनी पिंडी वातको दूर करे, आंवलेकी पिंडी पित्तरोगोंको दूर करे, नींबके पत्तोंकी पिंडीवात पित्तके रोगोंका नाश करे, त्रिफलाकी पिंडी कफपित्तके रोगोंका नाश करे, सोंठ, नीमके पत्ते थोडा सैंधवनिमक इनकी पिंडी सूजन और खुजली युक्त व्यथाको दूर करे ॥

अथ कुरला ।

दाहतृष्णाप्रशमनमधुगंडूषधारणम् ॥ पिबेत्क्षाराग्निदग्धेचसर्पिर्धार्यंपयोथवा ॥ १ ॥ तैलसैंधवगंडूषादन्तचालेप्रशस्यते ॥ शोफंमुखस्यबेरस्यागण्डूषत्कांजिकंजयेत् ॥ २ ॥

अर्थ–शहदके कुरले दाह और प्यासको दूर करते हैं, विषसे अथवा क्षारोंसे अथवा अग्निसे मुख जलगया हो तो दूध अथवा घृतको मुखमें रक्खे, तेल और सैंधेनिमकके कुरले हिलते दांतोंवालोंको हित हैं, सूजन तथा मुखकी विरसताको कांजीके कुरले दूर करें ॥

तथासहचरक्काथगण्डूषोमुखपाकहृत् ॥ जातीपत्रामृताद्राक्षापाठादार्विफलत्रिकम् ॥ पद्मकंसमधुक्काथगण्डूषोमुखपाकहृत् ॥ १ ॥

अर्थ–पियावांसा, अथवा ऊंटकटेराके काढ़ेके कुरला करनेसे मुखके छाले मिटैं, जायफल, गिलोय, दाख, पाढ, दारुहलदी, त्रिफला, पदमाख इनके काढेमें शहद मिलाकर कुरला करनेसे मुखके छाले दूर होवें ॥

अपराजिताधूपः ।

कर्पासास्थिमयूरपिच्छबृहतीनिर्माल्यपिंडीतकत्वग्वंशावृषदंशविट्तुषवचाकेशाहिनिर्मोचकैः ॥ नागेन्द्रद्विजशृङ्गहिंगुमरिचैस्तुल्यस्तुधूपःकृतः स्वेदोन्मादपिशाचराक्षससुरावेशज्वरघ्नः परः ॥ १ ॥ गृहेषुधूपनंदत्तंसर्वबालग्रहाञ्जयेत् ॥ पिशाचान्राक्षसान्क्षित्वा सर्वज्वरहरं भवेत् ॥ २ ॥

अर्थ–बिनौले, मोरपंख, कटेरी, शिवनिर्माल्यफूल, तगर, तज, वंशलोचन, बिलावकी विष्ठा, धानके तुष, वच, मनुष्यके बाल, काले सर्पकी कांचली, हाथीदांत, गौका सींग, हींग, मिरच इन सबको समान ले, और सबके बराबर नीबके पत्ते लेवे सबको कूट पीसकर धूप बनावे इस धूपके देनेसे पसीना, उन्माद, पिशाच, राक्षस, देवताओंका आवेश, और ज्वर ये दूर होवें इसकी घरमें धूनी देनेसे सर्व बालग्रह दूर होवें ॥

द्वितीयोधूपः ।

नृपशशिरविवर्णविश्वकन्दर्प्पिणीचमलयजगिरिलोहंविग्रहंबिल्वकंच ॥ नखजलवनकेशीतत्प्रमाणंचपूर्वकमलजकृतधूपःसर्वभूतान्विहन्ति ॥ १ ॥

अर्थ—कपूर १६ टंक, केशर १२ टंक, कस्तूरी, चंदन ७ टंक, अगर १० टंक, शिलाजीत ९ टंक, नख १६ टंक, नागरमोथा, नेत्रवाला १६ टंक, कुड १६ टंक इन सबको मिलाकर धूनी देवे, यह ब्रह्माजीकी बनाई धूप सर्व भूतोंको नाश करती है ॥ इति धूपप्रकरणम् ॥

अथ तक्रसेवनम् ।

यथासुराणाममृतंप्रधानंतथानराणांभुवितक्रमाहुः ॥ नतक्रदग्धाः प्रभवंतिरोगानतक्रसेवीव्यथतेकदाचित् ॥ १ ॥ शशिकुन्दहिमोज्वलशंखनिभंपरिपक्वकपित्थसुगंधिरसम् ॥ युवतीकरनिर्मलनिर्मथितंपिबमानवसर्वरुजापहरम् ॥ २ ॥ शीतकालेऽग्निमांद्येचकफोच्छेदेतथामये ॥ वृद्धकोष्ठेचदुष्टेऽग्नौअर्शोगुल्मेऽथवामये ॥ ३ ॥ शस्तंभुक्तेचतक्रंस्यादमीषांसर्वदाहितम् ॥ सर्वकालेप्रशस्तंतुअजाजीलवणान्वितम् ॥ ४ ॥

अर्थ—जैसे देवताओंमें अमृत प्रधान है वैसे ही मनुष्योंको पृथ्वीपर छाछ कहीहै, छाछ सेवन करनेवालेको कदाचित् रोग नहीं होते, और छाछ पीनेवाला कभी दुःखी नहीं होवे, चन्द्रमा और कुन्द तथा बर्फ वा शंखके समान उज्ज्वल पके कैथके रससे मिला तथा स्त्रीके हाथसे मथा ऐसे मट्ठेको सर्व रोगनाशनार्थ हे मनुष्य तू पी शीत कालमें मन्दाग्निके रोगमें कफके विकारमें, बद्धकोष्ठ, बवासीर, गोला इन रोगोंपर छाछ पीना सदैव हित है जीरा और निमक मिलाकर छाछ पीना सदैव श्रेष्ठ है ॥

इतितक्रगुणाञ्ज्ञात्वानदद्याद्यस्यतंशृणु ॥ क्षयेशोषेतथातक्रंनोष्णकालेशरत्सुच॥५॥नमूर्च्छाभ्रमतृष्णासुतथापैत्तिकरोगके ॥ नशस्तंतक्रपानंचकरोतिविषमान्गदान् ॥ ६ ॥ ग्रहणीरोगिणां तक्रंसंग्राहिलघुदीपनम्॥सेवनीयंसदागव्यंत्रिदोषशमनंहितम्७

अर्थ—इस प्रकार छाछके गुण जानकर रोगीको देवे अब छाछका पीना वर्जित बतलातेहैं क्षयी, शोष, क्षीण, गरमीकी ऋतु, शरदऋतु, मूर्च्छा, भ्रम,

प्यास और पित्तके रोग इनमें छाछ पीना वर्जित है. संग्रहणी रोगवालेको संग्राही हलका और दीपन है इसीसे सदैव सेवन करे ॥

शनैःशनैर्हरेदन्नंतक्रंतुपरिवर्धयेत् ॥ तक्रमेवयथाहारोभवेदन्नविवर्जितः ॥ ८ ॥ श्रमंनकुर्याद्बहुशोनकुर्याद्बहुभाषणम् ॥ नकुर्यान्मैथुनंतक्रपानेक्रोधंविवर्जयेत् ॥ ९ ॥ एवंयःसेवतेतक्रंग्रहणीतस्यनश्यति ॥ शीघ्रमेवनसन्देहःश्रीर्यथाद्यूतकारिणः ॥ १० ॥

इतितक्रपानप्रकरणम् ।

अर्थ—धीरे २ अन्नको छोडता जाय, और छाछको बढावे इस प्रकार करते २ केवल छाछकाही आहार करे बहुत परिश्रम, बहुत बोलना, मैथुन और क्रोध इनको छाछका पीनेवाला त्याग देवे इस प्रकार सेवन करनेवालेकी संग्रहणी दूर होवे ॥ इति तक्रसेवनम् ॥

कठरोह ।

षोडशदलायःकीलानिलवणंचपलद्वयम् ॥ त्रिकटुत्रिफलाभृंगीत्वग्लवङ्गंचपत्रिका ॥ १ ॥ प्रत्येकमर्द्धपलिकान्क्षिपेत्तक्रं पलत्रयम् ॥ उष्णंजलंशतपलंक्षिप्त्वाभूमौनिधापयेत् ॥ २ ॥ दिनानिसप्तदशवास्थितंनिष्कासयेत्ततः ॥ पलार्द्धंतुपिबेन्नित्यंश्वासपाण्डुक्षयंजयेत् ॥ ३ ॥

अर्थ—लोहकी कील १६ पल, नौंन दो पल, त्रिकुटा २४ टंक, भांग ८ टंक, तज ८ टंक, लौंग ८ टंक, तमालपत्र ८ टंक, छाछ ४८ पल मिलावे, गरमजल १०० पल मिलाकर किसी मिट्टीके बरतनमें भर पृथ्वीमें गाड देवे सात वा दसदिन पीछे पृथ्वीमेंसे निकालकर ८ टंक नित्य पीवे तो श्वास, खांसी, पांडुरोग, और क्षयी इनको दूर करे ॥

अठपहरीगिलोय ।

अमृतायाहिमःपेयोवासायाश्चहिमस्तथा ॥ प्रातःसशर्करःपेयोहितोधान्याकसंभवः ॥ १ ॥ अन्तर्दाहंतथातृष्णांजयेत्स्रोतोविशोधनः ॥ धान्याकधात्रीवासानांद्राक्षापर्प्पटयोर्हिमः ॥ २ ॥

अर्थ—गिलोयको अथवा अडूसा तथा धनियांको रातमें भिगोदे और प्रातःकाल पीस कपड़ेमें छान मिश्री मिलाकर पीवे तो देहके भीतरका दाह, प्यासको दूर करे. मूत्रकृच्छ्रको दूर करे. धनियां, आंवला, अडूसा, दाख और पित्तपापडा इनका हिम, रक्तपित्त, ज्वर, दाह, प्यास और शोषको दूर करे ॥

पलार्द्धमजगंधायाअष्टयामोषितंजले ॥ वर्तयित्वापिबेत्प्रातर्हन्तिदाहंसवातकम् ॥ १ ॥ पीतोमरिचचूर्णेनतुलसीपत्रजोरसः ॥ द्रोणपुष्पीरसोवापिनिहन्तिविषमज्वरान् ॥ २ ॥ त्रिफलायारसः क्षौद्रयुक्तोदार्वीरसोथवा ॥ निंबस्यवागुडूच्यावापीतोजयतिकामलाम् ॥ ३ ॥ अमृतायारसःक्षौद्रयुक्तःसर्वप्रमेहजित् ॥ वासकस्वरसः पेयोमधुनारक्तपित्तजित् ॥ ४ ॥

अर्थ—आधा पल अजमोद लेकर प्रातःकाल किसी मिट्टीके पात्रमें भिगोदे और दूसरे दिन निकालकर पीसे और जलमें छानकर पीवे तो वातसहित अंतर्दाह दूर होवे, तुलसीके पत्तोंके रसमें काली मिरच मिलाकर पीवे अथवा द्रोणपुष्पी (गोमा) का रस पीनेसे विषमज्वर नाश होवे त्रिफलाका रस मिलाकर पीवे तो अथवा दारुहलदीका रस शहत मिलाकर पीवे तो अथवा नीमके पत्ते आठ प्रहर भिगोकर पीवे तो अथवा गिलोयका रस पीवे तो कामला नष्ट होवे अठपहरी गिलोय शहदके साथ पीनेसे सर्व प्रमेह नाश होवें और अठपहरी अडूसेका रस शहदके साथ पीनेसे रक्तपित्त नष्ट होवे ॥

मधुराज्वरकेलक्षण ।

ज्वरोदाहोभ्रमोमोहोह्यतिसारोवमिस्तृषा ॥ अनिद्राचमुखंरक्तं तालुर्जिह्वाचशुष्यति ॥ १ ॥ ग्रीवामध्येचदृश्यंतेस्फोटकाः सर्षपोपमाः ॥ एतच्चिह्नंभवेद्यस्यसमधूरकउच्यते ॥ २ ॥

अर्थ—ज्वर दाह, भ्रम, मोह, अतिसार, वमन, प्यास, निद्रानाश, मुख लाल, तालुवा और जीभका सूखना, नाडमें सरसोंके समान फुंसी होवें, जिसमें ये चिह्न होवें उसको मधुराज्वर कहते हैं ॥

मधुरककोस्वरस ।

सहस्रवेधपाषाणंकपालंकच्छपस्यच ॥ वृद्धैलातुलसीपत्रंनालिकेरास्थिनूतनम् ॥ १ ॥ दाणाखसखसाख्याश्चगोमयस्यरसेनच॥ घृष्ट्वापानायदातव्यंमधूरकप्रशान्तये ॥ २ ॥

अर्थ—सहस्रवेधी पाषाण, कछवेका कपाल, बडी इलायची, तुलसीके पत्र, नारियलकी नवीन जटा, खसखसके दाने इनको गोबरके रसमें घिसकर देनेसे मधुरकशांति होवे ॥

मधुराकामंत्र ।

ॐनमोअंजनीपूतब्रह्मचारिवाचाअविचलस्वामिनउकाजसारिवाक्षांक्षःमगधदेशरायवडस्थानकितिहांमुसलीकन्ब्राह्मणतिणैमधुरोकियो ॥ १ ॥

अर्थ—करवा समेत तीन गागर भर उनमें चन्दन घिसकर डाले अगरकी धूप देवे, पीछे सफेद फूल माथेपर रखकर १०८ बार मंत्र जपे इसप्रकार सात दिन तक करे, स्त्रीके पास न जाय, किसी स्त्रीकी छोत लावन न पडे. जब मंत्र पढ़े तब आप पवित्र होय, सफेद स्वच्छ वस्त्र पहने रोगीको भीगी चनेकी दाल हनूमानजीके प्रसादकी खिलावे एक बडा मधुरा पानीके विकारसे होता है, जीभ, दांत काले होवें, तौ वह रोगी असाध्य है ।

केचित्साधारणयोगाः ।

मधुनापिप्पलीचूर्णंलिहेत्कासज्वरापहम् ॥ हिक्काश्वासहरंकण्डूप्लीहघ्नंवातलोचितम् ॥१॥ श्वासेकासेतथाशोषेमन्दाग्नौविषमज्वरे ॥ प्रमेहेमूत्रकृच्छ्रेचसेव्यातुमधुपिप्पली ॥ २ ॥

अर्थ—शहदके साथ पीपलका चूर्ण खानेसे खांसी, श्वास, ज्वर, हिचकी, तापतिल्ली और वातके विकारोंको दूर करे ॥

वर्द्धमानपीपल ।

त्रिवृद्धयापंचवृद्धयावासप्तवृद्धयाथवाकणाम् ॥ पिबेत्पिष्ट्वाद-शदिनंतास्तथैवप्रकर्षयेत्॥ १॥एवंविंशद्दिनैःसिद्धंपिप्पलीवर्द्ध मानकम् ॥ अनेनपांडुवातासृक्कासश्वासारुचिज्वराः ॥ २ ॥

अर्थ--तीन वा पांच वा सातसे वर्द्धमान पीपल दशदिन बढावे और दश दिनमें उसी क्रमसे घटावे ऐसे २१ दिन पीवे तो पांडुरोग, वातरक्त, खांसी, श्वास, अरुचि, ज्वर, उदररोग, बवासीर, क्षयी, कफ, वात, और उरग्रह ये रोग नष्ट होवें ॥

द्राक्षाहरीतकी ।

अपहरतिरक्तपित्तंकण्डूंगुल्मंचपैत्तिकंहन्ति॥ जीर्णज्वरंशमयति मृद्वीकासंयुतापथ्या ॥१॥ द्राक्षानियोज्याद्विगुणाशिवायास्त-त्कुट्टयित्वागुटिकाविधेयाः ॥ग्राह्याद्विकर्षप्रमिताप्रभातेमलग्रहे रोचकबद्धकोष्ठे ॥ २ ॥

अर्थ--दाखको हरडके साथ खानेसे रक्तपित्त, खुजली, गोला, पित्तके विकार और विषम ज्वर इनको दूर करे, दोभाग दाख और एक भाग हरड इन दोनोंको कूटकर गोली बनावे, आठ मासे नित्य प्रातःकाल सेवन करे तो मलके बंधको अरुचि और बद्धकोष्ठको दूर करे ॥

हरीतकीयोगाः ।

ग्रीष्मेतुल्यगुडांचसैंधवयुतांमेघागमाडंबरे सार्द्धंशर्करयाशरद्य-मलयाशुंठ्यातुषारागमे ॥ पिप्पल्याशिशिरेवसन्तसमयेक्षौद्रे-णसंयोजितां राजन्भक्षहरीतकीमिवगदानश्यन्तुतेशत्रवः॥१॥ हरस्यभवनेजाताहारिताचस्वभावतः ॥ हरतेसर्वरोगांश्चतेन ख्याताहरीतकी ॥ २ ॥

अर्थ--ग्रीष्मऋतुमें गुडके संग, वर्षाऋतुमें सैन्धवनिमकके संग, शरदऋतुमें आंवलोंके साथ, हेमंतऋतुमें सोंठके संग, शिशिरऋतुमें पीपलके संग और

वसन्तऋतुमें शहदके संग हरड खानेसे जैसे सर्वरोग नाश होते हैं इस प्रकार हे राजन् तेरे शत्रु नष्ट होवें ॥

कुटकीकाप्रयोग ।

सशर्करामक्षमात्रंकटुकामुष्णवारिणा ॥
पीत्वाज्वरंजयेज्जन्तुःकफपित्तसमुद्भवम् ॥ १ ॥

अर्थ–मिश्री १ टंक, कुटकी १ टंक इन दोनोंको मिलाकर गरमजलके संग खाय तो ज्वर और कफ पित्तके विकार दूर होवें ॥

अजमोदयोगः ।

एकएवकुबेराख्योहन्तिदोषशतत्रयम् ॥ किंपुनस्त्रिभिरायुक्तः शुंठीसैंधवरामठैः ॥ १ ॥ एकएवकुबेराख्यःपक्वोघृतगुडेनच ॥ कुर्यादिन्द्रियचैतन्यंहन्तिवातोदराणिच ॥ २ ॥

अर्थ–एक अजमोदही ३०० दोषोंका नाशक है, और उसमें सोंठ, सैंधानोंन. और हींग मिली होय तो फिर क्याही कहना, एकही अजमोद गुड और घीमें पका हुआ इन्द्रियोंको चैतन्य करे. और वातजन्य उदरके रोगोंको नाश करे ॥

शुंठीयोगः ।

गुडार्द्रकंवागुडनागरंवागुडाभयावागुडपिप्पलीवा।कर्षाभिवृद्ध्या त्रिफलाप्रमाणंखादेन्नरःपक्षमथापिमासम् ॥ १॥ शोफप्रतिश्याय-गरादिरोगान्सश्वासकासारुचिपीनसादीन् ॥जीर्णज्वराशों-ग्रहणीविकारान्हन्यात्तथान्यान्कफवातरोगान् ॥ २ ॥

अर्थ–गुड और अदरक, अथवा गुड और सोंठ, अथवा गुड और हरड, अथवा गुड और पीपल एक कर्षकी वृद्धिसे त्रिफलाके प्रमाण एक पक्ष वा एक महीना खाय तो सूजन, विषरोग, श्वास, खांसी, अरुचि, पीनस, पुरानाज्वर, बवासीर, संग्रहणी और वात कफके संपर्ण रोग नष्ट होवें ॥

त्रिफलायोग ।

एकाहरीतकीयोज्याद्वौचयोज्यौबिभीतकौ ॥ चत्वार्यामलकान्येवत्रिफलैषाप्रकीर्तिता ॥ १ ॥ त्रिफलामोहशोषघ्नीनाशयेद्विषमज्वरान् ॥ दीपनीपित्तश्लेष्मघ्नीकुष्ठहंत्रीरसायनी ॥ सर्पिर्मधुभ्यांसंयुक्तानेत्ररोगंव्यपोहति ॥ २ ॥

अर्थ—हरड एक भाग, बहेडा २ भाग, आंवला ४ भाग इसको त्रिफला कहते हैं त्रिफला शोष, मोह, विषमज्वर, कफके विकार, पित्तके विकार, कोढ इनको नाश करे, रसायन है, शहद और घृतके साथ त्रिफला खानेसे नेत्ररोगोंका नाश करे ॥

दशामृतहरीतकी ।

द्वौभागौचहरीतक्याश्चतुर्भागान्बिभीतकान् ॥ अष्टौचामलकीनां तु सितांचामलकीसमाम् ॥ १ ॥ यष्टीकंपिप्पलींचैव त्वक्क्षीरींचैकभागिकाम् ॥ भक्षयेन्मधुसर्पिर्भ्यांरात्रौखादेच्चयत्नतः ॥ २ ॥ तिमिरेपुष्पकेकाचेपटलेचार्बुदेपिच ॥ नेत्ररोगेषुसर्वेषुदशामृतहरीतकी ॥ ३ ॥

अर्थ—हरड दोभाग, बहेडा चार भाग आंवला ८ भाग, मिश्री ८ भाग, मुलहठी १ टंक, वंशलोचन १ टंक, पीपल १ टंक सबको मिलाकर चूर्ण करे, इसको घृत, शहदके संग रात्रिको खाय तो तिमिर, फूला, काच, पटल, अर्बुद और सर्व प्रकारके नेत्ररोग नाश होवें. इसको दशामृतहरीतकी कहतेहैं।

असगंधयोग और शुंठी ।

अश्वगंधैकभागास्यान्नागरंचैकभागिकम् ॥ घृतभागाश्चत्वारःखण्डंषड्भागसम्मितम् ॥ १ ॥ पुष्टिदंसन्धिवातघ्नंशीतकालोचितं नृणाम् ॥ कर्षंविचूर्णिताविश्वाद्विकर्षंखण्डएवच ॥ २ ॥

अर्थ—असगंध १ भाग, सोंठ १ भाग, घृत ४ भाग, मिश्री ६ भाग इन सबको मिलाकर अनुमान मुवाफिक शरद्ऋतुमें नित्य भक्षण करै तो देहको पुष्ट करे, संधियोंकी वादीको दूर करे, सोंठ एक कर्ष, मिश्री दो कर्ष, दोनोंको महीन पीसकर गोली बनावे, इसके खानेसे पेटके सर्व विकार नाश होवें ॥

चोबचीनी ।

जोबचीनींसमुत्काल्यत्रिशाणंपिबतःसदा ॥
सर्ववातव्यथायान्तिपथ्यनिर्वातसेविनः ॥ १ ॥

अर्थ—चोबचीनीको औटाकर तीन शाण पिये तो सब वातव्याधि नष्ट होवें, इसके खानेवाला पथ्यसे और पवनरहित स्थानमें रहे ॥ १ ॥

जमाईहलदी ।

भागद्वयंहरिद्रायाविश्वायाश्चैकभागकः ॥ गुन्दोर्द्धांशोघृतेभृष्टः खण्डंभागंचतुर्मतम्॥ १ ॥घृतेनालोडयेत्तत्सर्वंधान्यराशिविमध्यगम् ॥ चतुर्दशदिनान्स्थाप्यंगुप्तंयत्नेनभक्षयेत्॥२॥अम्लक्षारादिकंवर्ज्यंमाघमासेत्विदंहितम् ॥ रुधिरार्तिवातभग्नेषुशुभं चक्षुःप्रसादनम् ॥ ३ ॥

अर्थ—हलदी दोभाग, सोंठ एक भाग, घीमें भुना गोंद आधाभाग, मिश्री चारभाग घृतमें मकरोकर धानकी राशिमें गाड देवे, चौदहदिन उपरान्त निकालकर खाय और खट्टा, चरपरा, नमकीन न खाय. इसको माघके महीनेमें खाय तो रुधिरके विकारको वादीके रोगोंको और संपूर्ण नेत्रविकारोंको नाश करे ॥

जमायाजीरा ।

जीरकंभागमेकंस्यात्खण्डस्तद्द्विगुणःस्मृतः ॥ चतुर्गुणंघृतंतत्तं सर्वंसंमील्यचोद्धरेत् ॥१॥ गोधूमपुंजमध्येचचतुर्दशदिनस्थि-

अर्थ—जीरा १ भाग, मिश्री दोभाग. इसमें चौगुना गरम घृत डालै सबको मिलाकर उत्तम पात्रमें भरदेवे और धानकी राशिमें गाड देवे फिर चौदह दिन बाद निकालकर शरदीके दिनोंमें खाय तौ नेत्रोंको हित होवे॥

घृतपान ।

शुद्धंगव्यंघृतंतप्तंमरिचैर्वाकणान्वितम्॥रसायनंसदापेयंघृतपानं प्रशस्यते ॥१॥ रूक्षक्षतविषार्त्तानांवातपित्तविकारिणाम् ॥ हीनमेधास्मृतीनांचघृतपानंप्रशस्यते ॥ २ ॥

अर्थ—शुद्ध घृतको तपाकर उसमें कालीमिरच वा पीपल डालकर पिये यह रसायन है. रूक्षदेहवाला, उरःक्षत, विषपीडित, वातपित्तविकारवाला, बुद्धिहीन, स्मरण रहित ऐसे मनुष्यको घृत पीना सदा हित है॥

निम्बपानविधिः ।

रसोनिम्बस्यमंजर्य्याःपीतश्चैत्रेहितावहः ॥
हन्तिरक्तविकारांश्चवातपित्तंकफंतथा ॥ १ ॥

अर्थ—चैतके महीनेमें नीमकी कोंपल घोटकर पीनेसे रुधिर विकारोंको तथा वात, पित्त, कफके रोगोंको नष्ट करे ॥

खण्डपानम् ।

द्वेपलेशुद्धखण्डस्यगालयित्वाजलेपिबेत् ॥ अंगसादंप्रशमयेद्रुधिरस्यविकारजम्॥१॥ कपित्थंचशताह्वाचधान्यकंखण्डसंयुतम् ॥ अथवाशर्करायुक्तंग्रीष्मकालेसुखावहम् ॥ २ ॥

अर्थ—मिश्री दोपलको जलमें घोलकर पीनेसे रुधिरविकारजन्य शरीरका जिकड़ना दूर होय, कैथा, शतावरी, धनियां, मिश्री इन सबका गरमीके दिनोंमें पीना हितकारक होताहै ॥ इति साधारणयोगाः ॥

सामान्यकायचिकित्सा ।

एरण्डतैलंविषमप्रवृद्धौसगोपयस्कंहितमेतदुक्तम् ॥ सराजवृक्षामृतवल्लिवासाक्वाथंहितंमारुतशोणितेषु ॥ १ ॥

अर्थ—अंडवृद्धिमें अंडीका तेल गौके दूधमें मिलाकर पीवे. अमलतास, आमला, गिलोय, अडूसा इनका काढा वादी और रुधिरके विकारवालेको हित है।

मूत्रेणवादुग्धसमन्वितंवासर्वोदरेषुश्वयथौचशस्तम् ॥
पक्काशयस्थेपवनेप्रयोज्यमेरण्डतैलंहिविरेचनार्थम् ॥ १ ॥

अर्थ—गौके मूत्रमें अंडीका तेल डालकर पिये. अथवा गौके दूधमें पिये तो सब उदरके विकार तथा सूजन ये सब नाश होवें. पक्काशयस्थ वादीमें दस्त करानेको अंडीका तेल देवे ॥

उन्मादिनामुन्मदमानसानामपस्मृतौभूतहतात्मनांहि ॥
ब्राह्मीरसःस्यात्सवचःसकुष्टःसशंखपुष्पःससुवर्णचूर्णः ॥ १ ॥

अर्थ—उन्माद और मृगीरोग, भूतबाधा इनमें ब्राह्मीका रस, वच, कूठ, संखाहूली और धतूरेके बीज, यह चूर्ण देय ॥

अक्षामयेषुत्रिफलागुडूचीवातासृजेगोमथितंग्रहण्याम् ॥ कुष्टेषु सेव्यंखदिरस्यसारंसर्वेषुरोगेषुशिलाह्वयंच ॥ १ ॥

अर्थ—नेत्ररोगमें त्रिफला, वातरक्तमें गिलोय, संग्रहणीमें छाछ, कुष्ठरोगमें खैरसार और सम्पूर्ण रोगोंमें शिलाजीत सेवन करे ॥ इति ॥

अथ दंभ ।

धनुर्वातेमृगीवातेचोन्मादेचित्तविभ्रमे ॥ निश्चैतन्येसन्निपातेदम्भंतत्रप्रदापयेत् ॥१॥ भ्रुवोशंखेचपादेषुकृकाटीमूलरंध्रयोः ॥ नेत्ररोगेह्यपस्मारेभ्रुवौशंखौचदम्भयेत् ॥ २ ॥ कामलेपाण्डुरोगेचकृकाट्यौचप्रकोष्टके॥औदरेषुचसर्वेषुदम्भयेदुदरोपरि ३॥ हृदयेयस्यपीडास्याद्दम्भयेद्धृदयोपरि ॥ ४ ॥

अर्थ—धनुर्वात, मृगी, उन्मादरोग, चित्तविकार, बेहोशी और सन्निपात इन रोगोंमें दम्भ अर्थात् दाग देवे. दोनों भौंह, कनपटी, पैर, कृकाटी, मस्तक, गदा इनमें दाग देय. नेत्ररोग और मृगीरोग इनमें भौंह और कनपटीको

दागे कामला और पीलियामें कुकाटी (घांटी) और पेटको दागे तथा उदरके सब रोगोंमें पेटको दागे. हृदयमें पीडा होवे तौ हृदयके ऊपर दाग देवे ॥

विषचिकित्सा ।

शिरीषपुष्पंसकरंजबीजंकाश्मीरजंकुष्ठमनःशिलेच ॥ एषोग-दोराजिलवृश्चिकानांसंक्रांतिकारीकथितोजलेन ॥ १॥ शिरीषं मरिचंनिम्बंककोंटीतन्दुलीयकम्॥ श्यामापाठाचशुंठीचएकैकं विषदोषहृत् ॥ २ ॥

अर्थ—शिरसका फूल, कंजाके बीज, केशर, मनशिल और कूठ इनको जलमें घोलकर लगानेसे सांप और बिच्छूका विष दूर होवे, शिरस, कालीमिरच, नींब, ककडी, चौलाई, मैद, पाढ, और सोंठ ये एक२विषके दोष हरणकर्त्ता हैं।

जिह्वायास्तालुनोयोगादमृतस्रवर्णंतुयत् ॥ विलिप्तस्तेनदंशः स्यान्निर्विषःक्षणमात्रतः ॥ १ ॥ घृतादिपेयंदष्टेनभक्ष्यंचिर्भ-टिकादिकम् ॥ दंशेकर्णमलंबद्धंतुलसीमूलभक्षणम् ॥ २ ॥

अर्थ—जीभ और तालुएके मिलनेसे अमृत स्रवे है उसके लगानेसे विष दूर होवे. विषसे पीडित मनुष्य काली मिरच, और घृत पीवे और ककोडा आदि खाय और काटेहुए स्थानपर कानका मैल बांधे अथवा तुलसीकी जड खाय तो विष दूर होवे ॥

स्त्रीणांचिकित्सा ।

जन्मवंध्याकाकवंध्यामृतवत्सास्तुयाःस्त्रियः ॥
तासांपुत्रोदयार्थायशम्भुर्गौरीमथाब्रवीत् ॥ १ ॥

अर्थ—जन्मवंध्या, काकवंध्या, और मृतवत्सा ये वंध्याके तीन भेद हैं इनके चिरजीवी पुत्र होनेके अर्थ श्रीमहादेवजीने पार्वतीजीसे उपाय कहाहै।

एकापत्या १ मृतापत्या २ कन्यापत्या ३ नपत्यता ४ ॥
मृतपुत्रत्व ५ मित्येवंपञ्चधापत्यव्याधयः ॥ १ ॥

अर्थ—एकही सन्तान होय, मरी सन्तान होय, कन्याही कन्या होयँ, सन्तान न होय और जो सन्तान होय सो मरजाय यह पांच प्रकारका स्त्रियोंका रोग होता है ॥

पुत्रोत्पत्तिकेयोग ।

समूलपत्रांसप्पार्क्षीरविवारेसमुद्धरेत् ॥ एकवर्णगवांक्षीरेकन्या हस्तेनपेषयेत् ॥ १ ॥ ऋतुकालेपिबेद्वंध्यापलार्द्धंतद्दिनेदिने ॥ क्षीरशाल्यन्नमुद्गंचलघ्वाहारंप्रदापयेत् ॥ २ ॥ एवंसप्तदिनं कुर्याद्वंध्यापिलभतेसुतम् ॥ ३ ॥

अर्थ—जड और पत्तोंसहित लक्ष्मणा बूँटीको रविवारके दिन उखाड लावे उसको एकरंगी गौके दूधमें कन्याके हाथसे पिसवावे जब स्त्री ऋतुमती होय और चौथे दिन जब स्नान कर चुके तब आधा पल इसको बांझ स्त्री प्रतिदिन पीवे और दूधभात और मूंग आदि हलका आहार करै इस प्रकार सात दिवस करनेसे बांझ स्त्रीकोभी पुत्रका लाभ होय ॥

श्वेतायाःकंटकार्य्याश्चमूलंतद्भक्षगर्भकृत् ॥ नकर्मकारयेत्किंचिद्वर्जयेच्छीतमातपम् ॥ १ ॥ अश्वगंधाकषायेणमृद्वग्निपरिसाधितम् ॥ ऋतुकालेपिबेद्वंध्यागर्भस्थापनमुत्तमम् ॥ २ ॥ मातुलिंगशिफांनारीऋत्वंतेपयसापिबेत् ॥ नागकेशरपूरास्थिचूर्णंवागर्भदंपरम् ॥ ३ ॥

अर्थ—सफेद कटेरीकी जडभी गर्भदाता है इसको खानेवाली स्त्री कुछ काम न करै, और शरदी गरमीसे बचती रहे असगंधके काढेको मंदी आगसे पकावे इस काढेको ऋतुमती स्त्री पिये तो वंध्याके पुत्र होय, बिजौरेकी जडको जो स्त्री स्नानकर चौथे दिन दूधके साथ पीवे तौ उसके पुत्र होय, अथवा नागकेशर और बिजौरेकी जड दूधके संग पीवे ॥

शिफांबर्हिशिखायास्तुक्षीरेणपरिपेषितम् ॥ पिबेदृतुमतीनारीग-

नसहपातव्यंवंध्यापिलभतेसुतम् ॥ ५ ॥ कोरंटकोश्वगंधाचक-
कोंटीशिखिचूलिका ॥ एकैकाकुरुतेगर्भंपीताक्षीरेणयोषिताम्
॥ ६ ॥ अथमुक्ताफलमर्द्धमविद्धमृतुकालेर्द्धसुजातिफलेन ॥
विद्रुमखंडयुतंसपयस्कंपुत्रकरंयुवतेस्त्रिदिनस्थम् ॥ ७ ॥

अर्थ—मोरशिखाके पंचांगको दूधके साथ पीवे, अथवा पीपली, अदरक, मिरच, नागकेशर इनको घृतके साथ पीवे, अथवा पियाबांसेकी जड, असगंध, ककोडाकी जड, और मोरशिखा यह एक २ औषधि गर्भ करता है अथवा अनविधा मोती आधा, आधा जायफल, आधा मूंगा इनको वंध्या स्त्री तीन दिन पीवे तो गर्भ होवे ॥

गर्भनिवारण ।

पलाशतरुबीजानिपिबेत्पुष्पवतीतुया ॥ सलिलेनत्र्यहंयाव-
त्सावेश्यायातिवंध्यताम् ॥ १ ॥ फलंत्रपुषबीजानियानारी
पुष्पदर्शनात् ॥ पिबेद्दिनानिसप्ताष्टौयदिनेच्छेत्प्रसूयितुम् ॥२॥
उत्कालयबदरीलाक्षांतैलेनसहयापिबेत् ॥ द्विकर्षंचऋतोरन्ते-
तस्यागर्भोनजायते ॥ ३ ॥

अर्थ—ढाकके बीज तीन दिन ऋतुमती स्त्री घोटकर जलमें पीवे तौ वेश्याभी वंध्या होवे अथवा खीराके बीज ऋतुमती सात आठ दिन पीवे तौ वंध्या होय अथवा बेरकी लाखको औटाकर तेलके साथ दो कर्ष पीवे तौ उस स्त्रीको गर्भ न रहे ।

मृतगर्भपातन ।

स्फटिकांवंशशालींचोत्कालयकर्षद्वयंपिबेत् ॥
त्र्यहंवाप्यथसप्ताहंभ्रूणःपततिनिश्चितम् ॥ १ ॥

अर्थ—फिटकरी, बांसकी छाल इन दोनोंको औटाकर८ टंकके अनुमान नित्य खाय अथवा सात दिन पीवे तौ गर्भ पतन होय ॥

इति श्रीदत्तराममाथुरप्रणीतमंजूषाभाषाटीकायां मिश्रप्रकरणम् ।

अथ कर्मविपाकप्रकरणम् ।

अरुणउवाच ।

कथंकार्योदिवानाथप्रश्नकालेऽस्ययोविधिः॥तत्तत्कर्मविमोक्षा-
यतत्तन्निष्कृतिसूचकः ॥१॥ श्रीसूर्य्यउवाच॥आधिव्याधिमतो
जन्तोर्विरक्तिर्जायतेयदा॥दैवज्ञंसतदाप्राप्यनिजदुःखंनिवेदयेत्२

अर्थ—श्रीसूर्य्यनारायणसे अरुण सारथि प्रश्न करतेहैं, हे दिवानाथ ! प्रश्नके समय किसविधिसे कर्मविपाकको देखे सो कहो इस वचनको सुनकर श्रीसूर्यनारायण बोले कि आधि (मनके विकार) व्याधि (देहके रोग) इनसे जब मनुष्यका चित्त उपरामको प्राप्त होय,तब दैवज्ञ(ज्योतिषी) के पास जाकर अपने दुःखको निवेदन करे, अथवा अपने घरपर आदरपूर्वक ज्योतिषीको बुलाकर श्रद्धासे विधिपूर्वक पूजन करै तथा और ब्राह्मण पंडितोंको बुलाकर शुभस्थानमें अपने इष्टदेवका पूजन करे और प्रश्नकर्त्ता ज्ञानभास्कर पुस्तकका पूजन गंधपुष्पादिसे और बहुत द्रव्यसे करे, ब्राह्मणोंको दान देवे, तथा सुन्दर सोना १६ मासे और दो गौ इनको लाल कपडेसे भूषित कर पीछे इस मंत्रको पढे ॥

भगवन्देवदेवेशकर्मसाक्षिञ्जगत्प्रभो ॥ प्राभृतंप्राग्बिभर्म्येवतुभ्यं
पुस्तकरूपिणे ॥ १ ॥ प्रभृतेनानुनातुष्टःकर्मसम्यक्प्रकाशय ॥
तत्तद्दुःखविनाशायदुष्कृतस्यचमेप्रभो ॥ २ ॥

अर्थ—इस मंत्रको पढ़कर सूर्य्यनारायणकी प्रार्थना करै और पुस्तकको नमस्कार करके पूर्वोक्त सुवर्णादिकोंको भेंटकर रविकी तरफ पूर्व मुख करके बैठे पीछे ज्योतिषी पुस्तकको देखकर जो कहे उसे श्रद्धापूर्वक श्रवण करे जब कर्मविपाक सुनचुके तब यथाशक्ति उसका जप होम दानादि करे जिन रोगोंके कर्मविपाकमें जैसा कहेंगे ॥

रोगोंके नाम ।

ज्वरोऽतिसारोग्रहणीअर्शोऽजीर्णोविषूचिका ॥ अलसश्चविल-

क्ष्माउरःक्षतम्॥कासोहिक्कासहश्वासःस्वरभेदस्त्वरोचकम् २॥ छर्दिस्तृष्णाचमूर्च्छाद्यारोगाःपानात्ययादयः ॥ दाहोन्मादा-वपस्मारः कथितोऽथानिलामयः ॥ ३ ॥ वातरक्तमुरुस्तम्भआ मवातोथशूलरुक्॥पित्तजंशूलमानाहउदावर्त्तोथगुल्मरुक्॥३॥ हृद्रोगोमूत्रकृच्छ्रंचमूत्राघातस्तथाऽश्मरी ॥ प्रमेहोमधुमेहश्च पिटिकाश्चप्रमेहजाः ॥ ५ ॥ मेदोदोषोदरंशोथोवृद्धिश्चगलग-ण्डका ॥ गण्डमालापचीग्रंथिरर्बुदंश्लीपदंतथा ॥ ६ ॥ विद्रधि-व्रणशोफाश्चद्वौव्रणौभग्ननाडिकौ ॥ भगन्दरोपदंशौचशूकदोषा-स्त्वगामयाः ॥७॥ शीतपित्तमुदर्दश्चकोठश्चैवाऽम्लपित्तकम् ॥ विसर्पश्चसविस्फोटःसरोमांत्योमसूरिका ॥ ८ ॥ क्षुद्रास्यकर्ण-नासाऽक्षिशिरःस्त्रीबालकामयाः ॥ विषंचेत्यमुमुद्दिश्य संग्रहे-स्मिन्प्रकीर्त्तिताः ॥ ९ ॥

अर्थ—ज्वर, अतीसार, संग्रहणी, बवासीर, अजीर्ण, हैजा, अलसक, विलम्ब, कृमिरोग, पाण्डु और कामला ॥ १ ॥ हलीभक, रक्तपित्त, क्षय, उरःक्षत, कास, श्वास, हिचकी, स्वरभङ्ग, अरुचि ॥ २ ॥ कय, प्यास, मूर्छा इत्यादि तथा अत्यन्तमद्यपानसे उत्पन्न हुए रोग, दाह, पागल-पन, मिरगी, वायुरोग ॥ ३ ॥ वातरक्त, ऊरुस्तम्भ, आमवात, शूल, पित्त-शूल, अफारा, उदावर्त, वातगुल्म ॥ ४ ॥ हृदयके रोग, सुजाक, मूत्राघात, पथरी, प्रमेह, मधुमेह, प्रमेहके फोडे ॥ ५ ॥ चर्बीके दोष, जलोदर शोफ, घेघा, गण्डमाला, अपची, ग्रन्थि, अर्बुद, फीलपांव ॥ ६ ॥ बिद्रधि, घाव, सूजन, भग्न और नाडिक नामके दोज्वर, भगन्दर, गर्मी, शूकदोष, चर्मरोग ॥ ७ ॥ शीत पित्त, उदर्द, कोठ, अम्लपित्त, विसर्प, बिवाई, बाल गिरना, शीतला ॥ ८ ॥ मुख—कान—नाक—शिरके रोग, स्त्री और बालरोग तथा बिष इनकी मुख्यतापर इस ग्रन्थमें कहेगयेहै ॥ ९ ॥

अथ कर्मफलमाह ।

जन्मान्तरकृतंपापंव्याधिरूपेणबाधते ॥
तच्छान्तिरौषधैर्दानैर्जपहोमसमर्चनैः ॥ १ ॥

अर्थ—जन्मांतरका किया हुआ पाप इस जन्ममें रोगरूप होकर दुःख देता है, इस कारण उसकी शांति औषधि, जप, दान, होम और देवताओंके पूजनादि विधिसे करे. देव, गुरुको दुःख देनेसे पाप कर्म्मोंके करनेसे जो घोर रोग होतेहैं, वो असाध्य हैं ॥

जो मनुष्य पूर्व जन्ममें क्रूरकर्मके कर्त्ता, पापी, चुगलखोर होते हैं वे इस जन्ममें शीतज्वरसे पीडित होते हैं इसकी शांतिके लिये जातवेदसे इसमंत्रको १०००० दशहजार बार जपे, पीछे ब्राह्मणभोजन करावे, तथा हजार कलशसे स्नान और १०० सौ ब्राह्मणोंको भोजन तथा श्रीमहादेवजीका अभिषेक यह माहेश्वरज्वर (गरमज्वर) में करे ॥

कुम्भदानविधि ।

मिट्टीका लाल घडा लाकर उसको चावलोंपर स्थापित करे, उसको सफेद कपडेमें लपेट देवे. तथा तिल वा खांड अथवा जलसे उसको भरदेवे. पीछे धूप, दीप, फूल आदिसे उसका पूजन करे कुम्भदानकी विधिसे दान कर देवे. गुरु ब्राह्मण इनकी भक्ति करे ॥

यज्ञकी अग्निका बुझानेवाला, तलाब, बावडी आदिका तोडनेवाला अतिसाररोगवाला होवे. और जो अपनी साध्वी स्त्रीका परित्याग करे वो संग्रहणी रोगवाला होवे. दोनों अर्थात् अतिसारवाला और संग्रहणीवाला मनुष्य महादेवजीकी रुद्रीके १०८ पाठ करे दिव्य गोदान करे ।

धेनुदानविधि ।

दिव्य गौ लेकर गोदानपद्धतिकी रीतिसे उसका पूजन कर वेदपाठी ब्राह्मणको दान करे ॥

जो मनुष्य गौको मोल लेकर दूने मोलसे बेचे. अथवा गौका व्यापार करे. अथवा द्रव्य लेकर गौ पुजावे. अथवा द्रव्य लेकर देवताकी पूजा करे. तथा होम करावे; वह मनुष्य हर्षरोगी होवे. इसकारण इतनी वस्तुओंको मोल न बेचे. इसकी शांति यह है कि घृत सोनेका दान करे अथवा सोनेकी गौका दान करे ॥

अन्नका चुरानेवाला मनुष्य अजीर्णरोगी होय और शूद्रका अन्न खानेवाला शूलरोगी होताहै. और अजीर्ण रोगसे पीडित होय. यज्ञकी अग्नि शांत करनेवाला मन्दाग्निका रोगी होय तथा गोमांस खानेवालोंके मन्दाग्नि होय, जो मनुष्यको विष देकर मारे उसके मन्दाग्नि होवे ये पूर्वोक्त रोगी तीन पल सुवर्ण और अन्नदान करें, अथवा सोनेकी बकरी बनाकर दान करें, हाथी रथ, घोडेका बिगाडनेवाला कृमिरोगी होय, पतिके मरनेके पीछे जो स्त्री रंगीन कपडे पहने वह इस जन्ममें कृमिरोगवाली होय, रंगीन बैलका दान करे । गुरु, ब्राह्मण, देवताका द्रव्य चुरानेवाला पांडुरोगी होवे, नीच जातिकी स्त्रीसे भोग करनेवाला भी पांडुरोगी होवे, वह कृच्छ्रचांद्रायण व्रत करे, १६ टंक चांदीकी पृथ्वीका दान करे, कामला रोगवाला सोनेका गरुड बनाकर दान करे और यही कुम्भकामला हलीमकवाला करे. जो पूर्व जन्ममें वैद्यशास्त्रको पढ़कर अन्यथा औषधि देय वह रक्तपित्तवाला रोगी होवे वह चरुघृतका होम करे, जो ब्राह्मणका विनाश करे वह क्षयीरोगी होय. १०८ निष्क सोनेका दान करे अथवा आधा दान करे. २४ ब्राह्मण जिमावे १०००० महादेवके मंत्रका जप करे जो गर्वित होकर वृथा अभिमान करे विना धर्मशास्त्र पढे सभामें प्रायश्चित्त कहे वह राजयक्ष्माका रोगी होय ३० निष्क सोनेकी गौका दान करे ॥

कृतघ्नोजायतेमर्त्यः कफवाञ्छ्वासकासवान् ॥

अर्थ–कृतघ्नी मनुष्य कफरोगी, श्वास, खांसीवाला होवे नोंन और शहदका दान करे १००० ब्राह्मणोंको भोजन करावे. गुरुकी वाणी रोकनेवाला गद्गद वाणीवाला होता है जो ब्राह्मणके विना जिमाये जल पान करे भोजन करे सो हिचकीका रोगी होवे चैंटी, कौवा कुत्ताको उच्छिष्ट देवे सो छर्दि (वमन) का रोगी होय जो विश्वास देकर मारे सो छर्दिरोगी होवे मार्ग चलनेसे थके मनुष्यको गौको ब्राह्मणको प्यासा रक्खे वह तृषारोगी तथा मूर्च्छारोगी होवै जो शास्त्र पढ़कर सभामें धर्मका श्लोक

न कहे, वह उन्माद, पानात्यय, व्याधिमंत होय सरस्वती मंत्रका जप करे, सुवर्ण दान देवे, गौ बेचकर ऊंट खरीदनेवाला सर्वांगदाह रोगी होय स्वामी गुरुका मारनेवाला मृगीरोगी होय गणेशका मंत्र और सुवर्णका दान और ब्राह्मणभोजन करावे, जबरदस्ती पराई स्त्रीसे भोग करनेवाला संधिवातरोगी होय जो वनको जलावे उसके उदरशूल होय, माता पिताके मैथुनका अनुमान करे उसके कर्णरोग होवे।

पीछे बहरा होवे, घृत सोनेका दान करे, अपने वर्ण और स्वगोत्रकी स्त्रीसे गमन करनेसे वातरक्तका रोगी होय, लक्ष्मीनारायणकी सोनेकी प्रतिमा दान करे, होमकी अग्नि बुझानेवाला आमवात रोगी होय, १०००० गायत्रीका जप करे, पराये दिलका दुखानेवाला हृदयरोगी होवे, गुरुकी स्त्री भोगनेवाला मूत्रकृच्छ्री होय, (सोजाकरोगी) होय, लौंडेबाज मनुष्य मूत्राघाती और फिरंगवातरोगी होय, ब्रह्माकी सोनेकी मूर्ति दान करे, परस्त्रीगामी मनुष्यके पथरीरोग होय, कन्यागामी प्रमेहरोगी होय, मातागामी उदररोगी होय, भाईकी स्त्रीसे भोगकर्त्ता मनुष्य जलप्रमेही होय, चांद्रायण व्रत करे, चांदीका दान करे, चांडालीगमनसे प्रमेही और सर्वरोगी होय, जो ब्रह्मा, विष्णु, महेश इनमें भेदबुद्धि करे, वह उदररोगी होय. जो पर्वतके अग्रभागमें, जलमें, धूलिनमें, नदी किनारेमें सफल वृक्षके नीचे मलमूत्रका त्याग करे, तथा थूके, उसके सूजनका रोग होवे ॥

विघ्नकर्त्ताचभोक्तृणांशोफीभवतिमानवः।

अर्थ—दूसरेके भोगमें जो विघ्न करे वह शोफ(सूजन) रोगी होवे १००० गायत्रीका जप तिल घृतका होम, पुत्रीसे गमनकर्त्ता अंडवृद्धि रोगवाला होवे वह चांद्रायणव्रत करे. विना अपराध जो राजा सेवकके हाथ पैर छेदन करे वह दूसरे जन्ममें लँगडा, लूलाहोय तथा टूँडा होय, रुद्रीके १०८ पाठ करे. यज्ञमें विघ्नकर्त्ता मनुष्य आंतोंका रोगी होय गुरु और दूसरेका दुःखदाता गोले और गंडमालाका रोगी होय, रंडा स्त्रीसे गमनकर्ता रक्तग्रंथिरोगी होय

श्लीपदवाला रोगी होय, ब्राह्मणका भोजन चुरानेवालाविद्रधिरोगी होयअति अभिमानसे स्नेहसे भयसे जो धर्म छोडदे वह व्रणरोगवाला होवे. धर्मको जानकर जो अधर्म करे सो भगंदर रोगी होय, सुवर्ण, रत्न, धान्य, वस्त्रका दान करे।

मातृगामीभवेद्यस्तुलिंगंतस्यविनश्यति ॥

अर्थ—मातासे गमन करनेवालेका लिंग गल जावे, पूर्वोक्त दानकरे जीव घाती कुष्ठरोगी होताहै वस्त्र चुरानेवाला सफेदकुष्ठी होताहै वो सान्तपनव्रत करे गुरुकी शय्यापर सोनेवाला दुष्ट चर्मवाला होवे, सोने और वस्त्रका दान करे मल मूत्र त्यागकर जो पवित्रता न करै, और उसीतरह भोजन करने लगे उसके गुदारोग होवे वह चान्द्रायण व्रत करे, दुष्टवाणी बोलनेवाला मुखरोगी होवे, दूसरेका भोग देखनेवाला नेत्ररोगी होय, वह चांद्रायण व्रत करे ॥

स्रवद्गर्भाभवेत्सातुबालकंहन्तियापुरा ॥

अर्थ—जो पूर्वजन्ममें बालकको मारे उसे गर्भस्रावका रोग हो जो स्त्री पिता गुरुकी स्पर्द्धा करे वो प्रदररोग वाली होवे, कृच्छ्र चांद्रायण व्रत करे जो स्त्री पतिके मरनेपर ब्रह्मचर्य्यको बिगाडे उसके योनिरोग होवे जो पूर्वजन्ममें दूधकी चोरी करे उसके स्तनोंमें दूध नहीं होय, ब्राह्मणोंको दूध अन्नका दान देवे, जो अपने पतिको छोड परपुरुषकी इच्छा करे, उसके स्तनोंपर फोडे होवें, और भगसे रुधिर निकले, वो अग्निके मंत्रसे होम करे और जप करे ॥

ज्योतिषद्वारावंध्याकाफल ।

सुतपतिरस्तगतोवापापयुतःपापवीक्षितोवापि ॥
संततिबाधांकुरुतेकेन्द्रेपापान्वितेचन्द्रे ॥ १ ॥

अर्थ—जिसके जन्मपत्रमें पंचमेश सूर्य्यके साथ अस्त होवे अथवा पापग्रहके साथ बैठा होवे अथवा पाप वीक्षित होय उसके संतानकी बाधा होवे और पापयुत चंद्रमा केन्द्रमें बैठा होवे तो भी संतानकी बाधा होय

पंचमस्थानमें दो पापी वा तीन पापी अस्त होकर बैठे होयँ तो स्त्री, पुरुष दोनों वंध्या होवें परंतु पूर्वोक्त ग्रह शत्रुवीक्षित होवें इनकी शांतिके अर्थ बुध और शनिवारको पूजन करे ॥

स्वर्णधेनुदानविधि ।

सम्पूज्यदेवान्स्वगुरुंचनत्वावस्त्रादिभोज्यैःपरितोषयित्वा ॥
आराधयित्वाविधिनाम्बिकांचततःपिबेच्छुद्धफलंघृतंच ॥१॥

अर्थ—जो वंध्या होय वह देवता और गुरुको नमस्कार कर भोजन वस्त्रादिसे उनको प्रसन्न करे और विधिपूर्वक पार्वतीका आराधन करे १६ मासे सोनेकी गौ बनाकर दानकरे, पीछे फलघृत जो घृताधिकारमें लिख आयेहैं उसको पीवे, वंध्यादोष दूर करनेको हरिवंशपुराण स्त्री पुरुष दोनों सुने मंगलवारका व्रत करें, अथवा भागवतमें लिखे पयोव्रतको विधिपूर्वक करें, अथवा पारसनाथकी दशमीका व्रत करें ॥

सर्वरोगशांति ।

पवित्रघरमें पवित्र मिट्टी बिछावे और कुंड मंडप बनावे, उसमें नवग्रह, दश दिक्पाल, क्षेत्रपाल और वास्तुदेव आदिको स्थापित कर पाद्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, चंदन, धूप, दीप, फल, नैवेद्य आदिसे पूजन करे और लोहेकी चार २ अँगुलकी चार कील मंत्रकर चारों दिशाओंमें गाड़ देवे, घरके चारों कोनोंमें बलिदान देवे, मंत्र यह है:—

ॐह्रांह्रींह्रूंह्रह्रौंह्रः नमःश्रीशान्तये अमुकस्य गृहे शान्तिं धृतिं कान्तिबुद्धिंलक्ष्मींकुरु २ स्वाहा ।

फिर इसी मंत्रसे जलके कलशको अभिमंत्रित कर सबको उसके जलसे छींटा देवे, पीछे गुरुओंको वस्त्रदान देवे, तिलक करे, दक्षिणा देवे तो सर्वरोग शांत होवैं ॥

अष्टौज्वरद्वादशवाकुत्रचित्पंचविंशतिः ॥
वाताश्चतुरशीतिश्चगदाःक्वापिमतान्तरे ॥ १ ॥

अर्थ—ज्वररोग आठ प्रकारका है किसी आचार्यके मतसे पच्चीस

प्रकारका है, वातरोग ८४ प्रकारका है इसी प्रकार रोग संख्या है यह शार्ङ्गधरके प्रथमखंडमें लिखा है देखलेना चाहिये ॥

अथ प्रशस्तिश्लोकाः ।

सूरीश्वरःप्रवरसिंहशिरोवतंसःश्रीचंद्रकीर्तिगुरुपादयुगप्रसादात्। गम्भीरचारुतरवैद्यकशास्त्रसारं श्रीहर्षकीर्तिवरपाठकउद्दधार १॥ विचार्यपूर्वशास्त्राणिहर्षकीर्त्याह्वसूरिभिः॥ किंचिदुद्ध्रियतेतस्मै रहस्यंवैद्यकार्णवात् ॥२॥ आत्रेयकश्चरकवाग्भटसुश्रुताश्वि- हारीतवृन्दकलिकाभृगुभेडपूर्वाः ॥ येऽमीनिदानयुतकर्मविपा- कमुख्यास्तेषांमतसमनुसृत्यमयाकृतोऽयम्॥३॥ यथाजनाना- मिहवांछितार्थांश्चिन्तामणिःपूरयितुंसमर्थः ॥ तथैवसद्भेषजभू- रियोगाच्छ्रीयोगचिन्तामणिरापिपर्त्ति ॥ ४ ॥ यथायोगदीप्र- पोस्तिपूर्वयोगशतंयथा ॥ तथैवायंविजयतांयोगचिन्तामणि- श्चिरम् ॥ ५ ॥

इति श्रीमन्नागपुरीयतपागच्छीयश्रीहर्षकीर्तिसूरिसंकलितेवैद्यकसारोद्धारे योगचिन्तामणौ सारसंग्रहे मिश्रकाऽध्यायः सप्तमः समाप्तः ॥ ७ ॥

॥ समाप्तश्चाऽयं ग्रंथः ॥

जाहिरात ।

विक्रय्य पुस्तकें-(वैद्यकग्रन्थाः)।

नाम.	की० रु० आ०
अष्टाङ्गहृदय-(वाग्भट) मूल मोटा अक्षर वाग्भटविरचित.	२-८
अष्टाङ्गहृदय-(वाग्भट) वाग्भटविरचित तथा पं० रविदत्तकृत भाषाटीकासहित और पं० ज्वालाप्रसादजी मिश्र संशोधित। जिसमें सूत्रस्थान, शारीरस्थान, निदानस्थान, चिकित्सास्थान, कल्पस्थान, उत्तरस्थान इत्यादिमें संपूर्ण रोगोंकी उत्पत्ति, निदान, लक्षण और क्वाथ, चूर्ण, रस, घी, तैल आदिसे अच्छी प्रकार चिकित्सा वर्णित हैं	८-०
अमृतसागर-हिन्दीभाषामें-बिना गुरु छोटे नगरोंमें दवाखाना करसक्ते हैं। इसमें सर्व रोगोंका वर्णन और यत्न लिखे गयेहैं। ग्लेज कागज.	२-४
,, तथा रफ कागज...	२-०
अर्कप्रकाश-(रावणकृत) भाषाटीकासमेत। इसमें-नानाप्रकारके यन्त्रोंसे औषधियोंका अर्क खींचना और गुणवर्णन भलीप्रकार कियागयाहै. ग्लेज कागज. ...	१-०
" तथा रफ कागज	०-१४
आयुर्वेदचिन्तामणि-भाषाटीकासहित। पं० बलदेवप्रसाद मिश्र संगृहीत.	१-१२
अंजननिदान-भाषाटीकासमेत। इसमें-सुगमतासे रोगोंका निदान लिखाहै.	०-७

नाम. की. रु. आ.

करिकल्पलता—छन्दोबद्ध—हिन्दीभाषामें केशवसिंहजी तअलुकेदार रचित । इसमें—हाथियोंके शुभाशुभ लक्षण व उनके रोगनाशार्थ अनेक औषधिविधान चित्रोंसमेत वर्णितहै १—०

कामरत्न—योगेश्वर नित्यनाथप्रणीत और विद्यावारिधि पं० ज्वालाप्रसादजी मिश्रकृत भाषाटीकासमेत । इस ग्रन्थमें कामशास्त्रादिविषय और रोगोंकी औषधि तथा वाजीकरण औषधि अनुभूत है और वशीकरणादि प्रयोगभी हैं... ... १—१२

गुणोंकी पिटारी—काशीनिवासी स्वामी परमानन्दने बड़े परिश्रमसे हिन्दीभाषामें बनाई है । इसमें—अनेक प्रकारकी धातुओंके फूँकने व सेवन करने व सिन्दूरादिके बनाने तथा साबुन, पारा, गन्धक और सिंगरफ वगैरहके बर्तनोंको बनानेके परमोपयोगी नानाप्रकारके तरीके भी लिखेगयेहैं ... ०—१

चक्रदत्त—भाषाटीकासहित । इसमें और चिकित्साओंके अलावां तैल साधनादि प्रकार बहुत अच्छा लिखाहै ... ३—०

चरकसंहिता—टकसाल निवासी वैद्यपञ्चानन पं० रामप्रसाद वैद्योपाध्यायकृत प्रसादनी भाषाटीकासहित । चरकके आठोंस्थान एकसेएक अपूर्व होनेपर भी "चिकित्सास्थान" तो अद्वितीय है । उसमें नीरोग मनुष्यके लिये वे सहजप्रयोग लिखे हैं कि, वह कभी बीमारही न हो और रोगी चिकित्सा करनेपर तत्काल नीरोग हो । वैद्यमात्रको यह ग्रन्थ अवश्य संग्रह करना चाहिये । पहलेसे अबकीबार बहुत बडा होगया है जिसकी सुन्दर सुनहरी दो जिल्द बँधी हैं. ... ... ९—०

नाम. की० रु० आ०

जर्राहीप्रकाश—चारोंभाग। जर्राहोंके उपकारार्थ जर्राहीसंबंधी संस्कृत, उर्दू तथा डाक्टरी आदि अनेक ग्रन्थोंके आधारसे विभूषित. .... १—८

डाक्टरीचिकित्सार्णव—बडा—हिन्दीभाषामें-प्रत्येक रोगोंका डाक्टेरी मतसे और साथ २ देशीवैद्यक मतसे नाम, लक्षण, रोगनिदान, और उपाय आदि लिखेगये हैं। सारांशडाक्टरी सीखनेके लिये यह पुस्तक परमोपयोगी है. .... १—८

तिब्बअकबर—हकीम अकबर अलीखाँ लिखित तथा देवीप्रसादकृत हिन्दीभाषामें अनुवादित। इसमें—छब्बीस अध्यायोंमें शिरसे पैरतक स्त्री, पुरुष, लड़के आदिका सम्पूर्ण रोगोंका उत्पत्ति, निदान, कारण, स्वरूप, लक्षण और यूनानीमतसे एक एक रोगोंपर सैकडों औषधोंका उपचार (चिकित्सा) वर्णित है। यह अपूर्व ग्रन्थ वैद्यमात्रको उपयोगी है .... ७—०

त्रिशती—पं० वैद्यवल्लभभट्टविरचित संस्कृतटीका—तथा भाषाटीकासहित। इसमें सब रोगोंमें प्रधान, ज्वर और सन्निपातकी उत्तम २ अनेक प्रकारकी चिकित्सा लिखी हैं, १—०

द्रव्यगुण—बडा। श्रीयुत पं० ज्वालाप्रसादमिश्रकृत भाषाटीकासहित. .... ०—१४

धन्वन्तरिवैद्यक—लाला शालग्राम वैश्यकृत भाषाटीकासमेत। जिसमें समस्त रोगोंका निदान, कारण, लक्षण और चिकित्सा औषधि संग्रहकर लिखाहै. .... ६—०

नाम.	की० रु० आ०
नाडीज्ञानतरंगिणी—अत्युत्तम भाषाटीकासहित	०—३
पशुचिकित्सा—अर्थात् "वृषकल्पद्रुम" छन्दबद्ध भाषा । इसमें—बैल, गऊ और भैंसके शुभाशुभ लक्षण, यन्त्र, चिकित्सा, पहिचान, चित्रसहित वर्णित है. ...	१—०
बालतन्त्र—कल्याणवैद्यरचित मूल और नन्दकुमारकृत भाषाटीकासह इसमें—षोडशवन्ध्या, साधारणवन्ध्या औषध, पुरुषवीर्यवृद्धि, गर्भाधान, रुद्रस्नान, मासगृहीत-बालरक्षा, दिन-मास वर्षगृहीत—बालरक्षा, साधारण—बालग्रहरक्षा, ज्वरहरणोपाय, साधारण रोगचिकित्सा, नानारोगोंके अनुभवीप्रयोग, इत्यादि वर्णित हैं	१—०
बूँटीप्रचारवैद्यक—श्रीयुत महंत सुखरामदासजी संगृहीत	१—०
माधवनिदान—पं० दत्तराम चौबेकृत भाषाटीकासमेत । इसमें सम्पूर्ण रोगोंका कारण, उत्पत्ति, लक्षण, संप्राप्ति इत्यादिका भलीप्रकार वर्ण है । ग्लेज कागज	२—०

संपूर्ण पुस्तकोंका बडा "**सूचीपत्र**" अलग है मंगाकर देख लीजिये ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस—मुंबई.